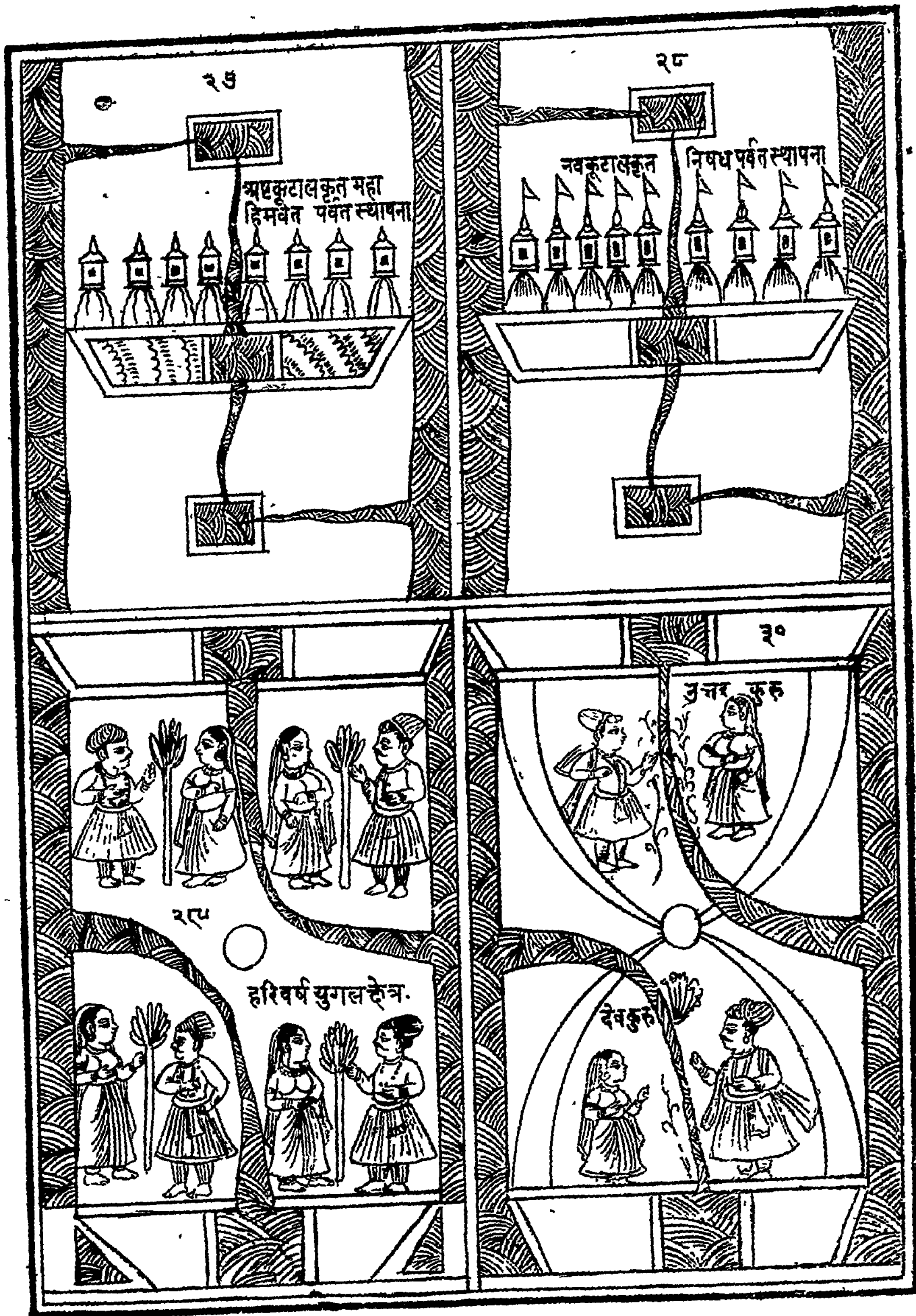

२७
अष्टकूटालकृत महा
हिमवंत पर्वत स्थापना
२८
नवकूटालकृत
निषध पर्वत स्थापना
२९
हरिवर्ष युगलक्षेत्र.
३०
उत्तर कुरु
देवकुरु

अढीद्वीपना नकशानी हकीगतनुं पुस्तक.

एमां जंबूद्वीप, लवणसमुद्र, धातकीखंड, कालोदसमुद्र, अने पुष्करार्द्ध द्वीप, संबंधि शाश्वता पदार्थोनुं सविस्तर वर्णन.

तथा

चोवीश दंडकें स्थिति आदिक पांत्रीश द्वार प्रमुख

अनेक प्रकारना छूटा बोलोनो समावेश करेलो छे.

ए ग्रंथ

समस्त निश्चयार्थी जिज्ञासु एवा सम्यग्दृष्टि जनोने वांचवा धारवाना

खपमां आववा योग्य जाणी.

श्रावक. भीमसिंह माणके.

श्रीमुंबापुरी मध्यें.

निर्णयसागर नामक मुद्रालयमां मुद्रित कराव्यो छे.

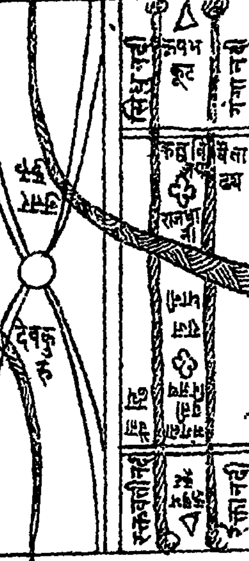
शके. १८११ संवत् १९४६ सने १८९०



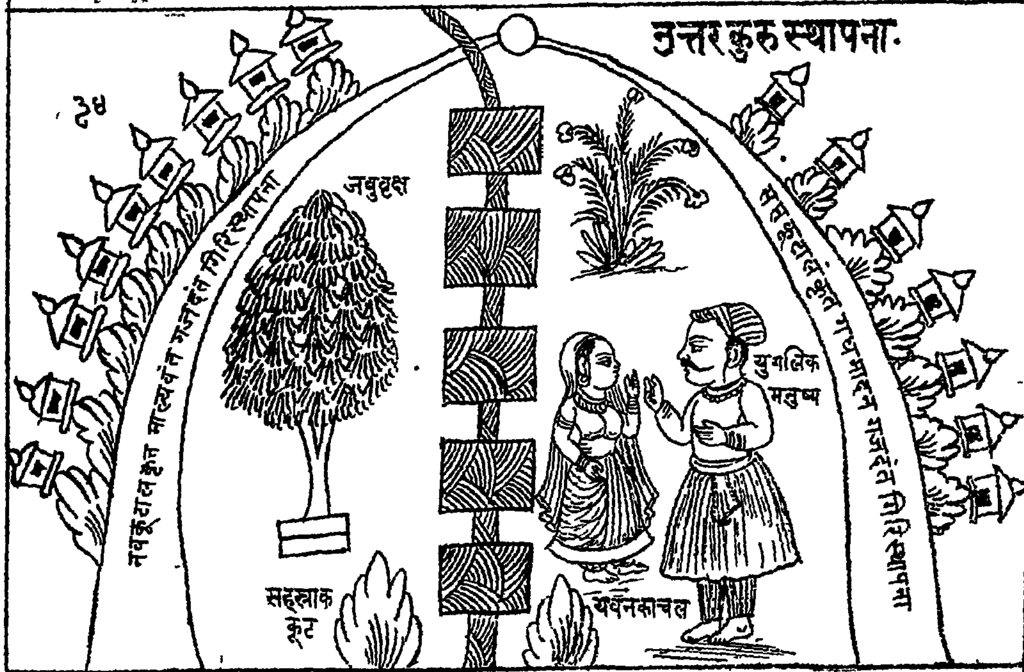
३२
बत्रीश विजयमांहेलो वैताढ्य पर्वत
स्थापना.



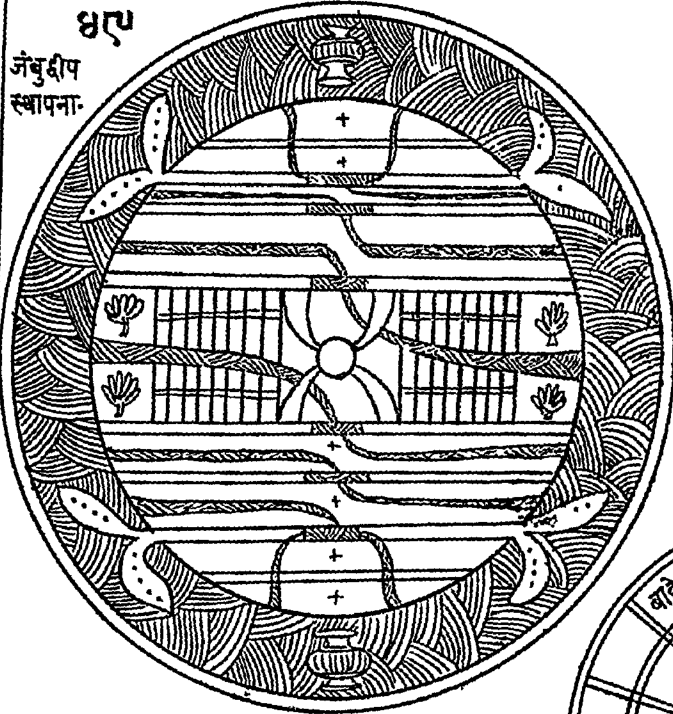
देवकुरु

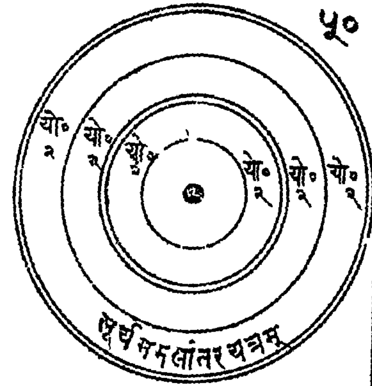


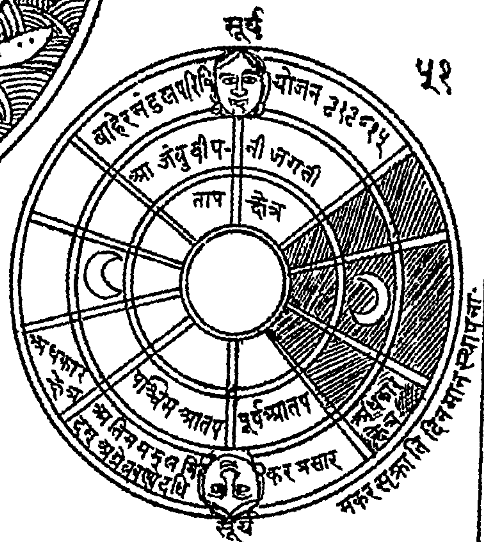
नीलवंत पर्वत
३३
सोल विजयमांहेली एक विजयनी स्थापना.
ऋषभ कूट
सिंधुनदी
गंगानदी
रक्तवतीनदी
सोल विजयमांहेली एक विजयनी स्थापना.

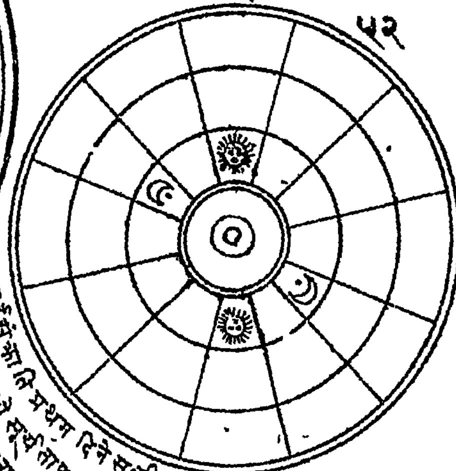


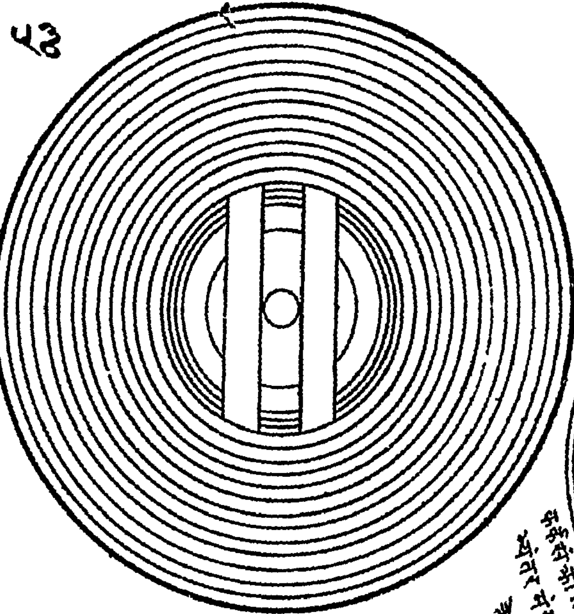
उत्तर कुरु स्थापना.
३४
जंबुवृक्ष
युगलिक
मनुष्य
सहस्राक
कूट


४९
जंबुद्वीप स्थापना.


५०
सूर्य मंडलांतर यंत्रम्

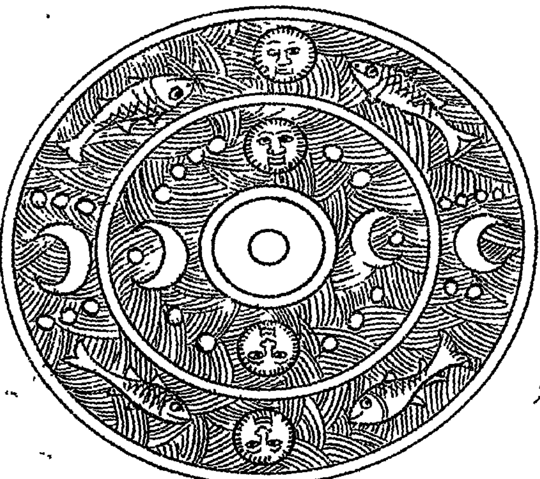

सूर्य
५१
बाहेर मंडल परिधि योजन ३१८३१५
आ जंबुद्वीपनी जगती
ताप क्षेत्र
अंधकार क्षेत्र
पश्चिम आतप
पूर्व आतप
सूर्य
मकर संक्रांति दिनमान स्थापना.


५२
कर्कसंक्रांति प्रथम दिने सर्व
अंतर मंडले सूर्य ताप
क्षेत्र स्थापना


५३

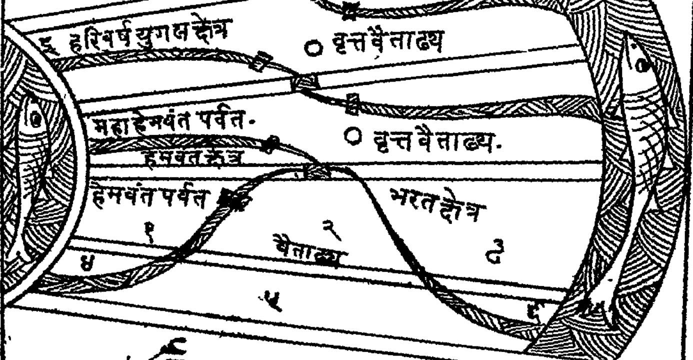
अनुक्रमणिका.

क्रमांक.		पृष्टांक.
१	असंख्याता द्वीपसमुद्रनुं प्रमाण.	१
२	जंबूद्वीपनां संक्षेप परिध्यादि.	१
३	अढीद्वीपमां कया कया पदार्थ छे.	२
४	अढीद्वीप मांहेला शाश्वता पदार्थो एकतालीश बोलें संक्षेपें कह्या.	२
५	जंबुद्वीपनी जगतीनुं वर्णन.	२०
६	विजयदेवनी राजधानीनुंवर्णन.	२९
७	भरतक्षेत्र वर्णन.	३५
८	भरतमां अयोध्यानुं प्रमाण. ...	३६
९	वैताढ्य पर्वत वर्णन.	३७
१०	उत्तरार्द्ध भरतवर्णन. .	४०
११	चूल्लहिमवंत पर्वत पद्मद्रहादिक.	४०
१२	गंगा सिंधु तथा प्रपात कुंम. ...	४२
१३	हिमवंत युगलक्षेत्र वर्णन.	४५
१४	महाहिमवंत पर्वत वर्णन.	४५
१५	हरिवर्ष यौगलिक क्षेत्र वर्णन....	४७
१६	निषेध पर्वत वर्णन.	४८
१७	नदी, द्रह, कुंम वर्णन. ...	५०
१८	महाविदेह क्षेत्र वर्णन.	५४
१९	गजदंतगिरि वर्णन.	५४
२०	उत्तरकुरुक्षेत्र वर्णन.	५५
२१	उत्तरकुरु मांहेला द्रहनुं वर्णन.	५७
२२	जंबु वृक्ष वर्णन.	५८
२३	देवकुरुक्षेत्र वर्णन.	६०
२४	मेरुपर्वत वर्णन.	६१
२५	भद्रशालादि चार वननुं वर्णन.	६२
२६	तीर्थंकर जन्माभिषेकनी शिला.	६६
२७	महाविदेहना बत्रीश विजय.	६६
२८	वक्षस्कार पर्वत वर्णन.....	६७
२९	विजयनी बत्रीश नगरीनां नाम.	६८
३०	सीतासीतोदा अने वननुं वर्णन.	६९
३१	जंबूद्वीपना योजननो शरवालो.	७०
३२	तीर्थंकर चक्रवर्त्तीनी उत्पत्ति.	७१
३३	नीलवंत पर्वत वर्णन. ..	७१
३४	रम्यक्यौगलिकक्षेत्र वर्णन. .	७१
३५	रुक्मिपर्वत वर्णन. . .	७२
३६	हैरण्यवंत यौगलिक क्षेत्र.	७२
३७	शिखरी पर्वत वर्णन.	७२
३८	बार आरानुं स्वरूप.	७२
३९	गंगासिंधुना बिलनुं स्वरूप.	७५
४०	चंद्र सूर्यनुं स्वरूप.	७७
४१	परिधिनो गणित तथा यंत्र.	८१
४२	गणितपदना हीसाब तथा यंत्र.	९१
४३	जीवा गणित अने यंत्र. ...	९२
४४	इखुकरवानी समजण.	९६
४५	धनुःपृष्ठ गणित उपाय तथा यंत्र.	९६
४६	बाहाकरणविधि तथा यंत्र. ...	९६
४७	प्रतर करवानो विधि तथायंत्र.	१००
४८	घनगणित करवानो विधि.	११२
४९	घनगणित यंत्र स्थापना. . .	११४
५०	इखु प्रमुखना सिद्धांक. ...	११४
५१	जिव्हा प्रमुख गणितनी गाथा.	११५
५२	लवणसमुद्रनो अधिकार. ...	११७
५३	छप्पन्न अंतरद्वीप वर्णन.	१२१
५४	धातकीखंमनुं वर्णन.	१२३
५५	कालोद समुद्रनुं वर्णन. . .	१२८
५६	पुष्करार्द्ध द्वीपाधिकार.	१२८
५७	बीजा द्वीप नदी पर्वतादिक.	१२९



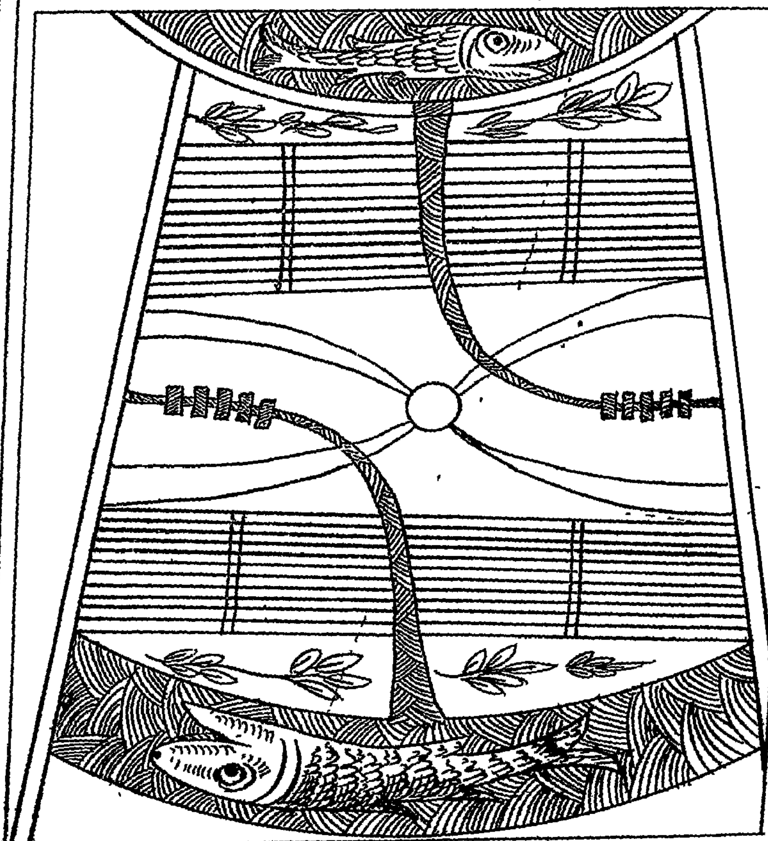
५८

लवण समुद्रगत सूर्यचंद्राकृति स्थापना.



५९

धातकी खंडने विषे ईक्षुकार पर्वत स्थापना.



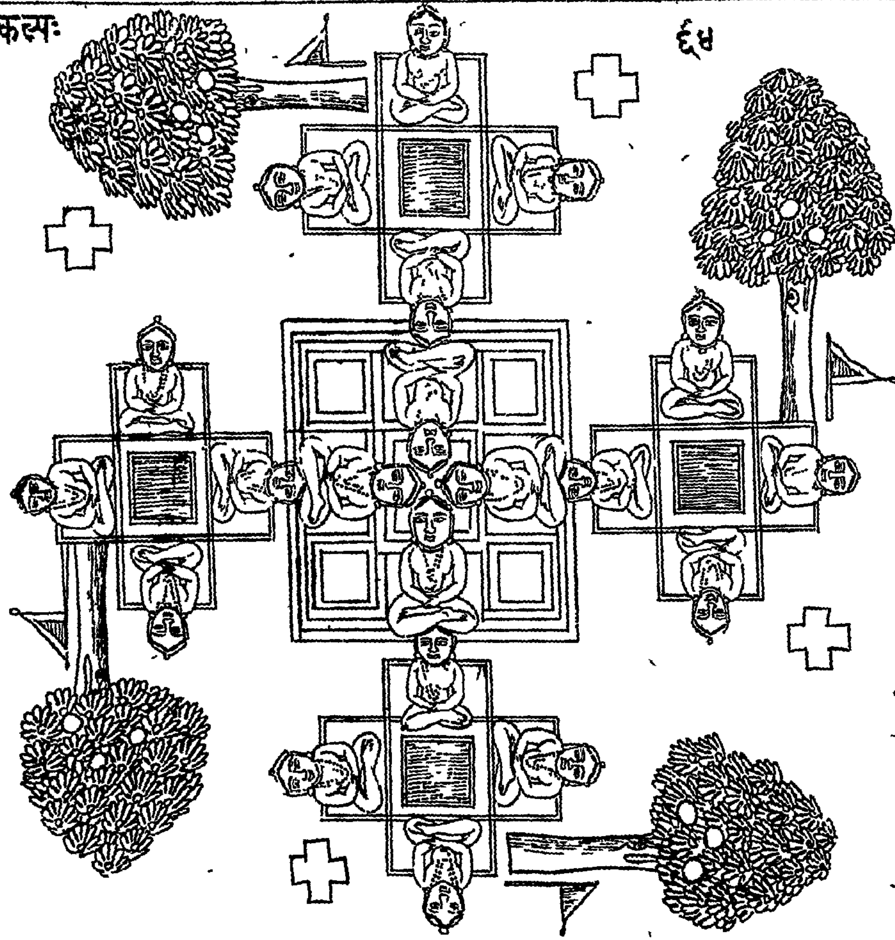
६०

धातकी खंडमांहेला महाविदेह क्षेत्रनी स्थापना.

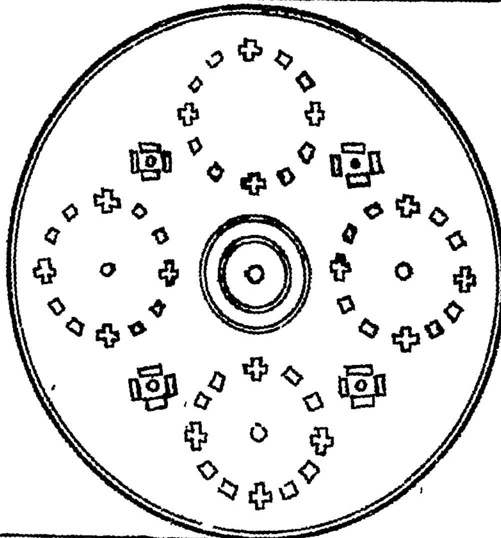
क्रमांक. पृष्ठांक.

५८ बह्यक्षेत्रोनां प्रमाण. १३०
५९ मनुष्यक्षेत्रमां पर्वत संख्या..... १३१
६० मनुष्यक्षेत्रथी बाहिर कया पदार्थ नथी? ते कह्या छे. १३१
६१ नंदीश्वर,रुचक अनेकुंमलद्वीप. १३२
६२ अढीद्वीपमां मनुष्य संख्या. १३२
६३ चोवीश दंमकनां नाम. १३६
६४ शरीरादिक पांत्रीश द्वार एमां अल्पबहुत्वद्वारना अठाणु बोल छे. १३८
६५ चोवीश दंमक मांहेला प्रत्येक दंमकें शरीरादिक पांत्रीश द्वार १४७
६६ नवनपति देवोनुं स्वरूप. १६४
६७ दश निकायनां नामादिकयंत्र. १६५
६८ नवनपति व्यंतर देवीनुं आयु. १६६
६९ नवनपतिना इंद्र तथा नवन. १६६
७० व्यंतर देवोनुं स्वरूप. १६६
७१ ज्योतिषी देवोनुं स्वरूप. १६८
७२ ज्योतिषी तथा वैमानिकायु. १६९
७३ लोकपालनुं आयु तथा प्रतरें प्रतरें आयु कहेवा मार्टे उपाय. १७१
७४ चारे निकायनी अग्रमहीषी तथा वैमानिकनी प्रतर संख्या यंत्र. १७४
७५ प्रतरें प्रतरें उत्कृष्टायुनो यंत्र. १७५
७६ वैमानिकना त्रिखूणादि विमान १७६
७७ सौधर्मेशाने देवीनी उत्पत्ति. १७८
७८ देवोना सर्व प्रकार केटला छे. १७८
७९ नवनपतिनां आनरण चिन्हादि १७८
८० अढीद्वीपगत चंद्र सूर्य संख्या १७८
८१ ज्योतिषीना विमानवाहक देवो तथा विमानोनी लंबाइ आदिक. १७८
८२ समुद्रोना पाणीना स्वाद. ... १८०
८३ देवोना शरीरना प्रमाणनो यंत्र. १८१
८४ त्रायस्त्रिंशकादि देवो तथा वाणव्यंतरेंद्रोना चिन्ह, वर्णादिक. १८२
८५ प्रतरें प्रतरें त्रिखूणादिक,विमा १८३
८६ विमानोने आधार,चिन्ह,पृथ्वीपिंम,त्रिखूणादिकविमान संख्या, किल्बिषिदेवोनां आयुष्यादि यंत्र. १८५
८७ लोकांतिक देवोनुं स्वरूप १८८
८८ वैमानिक देवोने अवधिज्ञान. १८९
८९ नारकीना आयुष्यनो यंत्र... १९०
९० नारकीनो पृथ्वीपिंमादिक यंत्रो १९२
९१ नारकीने घनोदध्यादि आधार. १९८
९२ छ प्रकारना पल्योपमनुं स्वरूप. १९९
९३ शो प्रकारना रत्नोना नेद २०२
९४ कया कया जीव नरकमां जाय. २१२
९५ कया मनुष्य कयी गतिमां जाय २१३
९६ चक्रवर्त्तिना चौदरत्न स्वरूप २१४
९७ सिद्धिशिला स्वरूप पूर्व संख्या २१५
९८ तीर्थकरादित्रेवीश पदवीनांनाम २१५
९९ उत्सेधादि अंगुलनुं स्वरूप २१६
१०० जूदी जूदी योनियोनो विचार २१७
१०१ उपक्रमादिक आउखानुं स्वरूप २१८
१०२ अढारनात्रानां नाम. २१९
१०३ अशुनध्याननां त्रेशठ स्थानक. २२०
१०४ उपदेश रत्नकोष छहोंतेरनेद. २२२
१०५ न जाणे न आदरे न पाले इत्यादि अष्टनंगीनुं स्वरूप. २२४

नंदीसरकल्पः



६४



६५

नंदीसर द्वीपस्थापना·

श्रीवर्द्धमानस्वामिनेन्योनमोनमः

अथ

॥ अढीद्दीपनां नकशानोविचार प्रारंभः ॥

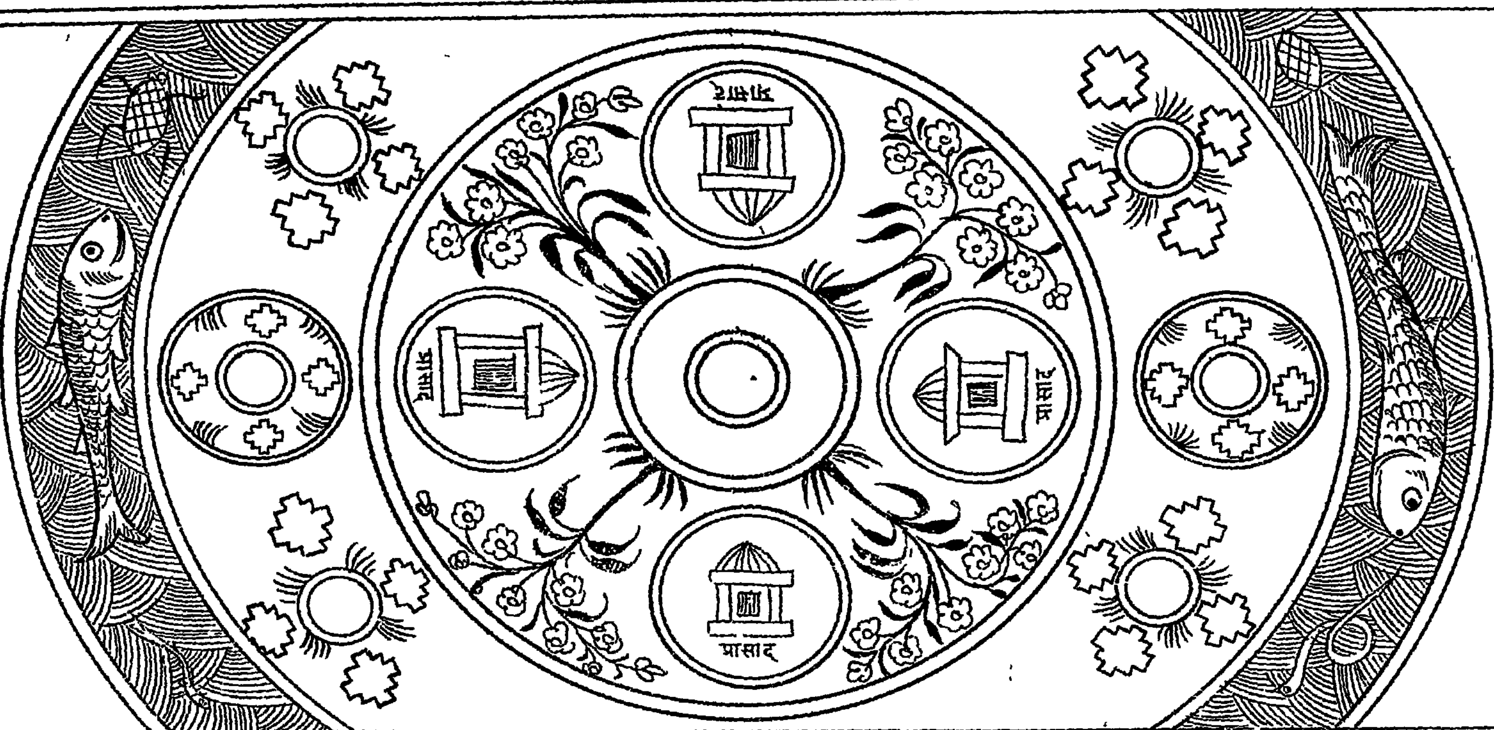
एक राज प्रमाण तिर्छो लोकछे तेमां असंख्याता द्दीप अने असंख्याता समुद्र छे, ते सर्वेमां जंबुद्दीप आद्यमां छे अने स्वयंभु रमण समुद्र अंतमां छे ए सर्वे द्दीप मली संख्यायें अढीसागरोपम अर्थात् पच्चीश कोडाकोडी उद्धार पल्योपमनां जेटलां समय थाय तेटलां छे, ते संस्थान थकी एकज आकारेंछे अने विस्तार पणे अनेक प्रकारनांछे एटले प्रथम द्दीपथी प्रथम समुद्र द्दिगुणो छे तेथी बीजो द्दीप बमणो छे तेथी बीजो समुद्र बमणो छे तेथी त्रीजो द्दीप बमणोछे एरीतें सर्वे द्दीपसमुद्र विस्तारें एकेकथी बमणा बमणा पहोल पणेछे, सुप्रशस्त वस्तुनां जेवा जेवा नामछे तेवा तेवा नामे ए द्दीप समुद्र छे ते वली एकेका नामे करी पण असंख्याता असंख्याताछे जेम आ मध्यनो जंबूद्दीप छे तेम एज जंबूने नामे बीजा पण असंख्याता द्दीप छे.

ते सर्वे द्दीप अने समुद्रने अंभ्यतर एटले तिर्यक्लोकने मध्यवर्त्ति आ जंबूद्दीप छे ते बधा द्दीप समुद्रनी अपेक्षायें सर्वथकी न्हानोछे एमां जंबू सुदर्शन नामे वृक्षछे तेमाटे एनुं जंबू एवुं नाम छे ए जगति सहीत प्रमाणांगुलें करी एक लाख योजन लांबो पहोलोछे, थालीने आकारें, कमलना मोभ्माने आकारें, तेलना पुडला करीयें ते जेवा गोल होय तेवा आकारे, पूरण चंद्रमाने आकारे, तथा रथना पइडाने आकारें गोलछे.

एनी त्रणलाख शोलहजार बशें सत्तावीश योजन, त्रणकोश, एकशो अठावीश धनुष्य, तेर अंगुल, पांच यव, एक जूं, एक लीख, चार वाल, वली एक वालनां शात भाग करीयें ते मांहेला सात भाग तथा वली ते शातीया एक भागनां एकशत भाग करीयें ते मांहेला दशभाग उपर एटली परिधिछे शेष सर्वे असंख्याता जंबूद्दीप चूडीने आकारे जाणवा अने असंख्याता कोडा कोडी योजननां लाबा पहोलाछे, ए प्रथम जंबूद्दीप जे छे ते बीजा सर्वे असंख्याता द्दीप अने समुद्रें करी वींटेलुं छे.

जेम जंबूद्दीप जगती सहीत एकलाख योजननुं छे तेम एने फरतो लवण समुद्र छे ते जगती सहीत बे लाख योजननां विस्तार वालोछे तेमज लवण समुद्रने फरतो धातकी खंभ्म छे ते जगती सहीत चार लाख योजन छे तथा धातकी खंभ्मने फिरतो कालोद समुद्रछे ते जगती सहीत आठ लाख योजन छे तथा कालोद समुद्रने फरतो पुष्करवर द्दीपछे ते पूरणतो शोल लाख योजन छे परंतु ते मांहेलुं आठलाख योजन प्र

कुंडलद्वीप स्थापना



माण अर्द्ध द्वीप मानुष्योत्तर पर्वतें करी वींटेलुं छे ते मांहे मनुष्यनी वस्तिछे अने बाहेरनो अर्द्ध द्वीप मनुष्यनी वस्तिथी शून्यछे माटे पुष्करवर द्वीपनो अर्द्धभाग अढीद्वीपनी गणतिमां लीधुंछे तेथी एनुं पुष्करार्द्ध द्वीप एवुं नाम राख्युंछे.

एरीतें एक लाख योजन जंबू द्वीपनां तथा बे लाख पूर्वे अने बे लाख पश्चिमनां मली चार लाख योजन लवण समुद्रनां मेलवतां पांच लाख योजन थया तेनी साथें पूर्वे धातकीनां चार अने पश्चिम धातकीनां चार मली आठ लाख योजन धातकीखंमनां मेलवतां तेर लाख योजन थया तथा तेनी साथें पूर्वे कालोद समुद्रनां आठलाख अने पश्चिम कालोद समुद्रनां आठ लाख मली शोल लाख योजन कालोद समुद्रनां मेलवीयें तेवारें उंगणत्रीश लाख योजन थाय तेनी साथें पुष्करवर द्वीपार्द्धनां पूर्वे पश्चिमनां आठ आठ लाख मली शोल लाख योजन मेलवीयें तेवारें पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीद्वीप थाय छे तेमां मनुष्यनी वस्तिछे.

ए अढी द्वीप प्रमाण मनुष्यक्षेत्रनुं पूर्वोक्त रीतें पूर्वे पश्चिम विष्कंभ पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणछे तेमज दक्षणोत्तर विष्कंभ पण पीस्तालीश लाख योजन प्रमाणछे तेमां जे जे शाश्वता पदार्थो रह्याछे तेना चित्र आ पुस्तकने विषे सामान्य प्रकारें देखाड्याछे. तिहां प्रथम पूर्वे पश्चिमनां पीस्तालीश लाख योजन आवीरीतें पूराणा छे.

पुष्करार्द्ध द्वीपनां पूर्वे अने पश्चिम ए बे बाजुनां मानुष्योत्तर पर्वत पासें आवेला महोटा बे वन मुख छे ते प्रत्येक ११६८८ योजननो छे. ..	२३३७६
पुष्करार्द्धमां बे बाजुनां बेवडा बत्रीश विजयछे ते प्रत्येक विजयनुं विष्कंभ १९७९४। योजननुं छे तेने बत्रीश विजय साथे गणतां सरवाले.	६३३४१६
पुष्करार्द्धमां शोल वक्षस्कारा पर्वतछे ते प्रत्येक पर्वत बे बे हजार योजननुंछे	३२०००
पुष्करार्द्धनी बार अंतरनदी प्रत्येक पांचसो योजन प्रमाणे गणतां योजन.	६०००
पुष्करार्द्धनां बे मेरुनां बे वन प्रत्येके ४४०९१६ योजन प्रमाणे गणतांयोजन.	८८१८३२
पुष्करार्द्धनां मांहेली बाजुनां समुद्र तरफनां बे बाजुनां बे वनमुख जगतीनां योजन बाद करतां प्रत्येक ११६७६ योजन प्रमाणे गणतां योजन.	२३३५२
अढीद्वीपमां एक जंबुद्वीपनी, बीजी लवण समुद्रनी, त्रीजी धातकी खंमनी अने चोथी कालोद समुद्रनी ए चार जगती पूर्वदिसीनी अने चारजगती पश्चिमदिसीनी एम बे बाजुनी मली जगती आठ छे अने पुष्करार्द्ध द्वीपने फरतो मनुष्योत्तर पर्वतछे,तेनी जगती जिहां द्वीपपूरण थायछे तिहांछे माटे ते गणी नथी शेष आठ जगती प्रत्येक बारबार योजन प्रमाणे गणतां.	९६

कालोद समुद्रनां एकेकी बाजुनां आठ आठ लाख योजन प्रमाणे बे बाजुनां.	१६०००००
धातकी खंडनां बे बाजुनां चार वनमुखछे तेमांथी एकेका बाजुनां बे बे वन मुखें जगति बाद करतां ११६६४ योजन रुंध्या छे.	२३३२८
धातकी खंडनी बे बाजुनी बत्रीश विजयनां प्रत्येक विजयें (९६०३) योजन उपर एक योजननां आठ भाग करीयें तेवा त्रण भाग रुंध्या छे... ..	३०७३०८
धातकी खंडनां बे बाजुनां शोल वक्षस्कार पर्वत प्रत्येक हजार योजननां छे.	१६०००
धातकी खंडनी बार अंतर नदीनां प्रत्येकें अढीसो अढीसो योजन गणतां.	३०००
धातकी खंडनां बे बाजुनां बे मेरुनीपासें भद्रशाल वननां एकेक बाजुनां २२५१५८ योजन प्रमाणे गणतां योजन	४५०३१६
लवण समुद्रनी एकेकी बाजुनां बे बे लाख गणतां बे बाजुनां योजन.. ..	४०००००
जंबूद्वीपनो वनमुख एकेक बाजुनी जगतीनां बार बार योजन बाद करतां बाकी २९१० योजन प्रमाणे गणतां बे बाजुनां योजन.	५८२०
जंबूद्वीपनां प्रत्येक एकेकी विजयनां २२१२ योजन अने एक योजननां आठभाग करीयें तेवा सात भाग उपर एवा शोल विजयछे यद्यपि जंबूमां विजयतो बत्रीशछे पण पूर्व पश्चिम आश्रयी बे बे विजयनो एकेक भाग गणतां आ ठेकाणे शोल विजय हिसाबमां गणवा एजरीत धा तकीखंडे तथा पुष्करार्द्धमां पण जाणवी.	३५४०६
जंबूद्वीपनां आठ वक्षस्कार पर्वत पांच पांचशो योजन प्रमाणे गणतां...	४०००
जंबूद्वीपनी छ अंतरनदी सवासो सवासो योजन प्रमाणे गणतां योजन.	७५०
जंबूद्वीपनो मेरु तथा भद्रशाल वननां योजन.	५४०००
सरवाले अढीद्वीप संबंधी पूर्व पश्चिमनां योजन.	४५०००००

हवे दक्षणोत्तर विष्कंभ ४५००००० लाख योजन आवी रीतें पूराणा छे.

पुष्करार्द्धमां बे तरफनां बे इक्षुकार पर्वत प्रत्येक जगति सूधां आठ लाखयो०	१६०००००
कालोदधीनां एकेक बाजुनां आठ आठ लाख योजन प्रमाणे गणतां.	१६०००००
धातकीखंडनां इक्षुकारपर्वत एकेकी बाजुनां चारलाख योजनजगती सूधांछे.	८०००००
लवण समुद्रनी एकेकी बाजुनां बेबे लाख योजन प्रमाणे गणतां.	४०००००
दक्षण भरतार्द्ध तथा दक्षण ऐरवतार्द्ध एकेकाना २२९ योजन अने एक योजनना ओगणीश भाग करीयें ते मांहेला त्रण भाग उपर छे... ..	$४५८\frac{६}{१९}$
भरतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पचाश योजन.	५०
ऐरवतक्षेत्र मांहेला वैताढ्यनां पचाश योजन.	५०

દક્ષણ ભરતાર્દ્ધની અયોધ્યાનગરી પોહોળ પણે નવ યોજન છે.	૯
ઉત્તર ઐરવતાર્દ્ધની અયોધ્યાનગરી પોહોળ પણે નવ યોજન છે.	૯
ઉત્તર બાજુનાં ભરતાર્દ્ધનાં યોજન.	૨૩૮) ૩/૧૯
દક્ષણ બાજુયેં ઐરવતાર્દ્ધનાં યોજન..	૨૩૮) ૩/૧૯
ચુલ્લહેમવંત પર્વત પોહોળ પણે યોજન..	૧૦૫૨) ૧૨/૧૯
શિખરી પર્વતનાં પોહોળ પણે યોજન..	૧૦૫૨) ૧૨/૧૯
હેમવંત ક્ષેત્ર ગલીયાનું પોહોળ પણે યોજન..	૨૧૦૫) ૫/૧૯
એરન્યવંત ક્ષેત્ર યુગલીયાનું પોહોળ પણે યોજન..	૨૧૦૫) ૫/૧૯
મહાહિમવંત પર્વત દક્ષણોત્તર પહોળ પણે યોજન..	૪૨૧૦) ૧૦/૧૯
રૂપી પર્વત દક્ષણોત્તર પહોળ પણે યોજન.	૪૨૧૦) ૧૦/૧૯
હરિવર્ષ ક્ષેત્ર યુગલીયાનું દક્ષણોત્તર પહોળ પણે યોજન..	૮૪૨૧) ૧/૧૯
રમ્યક્ ક્ષેત્ર યુગલીયાનું દક્ષણોત્તર પહોળ પણે યોજન.	૮૪૨૧) ૧/૧૯
નિષધ પર્વત દક્ષણોત્તર પોહોળ પણે યોજન.	૧૬૮૪૨) ૨/૧૯
નીલવંત પર્વત દક્ષણોત્તર પોહોળ પણે યોજન	૧૬૮૪૨) ૨/૧૯
દેવ કુરુક્ષેત્ર યુગલીયાનું દક્ષણોત્તર પોહોળ પણે યોજન..	૧૧૮૪૨) ૨/૧૯
ઉત્તર કુરુક્ષેત્ર યુગલીયાનું દક્ષણોત્તર પોહોળ પણે યોજન.	૧૧૮૪૨) ૨/૧૯
મેરુ પર્વતનો દક્ષણોત્તર વિષ્કંભ.	૧૦૦૦૦
સરવાળે અઢીદ્વીપનાં દક્ષણોત્તર યોજન સંખ્યા.	૪૫૦૦૦૦૦

॥ અથ એકતાલીશ બોલેં અઢીદ્વીપ વ્યાખ્યા ઉપદેશ ॥

॥ પ્રથમ ઇષ્ટદેવને નમસ્કારરૂપ મંગલાચરણ ॥

॥ શ્લોક ॥

શ્રીવર્દ્ધમાનાખ્યવિભું યજામિ, સુરાસુરૈઃ સેવિતપાદપદ્મમ્ ॥
તસ્યોપદેશામૃતપાનપીના, નરા ભવાબ્ધિં વિષમં તરંતિ ॥૧॥

હવે અઢીદ્વીપની વ્યાખ્યા કરેછે જંબૂદ્વીપથી માંમીને માનુષ્યોત્તર પર્વત લગેં અઢીદ્વીપ સમયક્ષેત્ર કહેવાયછે એમાં જે કાંઇ શાશ્વતા પદાર્થ, નિત્ય પદાર્થ, ધ્રુવપદાર્થ, અવસ્થિતભાવેછે તે સંક્ષેપથી એકતાલીશ બોલેં કરી કહીયેં છૈયેં.

૧ પ્રથમ બોલેં ખાંડુઆનું પ્રમાણ કહેછે. લાખ યોજનનું જંબૂદ્વીપછે તેના ૧૯૦) ખાંડુઆ થાય તે આવી રીતેં પ્રથમ એક ખાંડુઓ ભરત ક્ષેત્રનો જાણવો તેવાજ બે ખાં

डुआ चुल्लहेमवंत पर्वतना तथा चार खांडुआ हेमवंतनामे युगलीयानां क्षेत्रनां तथा आठ खांडुआ महाहेमवंत पर्वतना तथा शोल खांडुआ हरिवास युगलीयानां क्षेत्रनां तथा बत्रीश खांडुआ निषध पर्वतना एरीतें भरत क्षेत्रीथी मांडीने निषध पर्वत लगें त्रेशठ खांडुआ थया तेवाज त्रेशठ खांडुआ ऐरवत क्षेत्रथी मांडीने नीलवंत पर्वत लगें थाय अने चोशठ खंडुक प्रमाणे माहाविदेह क्षेत्रछे एम सरवाले मली एकशो नेवुं खांडुआनुं जंबूद्वीप छे ते एकेको खांडुउं (५२६) योजन अने एक योजननां उंगणीश भाग करीयें तेवा छ भाग उपर एटला प्रमाणनुं जाणवो तेने एकशो नेवुंयें गुणतां बराबर एक लाख योजन दक्षणोत्तर जंबूद्वीपनां थाय तेनी यंत्र स्थापना

खंडुक.	क्षेत्रादिकोनां नाम.		
१	भरतक्षेत्रनो खंडुक एक.	६४	महाविदेहक्षेत्रनां खंडुक चोशठ.
२	चुल्लहिमवंतपर्वतनां खंडुक बे.	३२	नीलवंतपर्वतनां खंडुक बत्रीश.
४	हेमवंतयुगलीयानुंक्षेत्र खंडुक चार.	१६	रम्यक्क्षेत्रयुगलीयानुं खंडुक शोल.
८	महाहेमवंतपर्वत खंडुक आठ.	८	रूपीपर्वतनां खंडुक आठ.
१६	हरिवासयुगलक्षेत्रनां खंडुक शोल.	४	ऐरन्यवंतक्षेत्रयुगलीयानुंखंडुक चार.
३२	निषधपर्वतनां खंडुक बत्रीश.	२	शिखरीपर्वत खंडुक बे.
		१	ऐरवतक्षेत्रनो खंडुक एक.

२ बीजा बोलें योजन प्रमाण कहेछे. जंबूद्वीपनां दक्षण दरवाजाथी मांडीने चुल्लहेमवंत पर्वतनां ऋषभकूट पर्यंत (५२६) योजन अने छ कला प्रमाणे भरतक्षेत्रछे तथा १०५२) योजनने बारकला प्रमाणे पोहोलो हिमवंत पर्वतछे तथा २१०५) योजन ने पांच कला प्रमाणे पोहोलो हेमवंतयुगलक्षेत्र छे तथा ४२१०) योजन ने दश कला प्रमाणे पोहोलो माहाहिमवंत पर्वतछे तथा ८४२१) योजन अने एक कला प्रमाणे पोहोलो हरिवास युगलीयानुं क्षेत्रछे तथा १६८४२) योजन अने बे कला प्रमाणे पोहोलो निषधपर्वतछे एज प्रमाणे ऐरवतक्षेत्रथी मांडीने नीलवंतपर्वत लगें पण मर्यादा जाणवी अने निषधपर्वतथी मांडी नीलवंत पर्वत लगें ३३६८४) योजन अने चार कला उपर एटलो महाविदेहक्षेत्र पोहोलुंछे सरवाले उत्तरदक्षण जंबूद्वीपनां एक लाख योजन थया तेनुं यंत्र.

क्षेत्रादिकनां नाम.	पोहोलाइयो०	कला.	क्षेत्रादिकनां नाम.	पहोलाइयो०	कला.
भरतक्षेत्र.	५२६....	६	नीलपर्वतवंत.	१६८४२	२
चुल्लहेमवंतपर्वत	१०५२....	१२	रम्यक्क्षेत्र युलीगयानुं.	८४२१	१
हेमवंतयुगलक्षेत्र.	२१०५....	५	रूपी पर्वत	४२१०	१०
महाहिमवंतपर्वत	४२१०....	१०	ऐरन्य वंतयुगलक्षेत्र ..	२१०५	५

हरिवयुगलक्षेत्र	....७४२१....	१	शिखरीपर्वत	........१०५२....	१२
निषधपर्वत	......१६७४२....	२	ऐरवतक्षेत्र	.... ५२६....	६
महाविदेहक्षेत्र	....३३६७४....	४		३३१५७———	१३
	६६७४२———	२	सरवाळे (१०००००)		

३ त्रीजे बोलें गणीत पद कहे छे सातसें कोड, नेवुंकोड, छपन्नलाख, चोराणु हजार, उपर दोढसो योजन कांइक अधिकुं एटलुं जंबूद्वीपनो गणीत पद छे.

४ चोथे बोलें परिधि कहे छे त्रणलाख शोल हजार बसें सत्तावीश योजन, त्रण कोश, एकशो अट्ठावीश धनुष्य अने तेर अंगुल जाजेरा एटली जंबूद्वीपनी परिधि जाणवी तथा पंदरलाख एकयासी हजार एकसो उंगणचालीश योजन किंचित उणा लवण समुद्रनी परिधि जाणवी तथा एकतालीश लाख दश हजार नवसेने एकशठ योजन एटली धातकी खंडनी परिधि जाणवी तथा एकाणु लाख सीतेर हजार छशें पांच योजन कांइक विशेषाधिक एटली कालोदधीनी परिधि जाणवी तथा एक कोडी बेतालीश लाख त्रीश हजार बशें उंगणपच्चाश योजन एटली अभ्यंतर पूष्करार्द्धनी परिधि जाणवी.

५ पांचमें बोले पूर्वथी दक्षणे, दक्षणथी पश्चिमें, पश्चिमथी उत्तरे द्वार द्वारनुं अंतर कहे छे उंगणाएंसी हजार बावन योजन एक कोश पंदरसें बत्रीश धनुष्य अने त्रण अंगुल एटलो जंबूद्वीपनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवुं तथा त्रणलाख, पंचाणुहजार बशें अेंसी योजन ने एक कोश एटलो लवण समुद्रनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा दशलाख सत्तावीश हजार सातशें पांत्रीश योजन अने त्रण कोश एटलुं धातकी खंडनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो तथा बावीश लाख बाणुहजार छशें छेंतालीश योजन अने त्रण कोश एटलो कालोदधीनां दरवाजा दरवाजानो अंतर जाणवो अने पुष्करार्द्धनां दरवाजा नथी पण आखो पुष्करवरद्वीप शोळलाख योजननो तेना दरवाजाछे परंतु अर्द्धद्वीपनां दरवाजा नथी, प्रत्येक द्वीप समुद्रनी परिधिना योजननो चोथो भाग करी तेमांथी द्वारनां बारणानां साढाचार योजन उंछा करतां जेटला योजन बाकी रहे तेटलुं दरवाजा दरवाजानुं अंतर जाणवुं तथा जंबूद्वीपनां चार दरवाजानां नाम आ प्रमाणेछे एक पूर्वें विजय बीजो दक्षणें विजयंत त्रीजो पश्चिमें जयंत चोथो उत्तरें अपराजित ए चार दरवाजाने नामे ए दरवाजाना चार द्वारपालनां पण एहीज नाम छे, जंबूनो कोट मूलमां पोहोलो बार योजन छे तथा मध्यभागें पोहोलो आठ योजनछे अने उपर पोहोलो चार योजनछे तथा सर्वे दरवाजा आठ योजन उंचा छे अने चार योजन पहोल पणे बारणा छे एकेक कोशनी बे बाजु बारशा

ख छे जंबूद्वीपना दरवाजाने साहामा चारे कोरें दोरी छेट सर्व असंख्याता द्वीप समुद्रनां दरवाजा छे ते सर्व द्वीप समुद्रोना दरवाजानां नाम एना एहिज जाणवा.

६ छठे बोले वर्षधरक्षेत्र कहेछे. एक जरत, बीजो हेमवंत युगलक्षेत्र, त्रीजो हरिवास युगलक्षेत्र, चोथो ऐरवंतक्षेत्र, पांचमो ऐरण्यवंत युगलक्षेत्र, छठो रम्यक्युगलक्षेत्र, अने सातमो माहाविदेह क्षेत्र ए सात जंबूद्वीपमां तथा धातकीखंडमां एथी बमणा चौदवर्ष धर क्षेत्र छे अने पुष्करार्द्धमां पण धातकीनी पेरें चौदवर्षधर छे सर्व मली अढी द्वीपमां पांत्रीश वर्ष धर क्षेत्र छे एनी लंबाइ पोहोलाइनां प्रमाण आगल कहेशे.

७ सातमे बोले वर्षधर पर्वत कहे छे एक हेमवंत, बीजो महाहेमवंत, त्रीजो निषध चोथो शिखरी, पांचमो रूपी, छठो नीलवंत, अने सातमो मेरु ए सात जंबूद्वीपमां छे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा चौदछे ते सर्व जंबूद्वीपनां वर्षधर प्रमाणे उंचा छे पण लंबाइमां चार चार लाख योजनछे हवे पोहोल पणो कहेछे बे हेमवंत अने बे शि खरी ए चार पर्वत बे हजार एकसो पांच योजन अने ५ जाग तथा बे महा हेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत आठ हजार चारशो एकवीश योजन अने १ जागछे तथा बे निषध अने बे नीलवंत ए चार पर्वत तेत्रीश हजार छशें चोरासी योजन उपर ४ जाग छे हवे पुष्करार्द्धमां पण जंबूद्वीपथी बमणा वध्या तेवारे चौद पर्वत थया ते सर्वे लंबाइमां आठ लाख योजन प्रमाणेछे अने पोहोलाइमां जेटला छे ते कहेछे बे हेम वंत तथा बे शिखरी ए चार पर्वत चार हजार बशें दश योजन अने १० जाग छे तथा बे माहाहेमवंत अने बे रूपी ए चार पर्वत शोल हजार आठसें बेंतालीश यो जन पउर २) जाग छे तथा बे निषध अने बे नीलवंत मली चार पर्वत शडशठ हजार त्रणसें अडशठ योजन उपर ८ जाग छे.

हवे पांच मेरुनो उंचपणो तथा पोहोल पणो कहेछे. प्रथम जंबूद्वीपनो मेरु एक हजार योजन धरतीमां उंडो छे अने नवाणुं हजार योजन उपर उंचो छे सरवाले लाख योजन उंचो छे मेरुना मूलना हेठला छेहेडाथी समजूतल पृथ्वी एक हजार योजन उंची छे तथा समजूतलथी वली पांचशें योजन उंचो नंदन वन छे तथा नंदनवनथी शाडा बाशठ हजार योजन उंचो सोमनस वनछे तथा सोमनसवनथी छत्रीश हजार योजन उंचो पंडुक वनछे एरीते एक लाख योजन उंचपणानां थया अने उपर चालीश योज न उंची चूलीका छे ते चोटली सरखी छे ए मेरुनो उंचपणो कह्यो हवें पोहोल पणो कहेछे मूल धरतीमां दशहजार ने नेवुं योजन उपर एक योजननां अगीआर जाग क रीयें तेवा दस जाग एटलुं पोहोल पणेछे पछी त्यांथी प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां सम जूतल आगल बराबर दशहजार योजननो पोहोल पणे थयो छे तथा नंदनवन पासें

(९९५४) योजन अने एक योजननां अगीआर नाग करीयें तेवा ७ नाग उपर एट लुं पोहोल पणे छे तथा सोमनसवन आगल (४२७२) योजन उपर अगीआरीआ आठ नाग एटलुं मेरुनो विष्कंन छे तथा पंमूकवन पासें १००० योजन मेरुनो विष्कंन छे हवे धातकी खंमनां बे मेरु तथा पुष्करार्द्धनां बे मली चार मेरु प्रत्येकें एक हजार योजन धरतीमां छे अने चोरासी हजार योजन उपर छे मली पच्चासी हजार योजन उंचपणे छे ए चारे मेरु उपर चूलिका नथी एम अढीद्वीपमां ३५ वर्षधर पर्वत छे.

८ आठमे बोलें अढीद्वीप मांहेला शाश्वता पर्वतनी संख्या कहेछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपनां पर्वतो कहेछे सात वर्षधर पर्वत पूर्वें कह्या ते जाणवा अने चोत्रीश वैताढ्य पर्वत छे ते आवी रीतें एक नरतक्षेत्रनां मध्यनो, बीजो एरवत क्षेत्रनां मध्यनो तथा बत्रीश विजय माहाविदेहना तेमां बत्रीश वैताढ्य छे एवं चोत्रीश वैताढ्य थया तथा चार युगलीयानां खेत्रनी विचमां चार गोल वृत्त वैताढ्य छे तथा कुरु खेत्रना यमक, समक, चित्र अने विचित्र ए चार तथा नीलवंतनां बे गजदंता अने निषधनां बे गजदंता मली चार गजदंत पर्वत तथा निषधने हेठल पांचकुंमने बे पासें १०० कंचनगिरि छे अने नीलवंत हेठल पांच कुंमने बे पासें १०० कंचनगिरि छे मलीने बसो कंचनगिरि छे तथा महाविदेहमां पूर्वपश्चिमनां मली शोल वरकारा पर्वत छे ए सर्वमली २६९ पर्वत जंबूद्वीपमां थया. एथकी बमणा ५३८ धातकी खंममां छे तेनी साथे बे इक्षुकार नेलीयें तेवारें ५४० थाय तथा धातकी खंम प्रमाणे पुष्करार्द्धनां पण ५४० पर्वत जाणवा तथा लवणसमुद्रमां चारदिसिनां वेलंधर अनुवेलंधर देवोनां आठ पर्वत मांहे नेलीयें तेवारे सरवाले १३५७ शाश्वता पर्वत अढीद्वीपमां छे.

९ नवमे बोलें अढीद्वीपनां शाश्वता कूट कहेछेः–तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां २६९, पर्वत छे ते उपर जे कूट छे ते कहेछे तेमां ३४ वैताढ्य उपर प्रत्येकें नव नव कूट गणतां ३०६ थया तथा हिमवंतें अगीआर, महाहेमवंतें आठ, निषधेंनव, शिखरीयें अगीआर, रूपी पर्वतें आठ कूट, नीलवंतें नव कूट, तथा बे गजदंतें नव नव, अने बे गजदंतें सात सात मली चार गजदंताना बत्रीश कूट, तथा शोल वक्षस्कार पर्वतें प्रत्येकें चार चार कूट गणतां ६४ थाय तथा मेरु पर्वतनां नवकूट ए रीतें सरवाले एकशठ पर्वतना ४६७ कूट थया अने यमकादि चार तथा वृत्तवैताढ्य चार एवं आठ पर्वत उपर कूट नथी तथा धातकी खंममां एथकी बमणा ९३४ अने पुष्करार्द्धमां पण ९३४, मली २३३५, कूट अढीद्वीपमां छे.

१० दशमें बोलें चक्रवर्त्ति जिहां पोतानुं नाम लखे तेने ऋषनकूट कहीयें ते जंबूद्वीपमां बत्रीश विजयनां नीलवंत पर्वत पासे शोल कूटछे, तथा निषध पर्वत पासे

शोल कूट छे मलीने बत्रीश थया तथा जरतक्षेत्रनो हिमवंत पर्वत पासें एक कूटछे अने ऐरवत क्षेत्रनो शिखरी पर्वत पासें एक कूटछे एरीतें सरवाले चोत्रीश रुषजकूट जंबूद्वीपमां छे अने ए थकी बमणा अडशठकूट धातकी खंमनांछे तथा अडशठ कूट पुष्करार्द्धमां छे सरवाले अढीद्वीपमां १७० रुषज कूटछे.

११ अगीआरमें बोलें त्रण खंम साधीने वासुदेव जेने उपाडे तेने कोटी शिला कहीयें ते शिला जंबूद्वीपमां चोत्रीशछे तथा धातकी खंममां एथकी बमणी अडशठ अने पुष्करार्द्धमां पण अडशठ मली अढीद्वीपमां १७० कोटी शिलाछे.

१२ बारमें बोले प्रत्येक वैताढ्य पर्वत दीठ तिमिश्रा अने खंम प्रपात एवी बे बे गुफाउछे ते जंबूद्वीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ गुफाछे, धातकीमां अडशठ वैताढ्यनी एकशो छत्रीश अने पुष्करार्द्धमां पण एकसो छत्रीश मली अढीद्वीपमां३४०गुफाछे.

१३ तेरमें बोले बिलनी संख्या कहेछेः–प्रथम जंबूद्वीपमां जरतक्षेत्रनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोत्तेर बिल तथा ऐरवत क्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवतीनां बहोत्तर बिल तेमज बत्रीश विजयमां पण प्रत्येक विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे नदीनां बहोत्तर गणतां २३०४ बिल महाविदेहमांछे सरवाले जंबूद्वीपमां २४४७ तथा धातकी खंममां ४७ए६ अने पुष्करार्द्धमां पण ४७ए६ सरवाले अढीद्वीपमां १२२४० बिल छे.

१४ चौदमें बोलें मागधादि तीर्थनी संख्या कहेछेः–तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां मागध, वरदाम अने प्रजास ए त्रण तीर्थ चक्रवर्त्ति साधेछे तेमां जरतनां त्रण तीर्थ दक्षण दरवाजे समुद्रमांछे, अने ऐरवतनां त्रण तीर्थ उत्तर दरवाजे समुद्रमांछे, एवं छ थया तथा पूर्व महाविदेहनी शोल विजयछे तेमां साहामा साहामी आठ आठ विजय वच्चें सीता नदीमां साहामा साहामा त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीता नदीमां अने पश्चिम महाविदेहनी शोलविजय तिहां साहामा साहामी आठ आठ विजय विच्चें सीतोदा नदीमां साहामा साहामी त्रण त्रण तीर्थ गणतां शोल त्रिक अडतालीश तीर्थ सीतोदा नदीमां छे मली छनुं तीर्थ महाविदेहमां थया तेनी साथें पूर्वोक्त जरत ऐरवतनां छ मेलवीयें तेवारें १०२ तीर्थ जंबूद्वीपमांछे, तेथी बमणा २०४ धातकी खंमनां अने २०४ पुष्करार्द्धनां मली अढीद्वीपमां ५१० तीर्थ छे.

१५ पंदरमें बोलें खंमनी संख्या कहेछेः–तिहां पांच जरत, पांच ऐरवत, अने पांच महाविदेहने बत्रीश विजयें गणतां एकशोने शाठ थानक थाय तेनी साथें पूर्वोक्त पांच जरत अने पांच ऐरवतनां दश स्थानक मेलवतां १७० थानक अढीद्वीपमां थाय ते प्रत्येक थानकमां छ छ खंमछे तेवारें एकसो सीतेरने छ ए गुणतां१०२० खंम थया तेमां जंबूमां २०४ धातकीमां ४०७ अने पुष्करार्द्धमां ४०७ जाणवा.

१६ शोलमें बोले छ खंडमां बत्रीश हजार देश होयछे माटे एकंदर देश संख्या कहेछेः—तिहां जंबूद्वीपमां एक भरत बीजो ऐरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश थानक छ छ खंड वाला छे ते प्रत्येक थानकमां ३२००० देश गणतां १०८८००० देश जंबूद्वीपमां छे तथा २१७६००० देश धातकी खंडमां छे तथा २१७६००० देश पुष्करार्द्धमां छे सरवाले अढीद्वीपमां ५४४०००० देश छे.

१७ सत्तरमें बोले छ खंडमां पांच अनार्य खंड अने एक आर्य खंड तिहां आर्य खंडमां अयोध्या नगरीछे तेनी संख्या कहेछेः—जंबूमां चोत्रीश अयोध्या, धातकीमां अडशठ अयोध्या अने पुष्करार्द्धमां अडशठ मली एकसो सीतेर अयोध्या अढीद्वीपमांछे अने आर्यखंड पण एकशो सीतेरछे ते आयोध्या नगरी बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली होय सर्वेनी एज मर्यादा जाणवी तिहां जे आर्यखंड होय तेमां धर्म होय तीर्थंकर, गणधर, चक्री, बलदेव, वासुदेव प्रमुख त्रेशठ शिलाका पुरुष आर्य खंडमां उपजे, मोक्ष गमन होय अने पांच अनार्यखंडमां धर्म न होय, सर्वे म्लेच्छ होय.

१८ अढारमें बोलें कया खंडमां केटला देश होय ते कहेछेः—तिहां छ खंडमां मली ३२००० देश होय तेमां पांच अनार्यखंडमां प्रत्येकें ५३१८ देश होय अने छठा आर्य खंडमां ५३२० देश होय तेमां साढा पचीश देश आर्य अने बीजा अनार्य देश जाणवा. ए रीतें अढीद्वीपना सर्वे खंडमां देशनी मर्यादा जाणवी. एमां ५३१८ देश पांच अनार्य खंडमां लखेलाछे परंतु ५३३६ देश गणतां ३२००० देशनुं हीसाब मलेछे पण एक प्रतमां तथा एक पट्टमां उपर कहेला रीतें लख्युं छे. ते प्रमाणे में पण अहीं लिख्युंछे.

१९ उंगणीशमें बोलें विद्याधर तथा आभियोगिक देवनी श्रेणीयो वैताढ्य दीठ कहेछेः—तिहां प्रत्येक वैताढ्य दीठ त्रण त्रण कांडछे तेमां भूमीथी दश योजन प्रथम कांडछे तेने दक्षण पासें पचाश नगर अने उत्तर पासें साठ नगर विद्याधरना छे एवी बे बे श्रेणी वैताढ्यें लेवी तेवारे जंबूद्वीपमां चोत्रीश वैताढ्यनी अडशठ श्रेणी, तथा धातकीमां १३६ अने पुष्करार्द्धमां १३६ मली ३४० श्रेणी विद्याधरनीछे हवे वैताढ्यनां प्रथम कांडथी वली दश योजन उंचो बीजो कांडछे तिहां दक्षण उत्तर बे पासें आभियोगिक देवोनी बे श्रेणीछे तेथी पूर्वोक्तरीते एनी पण ३४० श्रेणी अढीद्वीपमांछे ए बेहुनी श्रेणी एकठी करीयें तेवारें ६८० श्रेणी अढीद्वीपमांछे.

२० वीशमे बोले द्रह संख्या कहेछेः—तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां शोल द्रहछे ते देखाडेछे. प्रथम हेमवंत पर्वतें पद्मद्रहछे, बीजो महाहिमवंतें महापद्मद्रहछे, त्रीजो निषधपर्वतें तिगिछिद्रहछे, चोथो शिखरीपर्वतें पुंडरिक द्रहछे, पांचमो रूपीपर्वतें महापुंडरिक द्रहछे, छठो नीलवंत पर्वतें केशरीद्रहछे, ए प्रकारें छ द्रह तो पर्वतोनी उपरेंछे हवे दश द्रह

बीजा देखाडेछे तिहां निषधपर्वत उपरथी सीतोदा नदी पृथवी उपर पडेछे ते प्रथम द्रहथी बीजा, त्रीजा, चोथा अने पांचमां द्रहमां पडेछे तिहां पहेलो निषधद्रह, बीजो देवकुरुद्रह, त्रीजो सुरप्रभद्रह, चोथो सुलसद्रह अने पांचमो विद्युत्प्रभ द्रह ए पांच द्रह मूकी पछी आगल चालीछे माटे ए पांच द्रह जाणवा तेमज नीलवंतपर्वत उपरथी सीतानदी धरती उपर पडेछे ते प्रथम द्रहथी बीजा, त्रीजा, चोथा, पांचमांमां पडीने आगल चाली ते पांच कुंभद्रहनां नाम कहेछे प्रथम नीलवंतद्रह, बीजो उत्तरकुरुद्रह, त्रीजो चंद्रद्रह, चोथो ऐरवत द्रह, पांचमो माल्यवंतद्रह एरीते ए दस द्रह धरती उपरछे ते पूर्वोक्त छ साथें मेलवतां शोल द्रह जंबूद्वीपमांछे अने तेथी बमणा बत्रीश द्रह धातकी खंममां छे तथा बत्रीश द्रह पुष्करार्द्धनां मली अढीद्वीपमां ८०, द्रह छे.

२१ एकवीशमें बोलें द्रहनी देवी देव कहेछेः— प्रथम हेमवंत पर्वतें पद्मद्रह छे. एनां मध्यनां एक मुख्य महोटा कमल पाछल बीजा लघु कमलनां छ वलयछे, तेनां १२०५०१२० एटला लघुकमल तेणे वींटयुं थकुं महोटुं कमलछे ते उपर श्री देवी रहेछे ए पद्मद्रह उंमो दस योजन, पोहोलो पांचसें योजन अने लांबो एक हजार योजनछे उपर श्रीदेवी रहेछे ते भुवनपतिदेवोनी जातिछे, हवे बीजो महाहिमवंत पर्वतें महापद्मद्रहछे ते दशयोजन उंमो, हजार योजन पोहोळुं अने बे हजार योजन लांबोछे, तेना मध्यनां एक मुख्य महोटा कमल पाछल लघु कमलोना बार वलयछे तेनां २४१००२४० एटला लघु कमलें वींटयुंछे ते उपर ह्रीदेवीनो निवासछे त्रीजो निषध पर्वतें तिगिञ्छिद्रहछे तेनो मध्यनो मुख्य कमल चोवीश वलयें वींटयुंछे तेमां ४८२००४८० एटला लघु कमलछे तिहां धीदेवीनो निवासछे एनुं एक पल्यायुछे, ए द्रह दश योजन उंमो, बे हजार योजन पोहोलो अने चार हजार योजन लांबोछे हवे ऐरवतखेत्रथी शिखरी पर्वत उपर पुंमरिक द्रहछे ते हिमवंतनां पद्मद्रहनी मर्यादायेंछे एमां लक्ष्मीदेवीनुं निवासछे एनुं एक पल्यायुछे पांचमो रूपी पर्वतें महापुंमरिक द्रहछे ते महाहिमवंत पर्वतनां महापद्मद्रहनी मर्यादायेंछे एमां बुद्धिनामे देवीनुं निवासछे एनुं एकपल्यायुछे छठो नीलवंत पर्वतें केशरीद्रहछे ते निषधपर्वतनां तिगिञ्छिद्रहनी मर्यादायेंछे एमां कीर्त्तिदेवीनुं निवासछे तेनुं एकपल्यायुछे ए छ द्रह पर्वतो उपरछे तेनी देवी उ कही हवे पृथ्वी उपरनां दश कुंमद्रहछे तेमां देवताउनां निवासछे तथा जे रीतें पर्वत उपरें लक्ष्मी देवीनी संकलना कही तेम देवकुरु उत्तरकुरुमां महोटुं जंबूवृक्षछे ते पण एटलेंज लघु जंबूवृक्षें करी वींटेलुंछे ते आगल लखशुं एरीतें जंबूमां छ देवी तथा दश देवता धातकीमां एथी बमणा बार देवी ने वीश देवता, पुष्करार्द्धमां पण बार देवीने वीश देवता मली अढीद्वीपमां द्रहनिवासी त्रीसदेवी अने पचाश देवता जाणवा.

२२ बावीशमें बोलें अढीद्वीपनी नदीउं कहेछेः—सर्व मली जंबूद्वीपमां १४५६००० नदीछे तेमां मूलमां चौद महानदीछे तिहां भरतक्षेत्रमां गंगा अने सिंधु, ऐरवतमां रक्ता अने रक्तवति ए चार महानदीनो चौद चौद हजार नदीनो परिवारछे तथा हेमवंत युगलीयानां क्षेत्रमां रोहिता अने रोहितांसा तथा ऐरण्यवत युगलीयानां खेत्रमां रूपकुला अने सुवर्णकुला ए चार महानदी अठावीश अठावीश हजार नदीने परिवारेछे एवं आठ थइ तथा हरिवास युगलीयानां खेत्रमां हरिकंता अने हरिसलीला तथा रम्यक् युगलीयानां खेत्रमां नरकंता अने नारिकंता एवं चार महानदी छपन्न छपन्न हजार नदीने परिवारेंछे एवं बार थइ तथा पूर्व महाविदेहमां सीता अने पश्चिम महाविदेहमां सीतोदा ए बे महानदीओनो मली १०६४००० नदीनो परिवारछे एवं चौद महानदी जंबूद्वीपमां थइ तेमां प्रथमनी बार नदीनो हीसाब तो प्रगटछे अने सीता सीतोदानी संख्या लखेछेः—नीलवंत पर्वतथी नीकलीने पूर्व महाविदेहमां सीतानदी गइ तेणे बे बाजुयें आठ आठ विजय कीधी तेवारे शोल विजयनी गंगा अने सिंधु ए बे बे गणता बत्रीश नदी थइ अने छ अंतरनदी छे एरीतें अडत्रीश महा नदी थइ ते प्रत्येकनो चौद चौद हजार नदीनो परिवार गणतां ५३२००० नदी पूर्व महाविदेहनी सीता महानदीमां पडे छे अने एज प्रमाणे निषध पर्वतथकी सीतोदानदी नकली ते पश्चिम महाविदेहमां गइ तिहां पण अडत्रीश महानदीनो परिवार ५३२००० नदीनोछे सरवाले १०६४००० नदी थइ तेनी साथे पूर्वोक्त बार महानदीनी परिवार भूत ३९२००० नदी मेलवीयें तेवारें १४५६००० नदीओ जंबूद्वीपमां थाय अने एथकी बमणी धातकी खंडमां २९१२००० तथा पुष्करार्द्धमां पण २९१२००० सरवाले अढीद्वीपमां ७२८०००० नदीछे.

२३ त्रेवीशमें बोलें नदीनी लंबाइ पोहोलाइ आदिक कहेछेः—भरतनी बे अने ए रवतनी बे नदी एवं चार नदी मूलें सवा छ योजन अने पछी वधती वधती समुद्र प्रवेसें साडा बाशठ योजन पोहोलीछे तथा हेमवंत युगल क्षेत्रनी बे अने ऐरण्यवत युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूलें साडा बार योजन अने समुद्र प्रवेसें सवासो योजन पोहोलीछे. तथा हरिवास युगल क्षेत्रनी बे अने रम्यक् युगल क्षेत्रनी बे एवं चार नदी मूलें पच्चीश योजन पोहोली अने समुद्र प्रवेशें अढीसो योजन पोहोली छे तथा सीता अने सीतोदा ए बे नदी मूलें पच्चास योजन पोहोली अने समुद्र प्रवेसें ऊंडी विजयमां पडी तिहां पांचशो योजन पोहोली छे तथा धातकी खंडमां अने पुष्करार्द्धमां पण संख्यायें जंबूद्वीप थकी बमणी बमणी नदी छे तेनी लंबाइ पोहोलाइ पण एज रीतें जाणवी.

२४ चोवीशेमें बोलें जंबूद्वीपमां देवकुरुक्षेत्रमां एक महोटा जंबुवृक्षनी पाखल लघु

जंबुवृक्षनां ७ वलयछे तेनी संख्या एक क्रोड, वीस लाख, पच्चाश हजार, एकशोने वीशछे तेणेकरी जंबूवृक्ष वींटचुंछे ते उपर अणाढीयो देव वसेछे एम उत्तरकुरुमां साल्मली वृक्षछे तेनी पण एज रीतें मर्यादछे तेना उपर गरुल देवतानो निवाशछे. तथा धातकी खंमनां बे देवकुरुछे तेमां बे महोटा साल्मली वृक्षछे तेनी पाछल बार वलय लघु सा ल्मली वृक्षनांछे तेनी संख्या २४१००२४० एटला साल्मली वृक्ष वींटयाछे तेना उपर पण गरुल देव रहेछे. तथा धातकी खंमना बे उतरकुरुमां बे महोटा महा धावडीना वृ क्षछे ते प्रत्येक लघु धावडी वृक्षनां बार वलयें करी वींटयाछे तेनी संख्या २४१००२४० छे तेनां उपर सुदर्शन अने प्रीयदर्शन देवनो निवास छे तथा पुष्करार्द्धनां माहाविदे हनां बे देवकुरुमां बे महोटा साल्मली वृक्षछे ते लघु साल्मलीवृक्षनां चोवीश वलयें करी वींटयाछे तेनी संख्या ४८२००४८० नी छे ते महोटा वृक्ष उपर गुरुड देवतानो निवा सछे तथा पुष्करार्द्धनां उत्तर कुरुमां एक महोटो पद्मवृक्षछे तेपण चोवीश वलयें वींटयोछे तेनां उपर पद्मदेवनो निवासछे, तथा पुष्करार्द्धनां पश्चिम महाविदेहनां उत्तरकुरुमां मुख्य महापद्म वृक्ष पण चोवीश वलयें वींटचुंछे तेनी संख्या पूर्वपरे जाणवी तेनाउपर पुंमरि क देवनो निवासछे ए मुख्यवृक्ष सर्वे वेदिका अने वनखंमे सहीतछे तेनो पोर पांचशें योजन पोहोलो अने बार योजन उंचोछे ते वृक्षो उपर देव निवासनां स्थान तथा श्री जिन भुवनछे ए सर्व वृक्ष रत्नमय पृथवीकायनां छे शाश्वताछे.

२५ पच्चीशमें बोलें जंबू द्वीपमां एकेकी विजय वख्कारा पर्वत लगें पोहोली २२१३॥ योजनछे अने नीलवंत पर्वतथी सीतानदी लगें तथा निषध पर्वतथी सीतोदा नदी पर्यं त १५६०२ योजन अने उपर बे कला एटलीलांबीछे तथा धातकी खंमनां एकेकी विजय ए६०३ योजन उपर एक योजननां शोल नाग करीयें तेवा ७ नाग एटली पोहोली छे अने शोले विजय १५३६५४ योजन पोहोली छे तथा पुष्करार्द्धनी एकेकी विजय १ए७ए४। योजन पोहोलीछे अने शोले विजय ३१६७०८ योजन पोहोली छे.

२६ छवीशमें बोलें जंबु द्वीपमां महाविदेहनी बार अंतरनदी एकशो पच्चीश योजन पोहोलीछे तथा धातकी खंमनां अंतरनदी अढीसो योजन पोहोली छे अने पुष्करार्द्धमां अंतरनदी पांचशें योजन पोहोली छे.

२७ सत्तावीशमें बोलें जंबु द्वीपमां वक्षस्कारा पर्वत ५०० योजन उंचा अने पोहोला छे तथा धातकी खंमनां वक्षस्कारा हजार योजन उंचा अने पोहोला छे तथा पुष्करा र्द्धमां वक्षस्कारा बे हजार योजन उंचा अने बे हजार योजन पोहोलाछे.

२८ अठावीशमें बोलें जंबू द्वीपमां दरवाजा आगल पूर्व पश्चिमनुं एकेकुं वनमुख ज

गति सुधां १०२२ योजननुं छे अने धातकी खंडमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन तं तथा पुष्करार्द्धमां एकेकुं वनमुख ११६७७ योजन छे.

२७ ओगणत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां नद्रशालवन २२००० योजन लांबो छे तथा धातकी खंडमां एकेकुं नद्रशालवन मेरुपर्वतसहित २२५१५७ योजन लांबो छे अने पुष्करार्द्धमां एकेकुं नद्रशा लवन ४४०७१६ योजन लांबो छे.

३० त्रीशमें बोलें वीश गजदंतगिरिनुं विचार कहेछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां निषध पर्वतथी बे गजदंता पर्वत निकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम सोमनस गजदंतो धोले वर्णे छे ते अग्निकूंणमां वल्यो बीजो विद्युत्प्रन गजदंतो राते वर्णे छे ते नैरुत कूंणमां वल्यो तथा नीलवंतपर्वतथी बे गजदंता नीकल्या ते मेरुपर्वत तरफ चाल्या तेमां प्रथम गंधमादन गजदंतो पीले वर्णे छे ते वाव्य कूंणमां वल्यो बीजो माल्यवंत गजदंतो नीले वर्णे छे ते इशान कूंणमां वल्यो एम चार गजदंता जाणवा ए चारे गजदंता ३०२०७ योजन ने छ कला लांबा छे अने निषध तथा नीलवंतथी नीकल्या तिहां धरतीथी चारसें योजन उंचा छे पछी वधता वधता मेरुपर्वतनी पासें पांचशे योजन उंचा थया छे तथा धातकी खंडमां पूर्व पश्चिम मलीने बे मेरु पर्वतछे माटे तिहां आठ गजदंताछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपनी परे बे बे मली चार गजदंता ३५६२२७ योजन लांबाछे अने बीजा बे बे मली चार गजदंता ५६७२५७ योजन लांबाछे तथा पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बे मेरुछे माटे तिहां आठ गजदंताछे तेमां पण आगली तरफनां धातकीनी परें बे बे मली चार गजदंता १६२६११६ योजन लांबाछे अने पाछली तरफना बीजा बे बे मली चार गजदंता २०४३२१७ योजन लांबाछे ए सर्वे गजदंता मेरु तरफ जतां प्रथम उंचाइमां चारसें चारसें योजन छे अने छेहडे मेरुनी पासें पांचसें योजन उंचाइमां छे,

३१ एकत्रीशमें बोलें इक्षुकार पर्वतनो विचार कहेछे तिहां प्रथम जंबूद्वीपमां इक्षुकार पर्वत बिलकुल नथी अने धातकी खंडमां बे इक्षुकारछे तेणे वचमां पडीनें बे बे नरत अने बे बे ऐरवत कर्याछे ते लांब पणे चार चार लाख योजन छे अने उंचा पांचशें योजनछे तथा पोहोल पणे एक हजार योजनछे ते उपरें एकेको जिनप्रसाद छे तथा पुष्करार्द्ध द्वीपमां पण बे इक्षुकारछे तेणे पण वचमां पडी बे बे नरत अने बे बे ऐरवत कर्याछे ए लांब पणे आठ आठ लाख योजनछे अने उंचपणे पांचशें योजन छे तथा पोहोला एकेक हजार योजन छे एना उपर पण एकेकुं श्रीजिनप्रासाद छे अढीद्वीपनां चित्रामणमां जगतीनां दरवाजा पर्यंत लाल रंग नरेछे पण तिहां दरवाजानी जगा राखवी जोइयें दरवाजाना अंतर पर्यंत छे इहां (इक्षूके०) सेलडी तेनो सांठो जेवो लांबो थाय तेनां सरखा ए पर्वत पण लांबा छे माटे एनुं इक्षुकार एवो नाम छे.

३२ बत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां भरत क्षेत्र तरफ हिमवंत युगल क्षेत्रमां शब्दापाती वृत्तवैताढ्यछे अने हरिवास युगल क्षेत्रमां गंधावती वृत्तवैताढ्यछे तथा ऐरवत क्षेत्र भणी ऐरण्यवत युगल क्षेत्रछे तेमां वकटापाती वृत्तवैताढ्यछे तथा रम्यक् युगल क्षेत्रमां माल्यवंत वृत्तवैताढ्यछे ए चार जंबूद्वीपमां छे तथा एथकी बमणा एज नामे धातकी खंडमां आठ वृत्तवैताढ्यछे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठ वृत्तवैताढ्यछे सरवाले अढीद्वीपमां वीश वृत्तवैताढ्यछे ते सर्वे पालाने आकारें गोलछे मूल तथा उपरें एकेक हजार योजन पोहोला छे अने उचां पण एकेक हजार योजन छे.

३३ तेंत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपनां देवकुरुमां यमक अने समक ए बे अने उत्तरकुरुमां चित्र विचित्र ए बे मली चार पर्वतछे अने धातकी खंडमां ए थकी बमणा आठछे तथा पुष्करार्द्धमां पण आठछे सरवाले अढीद्वीपमां वीश पर्वतछे तेसर्वे एकेक हजारयोजन उंचाछे

३४ चोत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां निषध पर्वतने नीचें सीतोदा नदीने बे पासें थइने एकसो कंचनगिरिछे तथा निलवंत पर्वतने नीचें सीता नदीने बे पासें थइने एकशो कंचन गिरिछे एरीते बशो कंचनगिरि जंबूद्वीपमांछे तेथकी बमणा चारसो कंचनगिरि धातखंडमांछे तथा चारसो कंचनगिरि पुष्करार्द्धमांछे सरवाले अढीद्वीपमां एक हजार कंचनगिरिछे तेनां उपर तिर्यकजृंभक देवताना निवासछे ए सर्वे पर्वत शो शो योजन उंचाछे.

३५पांत्रीशमें बोलें जंबूद्वीपमां,भरतनी दिसायें पहेलुं हेमवंत युगल क्षेत्रछे तथा ऐरवतनी दिसायें पहेलुं ऐरण्यवंत युगल क्षेत्रमां त्रीजो आरो वर्त्तेछे त्यांना मनुष्यनो एक गाउ प्रमाण शरीरछे एक पल्योपम आयुछे अने चोथ भक्त एकांतरें आमला प्रमाणे आहार कल्पवृक्ष आपेछे एने पृष्ट करंडक चोशठछे, अपत्यपालना ७९ दिवस करे अने अपत्य एटले दीकरा दीकरी जेवारें ओगण्याएंसी दिवसनां थाय तेवारे माता पिता मरण पामीने देवलोकमां जाय हवे भरत तरफ हरिवास क्षेत्र अने ऐरवत क्षेत्रनी तरफ रम्यक् क्षेत्र ए बे युगलक्षेत्र मध्ये बीजो आरो वर्त्तेछे ए युगलीयानुं बे गाउ शरीर अने बे पल्यायुछे १२८ पृष्ट करंडीछे, छठभक्तछे,चोसठ दिवस अपत्य पालना करी माता पिता स्वर्गें जाये इहां हरिवास क्षेत्रमां उपजेलो वनमाला नामे राजानो जीव युगलीयो हतो तेने वीराशालवीनो जीव किल्बिषियो देव थयो तेणे क्रोध वसें ए युगलियाने नरकमां मोकलवा सारुं हरिवासथी उपाडीने चंपानगरीयें मूक्या अने बे पल्योपमनुं आयु तोडीने ते समयना आयु प्रमाणे आउखुं कर्युं तेने राज्यें बेसाडी मद्य मांस कुकर्म शीखवीने नरकें मोकल्युं ए अछेरुं थयुं ए हिरवास क्षेत्रना भाव कह्या हवे आ तरफ निषध पर्वतनी नीचें देवकुरुक्षेत्र अने पेहेली तरफ नीलवंत पर्वतनी नीचें उत्तरकुरु क्षेत्र ए बे युगल क्षेत्रमां पहेलो आरो वर्त्तेछे ए युगलीयानुं त्रण गाउ शरीर अने त्रण पल्यायुछे

२५६ पृष्ट करंमीछे ओगण पचास दिवस अपत्य पालना करे,तूवर प्रमाणे कल्प वृक्षनो आहार, अष्टमजक्त एटले चोथे दिवसें आहार करे ए युगलीयानां पुण्य प्रजावें दस जातना कल्पवृक्ष आहारादिक सर्व वंछित पूरण करेछे ए वृक्षमां एवो स्वजावजछे पण देवता पूरता नथी ए सर्व युगल जड़िक स्वजाव वाला छे एमां क्रोध नथी मात्र छींक बगासी उधरस करतां एनुं मरण थाय ए रीतें जंबूद्वीपमां युगलीयाना छ क्षेत्रछे तेथी बमणा बार क्षेत्र धातकी खंमनांछे तथा बार पुष्करार्द्धमांछे ते सर्वेना सरखा जावछे सरखी रीत मर्यादछे सरवाले अढीद्वीपमां त्रीश युगलीयानां क्षेत्रछे.

३६ छत्रीशमें बोलें छपन्न अंतरद्वीपनो विवरो कहेछेः—जंबूद्वीपमां आपणी तरफ हिमवंत प्रर्वत अने ऐरवतनी तरफ शिखरी पर्वत ए बे पर्वतें जंबूद्वीपनां कोट उपरथी पर्वत दीठ चार चार दाढा नीकलीछे ते वदिसी तरफ वलीछे लवण समुद्रनां पाणी थी उंची देखायछे अढी योजन उंची तथा आठ हजार चारसें योजन लांबी छे ए आठे दाढा अधर चाली गइछे ते एकेकी दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपछे तेवारें आठ दाढानां छपन्न अंतर द्वीप थया ए उपर युगलीया मनुष्य वसेछे तेनो आठसें धनुष शरीर छे एक पल्योपमनो असंख्यातमो जाग आयुछे ए युगलीया मरणपामीने जवनपत्यादिक देवोमां जइ उपजेछे ए छपन्न अंतरद्वीपमां त्रीजा आराना छेडा सरखा जावछे एटले जेवो नाजिराजानो पिता छठो कुलकर हतो ते वखत जे जाव वर्त्तता हता ते प्रमाणेनां जाव सर्वकालें तिहां वर्त्ते छे ते जाव फरे नही.

३७ शाडत्रीशमें बोलें महाविदेह क्षेत्रमां चोथो आरो वर्त्तेछे. पांचसें धनुष शरीर मान, पूर्वकोटी वर्ष आयु, नित्य आहार तथा जंबूद्वीपना विदेहमां चार तीर्थंकरछे तेमां पूर्वविदेहना वनमुख समीप आठमी पुष्कलवती विजयमां पुंमरिकिणी नयरी तिहां सीमंधरनामे विहरमान छे तथा पश्चिम विदेहनां वन पासें पच्चीसमी वप्राविजय अने विजया नगरी तिहां श्रीयुगमंधर बीजा विहरमान छे तथा पूर्वविदेहनां वनमुख समीप नवमी वच्छविजय अने सूसीमा नयरी तिहां बाहुस्वामी त्रीजा विहरमान छे तथा पश्चिमविदेहनां वनमुख समीप चोवीसमी नलीनां वती विजय अने अयोध्यानगरी तिहां चोथा सुबाहु नामे विहेरमान तीर्थंकरछे ए रीतें जंबूद्वीपमां चार तीर्थंकरछे तथा धातकी खंमनां बे मेरु अने बे महाविदेहछे तेमां चार तीर्थंकर पूर्व महाविदेहमां अने चार तीर्थंकर पश्चिम महाविदेहमां एरीतें आठ तीर्थंकर छे तथा पुष्करार्द्धमां पण बे मेरु अने बे महाविदेहछे माटे तिहां पण पूर्वविदेहमां चार तीर्थंकर अने पश्चिमविदेहमां चार तीर्थंकर मली आठ छे सरवाले अढीद्वीपमां वीश विहरमान तीर्थंकर छे जेवीरीतें जंबूद्वीपमां आठमी, पच्चीशमी, नवमी अने चोवीशमी विज

यें अनुक्रमें चार तीर्थंकरछे तेवीरीतें धातकीखंम अने पुष्करार्द्धमां पण विजय अने नगरी तेटलामीज कहेवी अने तेनां नाम पण तेना तेहीज जाणवा.

नरतक्षेत्रमां सत्तरमां श्रीकुंथुनाथ अने अढारमां श्रीअरनाथने अंतरालें ए अढी द्वीप मांहेला वीशे तीर्थंकरनो जन्म एक समयेंज थयलो छे अने श्रीमुनिसुव्रत तथा श्रीनमिनाथ नगवाननां अंतरालें एक समयेंज ए वीशे तीर्थंकरे दीक्षा लीधी हती ते एक हजार वर्ष पर्यंत छद्मस्थावस्थायें दीक्षा पालीने एक समयें वीशे तीर्थंकर केवलज्ञान पाम्या छे हमणा ए वीशे जिन केवली छे ते आवती चोवीसीमां सातमां आठमां तीर्थंकरनी वच्चें एक समयेंज वीशे तीर्थंकर मोक्षपुरीयें पधारशे सर्वेने चोरासी चोरासी गणधरछे, चोरासी चोरासी लक्ष पूर्व आयुछे, पांचसें पांचसें धनुष प्रमाणे शरीर मानछे एकेकाने दश दश लाख केवलीनी संख्याछे, शोशो कोडी साधुमुनिराजछे, सोसो कोडी साधवीछे ए प्रकारें वीशेविहरमान जिननां बे क्रोड केवलीछे, बे हजार क्रोड साधु छे, अने बे हजार क्रोड साधवी छे. ए वीश विजयमां सदा एकेक तीर्थंकरने सहचारी बीजा चोरासी चोरासी तीर्थंकर होय तेमां एक तो केवलज्ञाने सहीत होय अने बाकीनां त्र्यासीमां कोइ राजा, कोइ युवान, कोइ बालक, एरीतें होय ए सर्वे चोरासी लक्ष पूर्वने आकखे होय अने जेवारें चोरासीमो तीर्थंकर मोक्ष सधावे तेवारें त्र्यासीमां तीर्थंकरने केवलज्ञान ऊपजे तेवारे ते चोरासीमो कहेवाय ते वखतें वली एकनो जन्म थाय एरीतें चोरासीनी परंपरा सहचारीछे इहां कोइ कहेसे जे एक क्षेत्रमां एकथी बीजो तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव न होय तो एक क्षेत्रमां चोरासी तीर्थंकर केम संनवे तेनो उत्तर वृद्ध परंपरा वडील एम कहेछे जे ए वीश विजयनां शाश्वता नाव एमजछे पछी केवलीगम्य इहां जघन्य कालें वीश तीर्थंकर होय ते एकेको तीर्थंकर एकेक लक्षपूर्वनो थाय तेवारें बीजा तीर्थंकरनो जन्म थाय तथा गर्न मांहे होय एम चोरासी लक्ष पूर्वना आयु मध्ये त्र्यासी तीर्थंकर बीजा थाय तेने वीश गुणा करतां १६६० थाय अने मूलना वीश विहरमान होय सरवाले जघन्य कालें १६८० तीर्थंकर होय अने जेवारें १७० तीर्थंकर उत्कृष्ट विचरता होय तेवारे पांच नरत तथा पांच ऐरवतनां मली दश बाद करता बाकी १६० तीर्थंकर पांच विदेहनी विजयना ते प्रत्येकने त्र्यासीयें गुणतां १३२८० थाय तेनी साथें विहरमान १७० ने लीयें तेवारे १३४५० एटला तीर्थंकर उत्कृष्ट कालें होय इति विदेहजिन संख्या विचार समाप्तः अहीं सुधी जंबूद्वीपनो विचार कह्यो.

३८ आडत्रीशमें बोले लवण समुद्रनो अधिकार कहेछेः—सर्व मली असंख्याता समुद्रछे,ते सर्वे धुरथी मांमीने छेहेडा पर्यंत हजार हजार योजन ऊंडाछे अने मात्र एक ल

वण समुद्र मात्रायें मात्रायें उंमो थतो थतो जेवारे जंबूद्वीपथी पंचाणु हजार योजन समुद्रमां जइयें अने धातकी खंमथी पण पंचाणु हजार योजन समुद्रमां आवीयें तिहां मध्यनागें हजार योजन उंमोछे ए समुद्र गोतीर्थ कहीयें आ ठेकाणे हजार योजन उंमो, दश हजार योजन पोहोल पणे अने शोल हजार योजन उंचो कोटनी परें दग मालोछे शोल हजार योजन पाणी उंचो चडेलोछे ते उपर बे गाउनी वेल बे वार एक अहोरात्रमां उंची चढे छे ए पाणी सीरीते उछले छे ते कहेछे:-

पूर्वें वडवामुख, दक्षणे केयूप, पश्चिमें यूप अने उत्तरें ईश्वर ए चार महोटा पाताल कलशाछे ते लाख योजन उंचा लाख योजन पेटमां पोहोला अने दश हजार योजन मुख पोहोलुं, दश हजार योजननी पडगी, एक हजार योजन कलशनी ठीकरी जाडी छे तथा ३३३३३ योजन कलशामां हेठल वायुछे अने ३३३३३ योजन मध्यनागें वायु पाणीछे तथा ३३३३३ योजन उपर पाणीछे, ते मध्यना वायुने योगे उछलेछे. ए त्रणसें तेत्रीश योजन त्रण ठेकाणे लख्याछे तेना उपर पण एक योजननो त्रीजो नाग अधिक लेवो.

हवें पूर्वनो महोटो कलश अने दक्षणना कलशने वच्चें तथा दक्षणनाने पश्चिमना कलश वच्चें तथा पश्चिमनाने उत्तरनां कलश वच्चें २१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३-एवी संख्याये ए नव नव पंक्ति लघु पातल कलशनीछे तेवारे सर्व मली चारे पंक्तिना कलश ७८८४ छे ए लघु कलश दश हजार योजन उंमाछे तथा मध्यमां पोहोला पण तेटलाजछे अने एक हजार योजननुं मुखछे, एक हजार योजन पडगीछे सो सो योजननी ठीकरीछे ३३३३ योजन हेठल वायुछे ३३३३ योजन मध्य नागे वायु अने पाणी छे ३३३३ योजन उपर पाणी छे, ए लघु कलशनी मांहेथी पाणी उछले छे ते लवण समुद्रनी वच्चो वच्च पाणीनो गोल कोट बंधायछे.

ए चार महाकलशना अधिष्टाता पूर्वें काल, दक्षणे महाकाल, पश्चिमें वेलंब अने उत्तरे प्रनंजन ए चार देवछे, शोल हजार योजनना दगमालनी उपर बे गाउनी वेल वधेछे तेने दाबवाने जंबूद्वीपनी दशा नणी बेतालीश हजार देवताछे तथा वेल उपर शाठ हजार देवताछे तथा धातकीनी दिसायें वेल उपर बहोत्तेर हजार देवता छे सरवाले वेलंधर अनुवेलंधर एटलें दिसाना अने विदिसाना मलीने १७४००० देवता छे.

हवे ए देवतानां निवास कहेछे:-जंबूद्वीपना दरवाजाथी चार दिसायें तथा चार विदिसायें बेतालीश बेतालीश हजार योजन जइयें तिहां वेलंधर अने अणुवेलंधर नागराजाना आठ पर्वतछे तेना नाम कहेछे १ पूर्वें गोथुनपर्वत अने गोथुन देव २ दक्षणे दिग्नास पर्वत अने शिव देवता ३ पश्चिमें संखनान पर्वत अने संख देवता ४ उत्तरे दगसीमी पर्वत, अने माणोसल देवता, ५ इशानिकूंणे कर्कोटक पर्वत अने कर्कोटक देवता ६, अ

ग्निकूंणे विद्युत्प्रभ पर्वत अने कर्दम देवता ७ नैऋतकूंणे कैलाश पर्वत अने कैलाश देवता ८ वाव्यकूंणे अरुणप्रभ पर्वत अने अरुणप्रभ देवता ए आठे पर्वत १०२२) योजन नीचे पोहोलाछे अने ४२४ योजन जलैरा उपर पोहोलाछे तथा सर्वे १७२१ योजन उंचाछे तेमां पूर्वादि चार दिसाना अनुक्रमें १ कनकमय २ अंकरत्नमय ३ रूपामय ४ स्फाटिक मय जाणवा तथा चार विदिसाना सर्व रत्नमयछे जंबूद्वीपथी बेतालीश हजार योजन जइये ते स्थानके ३०९ योजन उपर पंचाणुआ पीस्तालीश भाग एटली जलवृद्धिछे तथा ४४२ योजन उपर पंचाणुआ दश भाग एटला पर्वत उंचाछे तथा ९६९ योजन उपर पंचाणुआ चालीश भाग एटला जंबूद्वीपभणी उघाडा देखायछे तथा ९६३ योजन उपर पंचाणुआ सीत्तोतेर भाग एटला शिखा भणी उघाडा देखायछे.

तथा मेरुपर्वतथकी पश्चिम दरवाजाथी बारहजार योजन समुद्रमां जाइयें तिहां लवणना अधिष्टातानो गौतमद्वीप सुस्थितदेवनोछे ते गौतमद्वीपने बे पासें जंबूद्वीपनां बे सूर्यनां बे द्वीपछे तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां बे सूर्य तेना बे द्वीपछे एरीतें चार सूर्यनां चार द्वीप गौतमद्वीप पासेछे ए गौतमद्वीप सूधां पांचे द्वीप बार बार हजार योजन लांबा अने पोहोला छे.

तथा मेरुपर्वतथी पूर्वदिसियें जगतीनां दरवाजाथी बार हजार योजन लवणसमुद्रमां जाइयें तिहां जंबूद्वीपनां बे चंद्र तथा लवणनी सीखानी आणी तरफनां बे चंद्र एवं चार चंद्रमाना चार द्वीपछे.

एजरीतें पश्चिमदिसें सिखानी पेली तरफ लवणनां बे सूर्य अने धातकीना ७ सूर्यमली आठ सूर्यनां आठ द्वीपछे तथा पूर्वदिसायें शिखानी पेलीतरफ लवणसमुद्रनां बेचंद्र अने धातकीनां ७ चंद्र एरीतें आठ चंद्रनां आठ द्वीपछे ए लवण समुद्रमां पांचसें योजननां मत्सछे तथा लवणनी सिखामां जेज्योतिष चक्रचालेछे तेना विमान दिगस्फाटिकरत्ननांछे. लवणाधिकारः

३९ उंगणचालीशमें बोलें कालोदधिनो विचार कहेछे ते कालोदधी प्रथमदरवाजाथी साहामा दरवाजा लगें आठ लाख योजन पोहोलोछे अने एक हजार योजन उंडो छे, गोतीर्थ नथी, वेल नथी, दरवाजेथी पूर्वपश्चिमें बेंतालीश हजार योजन जाइयें तिहां कालनामे देव, पश्चिमें महाकालदेव, ए बें समुद्र अधिष्टायक देवना द्वीपछे तथा पश्चिमें बार हजार योजन जइयें तिहां कालोदधिनां एकवीश सूर्यना एकवीश द्वीपछे, तेमज पूर्वें बार हजार योजन जइयें तिहां कालोदधिनां एकवीश चंद्रमाना एकवीश द्वीपछे ए समुद्रमां सातसें योजनना शरीर वाला मत्सछे एना पाणीनो स्वाद पीवा सरखो छे तथा धातकी खंडना सूर्य चंद्रना द्वीप सर्वे पाणीथी बे कोश उघाडा छे.

४० चालीशमें बोलें पुष्करार्द्धद्वीपनी वस्तु लखीयेछैयें पुष्करार्द्ध शोल लाख योजन

पोहोळुं छे तेना मध्यमां मानुष्योत्तर पर्वत पड्यो तेथी एना बे नाग थया छे तेमां आ गला नागना आठ लाख योजनमां मनुष्यनी वस्ती छे अने पहेली तरफनां आठ लाख योजनमां सून्यक्षेत्रछे.

४१ एकतालीशमें बोलें मनुष्योत्तर पर्वत बेठा सिंहने आकारेछे पुष्करद्वीपनां मध्य नागें वलयाकारे पड्यो छे हेठल एक हजारनें बावीश योजन पोहोळोछे अने मध्यमां सातसें त्रेवीश योजन पोहोळोछे तथा उपर चारसें चोवीश योजन पोहोळो छे अने उंचो तो वेलंधर पर्वत जेटलो १७२१ योजनछे तथा नूमीमां चोथो नाग उंमोछे एनी माहेली परिधि १४२३०२२४ योजन अने मानुष्योतरथी बाह्य परिधि १४२३२७१३ योजन छे एटलीज परिधि सिद्ध सिलानी पण जाणवी ए सिद्ध सिला अने अढीद्वीप बेहु बरो बरछे ए अढीद्वीप रूप मनुष्य क्षेत्रमां नव वानां होय तेना नाम कहेछे १ नदी २ द्रह ३ मेघ ४ गर्जारव ५ अग्नी ६ तीर्थंकर ७ गणधर आदि मनुष्य तेना ७ जन्म ८ मरण ए रात्रि दिवस ए नव वांना होय ए प्रमाणे संक्षेपथी अढीद्वीपनां नाव जाणवा.

हवे एज अढीद्वीप संबंधि कांइक विशेष विचार कहीयें छैयें.

ए अढीद्वीपना मध्यमां प्रथम जंबूद्वीप आवेलुंछे माटे ते जंबूद्वीपनो वली जूदो पट्ट बनाव्युंछे तेपण ए पुस्तकनी साथेछे ए सर्व द्वीप अने समुद्र ते जगतीयें करी वींटेलाछे माटे प्रथम जगतीनो वर्णन करीयें छैयें. प्रत्येकें प्रत्येकें द्वीप अने समुद्र पद्मवर वेदि कायें करी सहीत छे अर्थात् सर्वद्वीप अने समुद्रने चोकफेर पद्मवर वेदिका छे अने सर्व पद्मवरवेदिकाउने केडे तथा आगल बे बाजु वन खंम पण छे.

अथ जगती वर्णन.

तिहां प्रथम जंबूद्वीप मोहटा नगरना गढने आकारें वज्रमय जगतीयें करी चारें बाजु वींटेलुंछे ते कोट आठ योजन उंचोछे तथा बार योजन नीचें धरतीनां मूलमां पोहोळोछे पछी जेम जेम उंचां चडीयें तेम तेम अनुक्रमें पोहोलाइनुं विस्तार घटतां घ टतां जेवारें एक योजन उंचा चडीयें तेवारें अगीआर योजन पोहोळो थाय, बे योजन चडतां दश योजन पोहोळो थाय, त्रण योजन चडतां नव योजन पोहोळो थाय अने जेवारें च्यार योजन उंचा चडी कोटना मध्यनागने विषे आवीयें तेवारें आठ योजन पोहोळ पणे थाय एम यावत् आठ योजन चडीने कोटनी उपर जइयें तेवारें चार योजन पोहोळ पणे थायछे ए कोट उंचु करेलुं गायनुं पूंछडुं तेने आकारें छे जेम गाय नुं पूंछ मूलमां जाडुं होय अने पछी उतरतां उतरतां पातलुं होय तेम जगती पण धर तीनां मूलमां जाडी छे अने पछी उपर चडतां चडतां पातली थती गइ छे.

ते जगती सर्व प्रदेशें वज्ररत्नमयछे, मणिरत्ननी नींतछे, वैडूर्य रत्नमय थांनाछे, लोहीताक्ष रत्नमय खीला छे, छतमां सोना रूपाना पाटीया छे, आकाशनी पेरे आछी छे, सुकोमलछे, घसीछे, मांजी कोमल करेलीछे, रजरहीत छे, मलरहित छे, कर्दमरहीत छे, छाया आवर्ण रहित शोजा वाली छे, निरूपघात कांतीवाली छे, उद्योत सहित छे, जोवा योग्य छे, मनोहर आंखने देखवा योग्य जोवावालाने मनोज्ञ छे, प्रतिबिंब जेमां पडे एवी जगती छे. कलश, मंगल, तोरण, विजय, प्रसावणीया, वेदिका, सिंघासण, जरोखा, जाली ए सर्व रत्नमय रमणीक छे ते जगती उपरे जंबुधीपनी पासें एक जालीयें करी चोक फेर सर्व दिसें वींटाणी छे-एटले हीयारखी छे ते जाली अर्द्ध योजन उंच पणे छे, पांचसे धनुष्य पहोली जाडपणे छे, सर्व रत्नमय छे, निर्मल छे, सुकुमाल छे, यावत् देखवा योग्य छे, मनोहर छे, एवुं प्रथम आंकवालुं चित्र पहेला पृष्ठमां छे.

ते जगती महोटा गवाक्षोना वलय तेणें करी सर्वदिशियें चारे बाजुयें वींटेली छे ते सर्वे गोख रत्नमय छे एकेको गोख बे बे कोश उंच पणे छे अने पांचशें पांचशे धनुष पोहोल पणे छे तथा अर्द्धो कोश लांब पणे छे आछा निर्मल छे यावत् प्रति रूप छे ए गवाक्षनो चित्र बीजा आंकवालु आ पुस्तकना प्रथम पृष्ठ मध्ये आपेलुं छे तिहांथी जोवुं ए गवाक्ष सर्व लवण समुद्रनी पासें जगतीनां मध्यनागमां चोफेर जाणवा.

हवे ते जगतिनी उपरली नूमिनां मध्यनागने विषे चोफेर फिरति एक महोटी पद्म वरवेदिका देवताउने क्रीडा करवानुं स्थानक छे ते उंचपणे अर्द्ध योजन छे अने पांच शें धनुष्य पहोल पणे छे जेटलो जगतिनां मध्यनागें परिधि छे ते प्रमाणे परिधि पणे छे, सर्व रत्नमय छे, जगती समान जगती सरखी फरती छे, तेनी वज्ररत्नमय नूमि छे, नूमिनागथी उंचा नीकल्या जे प्रदेश ते सर्व वज्ररत्नमय छे, अरिष्ट रत्ननां मूल पग थालीया छे, वैडूर्य रत्ननां थांना छे, शोना अने रूपानां पगथालीयानां पाटीयां छे, वज्र रत्ननी संधीपूरी छे, एटले बे पाटीआनो संबंध जोडवो तेने संधी कहीयें. वली पड्डाने थानके पण संधि समजवी, पाटीआवच्चे जे खीलीउ छे ते लोहिताक्ष रत्ननी छे तिहां नवनवा प्रकारनां मनुष्यनां युग्म शरीर छे ते मनुष्यनां जोडलानुं रूप नवनवा प्रकारनां मणिरत्नमयछे तेमज मनुष्यना एकाकी रूप पण छे तथा ए रूपना युग्म छे तेनां अंक रत्नमय देस छे ज्योतिरसा रत्नमय वांस मावे अने जमणे बे पासे बाधा छे अने वंसनी खीली विशेष रूपानी पाटली वंसनी उपर छे तेना उपरें शोनानी ढांकणी छे ते उपर वली वज्ररत्ननी निविड ढांकणी छे ते उपरे सर्वस्वेतरूपामय आछादन छे एवी पद्मवरवेदिका छे.

ते पद्मवरवेदिकायें एक सुवर्णनी माला, एक घूघरनी माला, यावत् मोतीनी माला, एक कमलनी माला, तेपण सर्व रत्नमय पीला सूवर्णमय दाम समूहे करी तेणे

करी सर्वेदिशें सहीत छे, ते मालाने रक्तसुवर्णना फूमकाछे, सोनाने प्रकरे सहीतछे, नव नवा प्रकारनां मोती अने रत्न तेना हार अने अर्द्धहार तेणेकरी शोभित थकी लगा रेक मांहोमांहे वेगली रही छे ते पूर्व, पश्चिम, दक्षण अने उत्तरनो मंदमंद वायरो तेणे कंपती थकी, लंबती थकी, जणजणाट प्रमुख शब्द करती थकी, कान अने मनने गम ता एवा शब्दने चोकफेर पूरती थकी शोभती थकी रहे छे तथा जिहां जिहां एक युगल छे तेने स्थानके बीजा पण घणा घोडानां युगल, हाथीनां युगल, मनुष्यनां युगल, किन्नरनामा व्यंतरदेवोनां युगल, किंपुरुषनां युगल, महोरगनां युगल, गांधर्वनां युगल, वृषभनां युगल इत्यादिक सर्व युगल रत्नमयछे, निर्मलछे, सुकुमालछे यावत् प्रतिरूप छे तेमज ते ते स्थानके घणा घोडाना रूपनी पंक्तिउं छे ते पण पूर्ववत् यावत् प्रतिरूप छे तेमज वली घोडानां मैथुननां रूप एटले स्त्री सहीत रूप पणछे तथा ते ते स्थानकें घणी पद्मलता, नागवृक्षनी लता, अशोकवृक्षनी लता, चंपकवृक्षनी लता, आम्रवृक्षनी लता, जाय विशेष वृक्षनी लता, मचकुंदलता, श्यामलता प्रमुखछे ते नित्यें फली फूली थकी मंजरें करी सहीतछे ते सर्व रत्नमयछे यावत् प्रतिरूपछे तथा ठामें ठामें घणा रत्नमय अक्षतना स्वस्तिकछे इत्यादि एनो विशेष वर्णन सर्व जीवाभिगमादि सूत्रोथी जोवुं.

हवे एनुं पद्मवरवेदिका एवो नाम छे तेनुं हेतु कहेछेः—ए वेदिकामां ठामे ठामे एटले वेदिकाने विषे, वेदिकानां पासाने विषे, वेदिकानां पाटियानां माथाने विषे, वेदिकानां पुटांतरने विषे, थांभाने विषे, थांभानां पासाने विषे, थांभाने माथे, थांभानां पुटांतरने विषे, खीलीने विषे, खीलीनां मूखने विषे, खीलीनां पाटीयाने विषे, खीलीनां पुटांतरने विषे, खीलीने पासे, खीलीना पासाने स्थानकें, खीलीनां पक्षनां अंतने ठामे, एवा एवा स्थानकें घणा उत्पल तथा सूर्य विकाशी कमल यावत् लाखपांखडीनां कमल ते सर्व रत्नमयछे महोटा वर्षाकालनां जल राखवानां स्थानक तथा छत्र सरिखा मोहोटा कमल प्रमुख ते सर्व पद्मवरवेदिकाने विषे रत्नमय छे ते सारुं पद्मवरदिका एवो नाम छे ए शास्वतीछे ए पद्मवरवेदिकानो चित्र त्रीजा आंकवालो प्रथम पृष्ठमां छे

ते पद्मवरवेदिकानी पूर्व पश्चिम दिसायें बे बाजुयें बे वनखंड छे ते देशें उणा बें योजन अर्थात् अढीसे धनुषे उणा बें योजन चक्रवाल पणे पोहोला छे एटले जगतीनी उपर पांचशें धनुषनी वेदिका पोहोलीछे अने वेदिकानी बाहेरली समुद्रनी तरफनी बाजुनो वन बे योजनमां अढीशो धनुष उणो छे तथा वेदिकानी जंबूद्वीपनी तरफनी बाजुनो वन पण बे योजनमां अढीशो धनुष उणो छे ए सरवाले जगती उपरनी भूमी चार योजन पोहोल पणे पूर्वें कहीछे तेटली थइ, हवे ते बे बाजुनां वन जगती समान परिधिपणे फरता छे तेनी कृष्णवर्णें नीली शोभाछें ते वननी भूमी चा

मडाना पुडा सरखी सम छे तथा आरीसानो तलो, हथेलीनुंतलो, चंद्रमानो मंमल, सूर्यनुं मंमल, घेटानुं चर्म, वृषजनुं चर्म, वराहनुं चर्म, सिंहनुं चर्म, वाघनुं चर्म, छागनुं चर्म, दीपडानुं चर्म, ते समान जूमीनो तलो छे तथा ते वनमां नाना प्रकारनां काला, पीला, धोला, राता, नीला एवा मणिरत्ननां तृणछे तेनो मनोज्ञ शब्दछे, मनोज्ञ रूप छे, तिहां चार दिसानो वायरो लागे तेवारें ते तृण मांहोमांहे आफले छे तेना योगें करी तेमांथी छत्रीश राग रागणी आलाप्या जेवा शब्दनी ध्वनी उठेछे, जाणे बत्रीशबद्ध नाटक थतो होय, जाणे छत्रीश वाजां वाजतां होय, जाणे गंधर्व देवता राग करता होय, तेवा शब्द उठे छे तथा ते वनने विषे ठामे ठामे घणी लघु वाव्य, गोलवाव्य ते पुष्करणी, तथा गुंजालिकाते ढांकेली वाव्य, लांबी वाव्य, तेमज एक उले होय तेने पंक्ति कहीयें एवी सरनी पंक्ति, तथा एकनुं पाणी बीजामां आवतो होय तेने सरसर पंक्ति कहीयें तथा कूपनी पंक्ति ए सर्व सुकुमालछे, रत्नमय तेना कूलछे, रूपामय कूल कांठछे, वज्रमय पाषाणेकरी तेनां पासा बांध्याछे, सुवर्णमय तेनां तलीयाछे, वैडूर्यरत्नमय अने स्फाटिमय तेनां तटना समिपनां प्रदेशछे, सुवर्ण अने शुभ्ररजतमय तेनी वेलुछे, सुखे प्रवेश करवा योग्यछे, सुखें उतरवा योग्यछे, नवनवा प्रकारनां रत्नेकरी तीर्छिनींत बांधीछे, चोखुणी छे, सरखो तटछे, अनुक्रमें नमतो नमतो जलनुं स्थानकछे, जिहां गंभीर शीतल जलछे, ते ठेकाणे विसमृनाल नामे नीला कमल तेना पत्रेंकरी वली घणा उत्पल, कुमुद, नलिनि कमलजाति, आदिक अनेक जातिना कमल तेणे करी सहीतछे, ते कमलोने भमरा प्रमुख भोगवेछे, निर्मल पाणीयें करी ते वाव्यो पूरण भरेलीउं छे, तेने विषे मत्स, काचबादिक अतिघणा भमेछें तथा अनेक पक्षीओना युगल मैथुन क्रीडा करेछे तथा ते प्रत्येक वाव्य पद्मवेदिका अने वनखंमेकरी सहीत छे.

केटलीक वाव्य प्रमुखनां मदिराना सरखा पाणीछे केटलीकनां वारूणीवर समुद्रनां सरखा पाणीछे, केटलिकनां गोडुग्ध सरखा पाणीछे, केटलिकनां घृतसरखा पाणीछे, केटलिकनां शेलडीनां रस सरखा पाणीछे, केटलिकनां अमृत सरखा पाणीछे, केटलिकनां स्वभाविक पाणी समान पाणीछे, ते वावी जोवा योग्यछे इत्यादिक ए वावी कूपादिकनो वर्णन घणोछे ते जीवाभिगमादि सूत्रथी जाणवो तथा फल, फूल, पत्र, आंबा, नीबू, दाडीम, जंभेरी प्रमुख सर्व पदार्थ ते वनने विषे रत्नमय जाणवा.

हवे ते वनने विषे ठाम ठाम घणा उत्पात पर्वतछे जिहां व्यंतर प्रमुख देवता क्रिडा करवा निमित्तें आवी भवधारणीय वैक्रिय शरीरे करी क्रीडा करेछे ते पर्वतने विषे स्फटिक रत्ननां मंमप, तथा मंचक, दगमाल प्रासाद विशेष, स्फटिकना प्रासाद, हींमोला खाट, पक्षीने वेसवाना ठाम इत्यादिक सर्व रत्नमयछे तथा हंस, क्रौंच, गुरुड प्रमुखने आ

कारे जुदा जुदा जातनां अनेक सिंहासन, प्रमुखछे एरीतें वावडीउं, तोरण, पुतलीयो, मेहेल ए सर्व रत्नमय छे छ ए रुतुमां सर्व स्थले देखवायोग्य रमणीक छे.

तथा ते वनखंडने विषे गाम गाम केलीनां घर, लतानां घर, अवस्थान घर, प्रछन स्नान करवाना घर, प्रसाधन घर इत्यादिक अनेक जातीना घरछे, तेमज घणा जाय आदिक फूलोनां मंडपछे तथा उत्तम सय्या अने आशनने स्थानके पृथ्वी शिलाना पटछे, तिहां घणा व्यंतरिक देवो अने देवांगनाउं वसेछे, विश्राम करेछे, सूवेछे, बेसेछे, निषिद्या करेछे, पासुं पालटेछे, रमेछे, इछित सुख नोगवेछे,क्रीडा विनोद करेछे,मैथुन सेवा करेछें पूर्व नवना आचारेला सुकृतथी उपार्जन करेला कल्याणकारी शुनकर्म तेनां शुनविपाक फल नोगवतां थकां प्रत्येकें विचरेछे एमां एटलुं विशेष जे मांहेला पासानां वनखंडमां तृण नथी तृणविनानो जाणवो. इत्यादिक वन संबंधि संक्षेप अधिकार कह्यो.

अथ धारवर्णनं

हवे ए जंबू द्वीपनां दरवाजानी संख्या कहेछे एक पूर्वदिसे विजयनामे द्वार छे तेनो विजयदेव नामे पोलीउंछे बीजो दक्षणदिसें विजयंत नामे द्वार छे तेनो विजयंत नामे देवरक्षक छे त्रीजो पश्चिमदिसें जयंत नामें द्वार छे तेनो जयंतनामे देव रक्षक छे, चोथो उत्तरदिसें अपराजित नामे द्वार छे तेनो अपराजित नामे देव रक्षक छे. एरीतें विजयादि चार अनुत्तर विमानने नामे चार दरवाजानां पण नाम कह्याछे.

तिहां मेरूपर्वतने पूर्वदिसें पीस्तालीश हजार योजन जइयें तेवारें जंबू द्वीपनी पूर्वदिसीने छेहेडे लवण समुद्रनी पूर्वदिसिनी पश्चिमदिसें सीतामहानदीनी उपरें विजयनामे दरवाजो छे ते आठ याजन उंचोछे चार योजन पोहोलोछे अने चार योजन लांबपणे प्रवेश पणेछे तथा बे बाजुयें एकेक कोशनी बारसांखनी नींत स्वेतवर्णेछे, तेनुं शिखर शोनानुंछे, तिहां हाथी, मृग, वृषन,अश्व,मनुष्य, मगरमछ, पंखी, सर्प्प, किन्नरनामा व्यंतरदेव, रुरुजीव, गेंडा, चमरीगाय, वनहस्ति, वनलता, पद्मलता प्रमुख चित्रामें करी युक्त छे. थंन उपर उत्तम वेदिका तेणेकरी सहीतछे, विद्याधरना युगलनां आकारें करी ते थंन युक्त छे, हजारोगमे सूर्यनां किरणो थकी पण अधिक प्रकाशवान छे, देदीप्यमानछे, चक्षुने जोवा योग्यछे, सुखकारी फरसछे, सश्रीक रूपछे.

वज्ररत्नमय तेनुं नूमी नागछे, अरिष्टरत्नमय पगथालीयानां मूलछे, वैडूर्यरत्नमय थंनछे, सुवर्णेकरी सहीत एवा उत्तम पंचवर्णा मणिरत्न तेणेकरी नूमितल बांध्युंछे, हंसगर्नरत्ननो उंबरो बांध्योछे, गोमेद्यरत्ननां नीचला टोडलाछे, अने उलालोछे, लोहीताक्ष रत्नमय बार शाखछे, ज्योतिरसा रत्नमय बारणानां उपरला चांपणाछे, वैडुर्यरत्नमय

कमाडछे, वज्ररत्नमय पाटीयानी सांधि जडीछे, लोहीताक्ष रत्नमय बे पाटीया वच्चें खी लीछे, नवनवा मणीमय चणीयारा छे,वज्ररत्नमय भोगलछे, अने भोगलनो ठामपण वज्र रत्नमय आवर्त्तन पीठिकाछे, जिहां भलाळो बेशे ते ठाम जाणवो, अंकरत्नमय द्वारना बे पासाछे, एवा आंतरा रहीत निबड अभंग कमाड छे.

ते द्वारने बेहुपासें बेसवाना चोखूणा ओटलाछे, तेनी पासे पण त्रण त्रणनी उपन्न पंक्ति एवा १६८ लांबा ओटलाछे, तिहां नाना प्रकारनां मणिरत्नमय सर्पनां रूपछे,द्वारने बेपासे लीलायें करी सहीत एवी पुतलीछे, वज्ररत्नमय शिखरछे, रूपामय उपरलो पीठछे, सर्व सुवर्णमय चंद्रूयाछे, नाना प्रकारनां मणिरत्नमय जालपिंजर गवाक्षछे, मणिमय उपर लो वंशछे, लोहिताक्षरत्नमय उपरलो प्रतिवंशछे, रूपामय भोमछे, आदसरनां खाणा अने बीजा पण जे खाणाछे ते सर्व अंकरत्नमयछे, ज्योतिरसा रत्नमय वंशने वलाछे, ज्योतिरसा रत्नमय अनेक खापछे, ते उपरें रूपामय पीठछे, तें वच्चे सुवर्णमय पातली छोतीछे, ते वच्चे सूक्ष्म तृण समान आछादन ढांकणी रूपछे, ते उपरें वली सर्व स्वेत रूपामय आछादनछे, अंकरत्नमय पक्षबाधाछे, सुवर्णमय शिखरछे, ते उपरें सुवर्णमय थूनिकाछें, ते द्वारनो उपरलो भाग सर्व स्वेतदक्षणावर्त्त संखनोछे जेम निर्मल दहीना दडवां, गायनुं दूध, समुद्रनां फीण, रूपानापूंज, एना सरखो उज्वल पोलनो प्रकाशछे, तिलकरत्न तथा अर्द्धचंद्र तेणेकरी सहीत एवा अनेक चित्रामछे, नाना प्रकारनी रत्नम य मालायें करीने ते द्वारनां मुख शोभितछे, बाहेर अने मांहे सुकुमालछे, पोल मध्यें सो नानी वेलु पाथरी छे, तेनुं शुभफरसछे, सश्रिकरूप छे, जोवा योग्य छे,यावत् प्रतिरूप छे.

हवे ते विजयनामा द्वारना बे पाशें बे ओटलाछें तेमां चंदने चर्चित बे बे कलशछे, ते कलश उत्तम कमल उपरें थाप्या छे, सुगंधित उत्तम पाणीयें करी प्रतिपूरण भखा छे, ते कलशने बावनां चंदननां छांटा कीधाछे. गलाने विषे राता सूत्रनां दोरा बांध्याछे, कमलनां ढांकणाछें, ए कलश प्रमुख सर्व रत्नमयछे, निर्मलछे. सुकुमालछे, यावत् प्रति रूपछे, महोटा महोटा महेंद्र कुंभसमान ते कलश कह्या छे.

ते द्वारने बे पासें ओटले बेसवाने स्थानके बे बे नागदंता सरिखा खीलाछे, ते नागदं ताने विषे घणी मोतीनी माला, लंबायमान हेमनी माला, गवाक्षने आकारें रत्ननी माला अने घूघर माल प्रमुख वलगाडीछे, तेणे करी सहीतछे, कांइक उंचाछे, सन्मुख निकल्या छे,त्रिछा भिन्न प्रदेशने विषे रूडीपरें रह्या छे,नीचें सर्पनां अर्द्ध आकार समानछे, सर्पार्द्ध संस्थाने संस्थितछे, सर्व रत्नमयछें, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे, एवा महोटा नागदंता हाथीनां दांत समानछे,ते नागदंताने विषे घणा कृष्णसूत्रें बांधी तेमज नीले सूत्रें,लालसूत्रें, पीलेसूत्रें, यावत् स्वेतसूत्रें बांधी एवी लंबायमान फूलनी मालानां समूह वलगाड्या छे, ते

माळाउने सोनानां फूंबकाछे, सोनानी पानडीयें मंन्दितछे, नाना मणिरत्न विविध प्रकारना हार अने अर्द्धहार तेणें करी सहीतछे, यावत् शोजायें अत्यंत शोजता थका रहेछे.

ते नागदंता उपरें बीजा बे नागदंताछे ते मोतीनी जाळायें करी शोन्नितछे तेनो वर्णन पूर्वपरें जाणवो ते नागदंताने विषे घणा रत्नमय शीकाछे ते शीकाने विषे घणी वैडूर्यरत्नमय धूपघटीछे ते धूपघटी, कृष्णागर, कुंदरुक, तेने धूपेंकरीने घम घमाय मान गंधने उत्कृष्ट पणे करी मनोहर छे, सुगंध गंधे करी गंधवंत छे, गंधनी वाती रूप उदार मनने गमती मनोहर नासिका अने मनने सुख उपजावे एवी गंधे करी ते प्रदेश प्रत्यें सर्व दिसें चोफेर पूरती थकी अत्यंत शोजती थकी यावत् रहेछे.

ते विजयनामे द्वारने बे पासें बे चोतराने विषे बेठकने विषे बे बे पूतळी कही छे पूतळी ललितांग लीलावंत लीलायें सहित रूडे प्रकारें थापीछे, जले अलंकारे अलंकृतछे, ते पूतळीने नवनवा आकारनां वस्त्रछे, नवनवा प्रकारनी फूलनी माळा कंठे पेहेरीछे, जेनो कटी प्रदेश मुष्टीयें ग्राह्यछे, जेना शिखर सरिखा युगल वृत्ताकारें उंचा पुष्ट मांसे युक्त एवा पयोधरछे, नेत्रनां खूंणा राताछे, केश काळाछे, कोमल निर्मल जला लक्षण सहित प्रशस्त संवस्थोछे छेडो जेनो एवा मस्तकनां केशछे, किंचित् अशोकवृक्षने आश्रितछे शरीर जेनो, डावे हाथें ग्रहीछे अशोकवृक्षनी शाखा जेणे, किंचित् अर्द्ध कटाक्ष तेनी चेष्टायें करी देवता प्रमुखने लूसती थकी, चक्षुने विलोकवे करी माहोमांहे जाणीयें खिंसना करती थकी एवी ते पूतळी पृथवीकायमयछे, शाश्वते नावे छे तेनो चंद्रमा समान मुखछे, चंद्रमा सरखो मनोहर विलासछे, अर्द्धचंद्रमा समान निलाडछे, चंद्रथकी अधिक सोम्यदर्शनछे, उल्कापातनी पेरें उद्योत करतीछे, मेघनी वीजळी थकी सूर्य देदीप्यमान छे तेथी पण देदीप्यमान अधिकतर प्रकाश वाळीछे. शोल शृंगारने आकार तेणे करी मनोहर वेष छे, जोवा योग्य छे, यावत् प्रतिरूप छे ते पुतळी तेजे करी अत्यंत अत्यंत शोजती थकी रहेछे.

ते विजयनामा द्वारने बे पासें बे ठेटलाने विषे बे बे जालीना कटक समूहछे, ते जाल कटक सर्व रत्नमयछे, यावत् प्रतिरूपछे, तथा ते द्वारने बे पासेंना बे ठेटलाने विषे बे बे घंटा कहीछे ते जंबूनंद रत्ननीछे, वज्र रत्नमय लाळाछे, नाना मणिमय घंटाना पासाछे, सुवर्णमय सांकळछे, रूपामय रासडीछे, ते घंटानो उघस्वरछे, मेघनां सरिखो स्वरछे, हंसनां सरिखो स्वरछे, क्रौंचनां सरिखो स्वरछे, तथा बारवाजानां समूहनो स्वर तेने नंदीस्वर कहीयें तेना सरखो स्वरछे अने तेना सरखो घोषछे, सिंहना सरखो स्वरछे, सिंहनां सरखो घोषछे, मीठो स्वरछे, मीठो घोषछे, जलो स्वरछे, जला स्वरनो घोषछे, ते स्थानकनां प्रदेश उदारछे, मनोज्ञ स्वरछे, कान अने मन तेने सुखनो करनार एवे शब्दें यावत् रहेछे.

विजय द्वारने बे पासें बे ओटले बे बे वनमाला कहीछे जेमां पत्र, पुष्प, फल, अंकूरा अने साखा एकठा गुंथ्यां होय तेने वनमाला कहीयें ते वनमाला नाना प्रकारनां फूल, लता, टिसी, अंकूरा तेणे करी सहीतछे, भमरा प्रमुख जीवें भोगवती थकी शोभायमान मनोहरछे, जोवा योग्यछे, प्रतिरूपछे ते प्रदेशें गंधें करी पूरती थकी यावत् रहेछे.

ते विजय द्वारने बे पासें ओटलाने विषे वली बे बे चोखूणा ओटलाछे ते चार योजन लांबा अने पोहोलाछे, बे योजन जाड पणेछे, सर्व वज्र रत्नमय निर्मलछे यावत् प्रतिरूप छे ते ओटला उपरें प्रत्येकें प्रत्येकें प्रासादावतंसकछे ते चार योजन ऊंचपणेछे तथा बे योजन लांब पणे अने पोहोल पणेछें ते प्रासादावतंसक, सन्मुख नीकली सर्वे दिसें प्रसार पामेली एवी प्रभा तेणे करी जाणीयें कांती खीलाती रहेती नथी? एवाछे, विविध विविध प्रकारनां मणिरत्ननी भांते करी विचित्रछे, विजय अने विजयंति ध्वजा वायरे करी कंपितछे, छत्र अने ते उपर छत्र तेणे करी सहीतछे, ते प्रासादनां शिखर अत्यंत ऊंचाछे, आकाश तलने ओलंघे छे, ते भुवननी भींते जालीछे, तेनी शोभाने अर्थें रत्न जड्याछे, कर्णीयामां जडीत रत्न राख्या होय ते जेवा शोभे तेवा ते रत्न शोभेछे, मणी अनें सुवर्णनां शिखरछे, विकश्वर शतपत्र तथा पौंमरीक कमल तथा तिलक वृक्ष प्रमुख रत्नमय तथा अर्द्धचंद्र इत्यादिकनां स्वरूप द्वारने विषे छे, नाना प्रकारनी मणिमय माला तेणे करी ते प्रासादनुं द्वार शोभितछे, ते प्रासाद मांहे अने बाहेर सुकमालछे, तेमां सुवर्णनी वेलु पाथरीछे, तेनो सुखकारी फरसछे, सश्रीक मनोहररूपछे, जोवा योग्यछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते प्रत्येकें प्रत्येकें प्रासादावतंसकने मध्ये घणुंक सम मनोहर भूमि भागछे, ते जेम मुरज नामा ढोलनो तलो ते समानछे, यावत् मणियें करी उपशोभितछे, मणिनो गंध वर्ण फरस पूर्वली परें जाणवो, तेमध्ये चंद्रोदय अने पद्मलता प्रमुखछे, यावत् सामलिका नामे वनस्पति प्रमुखनां चित्रामछे, ते सर्वे सुवर्णमयछे, निर्मलछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते सम मनोहर भूमिभागनां मध्यदेश भागने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें मणिमय पिठिका चोतरा रूपछे, ते एक योजन लांब पणे अने पोहोल पणेछे, अर्द्ध योजन जाड पणे, सर्वे रत्नमयछे, यावत् प्रतिरूपछे.

ते मणिपीठिकानी उपर प्रत्येकें प्रत्येकें सिंहासन छे, ते सिंहासननां पगथालियानां अधःप्रदेश सुवर्णमयछे, रूपामय सिंहासनछे, सुवर्णमय पगथालीयाछे, नवनवा रत्नमय पादपीठछे, जंबुनंद रत्नमय गात्रछे, वज्र रत्नमय संधि पूरितछे, नवनवा रत्नमय सिंहासननुं तलीउंछे, ते सिंहासन हस्ति, मृग, वृषभादिनां चित्रामें युक्तछे, मणिरत्नमय पादपीठछे, तेना उपर कोमल मसरूनो नूतन सीतल स्पर्शें सहीत सिंहनी केसरा समान एवो वस्त्र ढाक्युं

छे, तथा जला उंहाड रूप राते वस्त्रें करी पाद पीठ ढाक्याछे, तेनो मृगचर्म, रू, पर, माखण अने अर्क समान कोमल फरसछे.

तथा ते सिंहासन उपरें प्रत्येकें प्रत्येकें विजयदूष्य चंडुआछे, ते चंडुवा संख, मच कुंद, पाणीनां फूसारा, अमृत, समुद्रना फेण सरखा श्वेतवर्णछे, ते सर्वे वस्त्र रत्नमयछे तथा ते विजयडुष्यने मध्यदेश जागें प्रत्येकें प्रत्येकें वज्र रत्नमय अंकूस रूपछे, ते अंकूसने विषे कुंज समान मोतीनी मालाछे, ते माला पासें वली तेथकी अर्ध स्वरूपें कुंज समान मोतीनी मालायें करी सर्व दिसे चोक फेर परिवरीछे, ते मालाने सोनानां फूंबकाछे, सुवर्णने प्रकरे शोजितछे, ते प्रासादावतंसक उपरें घणा आठ आठ मंगलीकछे, तथा द्वारने बे पासे बे उटले बे बे तोरणछे, ते तोरण आगल बे बे पुतलीछे, तथा बे बे नागदंताछे, ते नागदंताने मोतीनी माला लगाडीछे, तेम ते नागदंताने विषे घणीज कृष्णसूत्रें बंध फूलनी मालानां समूह यावत् रहेछे, तथा ते तोरणने आगल घोडाने आकारे बे बे युग्मछे, तथा वावीनी पंक्ति, मैथुन ते स्त्रीसहीतरूप, बे बे पद्मलता छे तथा अक्षत स्वस्तिकछे, तथा उत्तम कमल उपर चंदने चर्चित कलश थाप्याछे, तथा बे बे भृंगार कमल उपर थाप्याछे, तेनां मत्तहाथीनां मुख समान आकार छे.

ते तोरणने आगले बे आरीसाछे, ते आरीसानो घर सुवर्णमयछे, वैडूर्य रत्नमय आरीसा जालवानी मूंठीछें, वज्र रत्नमय हाथीछे, अनेक मणिमय शृंखलायें वेष्टित शोजितछे, अंकरत्नमय खाप एटले रूप जोवानुं ठामछे, तेनी छायायें करी सर्व देखाय, अनुबंध सहीत छे, चंद्रमंडल सरखा छे, मोटा अर्धकाय समान छे.

ते तोरणनी आगल वज्रनी नाजी समान थालछे, ते थाल स्फटिक समान त्रण वार छडया शाली मध्यनां तंडुल मूसले करी खांड्या एवा तंडुले करी जर्या थका रहेछे, ते चोखा अने थाल सर्वे जंबूनंद रत्न मयछे. मोहोटा मोहोटा रथनां पइडा समान ते थाल छे. ते तोरणनी आगल बे बे पात्रीछे ते निर्मल पाणीयें करी प्रतिपूरणछे, अनेक प्रकारना पंचवर्ण फूलेंकरी प्रतिपूर्ण समानछे तथा बे बे सुप्रतिष्ठक जाजन विशेषछे ते अनेक प्रकारनां पूजाना उपकरणों करी जर्याछे, सर्वउषधीयें प्रतिपूर्णछे तथा बे बे मनोगुलिका पीठिकाछे, तेने घणा सोनामय रूपामय पाटीयाछें, ते पाटीयाने विषे घणा वज्रमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे घणा रूपामय शीकाछे. ते तोरणनी आगल बे बे आश्चर्यकारी रत्ननां करंमीयाछे तथा बे बे हयकंठछे, यावत् बे बे वृषजने आकारे तोमला छे, इत्यादिक घणा पदार्थो छे तनुं विशेषे वर्णन जीवाजिगमथी जोइ लेवो.

विजय द्वारने विषे चक्र, मृग, गुरुड, बगला, पीछ, छत्र, शकुनी पंखी, सिंह, बलद,

स्वेत चउदंता हस्ति ए दस मांहेलां एकेकना चिन्हे करी युक्त एकशो ने आठ आठ ध्व जाउ छे तेवारे ए दशेना चिन्हे युक्त सर्वमली १०ए० ध्वजाउ विजय द्वारें छे.

विजय द्वारनी नव नूंई छे तेमां मध्यनी पांचमी नोमिने विषे एक मोहोटुं सिंहासन छे, ते सिंहासननी वाव्यकूंणे अने उत्तरदिसें तथा ईशानकूंणे विजय देवतानां चार ह जार सामानिक देव तेना चार हजार नद्रासनछे ते सिंहासननी पूर्वदिसें विजय देवता नी चार अग्रमहीषीना परिवार सहित चार नद्रासनछे, तथा अग्निकूंणे विजय देवता नी अन्यंतर परखदानां आठ हजार देवता तेनां आठ हजार नद्राशनछे, तथा दक्षणदि सें विजयदेवतानी मध्य परखदानां दशहजार देवतानां दशहजार नद्रासनछे, तथा नै रुतकूंणे विजयदेवतानी बाहेरली परिखदानां बारहजार देवतानां बारहजार नद्रासन छे, ते मूल सिंहासनथी पश्चिमदिसें विजयदेवतानां सात कटकनां धणीना सात नद्रा सनछे, तथा सिंहासननी पूर्वादिक चार दिसायें प्रत्येकें चार चार हजार नद्रासन छे ते विजयदेवताना आत्मरक्षक देवो शोल हजारछे, तेना चारेदिसियें मली शोल हजार नद्राशनछे, अवशेष आठ नूमिने विषे प्रत्येकें प्रत्येकें नद्रासनकह्या छे ते सामानिकादिक देवो योग्य सिंघासन परिवार रहित कह्याछे.

तथा उपरला पोल उपरें शोल प्रकारनां रत्ने करी शोनितछे, तथा घणा आठ आठ मं गलीकछे, तथा उपरें घणा कृष्ण चामर ध्वजा छे सर्व रत्नमयछे तेमज घणा छत्राति छत्र प्रमुख पूर्वपरे जाणवा. ए विजयनामे द्वारें विजयनामे देवता महर्द्धिक, महाकांति नो धणी, महाअनुनावनो धणी, एक पल्योपमने आउखे वसेछे, तेना चार हजार सा मानिक देवता, चार अग्रमहीषी परिवार सहीत, त्रण परखदानां देवो, सात कटकनां धणी, शोल हजार आत्मरक्षक देवता प्रमुख बीजा पण घणा विजया राजध्यानीनां रहेनारा देवता अने देवांगना प्रमुख ठाकुर पणे देवता संबंधीया नोग नोगवता थका विचरे छे तेथी ए विजय द्वारनुं विजय एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे ए विजयनामा द्वारनां विजयनामे देवतानी विजया नामे राजध्यानी ते एज विजय द्वारने पूर्व दिशायें तिर्छा असंख्याता द्वीप अने समुद्र मूकी जाईयें तिहां बीजो जंबू द्वीपनामे द्वीप आवेछे तेमध्ये बार हजार योजन अवगाही जाईयें तिहां ए विजय देवतानी विजया नामे राजध्यानीछे.

ते विजयानामे राजध्यानी बार हजार योजन लांब पणे तथा पोहोल पणेछे अने (३७ए००) योजन कांइक विशेषाधिक एटली तेनी परिधि फरतीछे ते राजध्यानी एक प्राकारें एटले गढें करी सर्व दिसें चोक फेर वींटीछे ते गढ साडा साडत्रीश योजन उंचोछे, मूलमां शाडाबार योजन पाइये पोहोलोछे मध्यमां सवाछ योजन पोहोल पणें छे तथा

उपर त्रण योजन अने अर्द्धगाउ पोहोळ पणेछे एटले मूळमां विस्तार पणेछे, मध्ये सांकडोछे, उपर पातळोछे, बाहेरें गोळछे, मध्ये चोखूणोछे, गायना पूंछने संस्थाने संस्थितछे, सर्व सुवर्णमयछे, निर्मळछे,यावत् प्रतिरूपछे, ते गढ नाना प्रकारनां पंचवर्णी कोसीसायें करी शोभितछे, ते कोसीसा अर्द्धगाउ लांब पणे छे, पांचसें धनुष पोहोळ पणे छे, देसोन अर्द्धकोश उंचपणे छे.

विजया राजध्यानीयें एकेकी दिसियें सवासो सवासो बारणाछे, एम चारे दिसिनां मळी पांचसें दरवाजाछे.ते प्रत्येक दरवाजो साढीबासठ योजन उंच पणेछे,सवाएकत्रीश योजन पोहोळ पणेछे, सवाएकत्रीश योजन प्रवेशछे, स्वेतछे, उत्तम सुवर्णमय शिखर थूभिकाछे,तिहां हाथी मृग इत्यादि चित्रामनो अधिकार सर्व विजय द्वारनी परे जाणवो.

तथा एकेक द्वारें सत्तर भूमिछे ते चंडुआ तथा पद्मलता प्रमुख चित्रामें करी युक्तछे, तथा तेने विषे सिंहासन कह्याछे इत्यादिक तथा बे पासेना बे ओटला तथा बे बे चोखूणा ओटला तथा प्रासादावतंसक इत्यादिक वातो सर्व जीवाभिगम सूत्रथी जोवी.

विजया राजध्यानीने पूर्वादि चार दिसायें चार वनखंडछे ते आवी रीतेंः—पूर्व दिसायें आशोपालव अशोकवनछे, दक्षणदिसें सडसडो सप्तवर्ण वनछे, पश्चिमदिसें चंपक वनछे, अने उत्तरदिसें आम्रवनछे, ते वनखंड कांइएक जाजेरा बार हजार योजन लांब पणे छे, पांचसें योजन पोहोळ पणेछे, प्रत्येकें प्रत्येकें गढें करी सहीतछे, एनी कृष्णशोभाछे एमयावत् तिहां घणा व्यंतरिक देव देवांगनाउ विसामो करेछे इत्यादि सर्व पूर्वपरें कहेवुं तथा चार वनमां चार प्रासादावतंसक छे तेमां तेवेज नामे चार देवता परिवार सहीत रहेछे तेमज मांहेली भूमीनो वर्णन इत्यादि अधिकार सर्व जीवाभिगमसूत्रथी जाणवुं.

विजया राजध्यानीनां मध्य देशभागने विषे एक पडथार रूप चोतरोछे ते बारसो योजन लांब पणे अने पोहोळ पणेछे, ३७९५ योजन कांइक विशेषाधिक फरतोछे, अर्द्धकोश जाडपणेछे, सर्व जंबूनंद रत्नमयछे, ते चोतरो एक पद्मवरवेदिका अने वनखंड तेणेकरी सर्व दिसें चोकफेर वींटांणोछे, पद्मवरवेदिकानो वर्णन अने वनखंडनो वर्णन पूर्वपरे जाणवो ते वनखंड देसोन बे योजन फरतुं परिधियें पोहोळुंछे,चोतरा समान फरतुंछे, ते चोतराने चारदिसें चार पगथालीयाछे, पगथालीयाने आगले प्रत्येकें प्रत्येकें तोरण छे, छत्रातिछत्र छे.

ते चोतराना मध्यभागने विषे एक मूळ प्रासादावतंसकछे, ते साडाबाशठ योजन उंचोछे, अने सवाएकत्रीश योजन लांबो तथा पोहोळोछे, तेना मध्यभागने विषे वळी एक मणिमय पीठिका चोतरोछे, ते मणिपीठिका एक योजन लांबी पोहोळीछे, अर्द्ध योजन जाड पणेछे, तेनी उपर एक महोटुं सिंहासनछे, ते सिंहासननो वर्णन सर्व परि

वार सहीत जाणवो ते मूल प्रसादावतंसक वली बीजा चार प्रासादावतंसके सर्व दिसें चोफेर व्यापरे ते चार प्रासाद सवाएकत्रीश योजन उंचपणेछे, तथा साडापंदर योजन अने अर्द्धगाउ लांबा अने पोहोलाछे, ते एकेको प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसकें सर्व दिसें चोखफेर व्यापछे ते प्रासाद साढापंदर योजन अने अर्द्धगाउ उंचपणेछे, तथा पोणा आठ योजन अने पा गाउ लांबा पोहोलाछे वली ते प्रत्येक प्रासादावतंसक वली बीजा चार चार प्रासादावतंसके सर्व दिसें व्यापछे ते प्रासाद पोणाआठ योजन उपर पा गाउ उंचाछे अने साडासातसें धनुषे उंणा चार योजन लांबा अने पोहोला छे, ए सर्व मली ८५ प्रासाद थाय ते आवी रीतें एकतो मध्य प्रासाद तेने चार दिसायें चार प्रासाद ते एकेकानी पछवाडे वली चार चार प्रासाद अने वली ते एकेकानी पाछल चार चार प्रासाद एवं ८५ थाय एनुं पांचमा आंकनुं चित्र आ पुस्तकनां त्रीजा पृष्ठमांछे ते जोवुं.

हवे ते मूल प्रासादावतंसक थकी इशान कूंणे विजय देवतानी सुधर्मा नामे सभा छे ते साढाबार योजन लांबी, सवाछ योजन पोहोली, अने नव योजन उंचपणेछे, अनेक थांभाना शइकडा तेणे करी सहीतछे, उंचा थंभ उपरें वज्र रत्नमय उपरली कुंभी छे. तिहां प्रधान रचित तोरण अने पुतलीछे, मनोज्ञ संस्थाने संस्थितछे, वैडूर्य रत्नमय थंभछे, नव नवा प्रकारनां रत्न सुवर्ण मणि प्रमुखें सहीत निर्मल विस्तार पणे अत्यंत समनिविड आश्चर्यकारी मनोहर धरती तलछे, हाथी, मृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमत्स,पंखी, सर्प, किन्नरदेव, गेंडो, चमरिगाय, वनहस्ति, वनलता, विद्याधरना युगल, पद्मलता प्रमुखनां चित्रमाछे, सूर्यना सहस्र किरणथी पण अधिक तेजछे, पंचवर्णी घंट अने ध्वजायें करी शोभितछे,चंडुआ तथा तोरणे करी सहीतछे,बावनां चंदन रस सहीत नीलुं रक्तवर्ण तेना ठामे ठामे हाथा दीधाछे, स्थानके स्थानके बावना चंदनना कलश मूक्याछे,फूलनी मालानां समुदाय,पंचवर्णी रस सहीत सुगंधि फूल तेना ठाम ठामने विषे पूंजछे, कृष्णागर कुंदरुक प्रमुखनो धूप तेने मघ मघाटें करी मनोहर गंधछे, अपत्सराना समुदाये करी ते सभा संकीर्णछे, देवतानां वाजित्र जे मृदंगादिक तेना स्वरें सहीतछे, तेना त्रण दिसेंयें त्रण द्वारछे, ते द्वार प्रत्येकें बे बे योजन उंच पणे छे अने एक योजन पोहोल पणे छे,तेटलोज प्रवेश छे एटले भींतनुं जाडपणुं जाणवुं ते प्रासादनी उपर स्वेत उत्तम सुवर्णनां शिखरछे, यावत् वनमाला पर्यंत द्वारनुं वर्णन पूर्वपरें जाणवुं.

ते द्वारने आगल प्रत्येकें प्रत्येकें मुखमंडपछे, ते साढाबार योजन लांब पणे अने सवाछ योजन पोहोल पणेछे, कांइक जाजेरा बे योजन उंचपणेछे, ते मंडप अनेक थंभें

करी सहीतछे, तिहां चंद्रोदय अने भूमिभागनो वर्णन पूर्वपरें जाणवुं ते प्रत्येक मुख मंडप उपर आठ आठ मांगलिक छे.

ते मुखमंडप आगलें प्रत्येकें प्रत्येकें प्रेक्षाघर मांडवाछे, ते पण तेटलाज लांबा पोहोलाछे ते प्रेक्षाघरना मध्यभागने विषे प्रत्येकें चोखूणा वज्र रत्नमय चोतराछे, ते चोतराना मध्यभागें मणिपीठिकाछे, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाडीछे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरें एकेक सिंहासन छे.

तथा ते प्रेक्षाघर मंडप आगले त्रण दिसें त्रण मणिपीठिका कहीछे, ते बे योजन लांबी पोहोली अने एक योजन जाडपणे छे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपरें चैत्यथूभछे ते चैत्यथूभने आगलें त्रण दिसियें प्रत्येकें मणिपीठिका छे ते प्रत्येक मणिपीठिका उपर चैत्यवृक्ष छे, हवे ते चैत्यवृक्षने आगलें जे त्रण दिसें त्रण मणिपीठिकाछे ते प्रत्येकना उपरें महेंद्रध्वजछे, ते हजारो गमे न्हानी ध्वजाउए करी सहीतछे, तेना उपरें आठ आठ मंगलीकछे, एनुं चित्र छठा आंकनुं त्रीजा पृष्ठमां जोवुं.

ते महेंद्रध्वजने आगलें त्रण दिसायें त्रण नंदापुष्करणी छे,ते साढाबार योजन लांबी अने सवाछ योजन पोहोलीछे, दस योजन उंडीछे, ते पुष्करणी प्रत्येकें प्रत्येकें पद्मवर वेदिकायेंकरीतथावनखंडे करी सहीतछे,ते प्रत्येक पुष्करणीनेत्रणदिसेंत्रणपगथालीयाछे

सुधर्मासभायें छ हजार मनोहर चोखूणा डंटला छे,तेमां पूर्वदिसें बे हजार पश्चिमदिसें बे हजार, दक्षिणदिसें एक हजार अने उत्तरदिसें एक हजार छे ते डंटलाने विषे घणा सुवर्णमय अने रूपामय पाटीयां छे, ते पाटीयांने विषे घणावज्रमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे घणा कृष्णादि पांच जातना सूत्रें बद्ध एवी फूलनी मालाना समुदाय छे, ते मालाना सुवर्णना फूबंका छे.

सुधर्मासभायें छ हजार गोमानशीका सय्यारूप स्थानक लांबा डंटलाछे, तेमां पूर्वदिसें बे हजार, पश्चिमदिसें बे हजार, दक्षिणदिसें एक हजार, अने उत्तरदिसें एक हजार छे ते गोमानसीकाने विषे घणा सुवर्ण अने रूपामय पाटीयां छे यावत् वज्र रत्नमय नागदंताने विषे घणा रजतमय शीकाछे, ते शीकाने विषे घणी वैडूर्यरत्नमय धूपघटीछे, ते कृष्णागरु, कुंदरुक, लोबान प्रमुखे करी सहीत छे.

ते सुधर्मासभाना मध्यने विषे एक महोटी मणिपीठिका छे ते बे योजन लांबी अने पोहोलीछे तथा एक योजन जाड पणेछे तेनी उपर मानवक नामे चैत्यथंभछे, ते साडासात योजन उंचो अने अर्द्धकोश भूमिमां उंडोछे, अर्द्धकोश विष्कंभ पणेछे, छ हांसछे, छ संधीछे, छ स्थानकें शोभितछे, ते माणवकथंभ उपरें दोढ योजन जइयें अने हेठे दोढ योजन मूकीयें तिहां मध्ये साढाचार योजमां घणा सुवर्ण अने रूपामय

पाटीयांछे, तिहां घणा वज्र रत्नमय नागदंताछे, ते नागदंताने विषे रूपामय शीकाछे, ते शीकाने विषे वज्रमय गोळ वृत्ताकारें दाबडाछे ते दाबडाने विषे घणा तीर्थंकर नी दाढाछे तेणेकरी सहीत थका रहेछे, ते दाढा विजयदेवताने अने बीजा पण घणा व्यंतरिक देव अने देवांगनाने अर्चवा योग्यछे, वांदवा योग्यछे, चंदनादिकें पूजवा योग्यछे, वस्त्रादिकें सत्कार करवा योग्यछे, सन्मान एटले बहुमान करवा योग्यछे, कल्याण कारी, मंगळकारी देव संबंधी चैत्यनी परें सेवा करवा योग्य छे, देवता ते दाढानी सेवा केवळ मुक्तिना निमित्तें करे छे.

ते माणवक नामा चैत्यथंभनी पूर्वेदिसें एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते बे योजन लांबी अने पोहोळीछे, एक योजन जाड पणे छे, तेनी उपर एक महोटुं सिंहासन छे.

माणवक चैत्यथंभनी पश्चिम दिसें एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते एक योजन लांबी अने पोहोळीछे, अर्द्धयोजन जाड पणेछे, तेनी उपर एक महोटी देव शय्याछे, ते देव शय्याने ईशानकूंणें एक महोटी मणिपीठिका छे, ते एक योजन लांबी पोहोळी छे, अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे, तेउपर एक पूर्वेला महेंद्रध्वजनी अपेक्षायें नाहानो एवो महेंद्रध्वजछे, ते शाडासातयोजन उंचोछे अने अर्द्धकोश पोहोळ पणेछे, ते लघु महेंद्रध्वजने पश्चिमदिसें विजयदेवतानो चोप्याल नामे हथीयारनो भंमार छे.

ते सुधर्मा सभा थकी इशान कूंणे एक महोटुं सिद्धायतनछे ते सिद्धनुं देहरुं शाडा बार योजन लांब पणेछे, अने सवाछ योजन पोहोळ पणेछे, नव योजन उंच पणेछे, तेना मध्यभागें एक महोटी मणिपीठिकाछे, ते बे योजन लांबी पोहोळीछे अने एक योजन जाड पणेछे, ते पीठिका उपरें एक महोटो देवछंदो एटले गंभारोछे, ते बे योजन लांबो पोहोळो अने एक योजन उंच पणे छे, ते गंभाराने विषे तीर्थंकरनी एकशोने आठ प्रतिमाछे, ते उंचपणे तीर्थंकरनी काया प्रमाणेछे एटले लघु सात हाथ प्रमाण अने उत्कृष्ट पांचशे धनुष प्रमाणे शरीर वाळी एवी प्रतिमां थापी रहेछे ते भगवंतनी प्रतिमाने पूठें प्रत्येकें प्रत्येकें छत्र धारकनी प्रतिमां कहीछे ते लीला सहीत छत्र धरती थकी रहेछे तथा ते जिनप्रतिमाने बे पासें प्रत्येकें प्रत्येकें बे चामर धारकनी प्रतिमाछे ते चामरने लीला सहीत वींजती थकी रहेछे तथा ते प्रत्येक प्रतिमाने आगळें बे बे नागदेवतानी प्रतिमा, बे बे यक्षदेवतानी प्रतिमा, बे बे भूत देवतानी प्रतिमा, बे बे कूंमधार देवविशेषनी प्रतिमा एवी आठ प्रतिमा ते विनयें करी नमती पगें लागती थकी हाथ जोडती थकी एवीथकी रहेछे ते प्रतिमा सर्व रत्नमयछे ते जिनप्रतिमाने आगळें १०८ घंटछे, १०८ चंदने चर्चित कळशछे, १०८ भृंगार, १०८ आरीसा, १०८ थाळ. १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक भाजन विशेष, १०८ मनोगुळिका पीठ विशे

ष, १०८ वात करंमक शृंगार विशेष, १०८ मनोहर रत्न करंमक १०८ हयकंठक भाज न,यावत् १०८ वृषभ कंठक भाजन विशेष १०८ फूलनी चंगेरी,यावत् १०८ पूंजणीनी चंगेरी, १०८ यावत् फूलना समूह, १०८ सुगंधि तेलना माबडा, १०८ धूपकडुछा इत्या दिक पूजानां उपकरण थाप्या थका रहेछे, ते सिद्धायतन उपर घणा आठ आठ मंगली क छे, छत्रातिछत्र छे, ते सिद्धायतननां शिखर शोल प्रकारनां रत्ने करी शोभित छे.

ते सिद्धायतनने इशानकूंणे एक महोटी उपपात सभा कहीछे ते विजय देवताने उपजवानुं स्थानकछे, ते जेवी सोधर्मी सभा कही तेवीज ए सभा पण जाणवी.

ते उपपात सभाने इशानकूंणे एक महोटो द्रहछे ते साढाबार योजन लांबपणे छे, सवाछ योजन पोहोल पणे छे, दश योजन उंडो छे ते द्रह पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे सहीत छे, ते जेवो नंदा पुष्करणीनो वर्णन सूत्रोमां कह्युंछे तेवोज शोभा आश्रयी एनुं पण वर्णन जाणवुं ते द्रहने इशानकूंणे एक महोटी अभिषेक सभा कही छे, तेजेवी सोधर्मी सभा कही तेवी जाणवी तेना मध्यभागें एक महोटी मणिपीठिका छे, ते एक योजन लांबी पोहोली अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे,ते मणिपीठिका उपरें एक मोहो टो सिंहासनछे, तेने विषे विजय देवताना अभिषेक करवानां भांम थाप्या थका रहेछे,

ते अभिषेक सभाने इशानकूंणे एक महोटी अलंकार सभा कहीछे ते अभिषेक स भा सरखी जाणवी. तिहां विजय देवता आभुषण पहेरे छे जिहां विजय देवतानां घणा उत्तम आभुषणनां ठाम आभुषणे भर्यां थकां तिहां थाप्यां थकां रहेछे,

ते अलंकार सभाने इशानकूंणे एक महोटी व्यवसाय सभाछे, जिहां विजय देवता पुस्तकरत्न वांचेछे ते व्यवसाय सभा अलंकार सभा सरखी जाणवी. तिहां विजय देवतानुं पुस्तकरत्न थाप्युं थकुं रहे छे, ते पुस्तकरत्ननां अरिष्टरत्नमय पाठां छे,रूपामय पानाछे, अ रिष्टरत्नमय अक्षरछे, राता सुवर्णमय दोरा छे जेणे करी पुस्तक परोइयें. तथा नवनवी मणिमय गांठिछे, गांठे पानुं नीकले नही, वैडूर्यरत्नमय स्याहीनो खडीउछे ते खडीयाने राता सुवर्णनी शांकलछे, ते खडीयानुं अरिष्टमय ढांकणुछे, ते खडीया मध्ये अरिष्टरत्न मय स्याही छे, वज्ररत्नमय लखवानी लेखणछे, अरिष्टरत्नमय अक्षरछे, ते पुस्तकमां के वल धर्मशास्त्र छे, ए सर्वे पांचे सभानुं चित्र एकसाथेंज आलेख्युं छे.

ते व्यवसाय सभाने इशानकूंणे एक महोटी नंदापुष्करणी कही छे तेनो वर्णन द्र हनी पेरें जाणवुं ते नंदापुष्करणीने इशानकूंणे एक महोटो बलिपीठ छे जिहां बलिपिंड मूके ते बलिपीठ उटजारूप जाणवुं ते बे योजन लांबो अने पोहोलो छे तथा एक योजन जाडपणे छे, आंहीं सुधी विजय राजधानीनो अधिकार संक्षेपथी पूरण थयुं.

हवे ए विजय देवता जेवारें उपजेछे तेवारें श्रीजिनप्रतिमानी पूजा प्रमुख केवा के

वा प्रकारनी शुभ करणीउ करेछे तेनो अधिकार श्रीजीवाभिगम सूत्रमां सविस्तर ल खेलुंछे तिहांथी जाणी लेवुं ए जंबुद्वीपनां प्रथम द्वारनुं अधिकार संक्षेपथी कह्युं.

हवे विजयंत नामा बीजा द्वारनुं अधिकार कहेछेः—मेरू पर्वतने दक्षणदिसें पीस्ता लीश हजार योजन वेगळूं जंबूद्वीपनी दक्षण दिसिने अंते विजयंत नामे बीजुं द्वारछे तेनुं अधिकार सर्वे विजयद्वारनी परें जाणवुं परंतु एटलुं विशेष जे एनुं अधिकारी वि जयंत नामे देवताछे तेनी राजधानी दक्षण दिसें विजया राज्यधानी जेवी छे.

हवें जयंत नामा त्रीजा द्वारनुं अधिकार कहेछेः—मेरू पर्वतनी पश्चिमदिसें पीस्ता लीश हजार योजन वेंगळुं जंबुद्वीपने पश्चिमदिसिने अंते सीतोदा महानदीनी उपरें जयंत नामे त्रीजुं द्वारछे तेनुं अधिकार पण विजयद्वार सरखुं जाणवुं. इहां जयंतनामे देवता छे तेनी राजधानी पश्चिमदिसें विजयराजधानीनां सरखी जाणवी.

हवे चोथुं अपराजित नामे द्वार कहेछेः—मेरू पर्वतने उत्तरदिसें पीस्तालीश हजार योजन वेगळुं जंबू द्वीपनी उत्तरदिसीने अंते अपराजितनामें चोथुं द्वार कह्युंछे ते वि जयद्वार सरखुं जाणवुं इहां अपराजित देवताछे तेनी राजधानी पूर्वोक्त द्वीपनी उत्तर दिसें विजयराजधानी सरखी जाणवी. ए चारे दरवाजानां चारे देवतानी राजधानी अ हींथी असंख्यातमें जंबूद्वीपें चार दिसायें जाणवी. ए चारे दरवाजानां स्वामी तथा सामानिक देवता तेनुं आयु एक पल्योपमनुं जाणवुं. इति द्वार वर्णन समाप्त.

अथ भरतक्षेत्र वर्णन प्रारंभ

हवे ए जंबुद्वीपमां भरतक्षेत्र नामे वर्ष (वास) कया स्थानकेछे ते कहेछे चुल्लहेम वंत नामे वर्षधर पर्वत तेथकी दक्षिणदिसें अने दक्षणदिसें जे लवण समुद्र तेथकी उ त्तरदिसें तथा पूर्वदिसें जे लवण समुद्र तेथकी पश्चिमदिसें अने पश्चिमदिसें जे लवण समुद्र तेने पूर्वदिसें ए अवकासने वचें जंबुद्वीपने विषे भरतनामे क्षेत्रछे जेने विषे शूका वृक्षना ठूंठ घणाछे तथा बोरडी बावल प्रमुखनां कांटा घणाछे तथा उंची नीची विष म भूमि घणीछे तथा दुर्गमस्थानक घणाछे, पर्वत घणाछे, भैरवझांप घणाछे, पाणीना प्रपात घणाछे, पाणीना निझरणा घणाछे, खाड घणीछे, गुफा, नदी, द्रह, रूंख, गुछा, गुल्म, नवमालिका प्रमुख पद्मलतादि वेलडी, कोहली, अटवी, उजाड, स्वापद हिंसक जीव व्याघ्रादिक, चोर, तस्कर, स्वदेशथी उपना उपद्रव, परकटकनां करेलां उपद्रव, दुर्भिक्ष, भिक्षाचरने भिक्षादुर्लभ मले, दुकाल, पाखंडी जिनमार्गना उत्थापक, कृपण, लोभी, सातइति, इत्यादिक सर्वे वाना जाणवां तथा राजा पण लोकने बहु दुःखना दे नार, रोग घणा, संक्लेष घणा, वारंवार संक्षोभ, दंभ, आकराकर प्रमुख घणाछे.

ए पूर्वदिसें अने पश्चिमदिसें लांबुछे, उत्तर अने दक्षणे पहोलुंछे, उत्तरदिसें पल्यंकने शंस्थाने संस्थितछे, दक्षणदिसें धनुषना पुठला भागने संस्थाने संस्थितछे तथा त्रिधा पूर्वे दक्षण अने पश्चिमे लवण समुद्रने फरश्योछे तथा जे गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदीयें करी तथा बैताढ्य पर्वतें करी छभागें वेहेचाणु छे एटले एना छ खंम थया छे.

जंबूद्वीपनो विष्कंभ एक लाख योजननो छे तेने एकसोने नेवुंमे भागे एटले (५२६) योजन अने एक योजनना ओगणीश भाग करीयें एवा छ भाग उपर एटलुं विष्कंभ पणे भरत क्षेत्र छे एनां मध्य भागने विषे वैताढ्य पर्वतछे ते भरत क्षेत्रने एक दक्षणार्द्धभरत अने बीजो उत्तरार्द्ध भरत. एवा बे भागें वेंचतो थको रह्यो छे.

तिहां वैताढ्य पर्वतने दक्षणदिसें जे लवण समुद्र तेने उत्तरदिसें, अने पूर्वदिसें जे लवण समुद्र तेने पश्चिमदिसें अने पश्चिमदिसें, जे लवण समुद्र तेने पूर्वदिसें दक्षणार्द्ध भरतछे ते पूर्वदिसें पश्चिमदिसें लांबो अने उत्तर दक्षणदिसें पहोलो अर्द्ध चंद्रने आकारे छे, पूर्व, दक्षण अने पश्चिम ए त्रण दिसें लवण समुद्रने फरश्योछे, गंगा अने सिंधू ए बे महोटी नदी तेणे त्रण भागें वेहेच्युंछे, ते बशें अडत्रीश योजन अने एक योजननां ओगणीश भाग करीयें तेवा त्रण भाग उपर, एटलुं पहोलपणे दक्षणार्द्ध भरतछे, दक्षणार्द्ध भरतने अंते उत्तरदिसें धनुषना पणछनी परे जीव्हाछे ते पूर्वपश्चिम लांबी बे छेहडे लवण समुद्रने फरसी रहीछे ते जीवा पूर्वपश्चिमें लांबपणे ए७४० योजन अने उपर उगणीसीया बार भाग छे ते जीवानुं धनुपृष्ट दक्षणदिसि ए७६६ योजन उपर उगणीसीयो एक भाग कांइक जाजेरो परिधिपणे कह्युं छे ए भरतार्द्धनुं चित्र जोवुं.

हवे दक्षण भरत मांहे अयोध्यानगरीनुं प्रमाण कहेछे.

दक्षणार्द्ध भरतनां मध्यखंमनी वचमां बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी अयोध्या (विनिता) नगरीछे ते लवण समुद्रथी अने वैताढ्य पर्वतथी एकशो चौद योजन अने उपर एक योजननां ओगणीश भाग करीयें तेवा अगीआर भाग एटले आंतरेछे केमके दक्षणार्द्ध भरतनां मध्य खंमनो विस्तार बशें अडत्रीश योजन अने त्रण कलाछे तेमांथी अयोध्यानो विस्तार नव योजन काहाडीयें तेवारें बशें उगणत्रीश योजन अने त्रण कला रहे तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारे ११४ योजन उपर अगीआर कला थाय तेटली लवणसमुद्र अने वैताढ्य पर्वतथी वेगली अयोध्या नगरीजाणवी.

हवे मागधादि त्रण तीर्थ कया स्थानके छे ते कहे छे.

चक्रवर्त्तिने वसवर्त्ति भरत, ऐरवत अने बत्रीश विजय मली चोत्रीश क्षेत्र चक्रवर्त्तिनां छे तेनी जे गंगा, सिंधू तथा रक्ता अने रक्त वती ए चार भरत ऐरवतनी नदीउ तेने समुद्रमां प्रवेश करतां तथा विजयनी नदीउने सीतोदा तथा सीतानदी मांहे प्रवेश क

रतां एटले जे स्थानके जरत तथा ऐरवतनी नदीउं समुद्रमां प्रवेस करे तथा जे स्थानकें बत्रीश विजयनी नदीउं सीतानदी अने सीतोदानदी मांहे प्रवेश करे ते स्थानक विशेष नदी सागर संगम उत्तम स्थानक कहीयें तिहां दक्षणार्द्ध जरतमां एक पूर्वदिसियें मागध तीर्थछे बीजुं पश्चिमदिसियें प्रजास तीर्थछे तथा ए बे तीर्थनां वच्चमां एक वरदाम तीर्थ छे एरीतें जरत क्षेत्रमां त्रण तीर्थ छे तेमज ऐरवतमां तथा बत्रीश विजयमां पण प्रत्येकें त्रण त्रण त्रीर्थ गणतां सरवाले जंबुद्वीपमां एकशोने बे तीर्थ छे.

॥ अथ वैताढ्यपर्वत वर्णन ॥

हवे जरतक्षेत्रमां पूर्व पश्चिमें लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो वैताढ्यनामे पर्वतछे ते पच्चीश योजन उंचो छे अने पच्चीश योजननो चोथो जाग सवाछ योजन जूमी मांहे छे ए अढीद्वीपमां एक मेरुविना बीजा सर्वपर्वत जेटला उंचपणे होय तेनो चोथो जाग धरतीमां होय तथा पच्चाश योजन पोहोल पणेछे तेनी बाहु पूर्व पश्चिमदिसें ४८८ योजन अने उपर एक योजननां ओगणीसीया शोल जाग लांबपणे छे, तेनी जीवा पणछ उत्तरदिसें १०७२० योजन उपर उंगणीसीया बारजाग लांबपणे छे तथा तेनुं धनुपृष्ट दक्षणदिसें १०७४३ योजन उपर उंगणीसीया पंदरजाग परिधिपणे रुचकनामे जे ग्रीवानुं आजरण तेवा संस्थाने छे ए पर्वत सर्व रजतमय रूप्य मयछे अने स्फाटिकनी परे सुकोमल छे यावत् जोतां थकां प्रतिबिंब देखाय माटे प्रतिरूप छे.

ते दक्षण अने उत्तर ए बे पासें बे पद्मवर वेदिकायें करी अने बे वनखंडे करी सर्वदिसें चोकफेर वींटयो छे, तें पद्मवरवेदिका अर्द्ध योजन उंचपणें अने पांचशें धनुष्य पोहोल पणे छे तथा पर्वत जेटली लांब पणे छे अने वनखंड कांइक उणा बे योजन पोहोल पणे छे तथा पद्मवरवेदिका जेटला लांबा छे, तेनुं काला वर्णे काली कांति छे,

वैताढ्यने पूर्व पश्चिमदिसें बे गुफाछे ते उत्तर दक्षणे पच्चाश योजन लांबीछे, अने पूर्वपश्चिमें मांहेली कोरे पोहोली बार योजन छे, आठ योजन उंच पणे छे, तथा आठ योजन उंचा अने चार योजन पोहोला तथा चार योजन प्रवेश एवा दक्षण अने उत्तरने सन्मुख वज्ररत्नमय निवड एवां बे बारणा तेना कपाटें करी ढांकी छे तथा निरंतर अंधकार अने तिमिश्र तेणेकरी सहीतछे, चंद्र सूर्यादिकनी ज्योति रहीत मार्गछे एवी पश्चिमदिसें तिमिश्रागुफा अने पूर्वदिसें खंडप्रपाता मली बे गुफाछे तेना विषे कृतमाल अने नृत्यमाल एवे नामे बे देवता एक पल्योपमना आयुवाला वसेछे तथा ते गुफाने विषे उमगा अने निमगा एवी बे नदीछे ते त्रण त्रण योजन विस्तारेछे ते नदीउं, पर्वत मांहेला जे महोटा पाषाण ते मांहेथी निकलीने महोटी नदी जे गंगा सिंधु प्रमुख छे ते मांहे गमन

करेछे ते बे नदी वच्चे वैताढ्यना पच्चाश योजन मांहेला पच्चीशमुं अने छवीशमुं ए बे योजननुं आंतरुं छे. ते गुफानी बेहु बाजुनी भींतने विषे चक्रवर्त्ति जे थाय ते बे बे साहामा सूर्यमंमल सरखा कांकिणि रत्नना उगणपच्चाश मांमला अजुआलुं करवा माटें लखे छे ते प्रत्येक मंमल उत्सेधांगुलें करी पांचशें धनुष्यनुं छे तथा वली ए गुफा प्रमाणांगुलें करी बार योजन पोहोली छे तथा एकेका मांमलाने वच्चमां एकेक योजननुं आंतरुंछे तथा मांमलाने नीचे अने उपर सर्व थइने आठ योजन गुफा उंचीछे तेमाटे पोहोलपणे बार योजन प्रकाश करेछे अने मंमलने आंतरे एकेक योजन प्रकाश करेछे तथा उंच पणे आठ योजन प्रकाश करेछे ए मांमला बन्ने पासें एकेक योजनने आंतरे गोमुत्रिकाने आकारें करतां एक भींते चोवीश मंमल थाय अने बीजी भींते पच्चीश मंमल थाय तेमां सिंधुनदी पासें तिमिश्रा नामे गुफाछे ते गुफामांहेथी चक्रवर्त्ति दक्षण मध्य खंमथी उत्तर मध्य खंममां प्रवेश करेछे अने उत्तर मध्य खंमने साधी त्यांथी पाछो वलतां रुषजकूटने विषे पोतानुं नाम लखीने गंगानदी पासें जे बीजी खंमप्रपाता नामे गुफाछे तेमांथी थइने दक्षण भरत मांहे पाछो वले तथा चक्रवर्त्ति जिहां सुधी जीवतो होय तिहां सुधी ते गुफाउनां कमाड उघाडा रहेछे.

हवे पूर्वोक्त वनखंमने बे पासें दश दश योजन उंचा जइयें तिहां बे विद्याधरनी श्रेणीछे ते दश दश योजन पहोल पणे छे अने पर्वत जेटली लांब पणे छे ते बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बें वनखंमे करी चोकफेर वींटीछे एनुं लंबाइ तथा पहोलाइ आदिकनुं वर्णन पूर्वली परे जाणवुं तिहां दक्षणदिसीनी जे विद्याधरनी श्रेणी छे तेने विषे विद्याधरोना गगनवल्लज प्रमुख पच्चास महोटा नगर राजधानी रूपछे अने उत्तर दिसीनी जे विद्याधरनी श्रेणीछे तेने विषे विद्याधरोनां रथनुपुर चक्रवाल प्रमुख साठ महोटा नगरावास राजधानी रूपछे एरीतें बे श्रेणीनां मली एकसोने दश नगर थाय ते नगरने विषे देशनी राजधानी सहित विद्याधरनां राजा महोटा बलवंत वशेछे.

वली ते विद्याधरनी श्रेणीना भूमिभाग थकी वैताढ्य पर्वतने बे पासें दश दश योजन उंचा जइयें तेवारें आभियोगिक देवतानी बे श्रेणी आवे ते पण दश दश योजन पहोली अने पर्वत सरखी लांब पणे छे ते बेहु श्रेणी बने पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंमेकरी वींटीछें तेनुं वर्णन पूर्वपरें जाणवुं ते भूमिमां घणा व्यंतरिक देवता अने देवांगना यावत् विचरेछे ते श्रेणीने विषे सौधर्मेंद्रनां चार लोकपाल तेना आभियोगिक एटले आज्ञाकारी किंकर देवोना घणा भवन छे ते सर्व भवन बाहेर गोलाकारे छे, मांहे समचतुरस्त्र छे, यावत् अपत्सराना समूहें करी संकीर्ण छे तेमां ते देवता वसे छे तेनुं एक पल्योपमायु छे.

वळी ते आभियोगिक देवोनी श्रेणी थकी पांच पांच योजन ऊंचा जइयें तिहां वैताढ्य पर्वतनुं शिखरतळुं छे ते दश योजन पोहोळ पणे अने पर्वत जेटलो लांब पणेछे ते शिखर तल एक पद्मवरवेदिकायें करी अने एक वनखंडे करी सर्व दिसियें चोक फेर वींटेलुं छे ते शिखर तलने विषे घणा व्यंतरिक देवता देवांगनाउ भोगभोगवता थका विचरेंछे.

वैताढ्य पर्वतने विषे नव कूट एटले शिखरछे तेना नाम कहेछे:-१ सिद्धायतनकूट, २ दक्षणार्द्धभरत नामा कूट, ३ खंडप्रपात गुफा कूट, ४ माणिभद्रकूट, ५ वैताढ्य कूट, ६ पूरणभद्रकूट, ७ तिमिश्रागुफा कूट, ८ उत्तरार्द्धभरत कूट ९ वैश्रमणकूट, ए नव कूटछे.

तेमां प्रथम सिद्धायतनकूट सवाछ योजन ऊंचपणे छे अने मूलमां सवाछ योजन पोहोळ पणे वचमां कांइक ऊणा पांच योजन पोहोळपणेंछे, उपर कांइक जाजेरा त्रण योजन पोहोळ पणे छे मूलमां पोहोळो वच्चमां सांकडो अने उपर पातळो गायना पूंछने संस्थाने छे सर्व रत्नमय छे ते कूट पद्मवरवेदिका अने वनखंडें करी चोफेर वींटयुंछे तेना मध्यभागने विषे शाश्वती अरिहंतनी प्रतिमानुं आयतन एटले देहेरुंछे, ते एक कोश लांब पणे, अर्द्धकोश पोहोळ पणे अने चौदशें ने चाळीश धनुष ऊंच पणेछे तेने विषे ऋषभ, चंद्रानन, वारिषेण अने वर्द्धमान ए चार नामे तीर्थंकरनी एकशोने आठ प्रतिमाछे.

ए प्रथमना सिद्धायतना कूटनी पश्चिमदिसें बीजो दक्षणार्द्धभरत नामे कूट छे तेपण सिद्धायतन कूट जेटलुं ऊंचो पोहोळोछे ते प्रासादना मध्यभागमां एक प्रसादावतंसकछे ते एक कोश ऊंचो अने अर्द्धकोश पोहोळ पणेछे तेना मध्यभागमां एक पीठिका (चोतरोछे) ते पांचसें धनुष लांबो पोहळो अने अढीसें धनुष जाड पणेछे तेनां उपर एक बेसवानुं सिंहासन छे ते हजारो गमे भद्रासनादिके परवर्युं छे ए कूटने विषे दक्षणार्द्धभरतनामे देवता महाऋद्धिवंत एक पल्योपमायुनी स्थितियें वसेछे तेने चार हजार सामानिक देव, चार अग्रमहिषी परिवार सहीत, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकनां स्वामी, चारे दिसीयें चार चार हजार भभारहे एवा शोळ हजार आत्मारक्षक देवता, दक्षणार्द्ध भरतक्षेत्रनुं दक्षणार्द्ध राजधानीनुं तथा अनेरा पण घणा देवता देवांगनानो आधिपत्य पणु पाळतो थको यावत् विचरेछे ए नवे कूट सवाछ योजन ऊंचा जाणवा.

चोथुं माणिभद्रकूट, पांचमुं वैताढ्य कूट अने छठुं पूरणभद्रकूट ए त्रण सुवर्णमय छे शेष छ कूट रत्नमय छे तेमां तिमिश्रागुफा कूटमां कृतमाल देवता वसेछे तथा खंडप्रपातगुफा कूटमां नृतमाल देवता वसेछे एरीतें बे कूटनां देवताना नाम कूटने नामे नथी अने शेष छ कूटनां देवतानां नाम कूटने नामे छे जे कूटनो नाम तेजनाम तेमांवसनार देवतानो पण होय ए सर्व देव एक पल्यायु वाला जाणवा ए सर्व मेरू पर्वतने दक्षण दिसें तिहां असंख्याता द्वीप समुद्र व्यतिक्रमी जइयें तिहां बीजो जंबूद्वीप छे तेने बार

हजार योजन अवगाहीयें तिहां ए सर्वे देवोनी राजधानी विजया राजधानी सरखी जाणवी
तथा वैताढ्य गिरिकुमार नामे देवता महर्द्धिक एक पल्योपमायु वालो इहां वसेछे तेथी ए पर्वतनुं पण वैताढ्य एवुं नाम शाश्वतो छे.

हवे उत्तरार्द्ध भरतनामे वास क्षेत्र पूर्व पश्चिमें लांबो उत्तर दक्षणे पोहोलो पल्यंकने संस्थाने संस्थितछे ते गंगा अने सिंधु ए बे महोटी नदी तेणे करी त्रण भागें वेहेंचाणुछे २३८ योजन उपर उगणीसीया त्रण भाग एटलुं पोहोल पणेछे, एनी बाह् पूर्व पश्चिमदिसें १८९२ योजन उपर उगणीसीया साडासात भाग एटली लांब पणे छे एनी जीवा पणछनी परें उत्तरदिसें १४४७१ योजन उपर उगणीसीया छ भाग कांइक उणा एटली लांब पणे छे ते जीवानुं धनुपृष्ठ दक्षणदिसें १४५२८ जयोन उपर उगणीसीया अगीआर भाग एटलुं परधि पणेछे.

हवे ए उत्तरार्द्धभरतमां ऋषभकूटनामे पर्वतछे ते कहेछेः—गंगाप्रपातकूंडनी पश्चिमदिसें अने सिंधुकूंडनी पूर्वदिसें चुल्लहिमवंत पर्वतना दक्षण पासानां नितंब पासें ऋषभकूटछे ते आठ योजन धरतीमां उंच पणे, मूलमा आठ योजन पोहोल पणे, वच्चमां छ योजन पोहोल पणे अने उपर चार योजन पोहोल पणे तथा पाठांतरे मूलमां बार योजन पोहोल पणे मध्यमां आठ योजन पोहोलो अने उपरें चार योजन पोहोलो छे गायना पूंछने संस्थाने सर्वे जंबूनंद रत्नमय श्यामवर्णेछे एमां पूर्वली परे भवन प्रमुख जे छे तेशास्त्रांतरथी जाणवा इहां ऋषभनामे महर्द्धिक देवता वसेछे तेनो परिवार तथा एनुं अनेरे जंबूद्वीपें राजधानीनो स्थानक यावत् पूर्वपरे सर्वे कहेवुं.

ए भरतक्षेत्रने विषे भरत नामे देवता महा ऋद्धिवंत सामानीकादिक देवोयें सहीत एक पल्योपमने आउखे वसेछे तेथी एवुं भरत वर्ष एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे चुल्ल हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—

भरत क्षेत्रने उत्तर दिसें भरतक्षेत्रनी सीमा रूप ए चुल्ल हेमवंत पर्वत छे ते एकशो योजन उंच पणे छे अने पच्चीश योजन धरती मांहेछे तथा १०५२ योजन उपर उगणीसीआ बार भाग एटेलो पोहोल पणे छे,तेनी बाहा पूर्व पश्चिमें प्रत्येकें ५३५० योजन उपर उगणीसीया साडा पंदर भाग छे, तेनी जीवा पणछ उत्तर तरफ पूर्व पश्चिमें लांबी २४९३२ योजन उगणीसीयें अर्द्धभागें कांइक उणो एटली लांब पणे छे तेनुं धनुपृष्ट दक्षणे २५२३० योजन उपर उगणीसीया चार भाग परिधि पणेछे ए रुचक नामा वस्तुने संस्थाने रह्यो छे, सर्वे सुवर्ण मयछे, बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी वींट्योछे ए पर्वत उपर घणा व्यंतरिकदेव देवांगनाउ विचरे छे इत्यादि कहेवुं.

ए पर्वतना मध्यनागे एक महोटो पद्मद्रह नामें द्रहछे ते पूर्वपश्चिम लांबपणे एक हजार योजनछे अने उत्तर दक्षिण पोहोळो पांचशो योजन छे, दश योजन उंमोछे, ए द्रहनुं रूपामयतटछे, ते द्रह एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंमे करी चोकफेर वींटयो छे,

ते द्रहना मध्यनागें एक महोटुं कमलछे ते एक योजन लांबो अने पोहोळो छे तथा अर्द्ध योजन जाडो छे एटले बे कोश पाणी थकी उंचो छे अने दश योजन उंमो पाणी मांहे छे एम पाणीमां तथा उपर मली साडा दश योजन उंचो छे ते कमल एक जगतीयें करी चोकफेर वींटेलो छे ते जगती पाणी उपरे जंबूद्वीपनी जगती प्रमाणे छे गवाक्ष गोख पण तेज रीतें जाणवा ए कमलनो वज्ररत्नमय मूलछे, अरिष्टरत्नमय कंद छे, वैडूर्यरत्न मय नालछे, वैडूर्यरत्नमय बाहेरना पत्रछे, कांइक राता सुवर्णमय मांहेला पांखडी छे, रातासुवर्णमय केशराछे, विविध प्रकारनां मणिमय कमलनां बीज नागछे, कनकमय कर्णिका मोमोछे, ते कर्णिका अर्द्धयोजन लांबी तथा पोहोळीछे, एक कोश उंची छे.

ते कर्णिकानी उपरली नूमिना मध्यनागे एक महोटो नवनछे, ते एक कोश लांबो, अर्द्धकोश पोहोळो, चौदशेंचालीश धनुष्य उंचो, अनेक सइकडा गमे थांने करी सहीतछे, ते नवनने त्रणदिसेंयें त्रण बारणाछे ते प्रत्येक पांचशे धनुष उंचाछे, अढीशें धनुष पोहोळा छे, स्वेत प्रधान कनकमय थूनिका चोतरो तेणे करी सहीतछे, यावत् वनमाला पर्यंत इहां कहेवुं ते नवनना मध्य नागे एक मणिमय पीठिका छे ते पांचशें धनुष लांबी पोहाळी अने अढीशें धनुष जाडीछे तेना उपर श्रीदेवीनी सय्या छे.

ते कमलनी प्रथम परिधियें बीजा एकशोने आठ कमलछे ते सर्वे उंच पणे तथा लांब पणे पूर्वोक्त मूल कमलथी अर्द्ध नागेछे एटले एक कोश पाणीथी बाहेर छे अने दश योजन पाणीमांहे छे मली सवादश योजन उंचाछे अर्द्ध योजन लांबा पोहोळा छे, तेनी पण कर्णिका प्रमुख तथा नुवनादिक सर्व ते मूल कमलनी पेरें अर्द्ध प्रमाण वाला जाणवा. ए एकशोने आठ कमलने विषे श्रीदेवीना नूषणादिक वस्तु रहेछे.

हवे बीजी परिधिना कमलछे ते मुख्य कमलथी वाव्यकूंणे, उत्तर दिसियें अने इशान कूंणे ए त्रण दिसायें श्रीदेवीनी चार हजार सामानिक देवीना चार हजार कमल छे तथा पूर्वदिसें श्रीदेवीनी चार महत्तरिका गुरू स्थानीय देवीना चार कमलछे तथा अग्निकूंणे मांहेली परखदानां आठ हजार देवतानां आठ हजार कमलछे तथा दक्षिणदिसियें वचली मध्य परखदानां दश हजार देवतानां दश हजार कमलछे तथा नैरुतकूंणे बाहेरली परखदानां बार हजार देवतानां बार हजार कमलछे तथा पश्चिमदिसें सात कटकना स्वामीनां सात कमलछे, एरीतें ए बीजा वलयमां सरवाळे ३४०११ कमल छे.

हवे त्रीजी परिधिनां कमल कहेछेः—त्रीजा वलयनी प्रत्येक दिसायें चार चार हजार कमल गणतां चार दिसायें शोल हजार कमल श्रीदेवीना आत्मरक्षक देवोनां छे.

वली ते मूल कमलने चोफेर त्रण बीजा परिक्षेप छे एटले मांहेली, विचली अने बाहिरली एवी त्रण परिधि अर्थात् चोथी, पांचमी अने छठी ए त्रण परिधिनां कमलोमां श्रीदेवीनां आभियोगिक किंकर देवो रहेछे तेनी संख्या कहेछे चोथी मांहेली परिधिमां बत्रीश लाख कमलछे, विचली पांचमी परिधिमां चालीश लाख कमलछे अने बाहेरली छठी परिधिमां अडतालीश लाख कमलछे ए त्रण परिधिना एक करोडने वीश लाख कमल थया तेनी सार्थे आगली त्रण परिधिनां तथा मुखकमलमलीने ५०१२० कमल मेलवीयें तेवारे सरवाले १२०५०१२० कमल थाय. सर्व कमल जंबुवृक्षनी पेठे शाश्वता पृथवीकाय रूपछे परंतु कमलना आकारें छे माटे कमल कहीने वखाण्या छे अने पहेली परिधिना कमलथी बीजी परिधिना कमल अर्द्ध प्रमाणवाला छे एम आगल पण सर्व परिधियें अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण वाला कहेवा तथा ए पद्मद्रहने विषे जेम कमलोनो परिवार वखाण्यो तेम बीजा पर्वतोनां द्रह संबंधी पण एमज परिवार जाणवो. पद्मद्रहने विषे घणा कमल पद्मद्रहने आकारें पद्मद्रह सरिखाछे माटे एनुं पद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नाम छे इहां श्रीनामेदेवी महाऋद्धिवंत यावत् एक पल्योपमना आउखावाली वशेछे ए कमलनुं चित्र जोवुं.

हवे ए द्रहना बारणां प्रमुख वखाणतो छतो बीजा पर्वतोनां द्रह संबंधी वक्तव्यतापण साथेज कहेछे.

हिमवंत तथा शिखरी ए बे पर्वतो उपर पद्म तथा पुंडरीक ए बे द्रहने विषे एक पूर्वदिशि, बीजो पश्चिमदिशि, त्रीजो मेरुपर्वतने सन्मुख ए त्रण द्वारछे, ते बारणा पण स्वस्वदिशि द्रहना मानथी, एंशीमे भाग प्रमाणेछे. ते केम ? लोके—द्रहनो जे विस्तार पांचसे योजन पूर्व अने पश्चिमदिशिए छे, ते एंसीमे भागे वहेंचीए तेवारें सवाछ योजन आवे; तेमाटे पूर्व अने पश्चिमनां बारणां द्रहने विषे सवाछ योजन पहोलां छे. अने मेरुसन्मुख हजार योजन द्रहछे ते एंसीभागे वहेंचीए तेवारें साढाबार योजन भागे आवे तेमाटे मेरुसन्मुख द्रहनां बारणा साढाबार योजन पहोलां छे एम जाणवुं. ते द्वार तोरणसहित तथा तेमांथी नदीउ नीकली छे तेणे करी सहित छे. शेष बीजा चार द्रहने विषे दक्षिण अने उत्तर दिशाए बे बे बारणां छे तेमना मध्ये जे मेरु सामा बारणाछे ते बारणा स्वदिशि द्रहना एंसीमे भागेछे. जेम महापद्म तथा महा पुंडरीक ए बे द्रह मेरुदिशि सन्मुख बे सहस्र योजन छे, तेमना लांब पणाने एंसीभागे वेंहेचतां पचीश योजन आवे, तो जे मेरु सन्मुख बारणुंछे, ते पचीश योजननुं छे. अने

बाहेरनां दक्षिण तथा उत्तर सन्मुख जे बारणा छे ते, मांहेला मेरु सन्मुख बारणाथी अर्द्धमाने एटले साढाबार योयन प्रमाणे छे. वली एरीते तिगिछि तथा केशरी द्रह मेरु दिशि लांबा चार हजार योजन छे. ते एंसीभागे वहेंचतां पचाश योजन प्रमाणे मेरु सन्मुखनु बारणुं छे, अने दक्षिण तथा उत्तरनां जे बारणां छे, ते मांहेला बारणाथी अर्द्ध एटले पचीश योजन प्रमाणनो छे. ए सर्व द्रहना बारणां जे छे. ते तोरण तथा नदीए सहित छे एम जाणवुं.

ए पद्मद्रहनां पूर्वदिसीने तोरणेथी गंगा नामे महोटी नदी नीकली ते पूर्वदिसि सन्मुख पांचशें योजन पर्वत उपर जइने गंगावर्त्तन नामे कूट फरीने पांचशें त्रेवीश योजन उपर उंगणीसीया साडात्रण भाग एटली दक्षणदिसी साहामी पर्वत उपर जइने जेम मोहोटा घडानां मुख मांहेथी पाणीनो समूह नीकलतो होय ते सरखो मुक्तावलीनां हारने संस्थाने कांइक जाजेरा शो योजननें प्रपातें पाणीने पडवे करीने हेठी पडेछे ए गंगानदी जिहां पडेछें तिहां एक महोटी जीनी प्रणालीछे ते जीनी अर्द्ध योजन लांबी अने सवाछ योजन पोहोली, अर्द्धकोश जाडी, मगरमत्सनुं पसार्युं मुख ते संस्थाने संस्थितछे ए गंगानदी जिहां पडेछे तिहां एक गंगा प्रपात एवे नामे कुंमछे, ते शाठ योजन लाबो अने पोहोलो छे तथा १९० योजन कांइक जाजेरा परिधिछे, दश योजन उंमो छे, गोलाकारे छे. अनेक जातना तिहां कमलछे, ते कुंम एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंम तेणेकरी चोकफेर वींटेलुं छे, ते कुंमने चारेदिसें पगथालीया छे.

ते कुंमना मध्यभागें एक महोटो गंगानामे द्वीपछे ते आठ योजन लांबो अने पोहोलो वृत्ताकारेंछे, कांइक जाजेरा पच्चीश योजन तेनी परिधिछे, बे कोश पाणी थकी उंचो सर्व वज्ररत्नमय छे ते द्वीप एक पद्मवरवेदिका अने वनखंमेकरी चोफेर वींटेलुंछे तेना उपरे गंगा नामक देवीने वसवानो भुवनछे घरछे ते एककोश लांबो, अर्द्धकोश पोहोलो अने १४४० धनुष्य उंचोछे तेमां गंगादेवीनी सय्याछे माटे एनुं गंगाप्रपात नामछे.

ते गंगाप्रपातकुंमने दक्षणदिसिने तोरणे थइने गंगा महानदी नीकली थकी उत्तरार्द्ध भरतक्षेत्र मांहे आवती आवती सात हजार नदीयें पूराती थकी खंमप्रपाता गुफाने हेठे वैताढ्य पर्वतने भेदीने दक्षणार्द्ध भरत मांहे आवती थकी दक्षणार्द्ध भरतनां मध्यभागें जइने पूर्वदिसि साहामी वलती थकी चौदहजार नदीयें पुराती थकी नीचे जंबूद्वीपनी जगतीने भेदीने पूर्वदिसें लवण समुद्रमांहे भले छे.

ए गंगानदी जिहांथी वहेछे तिहांथी मूले सवा छ योजन पोहोली छे अने अर्द्धकोश उंमीछे पछी बे पासें मात्रायें मात्रायें वधती थकी समुद्रमां भलतां शाडीबाशठ योजन पोहोल पणे थइ अने सवा योजन उंम पणे थइ एटले सर्व नदीउने मूल थकी मुखे

समुद्रमां जलतां दश गुणो प्रवाह होय तथा पोहोल पणाथी पच्चाशमो नाग उंड पणे होय गंगानदी बे पासें बे पद्मवर वेदिका अने बे वनखंडे करी वींटीछे.

ए गंगानदीनी पेरेज सिंधुनदीनुं स्वरूप पण जाणी लेवुं मात्र ते पद्मद्रहने पश्चिमदिसिने तोरणे नीकली थकी सिंधुआवर्त्तन नामा कूटने फरीने दक्षणदिसा तरफ चाली थकी सिधुप्रपातकुंडमां पडी तिहां सिंधुदेवीनो सिंधु नामे द्वीप जाणवो यावत् तिमिश्रा गुफा नीचे वैताढ्य पर्वत नेदीनें पश्चिमदिसी साहामी वली थकी चौदहजार नदीयें पुराती लवण समुद्रमां नली तेनो शेष अधिकार गंगानी परें जाणवुं.

हवे ते पद्मद्रहने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितांसा महानदी नीकली ते २७६ योजन अने उगणीसीया ठ नाग उत्तर दिसि साहामी पर्वत उपर जइने कांइक जाजेरा शो योजनने प्रपातें रोहीतांशा प्रपात कुंडमां जइ पडेछे ते कुंड एकशोने वीश योजन लांबो अने पोहोलोछे कांइक उणा त्रणसो एंसी योजन परिधि पणे छे दश योजन उंडो छे, तेना मध्यनागे रोहितांशानामे द्वीपछे ते शोल योजन लांबो अने पोहोलोछे बे कोश पाणी थकी उंचोछे, तिहां रोहितांशा देवीनुं नवन जाणवुं इत्यादिक एनुं बीजो सर्व अधिकार पूर्वला कुंडनी परे कहेवो.

ते रोहितंसा प्रपातकुंडने उत्तरदिसिने तोरणे रोहितंसा नदी नीकली थकी, हेमवंत युगलीयानां खेत्र मांहे जाती जाती, चौद हजार नदीयें पुराती पुराती, शब्दापाती नामे वृत्तवैताढ्य पर्वतने अर्ध योजने अण पोहोती थकी, पश्चिम दिसि साहामी वली थकी, हेमवंतखेत्रने बे नागें वेंचती थकी, अठावीश हजार नदीयें पुराती नराती नीचेथी जगतीने नेदीने लवण समुद्र मांहे नले छे. ए नदीनो मूलें प्रवाह शाढाबार योजन पोहोल पणे अने एक कोश उंड पणे छे पछी मात्रायें मात्रायें बे पासें वधती वधती समुद्रमांहे पेशतां १२५ योजन पोहोल पणे प्रवाह छे अने अढी योजन उंड पणे छे, ए बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वन खंडे करी वींटी छे.

हवे चुल्लहेमवंत पर्वत उपर अगीआर कूटछे तेना नाम कहेछेः— १ सिद्धायतनकूट एना उपर सिद्धनुं देहेरुं छे २ चूल्ल हमवंतगिरि कुमार देवकूट, एना उपर ए पर्वतना ए कूटने नामे देवतानो निवास जुवनछे ३ नरतदेवकूट एना उपर नरतक्षेत्रना नरतदेवता नो निवासछे, ४ इलादेवीकूट, ५ गंगादेवीकूट, ६ श्रीदेवीकूट, ७ रोहितंसादेवीकूट, ८ सिंधु देवीकूट, ए सुरादेवीकूट, १० हेमवंतदेवकूट, ११ वैश्रमण लोकपाल देवकूट, पूर्वदिसिना लवण समुद्रनें पश्चिमदिसें अने चुल्लहेमवंत नामा कूटने पूर्वदिसें प्रथम सिद्धायतन कूटछे ते पांचशें योजन उंचोछे, मूलमां पांचशो योजन पोहोल पणे, वच्चें ३७५ योजन पोहोल पणे, उपर अढीसें योजन पोहोल पणे, गोपुछने संस्थानेंछे, ते कूट पद्मवरवेदिका

अने वन खंमे करी चोफेर वींटयोछे तेना उपर सिद्धनुं देहेरुंछे तेनुं वर्णन जीवाजिगम सूत्रथी जाणवुं बीजा दश कूट पण एटलाज लांबा पोहोला अने उंचा जाणवां.

एमज चूल्लहेमवंतकूटने विषे चूल्लहेमवंतगिरिकुमार देवनो प्रासादावंतसक प्रमुख तथा तेनी चुल्लहेमवंत नामे राजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपे जाणवी शेष थाकता सर्व कूटोनी वक्तव्यतामां पण देवताना प्रासाद सिंहासन, परिवार प्रमुख ते सर्व कहेवा.

इहां चुल्लहेमवंतकूट, जरतकूट, हेमवंतकूट वैश्रमणकूट ए चार कूटने विषे देवता जाणवा शेष ब कूटने विषे देवांगना जाणवी ए पर्वत महाहेमवंत पर्वत आश्रयी लंबाइ आदिकमां लगारेक न्हानुंछे वली चुल्लहेमवंतनामे देवता एक पल्योपमायुयें इहांवशेछे. तेथी (चूल्ल के०) लघुहेमवंत पर्वत एवुं एनुं शाश्वतुं नाम छे इति ॥

हवे हेमवंत युगलीयाना क्षेत्रनो वर्णन कहेछे चुल्लहेमवंत वर्षधर पर्वतने उत्तरदिसें ए हेमवंत क्षेत्रछे ते २१०५ योजन उपर उंगणीसीया पांच जाग एटलुं पोहोल पणेछे एनी बाह ६७५५ योजन उपर उंगणीसीया त्रण जागछे तेनी जीवा पणछ ३७६७४ योजन उपर उंगणीसीआ पंदर जागछे. एनुं धनुपृष्ट ३८७४० योजन उपर उंगणीसी आ दश जाग एटलुं परिधि पणेछे एमां त्रीजा सुखमदुखमा आरा सरखो सरूप जाणवो.

इहां रोहिता नदीनी पश्चिम दिसें अने रोहितांशा नदीनी पूर्व दिसें हेमवंत खेत्रने मध्यजागे शब्दापाती नामे वृत्त वैताढय पर्वत छे ते एक हजार योजन उंचोछे, अढीशो योजन धरतीमां उंमोछे तथा नीचे अने उपर लांबो पोहोलो सर्वत्र सरखो धान जरवाना पालाने संस्थानेछे, एक हजार योजन लांबो पोहोलोछे अने ३१६२ योजन कांइक जाजेरा एटली परिधिछे, वेदिका अने वनखंमे करी चारे बाजु वींटेलोछे तेनी उपर यावत् सिंहासन प्रमुख परिवार सहित जाणवा तथा ए पर्वतनी न्हानी महोटी वाव्यने विषे यावत् बिलने विषे शब्दापाती जेवा वर्णवाला एना सरखा अनेक जातीना कमल छे ते णेकरी तथा इहां स्वाती नामे देवता एक पल्योपमनां आउखावंत, चारहजार सामानीक देवो आदिक सहित थको वसेछे यावत् विजय देवनी पेरे राजधानी वालो छे तेथी ए पर्वतनुं शब्दापाती वृत्तवैताढय एवुं शाश्वतुं नाम छे.

तथा चुल्ल हेमवंत अने महा हेमवंत ए बे वर्षधर पर्वतें बे पासें दक्षण उत्तर दिसें ए खेत्रने गोपव्युंछे मर्यादा कीधीछे नित्यें सदैव हेम सुवर्ण प्रकाशेछे तथा इहां हेमवंत नामे देवता एक पल्योपमने आउखे वशेछे तेथी हेमवंत क्षेत्र एवुं एनुं शाश्वतुं नामछे.

हवें महा हेमवंत नामे वर्षधर पर्वत कहेछेः—हेमवंत खेत्रने उत्तरदिसें अने हरिवर्ष खेत्रने दक्षणदिसें महाहेमवंत नामे वर्षधर पर्वतछे, ते बशें योजन उंच पणे अने पचाश

योजन धरतीमां ऊंमोछे तथा ४२१० योजन उपर ऊंगणीसीया दश नाग एटलो पोहोल पणेछे एनी बाह पूर्व पश्चिम दिसें ए२७६ योजन उपर ऊंगणीसाया साडानव नागछे, तथा एनी जीवा पणछ उत्तरदिसि तरफ पूर्व पश्चिमें लांबी बे छेहडे लवण समुद्रने फरसी छे ते ५३ए३१ योजन उपर ऊंगणीसीया छ नाग कांइक जाजेरीछे तेनुं धनुपृष्ठ दक्षण दिसी तरफ ५७२ए३ योजन उपर ऊंगणीसीया दश नाग परिधि पणेछे ए पर्वत रुच कने संस्थाने संस्थितछे, सर्व रत्नमयछे, बे बाजुयें बे पद्मवर वेदिकायें करी तथा बे वन खंमे करी वींटयोछे घणु समरमणीक नूमि नागछे यावत् देवता बेसेछे रहेछे इत्यादि.

ते महाहेमवंत पर्वतनां मध्यनागे वच्चोवच्चें महापद्मनामे द्रह छे ते बे हजार योजन लांब पणे अने एक हजार योजन पोहोल पणे छे तथा दश योजन ऊंमो छे तेनुं रूपामय तट छे, जे रीते पूर्वें पद्मद्रहनी वक्तव्यता कही तेहिज वक्तव्यता इहां पण जाणवी इहां कमलनुं प्रमाण बे योजननुं छे यावत् ते कमल महापद्मद्रह सरखा छे इहाँही नामे देवी एकपल्योपमने आउखे वशे छे तेणे करी एनुं महापद्मद्रह एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए द्रहने दक्षणदिसिने तोरणे रोहिता महानदी निकली ते १६०५ योजन उपर ऊंगणीसीआ पांच नाग एटली दक्षणदिसि साहमी पर्वत उपरें जइने महोटा घडाना मुख सरिखे मुक्तावली हारने संस्थाने कांइ एक जाजेरा बशे योजने प्रपात कुंममां पडे छे ते जिहांथी पडेछे तिहां महोटी जीनी प्रणाली छे ते जीनी एक योजन लांब पणे अने शाडाबार योजन पोहोल पणे तथा एक कोश जाड पणे छे महोटा मगरमत्सनुं मुख विस्तिरण कर्यो होय ते संस्थाने संस्थित छे सर्व वज्ररत्नमय छे ते जिहां पडेछे तिहां रोहित प्रपात नामे कुंमछे ते एकसो वीश योजन लांबो पोहोलो छे अने त्रणसें एंसी योजन कांइक ऊंणा परिधि पणे छे तथा दश योजन ऊंमो छे तेना मध्यनागें एक रोहिता नामें द्वीपछे ते शोल योजन लांबो पोहोलो अने कांइक जाजेरा पचाश योजन परिधि पणेछे पाणी थकी बे कोश ऊंचोछे वज्ररत्न मयछे ते द्वीप पद्मवरवेदिका अने वनखंमे करी वींटयोछे ते द्वीपने वच्चे एक नवनछे ते एक कोश लांब पणे छे इत्यादि.

ते रोहीत प्रपात कुंमने दक्षणदिसीने तोरणे रोहिता महानदी नीकली थकी हेमवंत खेत्रमांहे जाती जाती शब्दापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने अर्द्ध योजने अण पोहोती थकी पूर्वदिसि सन्मुख वलीने हेमवंत क्षेत्र प्रत्ये बे नागें वेहेचती थकी अठावीश हजार नदीयें पूराती पूराती थकी नीचे जगतीने नेदी पूर्वदिसें लवण समुद्रमांहे नली छे.

तथा ए द्रहना उत्तरदिसिने तोरणे हरिकांता महानदी नीकली थकी १६०५ योजन उपर ऊंगणीसीया पांच नाग उत्तर दिसिने सामी पर्वत उपरें जइने कांइक जाजेरा बशे योजनने प्रपातें हेठी पडेछे जिहांथी पडेछे तिहां जीनी बे योजन लांब पणे, प

त्रीश योजन पोहोळ पणे अने अर्द्ध योजन जाड पणेछे ते हरिकांत प्रपात नामे कुंडमां पडछे ते कुंड २४० योजन लांबो पोहोळो अने ७५९ योजन परिधि पणेछे तेना मध्यनागे हरिकांता नामे द्वीपछे ते बत्रीश योजन लांबो पोहोळो अने एकशो एक योजन परिधि पणे छे तथा बे कोश पाणीथकी ऊंचो छे ते पद्मवर वेदिका अने वनखंडें करी वींटयुंछे एना मध्यमां नुवनछे तथा ते हरिकांता प्रपात कुंडनां उत्तर दिशिने तोरणे हरिकांता म हानदी नीकळी थकी हरिवर्षक्षेत्रमां जाती थकी विकटापाती वृत्त वैताढय पर्वत प्रत्यें अर्द्ध योजन अण पोहोती थकी पश्चिमदिशि साहमी वळी थकी हरिवर्ष क्षेत्रने बे नागे वेंच ती थकी छपन्न हजार नदीयें पूराती थकी नीचें जगती नेदीने पश्चिमदिशियें लवण समुद्र मांहे नळेछे ए हरिकांता महानदी द्रहथकी निकळता प्रवाहे पच्चीश योजन पोहोळ पणें अर्द्ध योजन ऊंडपणे पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमें योजने योजने एकेक पाशे वीश वीश धनुष करतां बे पाशें चालीश धनुष वधती वधती समुद्र प्रवेशे अढीशे योजन पोहो ळ पणे अने पांच जोयण ऊंड पणे थइछे बे पासें पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे वींटीछे.

महा हेमवंत पर्वत उपर आठ कूट कहेछेः–एक सिद्धायतन कूट, बीजो महाहेमवंत कूट, त्रीजो हेमवंत कूट, चोथो रोहितादेवी कूट, पांचमो हींदेवी कूट, छठो हरिकांता कूट, सातमो हरिवर्ष कूट, आठमो वैडूर्य कूट, पूर्वें जेम चूल्लहेमवंत पर्वतना कूटोनी वक्तव्यता कही तेम इहां पण देवी देवो प्रमुखना निवाश प्रमुख जाणवा ए महा हेमवंत पर्वत जे छे ते चूल्लहेमवंत पर्वत आश्रयी लांब पणे, पहोळ पणे, ऊंच पणे, ऊंड पणे, परिधि पणे, अतिशय महोटो छे तथा इहां महाहिमवंतनामे देवता यावत् एक पल्योपमायुनी स्थितियें वशेछे माटे एवुं महाहिमवंत पर्वत एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे हरिवर्ष युगलीयानां क्षेत्रनी वक्तव्यता कहेछे.

निषध पर्वतने दक्षण दिसें अने महाहेमवंत पर्वतने उत्तरदिसें हरिवर्ष नामे युगळ क्षेत्रछे ते ८४२१ योजन उपर ओगणीशीओ एक नाग एटलुं पहोळ पणेछे तथा १३३६१ योजन उपर शाडा छ नाग एटली पूर्व पश्चिमदिसें बाहाछे तथा एनी जीवा पणछ उत्तर दिसीयें पूर्वपश्चिमें लांबी ७३९०१ योजनउपर साडासत्तर नाग छे तेनुं धनुपृष्ठ दक्षण दिसीयें ८४०१६ योजन उपर चार नाग एटलुं परिधिपणे छे एवुं घणुज समरमणि क नूमि नाग छे यावत् मणितृणादिके करी शोनावंतछे इत्यादिक सर्व वात इहां पण कहेवी इहां सुखमा नामें बीजा आरानुं अनुनाव सदा सर्वदा वर्त्ते छे.

इहां हरिसलिला महानदीने पश्चिमदिसें अने हरिकांता महानदिने पूर्वदिशियें तथा हरिवर्ष क्षेत्रने मध्यनागें विकटापाती नामे वृत्तवैताढय पर्वत छे तेनुं पोहोळ पणु, ऊंच

पणु अने ऊंडपणु तथा परिधि प्रमुख सर्व पूर्वे कहेला शब्दपाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे इहां पण कहेवो परंतु एटलुं विशेष जे ए पर्वतनो अरुणनामे देवता अधिपतिछे तथा इहां विकटापाती सरखा वर्णे करी कमल छे तेथी एनुं विकटापाती एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए हरिवर्षक्षेत्रने विषे (हरिके०)सूर्य अने चंद्रमा कहीयें तेथी केटलाएक मनुष्य उगता सूर्यजेवा राते वर्णें रातिकांतिने प्रकाश करेछे तथा केटलां एक तिहांना मनुष्य चंद्रमा तथा शांखनां सरिखां धोले वर्णें छे तेमाटे तथा इहां हरिवर्षनामे महर्द्धिक देवता एक पल्योपमायुयें वशेछे तेथी एनुं हरिवर्ष एवुं नाम शाश्वतुं छे.

हवे निषध नामा वर्षधर पर्वत कहेछे.

महाविदेह क्षेत्रने दक्षणदिसें अने हरिवर्षक्षेत्रने उत्तरदिसें निषध नामे पर्वतछे ते चारसें योजन उंचपणे, शो योजन नीचो धरतीमां छे तथा १६८४२ योजन उपर बे कला पहोलो छे तेनी पूर्वपश्चिमदिसें बाहा २०१६५ योजन उपर अढी नागछे तथा लांबपणे तेनी जीवा पणछ उत्तरदिसें ए४१५६ योजन उपर बे नागछे तथा तेनुं धनुपृष्ठ दक्षणदिसें १२४३४६ योजन उपर नव नाग परिधिपणे छे, सर्व तपनीय राता सुवर्णमय छे, बे पासें पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी सहित छे.

तेना मध्यनागे एक तिगिंछि नामे द्रह छे तिगिंछि एटले कमलनो परागद्रह ते तिगिंछि द्रह. ए चार हजार योजन लांब पणे अने बे हजार योजन पोहोल पणे तथा दश योजन ऊंमो छे, एनुं रूपामय तट छे, चारदिसियें चार त्रिसोपान पगथालियाछे, एम जे रीतें महापद्मद्रहनी वक्तव्यता पूर्वे कही तेज रीतें इहां पण कहेवी, इहांकमलनुं प्रमाण तेहिज जाणवुं यावत् तिहां तिगिंछि सरखा घणा कमल छे तथा इहां धृतिनामे देवी एक पल्योपमने आउखे वशे छे तेथी एनुं तिगिंछिद्रह एवुं नाम छे.

ते तिगिंछिद्रहने दक्षण दिसिने तोरणे हरिसलिला महानदी नीकली थकी ७४२१ योजन उपर एक नाग एटली दक्षणदिसि सामी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा चारसें योजनने प्रपातें करी हेठी हरिसलीला कुंडमां पडेछे ते कुंडनुं अने द्वीपनुं तथा द्वीपना नवन प्रमुखनुं प्रमाण तेनी वक्तव्यता सर्व हरिकांता नदीनी पेरे जाणवी यावत् हरिवर्ष क्षेत्रने बे नागें वेंचती छपन्न हजार नदीये सहीत थकी नीचें जगती नेदीने पूर्वदिसिनां लवण समुद्रमांहे नलेछे एनुं प्रवाह, मुख, मूले, पहोलपणु, ऊंडपणु, ए सर्व हरिकांता नदी प्रमाणेज जाणवुं यावत् वेदिका अने वनखंड तेणे करी सहीत छे.

हवे ते तिगिंछिद्रहने उत्तरदिसिने तोरणे सीतोदा महानदी निकली थकी ७४२१ योजन उपर एक नाग एटलुं उत्तर साहमी पर्वत उपरे जइने कांइक जाजेरा चारसें योजन

नने प्रपातें हेठी पडेछे ए सीतोदा महानदी जिहां थकी पडेछे तिहां एक महोटी जीभी प्रणाली रूपछे ते चार योजन लांब पणे, पच्चाश योजन पोहोल पणें अने एक योजन जाड पणे महोटा मगर मत्स्यना मुखने संस्थानें संस्थित छे, सर्व वज्र रत्नमय छे ते जिहां नीची पडेछे तिहां महोटो सीतोदा प्रपात कुंमछे ते चारसें एंसी योजन लांब पणे पोहोल पणे अने १५१८ योजन कांइ एक ऊंणा परिधि पणे छे, यावत् तोरण पर्यंत वक्तव्यतां जाणवी ते सीतोदा प्रपात कुंमने मध्य भागें सीतोदा नामे द्वीपछे तें चोशठ योजन लांबो पोहोलो अने बशें बे योजन परिधि पणे छे, बे कोश पाणी थकी ऊंचो छे, सर्व वज्र रत्नमय छे, तेमज वेदिका, वनखंम, भूमिभाग, भवनघर, शयनीय ए सर्व पूर्वपरे जाणवा.

तें कुंमने उत्तरदिसिनेतोरणे ए सीतोदा महानदी नीकली थकी, देवकुरु क्षेत्र प्रत्यें आवती थकी, बेह्व पर्वत प्रत्यें तथा १ निषध २ देवकुरु ३ सूरेंद्र ४ सुलस ५ विद्यु त्प्रभ ए पांचद्रहने बे भागें वहेचती थकी ते द्रहमांहे वेहेंती थकी, देव कुरु मांहेली चो राशी हजार नदीयें पूराती थकी,भद्रशाल वन मांहे आवती थकी, मेरु पर्वत पासें बे यो जन अण पोहोती थकी,तिहांथी पश्चिमदिसि साहमी वली थकी, नीचें विद्युत्प्रभ नामा गजदंता पर्वतने भेदीने मेरुपर्वतने पश्चिमदिसें,पश्चिम महाविदेह क्षेत्रने बे भागें वेहेंचती थकी, एकेकी चक्रवर्त्तिनी विजय थकी अठावीश अठावीश हजार नदीयें पूराती पूराती थकी केमके ए नदीने दक्षण तटें आठ विजयछे तिहां एकेकी विजयें गंगा अनें सिंधु ए बे बे नदी चौद चौद हजारने परिवारें छे तेवारें अठावीश हजारनुं परिवार थयुं तथा उत्तर तटें पण एजरीते एकेकी विजयें अठावीश अठावीश हजार नदीने परिवारें एरीते शोल विजयनी बत्रीश नदी ते प्रत्येकने चौद हजारनो परिवार गणता ४४८००० नदी थइ तेनी साथें ८४००० नदी देवकुरुनी मेलवतां ५३२००० नदी सहीत पूराती थकी, जयंतनामा पश्चि मदिसि संबंधी जंबूद्वीपनां द्वारने नीचें जगतीने भेदीने लवण समुद्र मांहे भलेछे ए नदी द्रहमांथी नीकलतां मूलप्रवाहें पच्चाश योजन पोहोल पणे तथा एक योजन ऊंम पणे छे, पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमे योजने योजनें एकेक बाजुयें चालीश चालीश धनुष एरीते बे पासें एंसी धनुषनी वृद्धि वधती वधती मुख मूले समुद्र प्रवेशें पांचशें योजन पोहोल पणे अने दश योजन ऊंम पणे थइछे. बे पासें पद्मवरवेदिका अने वनखंमे करी सहीत छे.

निषध पर्वत उपर नव कूटछे तेनां नाम कहेछेः—एक सिद्धायतन कूट, बीजो निषध कूट, त्रीजो हरिवर्ष कूट, चोथो पूर्वविदेह कूट, पांचमो हरिसलिला कूट, छठो धृतिकूट, सातमो सीतोदा कूट, आठमो अपरविदेह कूट, नवमो रुचक कूट जेरीते चूल्लहिमवंतना कूटनो ऊंचपणु, पोहोलपणु,परिधिपणु,राजधानी सहीत पूर्वें वर्णव्यो तेरीतें इहां जाणवुं. निषध पर्वतनें विषे घणा कूट निषधने संस्थाने छे, निषधने अत्यंत सहन करे, पूरे स्कंधे

नार सहे ते निषध वृषन पर्यायांतरे वृषन बलदने संस्थानें संस्थित बे तथा इहां निषध नामे देवता यावत् पल्योपमने आउखे वशेबे तेथी एनुं निषध पर्वत एवुं शाश्वतुं नामबे.

इहां नदी इह अने कुंम आदिकनो कांइक विशेष कहे बे.

नरत क्षेत्रनेविषे गंगा अने सिंधूनदी बे; तथा ऐरवत क्षेत्रनेविषे रक्ता अने रक्तावती नदी बे. ए बाहेर बेडे रहेलीउ जे चार नदीउ बे ते बाहेरनां जे पद्मइह तथा पुंमरीक नामे इहबे, तेनां पूर्व पश्चिमनां द्वारनो जे विस्तारबे, ते प्रमाणे सवा ब योजन पहोल पणे हिमवंत तथा शिखरी पर्वतना शिखरथी नदी वहे बे. एटले उतरे बे.

पूर्वोक्त जे चार नदीबे, ते इहना बारणाथी पांचसे योजन सुधी पर्वतना शिखर उपर बारणां सन्मुख पूर्व पश्चिमदिशिए जइने पबी पोतपोताना वर्त्तन कूटथी बाहेर ना नरत अने ऐरवत क्षेत्रने सन्मुख वले ते आवीरीते जे गंगानदी ते इहना बारणा थी पांचसे योजन सुधी पर्वत उपरे बारणासामी जाय त्यां गंगावर्त्तन ए नामे पर्वतनुं जे कूट ते थकी बाहेरनुं जे नरत क्षेत्र बे तेने सन्मुख वले एरीते सिंधूनदी पण सिंधू आ वर्त्तन कूटथी नरतदिशि वले, तथा रक्तानदी पांचसे योजन बारणा सन्मुख जइने पबी रक्तावर्त्तन कूटथी ऐरवतदिशियें वले. एम रक्तवती नदी रक्तवत्यावर्त्तन कूटथी ऐरवत दिशि वले, तो एनदी नरत तथा ऐरवत सामी वले, ते वारे पर्वतना मध्य नागथी बाहेर आवतां पर्वत उपर केटला योजन चाले? ते कहेबेः—सवाब योजन नदीनुं मुख बे ते, पर्वतनो जे विस्तार एक सहस्र बावन योजन,अने बार कला—तेमांहेथी काढीए, तेवारे एक सहस्र बेतालीश योजन उपर सवा सात कला रहे. तेनुं अर्द्ध पांचसे त्रेवी श योजन अने शाढी त्रण कला फाफेरी लाचे त्यहांलगी पर्वतना शिखर उपर नदीवहे.

शिखरना बेडाथी मगरमत्सना मुखने आकारे, तथा वज्ररत्नमय एवी जे जीनी एनुं जीनी सरखो आकारबे, जीनी एटले परनाल ते मध्ये थइने वज्रमयबे तलुं जे हने विषे, एहवो जे नदीना पोतपोताने नामे निपात कुंम, तेने विषे मोतीनी तूटेली सेर तेने सदृश प्रवाहे अवबिन्न धाराएं करी पडे बे. एटले गंगानदी गंगानिपात कुंममां पडेबे, अने सिंधूनदी सिंधूनिपात कुंममां पडेबे. एम नदिने नामे कुंम जाणवा.

इहनां बारणानो विस्तार सवाब योजन बे; तेम नदीप्रवाहमांहे जीनीनो विस्तार पण सवा ब योजन बे. तेमाटे सरखो विस्तार बे. अने इहनां बारणानो जे पहोल पणे विस्तार ते विस्तारनां पचाशमे नागे जीनी जाडी बे. अने ते जाड पणाथी चोगु णी सर्व जीनीउ लांबी बे. एम सर्व इहोनी जीनीनुं प्रमाण जाणवुं, एटले बाहेरना बे पर्वतने विषे सवा ब योजन जीनी पहोली बे, अने मध्यना बे पर्वतनी मांहेली दि

शिनी जीनी पचीस योजन पहोली छे. अने बाहेरनी दिशिनी जीनी साढाबार योजन प्रमाणे छे. तथा माहाविदेह क्षेत्रमां मांहेली जीनी पचास योजन प्रमाणे छे. अने बाहेरनी जे जीनीछे ते पचीश योजन प्रमाण पोहोली छे. तथा ए सर्व जीनीउनुं जाडपणुछे. ते पोतपोताना विस्तारने पचाशमे नागे छे. अने जाडपणाथी चोगणु लांबपणुछे.

हवे ते कुंम्ड वच्चे जे द्वीपछे तेनुं प्रमाण कहेछे. आठ योजन पोहोलो पाणीमांछे. अने ते पाणी उपर बे कोस उंचो, अने वेदिकाए सहित, एवो नदीनी देवीने वसवानो द्वीपछे; तेमांहे इहनी जे श्री, लक्ष्मी प्रमुख देवी तेहना नवन सरखां नवन ते द्वीपने विषे छे. ते कुंम्ड साठ योजन पहोला छे. अने सवा छ योजन पहोलां वेदिकानां त्रण बारणाछे तथा दशयोजन उंम्डाछे. ए प्रकारे बीजापण जे कुंम्ड छे तेहनुं जे विशेष छे ते कहेछे

कुंम्डनुं पहोलपणु अने द्वीपनुं पोहोलपणुं तथा वेदिकानुं पहोलपणु ए त्रण विस्तार ते महाविदेह क्षेत्रमांहे बत्रीश विजयनी बत्रीश नदीछे ते नदीना जे चोशठ कुंम्डछे, तेनुं तथा तेमांहि जे द्वीपछे तेनुं तथा तेनी वेदिका, तेहनां बारणानो विस्तार, ते नरत अने ऐरवतना कुंम्ड सरखोछे. एटले विदेहना विजयमांहे जे चोसठ कुंम्डछे, ते साठ योजन पहोलाछे. तेमध्ये आठ योजन द्वीपछे, तिहां वेदिकानां बारणानो विस्तार सवाछ योजन जाणवो. अने हिमवंत क्षेत्रनी बे नदी, हिरण्यवंत क्षेत्रनी बे नदी, वली बत्रीश विजयनी बार अंतर नदी ए सोल नदीमां जे सोल कुंम्डछे, तेनो तथा तेहनां द्वीपनो तथा तेहनां वेदिकानां द्वारनो विस्तार पहेलानाथी बमणो जाणवो. एटले ए सोल नदीना कुंम्ड, एकसो वीस योजन पोहोला छे अने ए कुंम्डनां द्वीप, सोल योजन पहोला छे. तथा ए सोल कुंम्डना वेदिकाना बारणानो विस्तार साढाबार योजन छे. वली हरिवर्ष क्षेत्रनी बे नदी, अने रम्यक्नी बे नदी—ए चार नदीना चार कुंम्ड, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने चोगुणो जाणवो. एटले बशेंने चालीश योजन एनां कुंम्डनो विस्तारछे. अने बत्रीश योजन द्वीपनो विस्तारछे. तथा पचीश योजन वेदिकानां द्वारनो विस्तारछे. तथा माहाविदेहनी बे नदीना बे कुंम्ड, तेहना त्रण विस्तार आश्रीने आठगुणो जाणवो. ते कहेछे. चारसें एंसी योजन कुंम्डनो विस्तार छे. अने द्वीपनो विस्तार चोसठ योजननो छे. तथा विदेहनां कुंम्डनी वेदिकानां बारणा पचाश योजन पहोलांछे, एम सर्व एकठा गणीए तो आ जंबू द्वीपमांहे नेवुं कुंम्ड थाय.

बाहेरनी जे चार नदीछे, तेमनी गति कहेछे. चार नदी जे गंगा, सिंधू, रक्ता, अने रक्तवती ते पोतपोताना निपात कुंम्डथी बाहेरना नरत अने ऐरवतने सन्मुख बारणे नीकले. ते केम? तोके—गंगा अने सिंधु ए बे दक्षिणने बारणे नरत सामी नीकलेछे. अने रक्ता तथा रक्तवती ए बे उत्तरने बारणे उत्तरना ऐरवत दिशि नीकलेछे, पण ते जेवारे वैताढ्य लगी आवे, तेवारे ते प्रत्येक नदीने सात सहस्र नदीउ बीजी मले छे तेना परि

वारे परिवरीथकी वैताढ्यनी वच्चे थइने नीकलेछे. ते वैताढ्य पर्वत भेदीने नीकल्या पछी बाहेरना भरत तथा ऐरवत खेत्रना अर्द्धभागना वचमांथी पूर्व अने पश्चिमदिशि समुद्र सन्मुख वले एटले भरत क्षेत्र मांहि गंगानदी पूर्वदिशए जाय,अने सिंधुनदी पश्चिमदिशिए जाय तथा ऐरवत मांहि रक्तानदी पूर्वदिशिए जाय अने रक्तवती नदी पश्चिम दिशिए जाय पण, ते चार नदीउं वैताढ्य पर्वतने भेदीने नीकल्या पछी वली बीजी सात सहस्र नदीउंए करी सहित थाय सर्व मली चौदसहस्र नदीने परिवारे परवरी थकी, जेम पूर्वे वैताढ्यने भेदी नीकली छे तेनीपरे जगतीने पण भेदीने समुद्रमांहि जाय छे.

नदीनो विस्तार तथा उंडपणुं कहेछे. सर्व नदीउं ने पहेला नीकलतां कुंडना द्वार सरखो विस्तार होय अने अंतने विषे प्रथमनां विस्तारथी दशगुणो विस्तारपणे होय ते आ वीरीते के—भरत तथा ऐरवतनी चार नदीउंछे, तेनो प्रथम सवा छ योजन विस्तार छे. अने छेडे समुद्रमांहि भले तेवारे साडी बासठ योजन थाय. तथा बत्रीश विजयनी चोसठ नदीउं छे. तेहनो पण एज आदिअंतनो विस्तार छे, तेहना जे चोसठ कुंड छे, ते बाहेरना कुंड सरखा छे, ते माटे सरखो विस्तार कह्यो. वली हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी चार नदी, अने विजयनी बार अंतरनदी, एवं सोल नदीउंनो आदिविस्तार साढाबार योजन छे. तो छेडे ए कसो पचीश योजननो विस्तार जाणवो. वली हरिवर्ष तथा रम्यक्क्षेत्रमांहि जे चार नदीउं छे तेहनो विस्तार पचीश योजन धुरेछे. तो अंतनेविषे बसे पचाश योजन विस्तार थाय छे. अने विदेह क्षेत्रे जे सीता अने सीतोदा बे नदी छे तेहनो प्रथम विस्तार, पचाश योजननो छे, तो छेडे पांचसे योजन विस्तारछे. तथा ए सर्वजे मोटी नदी छे, ते विस्तारथी पचासमे भागे उंडी छे, जेम गंगानदी आदि विस्तार सवा छ योजन छे,तेने पचाशो भाग देतां योजनो आठमोभाग आवे, तो प्रथम नीकलतां योजनने आठमे भागे उंडी छे, अने छेडे साढी बासठ योजन विस्तार छे तेने पचाशे भाग देतां सवा योजन आवे, तेमाटे छेडे सवा योजन उंडी जाणवी. एम समस्त नदीनो विस्तार जाणवो.

हवे पांच क्षेत्रनी नदीनी गति कहेछे. पांच क्षेत्रनी जे महानदीउंछे ते पोत पोताना बारणानी दिशियें द्रहनो जे विस्तारछे, ते काढतां जे पर्वतना विस्तारनुं अर्द्ध थाय तेटला योजन नदी पर्वतना शिखर उपर वहे. ते केम? तो के—हेमवंत अने शिखरीनो विस्तार १०५२ योजन अने बारकला छे. तेमांहेथी द्रहनो विस्तार पांचसे योजन काढीए तेवारें ५५२ योजन अने बारकला रहे. तेनुं अर्द्ध २७६ योजन अने छ कला थाय. तो पोताना द्रहद्वारना मुखथी पर्वतनां शिखर उपर २७६ योजन अने छ कला वहेछे. अने महाहिमवंत तथा रुक्मी पर्वतने विषे चार नदी १६०५ योजन अने पांच कला पर्वतना शिखर उपर चाले, तथा निषध अने नीलवंत संबंधी

चार नदीउं ७४२१ योजन अने एक कला पर्वतनां शिखर उपर चाले ए रीतें इहनो विस्तार पर्वतनां विस्तार मांहेथी काढी अर्द्ध करीए तेवारे एवुं पूर्वोक्त मान जाणे तेवार पछी पर्वतना विस्तारने छेडे जइने पोतानी जीनी उपर थइने पोतपोताना निपात कुंमने विषे ते नदीउं पडेछे तथा पोतपोतानी जीनीना पहोळपणाने पची शमे जागे वृतवैताढय तथा मेरु तेने मूकीने जे नदीनुं मुख दक्षण सामुं छे, ते नदी पूर्वे समुद्रदिशि तरफ वले अने जे नदीनुं मुख उत्तर सामुं छे, ते पश्चिम समुद्रदिशि वले; एटले हेमवंत तथा हिरण्यवंतनी बे नदी वृतवैताढयने बे कोस वेगलो मूकी पूर्वे तथा पश्चिमदिशिए वले तथा हरिवर्ष अने रम्यक्नी बे नदी चार कोश वृत वैताढयने वेगलो मूकीने पूर्वे पश्चिम दिशिए वले. तथा महा विदेहनी बे नदी आठ कोस मेरु पर्वतने वेगलो मूकी पूर्वे पश्चिम दिशिए वले.

हेमवंत क्षत्रमांहे रोहितांशा तथा रोहिता एवे नामे बें नदीछे, ते प्रत्येकनो गंगानदी करतां बमणो परिवारछे. एटले अठावीश हजार नदीउंना परिवारे परिवरि छे तेमज हिर ण्यवंत क्षेत्रमांहे सुवर्णकुला अने रुप्यकुला एवे नामे बे नदी छे, ते पण रोहितांसा न दीनी परे अठावीश हजार नदीउंए परिवरीछे. तथा हरिवर्ष क्षत्रनेविषे हरिकंता अने हरिसलिला नामे बे नदीछे ते गंगानदीथी चोगणा परिवार वाली छे. एटले छप्पन हजार नदीउंए परिवरीछे. तथा ए पूर्वोक्त नदी सदृश रम्यक् क्षत्रने विषे नरकंता अने नारी कंता ए नामें बे नदीउंछे ते पण एटलीज छप्पन हजार नदीए परिवरी छे. तथा सी तोदा अने सीता ए बे नदी महाविदेह क्षेत्रमां छे ते एकेकी नदीमांहे पांच लाख बत्री स हजारने आडत्रीश नदीउं संबंधी पाणी पडे छे. कुरुक्षत्रनेविषे चोराशी हजार नदी उंछे. वली छ अंतर नदीछे तथा एकेकी विजये गंगा, अने सिंधु ए बे बे महानदीउं छे, तो सोल विजयमांहि बत्रीश महोटी नदीउं थइ ते प्रत्येक नदीनो परिवार चौद हजा रनो गणतां ४४८००० हजार थाय, तेनी साथे पाछली कुरूक्षत्रादिकनी ८४०३८ नदीउं मेलवीए तेवारे ५३२०३८ नदीउंनुं पाणी सीतोदा नदीमांहे जले छे. तथा सीता मांहि पण एटली नदीउंनुं पाणी जले छे. ते माटे बमणी करीए तेवारे १०६४०७६ एटली नदीउं माहा विदेह क्षत्रमांहे जाणवी.

हवें जंबूद्वीपनी सर्वे नदीउंनी संख्या कहेछे बत्रीश विजयनी चोसठ नदी, तथा सीतोदा अने सीता ए बे नदी तथा भरतादिकनी गंगा प्रमुख बार नदी ए सर्वे एकठी करतां अठोतेर महोटी नदीउं जाणवी. अने बत्रीश विजयनी बार अंतर नदीउं ए नेवुं मूलगी नदी छे. बाकी बीजी परिवारनी नदीउं चौद लाखने छप्पन हजार छे.

हवे महाविदेह क्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

नीलवंत नामा वर्षधर पर्वतने दक्षिणदिसें तथा निषध नामा वर्षधर पर्वतनें उत्तर दिसें महाविदेह नामा क्षेत्र छे ते पल्यंकने संस्थाने संस्थित छे, ३३६८४ योजन उपर चार भाग एटलुं पोहाल पणे छे एनी बाह पूर्व पश्चिमें ३३७६७ योजन उपर सात भाग लांब पणेछे तेनी जीवा पणछ महाविदेहना मध्य भागने विषे पूर्व पश्चिमदिसें लांबी एक लाख योजन छे एनुं धनुपृष्ट १५८११२ योजन उपर शोल भाग कांइक जाजेरा एटलुं परिधि पणे एकेकी दिसियें छे एटले जंबूद्वीपनो ३१६२२७ योजन प्रमुख जे पूर्वें परिधि कह्योछे तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें महाविदेहनी एकदिसिनुं धनुपृष्ट थाय अने बे दिसिनां धनुपृष्ट एकठा करीयें तेवारे जंबूद्वीपनी पूर्ण परिधिथाय एमजाणवुं.

महाविदेह क्षेत्र चार प्रकारेछे एक मेरु थकी पूर्वे पूर्व महाविदेह, बीजो मेरु थकी पश्चिमें अपरविदेह, त्रीजो मेरु थकी दक्षिणे देवकुरु क्षेत्र, चोथो मेरुथकी उत्तरे उत्तर कुरु क्षेत्र छे. भरत, ऐरवत, हेमवंत, हिरण्यवंत, हरिवर्ष, अने रम्यक् ए छए क्षेत्र थकी लांब पणे, पहोल पणे, परिधि पणे करीने घणु विस्तिरण छे एटले घणु महंत महोटुं छे, अथवा बत्रीश विजयने विषे पांचशे धनुषनी कायानां महोटा शरीर वाला मनुष्य छे तथा देवकुरु अने उत्तरकुरुने विषे त्रणगाउनां शरीर वाला मनुष्य वसे छे एरीते शरीर आश्रयी मनुष्य पण महोटा छे तथा महाविदेह नामे देवता महाऋद्धिवंत यावत् एक पल्योपमने आउखे इहां वसे छे तेथी एनुं महाविदेह एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए महाविदेहमां चार गजदंतगिरिछे तेनी वक्तव्यता कहे छेः—

१ नीलवंत पर्वतने दक्षिणदिसियें अने मेरुने उत्तर पश्चिमदिसि वच्चें वायुकूणे तथा गंधिलावती विजयनें पूर्वदिसें, उत्तरकुरुने पश्चिम दिसें, इहां गंधमादन नामे गजदंत पर्वत पीले वर्णे छे ३०२०९ योजन उपर छ भाग लांब पणे छे तथा नीलवंत पर्वतनी पासें चारसो योजन उंच पणे छे, शो योजन उंडा पणे धरतीमां छे, पांचशें योजन पोहोल पणे छे. पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमे उंच पणे तथा उंडा पणे वधतो वधतो थको अने पोहोल पणानी हाणीयें घटतो घटतो थको मेरु पर्वतनी समीपें पांचशे योजन उंच पणे तथा सवासो योजन उंडा पणे धरतीमां अने अंगुलनो असंख्यातमो भाग पोहोल पणे हाथीनां दांतने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, बे पासें बे पद्मवरवेदिका अने बे वनखंडे करी सहीत छे, यावत् उपरे घणा देवता बेशे छे, इत्यादि सर्व पूर्वपरें कहेवुं.

ए गंध मादन पर्वत उपर सात कूटछे तेना नाम कहे छेः—एक मेरु दिसियें सिद्धायतन कूट, तेवार पछी अनुक्रमे नीलवंत सन्मुख बीजो गंधमादनकूट, त्रीजो गंधिलावती कूट, चोथो उत्तरकुरु कूट, पांचमो स्फाटिक कूट, छठो लोहिताक्षकूट, सातमो आ

नंद कूट, तिहां सिद्धायतन कूटने विषे सिद्धनुं देहेरुं छे तथा स्फाटिक कूट अने लोही ताक्ष कूट ए बे कूटने विषे नोगंकरा अने नोगवती ए बे दिक्कुमारिका देवीनो निवास छे शेष चार कूटने विषे कूटने नामे देवता रहे छे. ए सर्वे कूट पांचशें योजन ऊंच पणे छे.

ए पर्वतनो गंध ते कोष्ट सुगंधनां पुडाने पीसतां, चूर्ण करतां, ऊकेरतां थकां, जूजूआ विखेरतां थकां, नोगवतां, गंधलेतां थकां, जेम उत्तम उदार मनोहर गंध नीकले, तेथी पण इष्टतर अति उत्तम गंधछे ते गंधे करी मद छे तथा इहां गंधमादन नामे देवता महाऋद्धिवंत वसे छे तेथी एनु गंधमादन एवुं शाश्वतुं नाम छे.

२ मेरु पर्वतने इशानकूंणे, नीलवंत पर्वतने दक्षण दिसें, उत्तरकुरुने पूर्वदिसें, कछनामा विजयने पश्चिमदिसें, माल्यवंत नामे गजदंत पर्वत वैडूर्य रत्नमय नीले वर्णे छे ते गंधमादन गजदंता प्रमाणे लांबु पोहोलुं छे शेष अधिकार तेमज जाणवुं.

माल्यवंत गजदंतगिरिना नवकूटनां नाम कहेछे. एक मेरुदिसियें सिद्धायतनकूट, तेवार पछी अनुक्रमें नीलवंत पर्वतने सन्मुख बीजो माल्यवंतकूट, त्रीजो उत्तर कुरुकूट, चोथो कछकूट, पांचमो सागरकूट, छठो रजतकूट, सातमो सीताकूट, आठमो पूरणनद्र कूट, नवमो हरिस्सह कूट, ए सर्वे कूट पांचशें योजन ऊंचपणे छे तिहां सागरकूट अने रजत कूट ए बे कूटने विषे सुनोगा अने नोगमालिनी नामे देवी वसेछे शेष कूटने नामे तिहां वसनारा देवोना पण तेहीज नाम जाणवा. एमां हरिस्सह कूट उपर हरिस्सह राजधानीनो हरिस्सह नामे देव वशे छे ए कूट हजार योजन पोहोलुं अने हजार योजन ऊंचो यमक पर्वतने प्रमाणे छे अने माल्यवंत गजदंत पांचशें योजन पोहोलुं छे माटे बे पासे अढीशें अढीशें योजन पर्वतथी बाहेर अधर रह्युं छे एं हरिस्सह देवनी राजधानी अन्य जंबूद्वीपें चोरासी हजार योजननी लांब पणे, पोहोल पणे छे.

ए माल्यवंत गजदंताने विषे घणा सरिकानामे वनस्पतिना गुल्म, नवमालतीना गुल्म, यावत् मगदंतिका वनस्पतिनां गुल्म छे ते गुल्म सर्वदा पंचवर्णना फूलें फूले छे तथा नूमिने विषे वायरे कंपित एवा अग्रशालाने विषे फूलनां पूंज तेने उपचारें करी सहीत करे छे तथा इहां माल्यवंत देव एक पल्यायुयें वशे छे माटे एनुं माल्यवंत नाम छे.

३ निषध पर्वतने उत्तर दिसें, मेरु पर्वतने दक्षण पूर्वने वचें अग्निकूणे, मंगलावती विजयने पश्चिम दिसें अने देवकुरुने पूर्वदिसें, सोमनस नामे गजदंत पर्वत स्वेतवर्णेछे ते लांबो पोहोलो माल्यवंतनी पेरे जाणवुं ए रूप्यमय छे इहां घणा देवता देवांगना कुचेष्टा रहित सौम्य पणे सुमन एटले शोकादि रहीत विचरे छे तथा सोमनस नामे महर्द्धिक देव इहां वशें छे तेथी एनुं सोमनस नाम छे. एनां उपर सात कूट छे तेना नाम कहेछेः—

एक मेरुनी दिसिथी सिद्धायतन कूट, तेवार पछी अनुक्रमें निषध पर्वतनी सन्मुख

बीजो सोमनस कूट, त्रीजो मंगवलाती कूट, चोथो देवकुरु कूट, पांचमो विमल कूट, छठो कांचन कूट, सातमो वशिष्ट कूट, ए सर्वे कूट पांचशे योजन उंच पणें पहोल पणें छे तिहां विमल अने कांचन ए बे कूटने विषे सुवत्सा अने वत्समित्रा ए बे दिक्कुमारिका देविनो निवास छे तथा शेष कूटने विषे कूटने नामे देवना निवास जाणवा.

४ तथा निषध पर्वतने उत्तर दिसें अने मरुने दक्षण पश्चिम वच्चे नैरुतकूणे, पक्षविजयने पूर्वदिसें विद्युत्प्रभ नामे गजदंत पर्वत सर्व तपनीय राता सुवर्ण मय छे यावत् उपर देवता वसे छे इत्यादि सर्व पूर्व परे कहेवुं एनां नव कूटना नाम कहे छेः—प्रथम मेरु दिसियें सिद्धायतन, तेवार पछी अनुक्रमे निषेध पर्वतनी सन्मुख बीजो विद्युत्प्रभ, त्रीजो देव कुरु, चोथो पक्ष, पांचमो कनक, छठो सौवस्तिक, सातमो सीतोदा, आठमो शतजवल, नवमो हरि कूट तेमां हरि कूट ते पूर्वोक्त हरिस्सह कूटनी पेरे हजार योजन पोहोलो, उंचोछे, अने शेष आठ कूट पांचशे योजन उंचा जाणवा तथा कनक कूट अने सौवस्तिक ए बे कूटने विषे वारिषेणा अने बलाहिका नामांतरें पुष्पमाला अने अनंदिता दिग्कुमारिका देवी वशेछे, शेष कूटने विषे कूटने नामे देवता जाणवा. तथा ए पर्वत वीजलीनी पेरे रक्तसुवर्ण मयपणा माटे चोफेर अवभासे छे, उद्योत करे छे, कांति करे छे तथा इहां विद्युत्प्रभ नामे देवता एक पल्योपमायुये वशे छे तेथी एनुं विद्युत्प्रभ एवुं शाश्वतुं नाम छे. ए चार गजदंत उपर प्रत्येकें दिक्कुमारि देविनां बे बे कूट कह्या ते अधलोकने विषे वसनारी दिक्कुमारी जाणवी एनां रेवानां भवन गजदंत गिरिने नीचेछे.

कुरुक्षेत्रनी जे सीतोदा तथा सीतानदी तेहनुं पडवा नीकलवानुं स्थानक जे जीभी तिहांथी २६४७५ योजन बेपासे मेरुपर्वत साहामां ए चार गजदंत गिरीछे ए निषध तथा नीलवंत पर्वतमांहेथी नीकल्याछे, हाथीनां दांतने आकारे देखाएछे माटे एने गजदंत गिरी कहिए. अग्नि कूणे सोमनस नामे गजदंतगिरि छे तिहांथी धुरमांमीने प्रदक्षणा वर्त्त गणतां चार दिशीनेविषे अनुक्रमे चार गजदंत गिरीछे.

हवे ए महाविदेहने विषे उत्तरकुरु नामे युगलीयानुं क्षेत्र वखाणे छे.

मेरु पर्वतने उत्तरदिसें अने नीलवंतनी दक्षणदिसें तथा गंधमादन पर्वतनी पूर्वदिसें अने माल्यवंतनी पश्चिमदिसें इहां उत्तर कुरुनामे क्षेत्र छे ते पूर्वपश्चिमें लांबो अने उत्तर दक्षणे पोहोलो अर्द्ध चंद्रमाने संस्थाने संस्थित छे ११८४२ योजन उपर बे भाग एटलो पोहोल पणे छे एनी जीवा पण छ उत्तरदिसें पूर्वपश्चिमें लांबी, बे दिसायें गजदंता पर्वतने फरसी छे ते ५३००० योजन लांब पणे छे एनुं धनुपृष्ट ६०४१८ योजन उपर बार भाग परिधि पणें छे. ते आवीरीतेः—३०२०९ योजन उपर छ कला एटलुं

एकेकुं गजदंत गिरिलांबो ले तेवा बे गजदंत गिरिनी वच्चमां ए क्षेत्र अर्द्ध चंद्रकारे ले माटे बे गजदंतना लांब पणानां योजन जेवारें एकठा करियें तेवारें ६०४१८ योजन उपर बार कला एटलो कुरुक्षेत्रनुं धनुपृष्ट थाय एटले धनुषनुं बाहेरलो पुंठनो भाग अर्द्धचंद्राकारनुं थाय. ए क्षेत्रमां युगलिया मनुष वसे ले तिहां सर्वदा पहेला आरा सरखो भाव वर्त्तेले तथा ए उत्तरकुरु क्षेत्रमां महाऋद्धिवंत उत्तरकुरुनामे देवता एक पल्यायुयें वशेले माटेएनुं उत्तरकुरु एवुं शाश्वतुं नाम ले.

उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वतना दक्षण दिसिनां चरमांत लेहेडाथी ८३४ योजन उपर सातीआ चार भाग एटली अबाधाये सीता महानदीने एक पूर्वतटें अने बीजो पश्चिम तटें ए बे तटें बे यमक नामे पर्वत ले ते एक हजार योजन उंच पणे तथा अढीशें योजन उंम्ड पणे धरतीमां तथा मूलमां हजार योजन लांब पणे पोहोल पणे ले, वच्चमां ७५० योजन लांब पणे पोहोल पणे ले अने उपर पांचशें योजन लांब पणे पोहोल पणे ले तथा मूलमां ३१६२ योजन कांइक अधिक परिधि पणे ले, मध्यमां २३७२ योजन कांइक जाजेरा परिधि पणे ले तथा उपर १५८१ योजन कांइक जाजेरा परिधि पणे ले, ए रीते मूलमां विस्तिरण ले, वच्चमां सांकडा ले अने उपर पातला ले, यमक एटले जोडले जण्या भाइ तेने संस्थाने संस्थित ले. एटले बेहु सरखे संस्थाने ले, सर्व कनक सुवर्णमय ले, प्रत्येकें पद्मवरवेदिका अने वनखंम्डे करी वींटया ले ते वेदिका वन खंम्डनुं वर्णन पूर्वली परें जाणवुं तेना उपर बे प्रासादावतंसक ले ते साढा बासठ योजन उंचा तथा सवाएकत्रीश योजन लांबा अने पोहोला ले तेनो वर्णन विजय देवतानां प्रासादनी परें जाणवो ए पर्वतें न्हानी वावी तथा महोटी वावीने विषे यावत् बिल पंक्तिने विषे घणा कमल यमक पर्वत सरिखे वर्णें ले तथा इहां बे यमक नामे देवता महा ऋद्धिवंत यावत् देव संबंधि भोग भोगवता थका विचरे ले माटे एनुं यमक पर्वत एवुं शाश्वतुं नाम ले ए बे देवोनी अनेरे जंबूद्वीपे जूदी जूदी यमका नामे राजधानीले तेनो वर्णन सर्व विजय देवनी परे जाणवो.

हवे उत्तर कुरुक्षेत्रनां द्रह कहेले.

नीलवंत पर्वत थकी ८३४ योजन अने उपर सातीया चार भाग कांइक जाजेरा एटली अबाधायें सीता महानदीनी वच्चमां प्रथम नीलवंतनामे द्रहले ते जेम पद्मद्रहनो वर्णन कह्यो तेमज एनुं वर्णन पण जाणवो ए बे बाजुयें पद्मवरवेदिका अने बे वनखंम्डे सहीतले तिहां नीलवंत नामे नागकुमार देव वसेले.

ते नीलवंत द्रहनी पूर्व अने पश्चिमदिसियें बेहु पासें दश दश योजनने आंतरे मली वीश कांचन पर्वत ले ते प्रत्येक एकशो योजन उंच पणे अने मूलमां एकशो योजन

लांबा पोहोलाछे तथा वच्चमां पचोतेर योजन अने उपरें पच्चाश योजन लांबा पोहो ला छे तथा मूलमां २१६ योजन, मध्यमां २३७ योजन अने उपरें १५८ योजन कांइक अधिक परिधि पणेछे तेम ए प्रथम नीलवंतद्रह थकी वली पूर्वोक्त ८३४ योजननी अ बधाये बीजो उत्तरकुरु द्रह छे वली तेथकी तेटलीज अबाधायें त्रीजो चंद्र द्रह छे वली तेथकी तेटलीज अबाधायें चोथो ऐरवत नामे द्रह छे वली ते थकी तेटलीज अबाधायें पांचमो माल्यवंत नामे द्रह छे ए पांच द्रहनी वक्तव्यता सरखी छे ए पांचे द्रहनां शो कांचनगिरि उत्तर कुरुमां छे. ए द्रहना देवोनी एक पल्योम स्थिति जाणवी.

हवे उत्तर कुरुमां जंबू वृक्ष वखाणे छे.

नीलवंत पर्वतने दक्षिण दिसें तथा मेरु पर्वतने उत्तर दिसें अने माल्यवंत गजदंत गिरिने पश्चिम दिसें तथा सीता महानदीनां पूर्वने तटें, उत्तर कुरु क्षेत्रने विषे जंबू पी ठ नामे पीठ छे ते पांचशें योजन लांब पणे पोहोल पणे छे तथा १५८१ योजन कां इक जाजेरा परिधि पणे छे ए पीठ मध्य भागें बार योजन जाड पणे छे एटले उंचपणे छे पछी मात्रायें मात्रायें अनुक्रमें प्रदेशनी हाणीयें घटतुं घटतुं थकुं सर्व चोफेर छेल्ला प्रदेशने विषे बे बे गाउ चारे दिसियें उंच पणे छे, ए पीठ सर्व जांबुनंद रत्नमय छे, उं धा सरावलानें आकारे छे, ते पीठ एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोकफेर वींटयुं छे, ते वेदिका बे कोश उंचा अने एक कोश पोहोला एवा मनोहर चार बारणा तेणे करी सहीत छे. तेनो वर्णन पूर्वली परे कहेवो, ते पीठने चार दिसेंयें चार पग था लीया छे तेनुं वर्णन यावत् तोरण छत्रातिछत्र पर्यंत पूर्वली परे कहेवो, ते पीठनां मध्य भागमां वच्चो वच्च मणिपीठिका छे ते आठ योजन लांब पणे पोहोल पणे अने चार योजन जाड पणे एटले उंच पणे छे ते सर्व मणी मय छे ते उपरें जंबू वृक्ष अपर नाम सुदर्शन कह्यो छे ते नामे वृक्ष छे. ते आठ योजन उंचो छे, अर्द्ध योजन भूमिमां उंडो छे, बे योजननो खंध छे छ योजननी शाखा छे, ते वृक्ष मध्य भागें आठ योजन लांबु पोहोलुं छे, साडा आठ योजन सर्वांगें उंच पणे कह्युं छे.

ते जंबू सुदर्शन वृक्षना वज्ररत्न मय मूल छे, रूपामय प्रतिष्ठित दृढ शाखा छे, अरिष्ट रत्नमय विस्तिरण कंद छे, वैडूर्य रत्नो देदीप्यमान खंधछे, उत्तम रूपामय मूलथीज वि स्तिरण शाखा छे, नवा नवा मणि अने रत्न तेनी नवा नवा प्रकारनी शाखा अने प्रशा खा छे, वैडूर्य रत्ननां पानडा छे, ते पानडाना बींट राता सुवर्णना छे, जंबुनंद रत्नमय राता टीसी, कोमल पत्र अने अंकूरा सुकुमाल छे, विचित्र मनोहर मणिरत्ननां फल अने सुगंधित फूल छे, ते फूल अने फलने भारें करीने ते वृक्षनी शाखा नमी छे, छाया सहीत

छे, कांति सहीत छे, सश्रिक छे, उद्योत सहीत छे, अत्यंत मनने सुख उपजावनार छे.

एटले जंबूवृक्षनी मूलने विषे जे जटाछे ते वज्ररत्नमय छे तथा मूलथी उपर जे कंद छे ते श्यामवर्ण रत्ननुं छे,तथा जंबूवृक्षनी माल वैडूर्य रत्न एटले नील वर्ण रत्ननी छे,तथा महोटी शाखा पीला सोनानी छे, तथा लघु शाखा कांइक धोला सोनानी छे तथा एना पानडा जे छे ते वैडूर्य रत्न एटले नीला रत्ननां छे, तथा पत्रनी बींटछे ते तपनीय सुवर्ण समान महा तेजवंत छे तथा जे जे पल्लव एटले नवां उगतां पत्र छे ते रक्त सुवर्णनां छे, तथा नवा पत्र रूपामय छे, तथा मध्य नागनी वच्चेनी महोटी माल ते रूपामय छे तथा फल फूल सर्वे रत्नमय छे. तथा बे कोश नूमीमध्ये कंद पणे जाडो छे तथा थडने विषे अने महोटी शाखाने विषे अने मध्य नागे जे मूल शाखा छे तेने विषे बे कोशनुं पोहोल पणु छे तथा आठ कोश थडनी माल लांबी छे तथा थडनी शाखा थकी चार दिसिये चार महोटी माल जिहांथी नीकली छे तिहांथी पंदर कोश लांबी छे तथा मध्य नागनी मूलगी लांबी माल उंचीछे ते चोवीश कोश लांबी छे तिहां चार दिसिनी चार शाखाने विषे श्रीदेवीना नवन सरखा चार नवनछे तथा जे पांचमी महोटी चोवीश कोशनी मालछे, ते उपर श्री देवीना नवन सदृश जिननवन जाणवुं तिहां पूर्वदिसिनी शाखानां नवनने विषे जंबुद्वीपनुं अनाढित नामे जे अधिष्टायक देव तेने सुवानी सद्या छे तथा शेष जे त्रण दिसिना त्रण नवन छे तेने विषे अनाढित देवताने बेसवा योग्य सिंहासन छे.

ते जंबू सुदर्शन वृक्षनी जे पीठिका छे ते मूलमां अनुक्रमे बारवेदिकायें करी वींटेली छे ते वेदिकाउनो वर्णन पूर्वली परे जाणवो. ते मूल जंबूवृक्षथी अर्द्ध प्रमाण उंचाइवाला एवा बीजा १०० जंबूवृक्षें करी सर्वे दिसें चोकफेर वींटेलुं छे, तेमां अनाढित देवना आनूषणादिक वस्तु रहेछे,तथा बीजी परिधियें वायुकूणे,उत्तरदिसें अने इशाण कूणे अनाढित देवताना चार हजार सामानिक देवना चार हजार जंबूवृक्ष छे, तथा पूर्व दिसें अनाढित देवतानी चार अग्रमहीषीना चार जंबूवृक्ष कह्या छे, इत्यादिक सर्व १२०५०१२० जंबूवृक्षनो पद्मद्रहनी श्रीदेवीना कमलनी पेरे इहां पण परिवार छे.

ते जंबूवृक्ष एक अन्यंतर बीजुं मध्य त्रीजुं बाह्य एवा त्रण वनखंम शो शो योजनना तेणे करी सर्वदिसें चोफेर वींटयुं छे तेमां प्रथम वनखंमनी चारदिसायें पच्चाश पच्चाश योजन अवगाही जइयें तिहां एकेकुं जिनजुवनछे एम चारेदिसाना चार नवन एटले चैत्यगृहछे ते पूर्वदिसिनी शाखा सरखा नवन जाणवा तेमज ते वननी ईशानादिक चार विदिसिने विषे पच्चाश पच्चाश योजन अवगाही जइयें तिहां प्रत्येक विदिसियें चार चार निंदापुष्करणी छे ते प्रत्येके एककोश लांबी, अर्द्धकोश पोहोली अने पांचशें धनुष उंमी

छे ते चार चार पुष्करणीउनां मध्यमां वच्चोवच्च एकेक प्रासादावतंसक छे, ते प्रासादा वतंसक बीजी त्रण दिसिनी माजने विषे जेवा जवनछे तेवा जाणवा.

ते जिनजुवन तथा प्राशादनां आठ आंतराने विषे श्रीजिनजुवने सहीत आठ कूट जाणवा ते प्रत्येक कूटनो बार योजन मूले विस्तारछे, मध्यमां आठ योजन अने शिखर उपर चार योजन विस्तार छे तथा आठ योजन ऊंचा छे एवा आठ तरुकूट कह्या छे.

ए जंबू सुदर्शन वृक्षते बीजा घणा तिलकवृक्ष, लवकवृक्ष, यावत् राजरुख प्रमुख वृक्षें करी सर्वदिसियें चोफेर वींटेलोछे ए वृक्ष उपर घणा आठ आठ मंगलिक,तथा कृष्ण, चामर, ध्वजा यावत् छत्रातिछत्र छे.

एनां बार नाम अर्थ सहीत कहेछेः—एक शुनदर्शन माटे सुदर्शन, बीजो अनिष्फल माटे अमोघ, त्रीजो मणिरत्नेकरी बद्ध पीठ माटे सुप्रतिबद्ध,चोथो यशनो धरनार माटे यशोधर,पांचमो जंबूद्वीपनो नाम विस्तारे माटे विदेहजंबू, छठो सोमनस एटले उत्तमवृक्ष जेने देखवाथी केवारे मन डुष्ट नथाय सर्वदा प्रीतिवंत मन थाय, सातमुं शाश्वत नाम माटे नित्य, आठमुं अनादिकालनुं मंमित माटे नित्य मंमित,नवमुं कल्याणकारि उपद्रव रहीत माटे सुजद्र, दशमो विस्तिरणवृक्ष माटे विशाल, अगीआरमुं सुनिष्पन्नरूप माटे सुजात, बारमो एना दर्शनथी शुजमन थाय माटे सुमन, ए वृक्ष उपर जंबूद्वीपनो धणी अनादृत देव एकपल्योपमने आउखे वसे छे माटे एनुं जंबू वृक्ष एवुं शाश्वतुं नामछे.

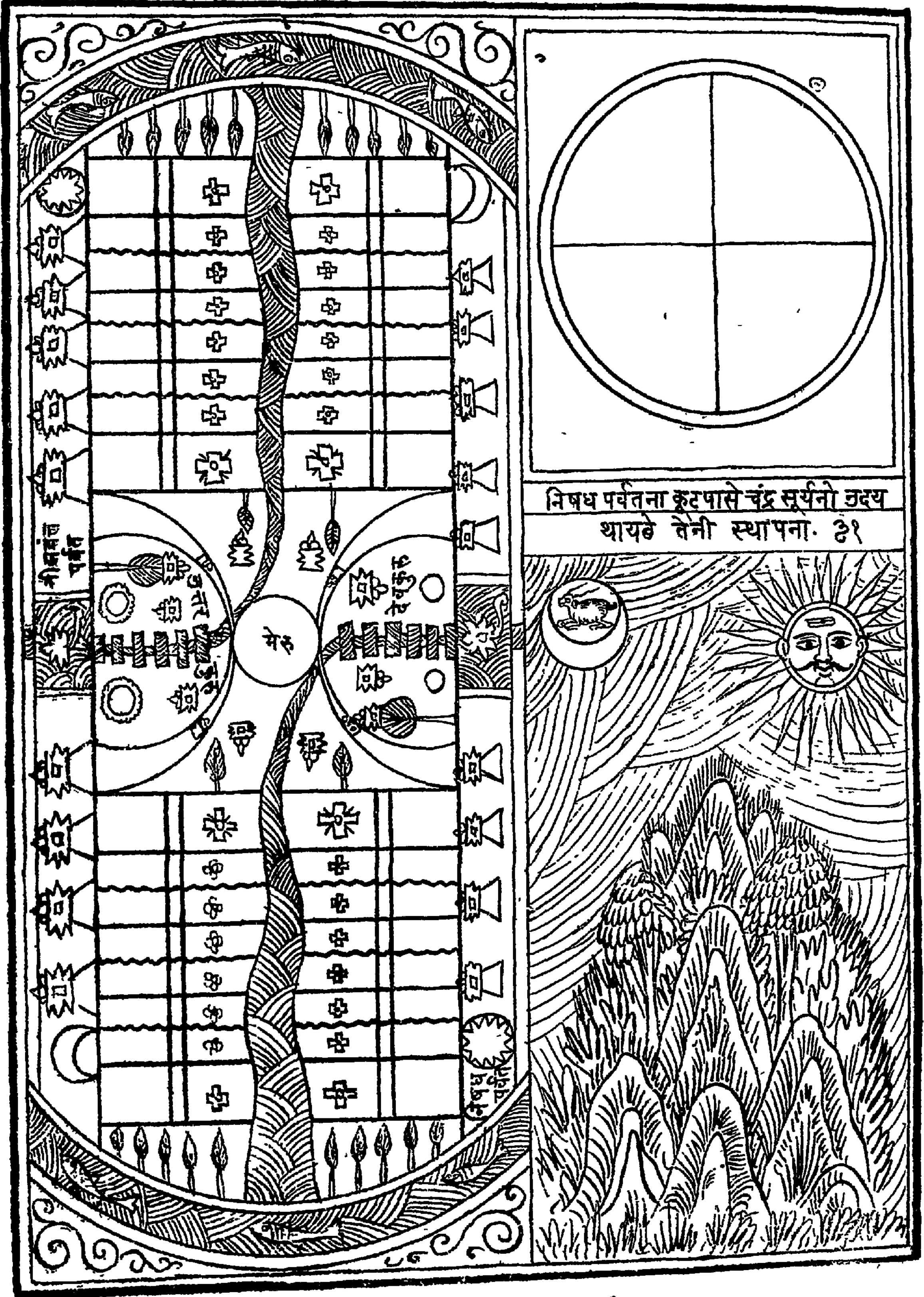
हवे ए महाविदेहने विषे देवकुरु नामे युगलीयानुं क्षेत्र वखाणे छे.

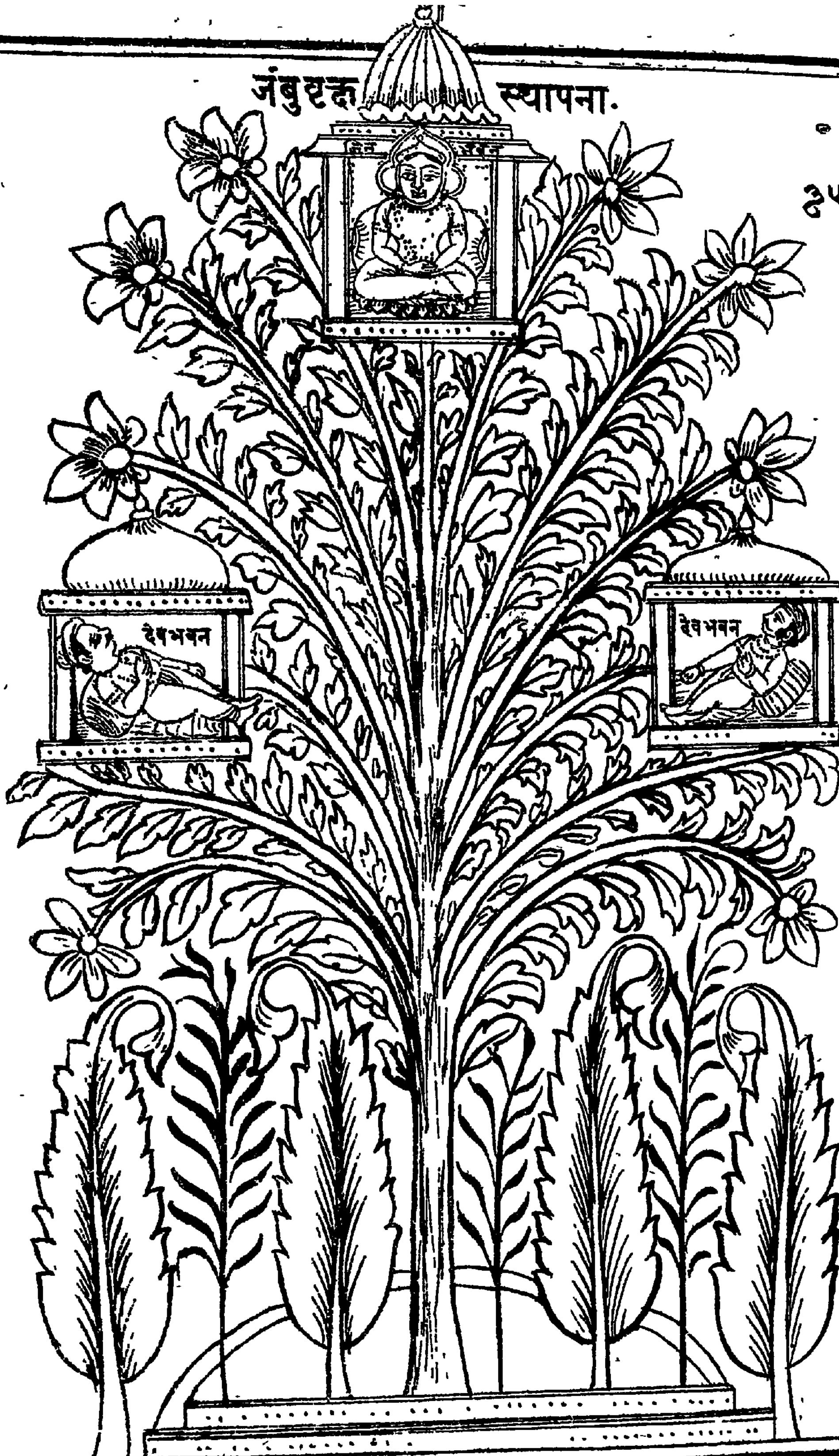
मेरुने दक्षणदिसे अने निषध पर्वतने उत्तर दिशियें देवकुरु नामे युगलियानुं खेत्रछे ते ११८४२ योजन उपर बे जाग पोहोलो छे ते आवी रीतेः—गजदंत गिरिमध्ये मेरुपर्वत थकी दक्षिणदिशिनेविषे देवकुरुक्षेत्रछे, अने मेरुथी उत्तरदिशिनेविषे उत्तरकुरुक्षेत्रछे, ए बे युगलियाना क्षेत्रछे ते अर्द्धचंद्रमाने आकारे रह्यांछे, तिहां महाविदेह क्षेत्रनुं विस्तार तेत्रीश सहस्र छसेंने चोरासी योजन अने उपर चार कलाछे. तेमांहेथी मेरुनु विष्कंज दशसहस्र योजन काढिए तेवारे तेवीश सहस्र छसेंने चोरासी योजन अने उपर चार कला उगरे तेहनुं अर्द्ध करीयें तेवारें अगीआर सहस्र आठसेंने बेतालीस योजन उपर कला बे थाय एटलो विष्कंज कुरुक्षेत्रनां मध्यजागनेविषे जाणवो.

एमां चित्रकूट नामें बे पर्वतछे ते निषध प्रवर्तनी उत्तरदिसि थकी ८३४ योजन उपर सातीया चार जाग अबाधाये सीतोदा नदीने पूर्वे अने पश्चिमें बें तटने विषे ए बे पर्वत छे तेनुं प्रमाण जेम उत्तर कुरुमां बे यमक पर्वतनो कह्युं तेम जाणवुं.

तथा ए बे चित्र कूटनी उत्तरदिसि थकी ८३४ योजन उपर सातीया चार जागनी

महा विदेह क्षेत्रनी स्थापना.




जंबुवृक्ष स्थापना.
देवभवन
देवभवन

अबाधायें प्रथम निषध नामे इहछे तेमज तेथकी तेटली अबाधायें बीजो देव कुरु इह, त्रीजो सूरप्रनइह चोथो सुलसइह अने पांचमो विद्युत्प्रन ए पांचे इह देवकुरु क्षेत्रमांहे सीतोदा नदीनां जाणवा ए सर्वेइह पद्मइह सरखा एक हजार योजन लांबा अने पांचशें योजन पोहोला अने दश योजन उंडा जाणवा तथा प्रत्येक इहना एक दक्षण अने बीजो उत्तर ए बे दिसिनेविषे बे बारणा जाणवा. अने ए इहना जे अधि ष्टायक देव छे ते सर्व पोताना इहने नामे जाणवा ए इहथकी पूर्व अने पश्चिमदिशें दस योजन वेगलाइए एकेक इहना एकेक पासाने विषे दस दस कंचनगिरि छे. ते कंचन गिरि वैताढ्यनां कूट सवा छ योजन छे तेथी सोलगुणा मोटाछे. एहवा कंचनगिरि जंबु द्वीपने विषे सर्वे बसे जाणवां ते केम? देवकुरु तथा उत्तरकुरुना दश इहछे ते एकेक इहने बे पासे दश दश गुणतां वीश थाए ते वीशने दशवार गुणतां बसे पूरा थाए.

हवे कुलगिरि, यमकपर्वत, पांचइह अने मेरु एनां सात आंतरा कहेछे.

आठसे चोत्रीस योजन उपर एक कलाना सात नाग करीए एहवे एक नागे सहित अगीआर कला एटलुं कुलगिरि, जमकपर्वत, पांच इह तथा मेरुनो प्रत्येकें अंतर जा णवुं ते केम? देवकुरुनुं विस्तार अगीआर सहस्र आठसे बेतालीश योजन अने बे कला छे ते मांहेथी यमकपर्वत अने पांच इह तेणे रुंधेला जे छ सहस्र योजन छे ते काढिए तेवारे अठावनसे बेतालीस योजन अने बे कला वधे तेने सात नागें वेचतां आठसे चो त्रीश योजन आवे शेष चार उगरे तेने उगणीस साथें गणीए तेवारे छहुत्तेर कला थाए तेनीसाथें मूलगी बे कला एकठी करता अठोत्तर कला थाए ते वली सात नागे वेचतां उगणीसी अगीआर कला आवे. वली एक कला उगरे तेहना सात नाग करिए तेवारें एक नाग आवे एटलुं कुलगिरि, जमलपर्वत, पांच इह तथा मेरुनु अंतर जाणवुं.

तथा ए देवकुरुना पश्चिमार्द्धना मध्यनागें रूपानी पीठउपर शाल्मलीवृक्षछे तेना उ पर गुरुड देवतानो निवासछे तेनो वर्णन सर्व जंबूवृक्षनी पेरे कहेवो. पण एनां बार नाम न कहेवा तथा इहां देवकुरुनामे देव वशेछे तेथी एनुं देवकुरु एवुं शाश्वतुं नामछे.

हवे जंबूद्वीपना मध्यने विषे मेरुपर्वत छे तेनुं स्वरूप कहेछेः—

मेरुपर्वत कनकमय वाटलुं गोलाकारेछे. नवाणु हजार योजन उंच पणे अने एक हजार योजन नीचे धरतीमां उंडा पणे, सरवाले एक लाख योजन उंचो छे तथा मूलें धर तीमां कंदे १००९० योजन उपर अगीआरीआ दश नाग एटलो पोहोल पणेछे अने धर ती तलें दश हजार योजन पोहोल पणेछे पछी उंचा जातां मात्रायें मात्रायें घटतो गयोछे एटले एक योजन उंचो जतां एक योजननो इग्यारमो नाग, इग्यार योजने एक योजन, शो

योजने नव योजन अने उपर अगीआरीउ एक जाग, हजार योजने नेवुं योजन अने अगीआरीआ दश जाग उपर एरीतें पोहोल पणामां घटतो घटतो थको उपरें शिखरनें तले एक हजार योजन पोहोल पणे थयो छे.

एनी परिधि मूलमां ३१९१० योजन उपर अगीआरीआ त्रण जाग तथा धरती तलें समजूतला पाशें ३१६२३ योजन अने उपरे शिखरने तले ३१६२ योजन कांइक जा जेरा छे ए पर्वत उंधो करेलो गोपुछने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे, एक पद्मवरवे दिका अने एक वनखंम तेणे करी चोफेर वींटयो छे, एनां त्रण कांमछे, तिहां प्रथम धर तीमां हजार योजनो कांम ते माटी, पाषाण, वज्ररत्न तथा काकरा ए चार पदार्थनो छे तथा पृथ्वी थकी सोमनसनामा वन सुधी बीजो कांम त्रेशठ हजार योजन प्रमाण छे ते स्फाटिकरत्न, अंकरत्न, रूप तथा कांचननो छे तथा त्यांथी उपर छत्रीश हजार योजननुं त्रीजो कांम ते रक्तवर्ण कनकनुं छे ए मेरुनां त्रण जाग कह्या.

ए मेरु पर्वतने विषे चार वन छे तेना नाम कहे छे एक जद्रशालवन, बीजुं नंदनव न, त्रीजुं सोमनस वन, चोथुं पंमक वन. तिहां प्रथम संजूतलाने स्थाने जद्रशाल वन छे तेना चारगजदंत गिरियें तथा सीता अने सीतोदा महानदीयें करी आठ जागें वेहेंच्युं थ कुं आठ खंम थया छे ते जद्रशाल वन मेरु पर्वतने पूर्व पश्चिम दिसें बावीश बावीश ह जार योजन लांब पणे छे अने उत्तर दक्षणे अढीशें अढीशें योजन पोहोल पणे छे, दे वकुरु ने उत्तर कुरु मांहे पेठुंछे ते वन पद्मवर वेदिका अने वन खंमेकरी चोफेर वींटयुंछे.

तथा मेरु पर्वतनी पूर्वादि चारे दिसें जद्रशाल वनमां पचाश पचाश योजन अवगा ही जाइयें तिहां प्रत्येक दिसियें सिद्धायतन एटले श्री तीर्थंकर जगवाननुं देहेरुं छे ते प चाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोल पणे अने छत्रीश योजन उंच पणे छे ए वां चारेदिसे मली चार सिद्धायतन छे तथा चारविदिसि ने विषे पचाश योजन अवगा ही जाइयें तिहां प्रत्येक विदिसियें चार चार नंदा पुष्करणी शाश्वती वाव्य छे तिहां प्रथ म इशान कूंणनी चार वाव्यना नाम कहे छे एक पद्मा, बीजी पद्मप्रजा, त्रीजी कुमुदा, चो थी कुमुदप्रजा ते पुष्करणी पचाश योजन लांब पणे, पचीश योजन पोहोल पणे अने दश योजन उंम पणे छे, वेदिका वन खंमे सहीत छे ते चार पुष्करणीने वच्चें इशानेंद्र नो प्रासादावतंसक छे ते पांचशें योजन उंच पणे अने अढीशें योजन पोहोल पणे छे.

तेमज अग्निकूंणें उत्पलगुल्मा, नलिना, उत्पला अने उत्पलोज्वला ए चार वाव्य पू र्वोक्त प्रमाण वाली तेनी वच्चें सौधर्मेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तेम ज नैरुतकूंणे जृंगा, जृंगनिजा, अंजना अने अंजनप्रजा ए चार वाव्य वच्चें पण सौ धर्मेंद्रनो परिवार सहीत प्रासादावतंसक जाणवो तथा वायूकूंणे श्रीकांता, श्रीचंदा,

श्रीमहिता अने श्रीनिजया ए चार पुष्करणी वच्चें इशानेंद्रनो प्रासादावतंसक जाणवो.

तेमज ए नद्रशाल वनमां पूर्वोक्त जे जिन नवन अने प्रासाद कह्या तेना आठ आं तराने विषे आठ करिकूट हाथीने आकारे छे ते प्रत्येक कूट पांचशें योजन उंच पणे छे अने सवासो योजन धरतीमां छे ते आठे कूटने नामे आठे कूटना देवता प्रमुखनी राजधानी प्रमुख सर्वे कहेवी. ते आठ कूटनां नाम कहे छे एक पद्मोत्तर दिग्गज हस्ति कूट बीजो नीलवंत दिग् हस्ति कूट, त्रीजो सुहस्तिदिगहस्ति कूट, चोथो अंजनगिरिदिगह स्ति कूट, पांचमो कुमुददिग् हस्ति कूट, छठो पलासदिग्हस्ति कूट, सातमो अवतंस हस्ति कूट, आठमो रोचना गिरिदिग् हस्ति कूट. ए आठ दिग्गज कूट कह्या. ए नद्रशा लवनने विषे मेरुनी चारदिशि ते सीतोदा तथा सीतानां प्रवाहे रुंधी छे तेमाटे पूर्वोक्त जिन नवन जे छे ते नदीनां तट उपरें छे अने प्रासाद जे छे ते गजदंतगिरिनी पाशे छे, अने जिननवन तथा प्रासादनी वच्चे ए आठ करी कूट छे.

ते नद्रशाल वन थकी पांचशे योजन उंचा जइयें तिहां बीजो नंदनवन छे ते पांचशें योजन चक्रवाल पणे फरतुं पोहोल पणे वलयाकारें मेरु पर्वतने चोफेर वींटीने रह्युं छे तिहां ए९५४ योजन उपर अगीआरीआ छ नाग एटलुं नंदन वन थकी बाहेर मेरु पर्व ततुं पोहोल पणु छे तथा ३१४७ए योजन कांइक जाजेरा एटली परिधि छे तथा ०ए५४ योजन उपर इग्यारीआ छ नाग एटलो नंदन वन मांहे मेरु पर्वत पोहोल पणे छे तथा २०३१६ योजन उपर आठ नाग एटली नंदनवननी मांहे मेरुनी परिधि छे, ते नंदनवन पद्मवरवेदिका अने वन खंमे करी वींटथुं छे एनी पण चार दिसायें चार सिद्धायतन नद्र शाल वननी पेरे जाणवा अने चार विदिसिने विषे शोल पुष्करणी जाणवी तेनां नाम कहेछेः—इशान कूणे नंदा, नंदोत्तरा, सुनंदा अने नंदीवर्द्धनी तथा अग्नि कूणे नंदिषेणा, अमोघा, गोस्तूपा अने सुदर्शना तथा नैरुतकूंणे नद्रा, विशाला, कुमुदा अने पुंमरिकि णि तथा वायू कूंणे विजया, विजयंति, जयंति अने अपराजिता. इहां पण चार चार वाव्यनी वच्चें नद्रशाल वननी पेरेज सौधर्म तथा इशानेंद्रना प्रासादावंतसक जाणवा.

तथा नंदनवनमां जिन नवन अने प्रासादनां आठ आंतराने विषे दिक्कुमारि कानां आठ कूट छे ते कहे छे नंदन वन कूट, मेरु कूट, निषध कूट, हिमवंत कूट, रज त कूट. रुचक कूट, सागरचित्र कूट, वज्र कूट, ए आठ कूट छे तेमां दिग्कुमारिका व से छे ते संनूतलथी एक सहस्र योजन उंची छे केमके पांचशे योजन नंदन वन तेना उपर वली पांचशे योजन उंचा कूट छे एरीतें हजार योजन उपर नवन मांहे वसे छे माटे एने उर्द्धवलोक वासिनी कहीयें तेना नाम कहेछे. मेघंकरी, मेघवती, सुमेघा हेममालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वज्रसेना अने बलाहिका ए आठ कुमारिका जाणवी

अने नवमो बलकूटछे ते हजार योजन उंचो छे माटे ते सहस्रांककूट मध्ये गण्युं छे ते कूट इशान दिशिना प्रासादथी पण इशान कूंणे नंदन वनने छेडेछे ते माल्यवंत गजदंताना हरिस्सह कूटने प्रमाणे छे इहां पांचशे योजननो पोहोळुं नंदन वन अने पांचशे योजननां कूट मेरुथी पचाश योजन वेगळां छे ते माटे शाढा चारशे योजन नंदवन माथे छे अने पचाश योजन अधर रह्या छे तेम नवमुं बलकूट तो नंदनवन माथे थोडुं रह्युंछे अने आकाशे अधर घणु रह्युंछे ए बलकूट उपर बलनामा देवतानी राजधानी कही छे.

हवे नंदनवन थकी शाढा बाशठ हजार योजन उंचा जइयें तिहां त्रीजुं सोमनस वन छे ते पांचशे योजन चक्रवाल पणे पहोळुं मेरुने चोफेर वलयाकारे वींटीने रह्युंछे, ४२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो मेरु पर्वत बाहेर पोहोळ पणेछे तथा १३५११ योजन उपर इग्यारीआ छ भाग एटलो बाहेर परिधि पणे छे, ३२७२ योजन उपर अगीआरीआ आठ भाग एटलो सोमनस वननी मांहेली कोरे मेरु पोहोळ पणे छे तथा १०३४९ योजन उपर अगीआरीआ त्रण भाग एटलो मांहे परिधि पणे छे ए सोमनसवन एक पद्मवरवेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वींटचुंछे, इहां कूट नथी माटे कूट वर्जीने शेष सिद्धायतन तथा पुष्करणी अने प्रासादावंतसक सर्वेनी वक्तव्यता तेमज नंदनवननी पेरे कहेवी. इहांनी शोळ पुष्करणीना नाम कहेछेः—इशानकूंणे सुमना, सोमनसा, सौमनस्या अने मनोरमा तथा अग्निकूंणे उत्तरकुरु, देवकुरु, वारिषेणा अने सरस्वति तथा नैरुतकूंणे विशाला, माघभद्रा, अभयशेना अने रोहिणी तथा वाकूंयुणे भद्रा, भद्रोत्तरा, सुभद्रा अने भद्रावति ए नाम जाणवा. इहां कूट नथी.

सोमनस वनथकी छत्रीश हजार योजन उंचा जइयें तिहां मेरुपर्वतना शिखरतलें पंडक नामे वनछे ते ४९४ योजन चक्रवाल पणे वलयाकारे मेरुनी चूलीकाने चोफेर वींटीने रह्युं छे तिहां ३१६२ योजन जाजेरा मेरुनी बाहिर परिधि छे.

पंडकवनना मध्यभागें वच्चें इहां मेरुपर्वतनी चूलिका चोटली रूप छे ते चाळीश योजन उंच पणे छे मूलमां बार योजन पोहोळ पणे छे, वच्चमां आठ योजन पोहोळ पणे छे, मूलमां शाडत्रीश योजन जाजेरा परिधि पणे अने उपर बार योजन जाजेरा परिधि पणे छे, एक योयजन मूल थकी उंचा जइयें तेवारे पोहोळ पणे योजननो पांचमो भाग घटे, एम पांच योजनने एक योजन घटे, एगोपूछने संस्थाने संस्थितछे, सर्व वैडूर्य मय नीलीछे, ते चूलीका एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडे करी चोफेर वींटेली छे, तेना उपरे मध्यभागे एक सिद्धभगवाननुं आयतन एटले घर छे अर्थात् देहरुं छे ते एक कोश लांब पणे, अर्द्धकोश पोहोळ पणे अने १४४० धनुष उंच पणे छे,

ते पंडक वनने विषे पूर्वादि चारदिसायें चार सिद्धायतन तथा चार विदिसिनी शोळ

पुष्करणीनो तथा चार प्रासादावतंसकनो वर्णन पूर्वेला वननी परे यावत् सौधर्म इशा नेंद्रना प्रासाद पर्यंत इहां पण जाणवो इहांनी शोल पुष्करणीना नाम कहेछे इशान कूंणे पुंड्रा, पुंड्रप्रज्ञा, सुरक्ता अनें रक्तवति तथा अग्निकूंणे क्षीररसा, इक्षुरसा, अमृतरसा अने वारुणी तथा नैऋत्यकूंणे शंखोतरा, शंखा, शंखावत्तर अने बलाह्लिका तथा वायुकूंणे पु ष्पोत्तरा, पुष्पवती, सुपुष्पा अने पुष्प मालिनी ए शोल वाव्यनां नाम कह्या.

हवे पंडकवननेविषे श्रीतीर्थंकरने जन्माभिषेक करवानी शिला केटली छे ते कहे छे. तिहां पूर्वदिसिने छेहडे पांडुसिला छे ते उत्तर दक्षण लांबी पांचसें योजन अने पूर्व प श्चिम अढीसें योजन पोहोल पणे छे, चार योजन जाड पणेछे सर्व अर्जुन सुवर्ण मयछे, अर्द्धचंद्राकारे छे, सिलानी वक्रता चूलिका साह्यमीछे, वेदिका अने वनखंडे करी चोफेर वींटीछे, तेना चारेदिसें चार सोपान पगथालीयाछे, यावत् तोरण पर्यंत तथा देवता बेसे छे इत्यादि वर्णन जाणवो तेना मध्य भागें एक उत्तरदिसि अने बीजो दक्षणदिसि ए बे सिंहासनछे ते सिल्लाना लंबाइ पोहोलाइ तथा उंचाइने आठ हजारमें भागे छे एटले पांचशें धनुष लांब पणे अढीशो धनुष पोहोलपणे अने चार धनुष उंचपणेछे तिहां उत्तर दिसिना सिंहासन उपर ते दिसितरफना कच्छादिक आठ विजयना तीर्थंकरनो जन्माभिषे क थाय तथा जे दक्षण दिसिनुं सिंहासन छे ते उपरे ते दिसिना वत्सादिक आठ विज यना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय.

तथा दक्षणदिसिने छेहडे पांडुकंबल नामे शिलाछे ते पण अर्जुन सुवर्णमयछे ते शिला पांडु शिला प्रमाणे लांबी पोहोली छे तेना उपर एकज सिंहासन छे तिहां दक्षिणदिशि तरफनां भरतक्षेत्रमां उत्पन्न थयला तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थाय छे, केमके भरतक्षेत्र मां एक समयें एकज तीर्थंकर उपजे छे माटे एकज सिंहासन छे.

तथा पश्चिमदिसिने छेहडे रक्तशिला नामे शिला छे ते अर्जुन सुवर्ण मयछे एनी लं बाइ पोहोलाइ पूर्वेली परें जाणवी. तेना उपर बे सिंहासन छे तिहां पश्चिम महावि देहमां उत्पन्न थयला तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय छे ते आवी रीते के दक्षणदिसिना सिंहासन उपर, पद्मादिक आठ विजयना तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय अने उत्तरदि सिना सिंहासनें, वप्रादिक आठ विजयना तीर्थंकरोनो जन्माभिषेक थाय.

तथा चूलिकाने उत्तरदिसे पंडकवनना उत्तरदिसिने छेहडे रक्तकंबल नामे शिला छे तेपण अर्जुन सुवर्णमय छे तेनो वर्णन पूर्वेली परे जाणवो तेना मध्यभागें एक सिंहा सन छे तिहां ते दिसिमां आवेला ऐरवत क्षेत्रना तीर्थंकरनो जन्माभिषेक थायछे कारण के ऐरवतमां पण एक समये एकज तीर्थंकरनुं जन्म थाय छे तेथी एकज सिंहासन

उत्तर तरफनी शिला उपर छे अने महाविदेहना पूर्व पश्चिमें प्रत्येकें एक समये एके की बाजुयें बे बे तीर्थंकरनुं जन्म थायछे सरवाले चार तीर्थंकर एक समये जन्मेछे माटे पूर्व पश्चिमनी शिला उपर जन्माभिषेक करवाना बे बे सिंहासन छे सरवाले मेरुनी चार शिला उपर छ सिंहासनछें हवे मेरुने विषे सर्व सिद्धायतनादिकनी संख्या कहेछे.

१ नद्रशालवने.	२ नंदनवने.	३ सोमनसवने.	४ पांडुकवने.
४ सिद्धायतन ४.	४ सिद्धायतन ४	४ सिद्धायतन ४.	४ सिद्धायतन४.
४ प्रासादावतंसक ४	४ प्रासादावतंसक ४	४ प्रासादावतंसक. ४	४प्रासादावतंसक.
१६ पुष्करणीवाव्य१६	१६ पुष्करणीवाव्य१६	१६पुष्करणीवाव्य१६	१६पुष्करणी. १६
८ दिसिहस्तिकूट ८	ए कूट.	१चूलिकायेंसिद्धायतन	४अभिषेकशिला.

मेरु पर्वतनां शोल नाम हेतु सहीत कहेछे १ मंदरनामे देवता अधिपतिछे माटे मंदरपर्वत २ मेरु ३ मनने रमे ते माटे मनोरम ४ नलुंछे दर्शन जेनुं तेमाटे सुदर्शन ५ पोतेज रत्नादिके करी प्रकाश छे माटे स्वयंप्रभ ६ सर्व पर्वत थकी उंचो तथा श्रीतीर्थंकरना जन्माभिषेक थाय छे माटे गिरिराज ७ अनेक प्रकारना रत्ननो समूह एने विषेछे माटे रत्नोच्चय ८ पांडुशिलादिक शिलानो समूह छे माटे शिलोच्चय ए मेरु थकी चारे दिसे लोक सरखो समनागे छे माटे लोकनुं मध्य १० लोकना मध्यपणा माटे लोकनाभि ११ अत्यंत निर्मल पणा माटे आछो १२ सूर्य चंद्रादिक आवर्त्त प्रदक्षणा करेछे माटे सूर्यावर्त्त १३ सूर्यादिक ग्रह, नक्षत्र अने तारा एनी पूठें फरेछे माटे सूर्यावर्त्त १४ सर्व पर्वतथकी उत्तम माटे उत्तम १५ मेरुना मध्यवर्त्ति अष्टप्रदेशिक रुचक थकी दिसि विदिसि नीकली छे माटे दिशादि १६ सर्व गिरिमांहे उंच पणे करी मुकुट सरखो माटे अवतंस. इहां मंदर नामे देवता एक पल्योपमायुयें वशेछे तेथी एनुं मंदर एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे महाविदेह मांहे बत्रीश विजय छे ते वखाणे छे.

मेरु पर्वतना नद्रशाल वन थकी पूर्वदिसि अने पश्चिमदिसिने विषे प्रथम बे विजय पछी बें वक्षस्कारा पर्वत वली बे विजय तेवार पछी बे अंतरनदी वली बे विजय एम अनुक्रमे एकेकि दिसायें शोल विजय तथा आठ वक्षस्कारा पर्वत अने छ अंतरनदी थाय तेवारें बे पासाना बत्रीश विजय तथा शोल वक्षस्कार पर्वत अने बार अंतर नदी थाय.

हवे बत्रीस विजयनुं पोहोलपणानुं प्रमाण कहे छे.

तिहां बावीससें बार योजन तथा एक योजनना आठ नाग करिए तेहवा सात नाग उपर एटलुं एकेका विजयनुं पोहोलपणुं जाणवुं. तथा वक्षस्कार पर्वत शोल छे ते एकेको पांचसे योजन पोहोलो छे. तथा बार अंतरनदी छे ते एकेकी एकसोने पचीस योजन पोहो

लीछे. हवे ए विजयादिनुं पोहोलपणुं जाणवानुं उपाय लखेछे. चउपन्न सहस्र योजन भूमि, मेरु अने भद्रशालवने रुंधीछे. तथा चार सहस्र योजन भूमी, वक्षस्कारा पर्वतोए रुंधीछे, तथा सातसेनें पचास योजन भूमिना अंतरनदीए रुंध्याछे, तथा पांच सहस्र आठसे चुमालीस योजन भूमी, बे वनमुखे रुंधीछे ए सर्व योजन एकठा करिए तेवारें चोसठ सहस्र अने पांचसे चोराणु योजन थाए. तेने एक लक्ष योजन प्रमाण जे जंबूद्वीप छे, ते मांहेथी काढाडीए. तेवारे पांत्रीश सहस्र चारसें ने छ योजन उगरे. तेने सोल विजय छे, माटे सोल भागे वेहेंचीए तेवारे बावीससें अने बार योजन लाभे अने उपर चउद योजन उगरें तेना प्रत्येक योजनना आठ भाग करिए तेवारे एकसोने बार भाग थाए. ते सोल भागे वेचतां आठीआ सात भाग लाभे एटले एकेक विजयनुं परिमाण बावीससे ने बार योजन उपर आठीआ सात भाग एटलुं जाणवुं.

हवे ए विजयादिकनुं लांब पणुं कहेछे.

सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बेकला एटलुं ए सर्व विजय तथा वक्षस्कार तथा अंतर नदी ए सर्वनुं प्रत्येक लांब पणुं जाणवुं. वली शीतोदा तथा शीतानें अंते पूर्व तथा पश्चिम दिशें जे चार वनमुख छे, तेहनुं पण एटलुंज लांब पणुं जाणवुं.

हवे वक्षस्कार पर्वतनुं उंचपणु कहे छे.

वक्षस्कार पर्वत गजदंत गिरिनी पेरे उंचाछे, जेम गजदंतगिरि कुलगिरिने समीपे चारसें योजन उंचाछे, छेहेडे मेरुपर्वतनी पाशे पांचसें योजन उंचाछे, तेम ए वक्षस्कार पण कुलगिरिने समीपे चारसें योजन उंचाछे, अने छेहेडे शीतोदा तथा शीताने समीपे पांचसें योजन उंचाछे. हवे सोल वक्षस्कार पर्वतना तथा बार अंतरनदिना अने बत्रीश विजयना नाम कहेछे. ए सर्व माल्यवंत नामे जे गजदंतगिरिछे, ते थकी प्रदक्षिणावर्त्ते छे.

तिहां प्रथम सोल वक्षस्कारना नाम कहेछे.

एक चित्रकूट, बीजुं वम्मकूट, त्रीजुं नलिनीकूट, चोथुं एकशेलकूट, पांचमु त्रिकूट, छठुं वैश्रमणकूट, सातमुं अंजन, आठमुं मातंजन, नवमुं अंकापाती, दशमुं पद्मापाती, अगीआरमुं आशीविष, बारमुं सुखावह, तेरमुं चंद्र, चौदमुं सूर, पंदरमु नाग अने सोलमुं देव ए सोल वक्षस्कार गिरिना नाम जाणवा. ए एकेका वृक्षस्कार उपर चार चार कूटछे तेमां एक तो सिद्धायतनकूट बीजो ते पर्वतने नामेकूट, त्रीजुं पाछला विजयने नामेकूट, अने चोथुं आगला विजयने नामेकूट ए चारकूट सर्व वृक्षस्काराने विषेछे तिहां सिद्धायतनकूट उपर श्रीसिद्धनुं दहेरुं होय अने शेषकूट ने विपे तेते नामे देवताउना प्रासादावंतसक छे. ए सर्व पर्वतना अधिपति देवो पण एज नामे जाणवा अने सर्व पर्वत पद्मवरवेदिका तथा वनखंडे करी वींटेला छे यावत् देवता बेसेछे इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे बार अंतर नदीना नाम कहेछे.

ग्राहावती, द्रहावती, पंकावती, तप्तजला, मत्तजला, उन्मत्ता, खीरोदा, शीतश्रोता, अंतर्वाहिनी, उर्म्मिमालिनी, गंभीरमालिनी, फेनमालिनी, ए नामे बार अंतर नदी जाणवी. ते धुरे तथा छेहेडे सर्वे नदिउ दशयोजन प्रमाण उंडा एवा जे नीलवंतने नीचें छ कुंड छे, तथा निषेधने नीचे पण छ कुंड छे, ते थकी नीकली एवी ए बार अंतर नदी ते कुंडने नामेज जाणवी. जेम ग्राहावत कुंड थकी ग्राहावती नदी निकली एरीते सर्वे नदीने नामे कुंडना नाम पण जाणवा, अहिंआं नदीनी देवीनुं द्वीप प्रमुख जे विशेष प्रकारनी वक्तव्यता छे ते सर्वे रोहितांशा नदीने परिमाणे जाणवी. ए सर्वे अंतरनदीउ पद्म वर वेदिका अने वनखंडे करी वींटेली छे.

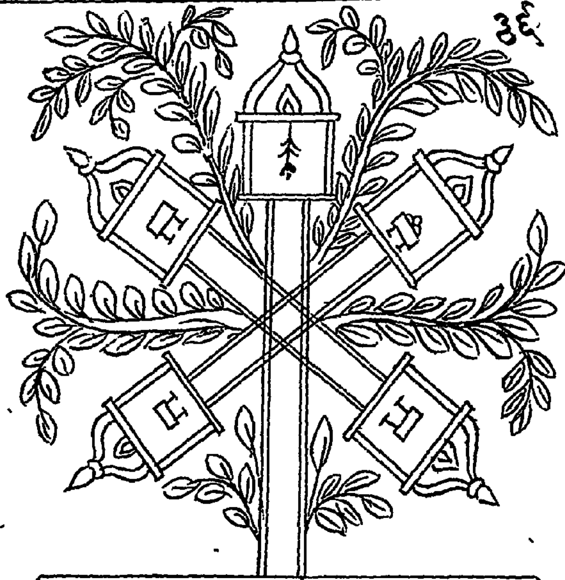
हवे बत्रीश विजयनां नाम कहेछे.

एक कछ, बीजो सुकछ, त्रीजो महाकछ, चोथो कछावती, पांचमो आवर्त्त, छठो मंगलावर्त्त, सातमो पुष्कलावर्त्त, आठमो पुष्कलावती, नवमो वत्स, दशमो सुवत्स, अगीआरमो महावत्स, बारमो वत्सावती, तेरमो रम्य, चउदमो, रम्यक्, पंदरमो रमणिक, सोलमो मंगलावती, सत्तरमो पद्म, अढारमो सुपद्म, उगणीशमो महापद्म, वीशमो पद्मावती, एकवीशमो शंख, बावीशमो कुमुद, त्रेवीशमो नलिन, चोवीशमो नलिनावती, पच्चीशमो वप्र, छवीशमो सुवप्र, सत्तावीशमो महावप्र, अगावीशमो वप्रावती, उगणत्रीशमो वल्गु, त्रीशमो सुवल्गु, एकत्रीशमो गंधिल अने बत्रीशमो गंधिलावती,

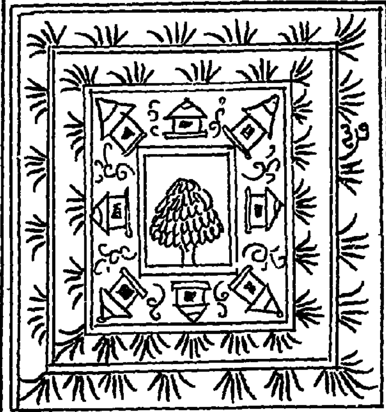
ए कछादिक बत्रीश विजय जेछे तेमां पूर्व अने पश्चिम दिशि गत जे लांबा वैताढ्य पर्वतछे तेणे भरत तथा ऐरवतनी पेरे विजयना अर्द्ध कीधां छे एटले एकेकी विजयना बे बे खंड कीधां छे, वली एकेका विजयने विषे बे बे नदी छे तेणे करी छ खंड कीधां छे तथा ए प्रत्येक विजयमां नदीनी दिशियें दक्षणार्द्ध विजयने विषें दक्षण भरतनी अयोध्या नगरी सरखी बत्रीश विजयने विषे बत्रीश नगरीउ छे.

ए बत्रीश नगरीउना नाम अनुक्रमे कहेछे.

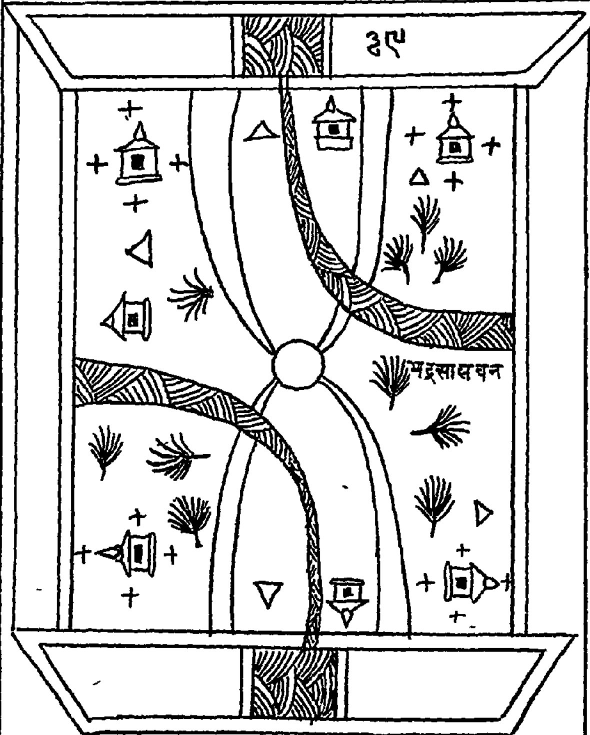
क्षेमा, क्षेमपुरा, अरिष्टा, अरिष्टपुरा, खड्गी, मंजूषा, ऋषभपुरी, पुंडरिगिणी, सुसीमा, कुंडला, अपरावती, प्रभंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुभा, रत्नसंचया, अश्वपुरा, सिंहपुरा, महापुरा, विजयपुरा, अपराजिता, अपरा, अशोका, वीतशोका, विजया, वैजयंती, जयंती, अपराजिता, चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवध्या अने बत्रीसमी अयोध्या नगरी जाणवी. ए बत्रीस नगरी ते नदिनी दिशिए जे विजयनुं अर्द्धछे तेमांहे जाणवी. ए प्रत्येक राजधानिमां ते ते विजयने नामे चक्रवर्त्ति थाय जेम कछविजयनी क्षेमा नामे राजधानीमां कछ चक्रवर्त्ति थाय तेम सर्वे विजयोने विषे जाणी लेवुं तथा कछविजयमां

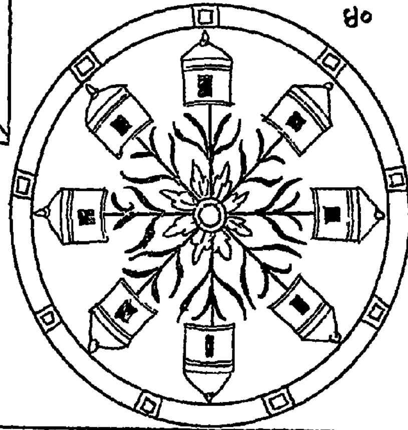


उत्तरकुरुक्षेत्रना पूर्व भागमा जंबुवृक्षपीठिका स्थापना

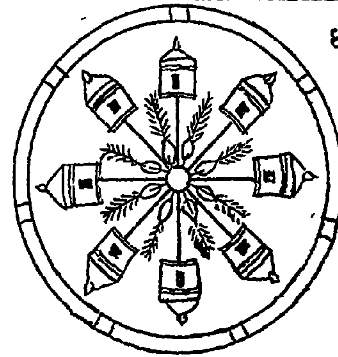


जंबुवृक्षनी पीठिकाने फरती पद्मवरवेदिका तथा वन-खंड अने प्रासादोनी स्थापना





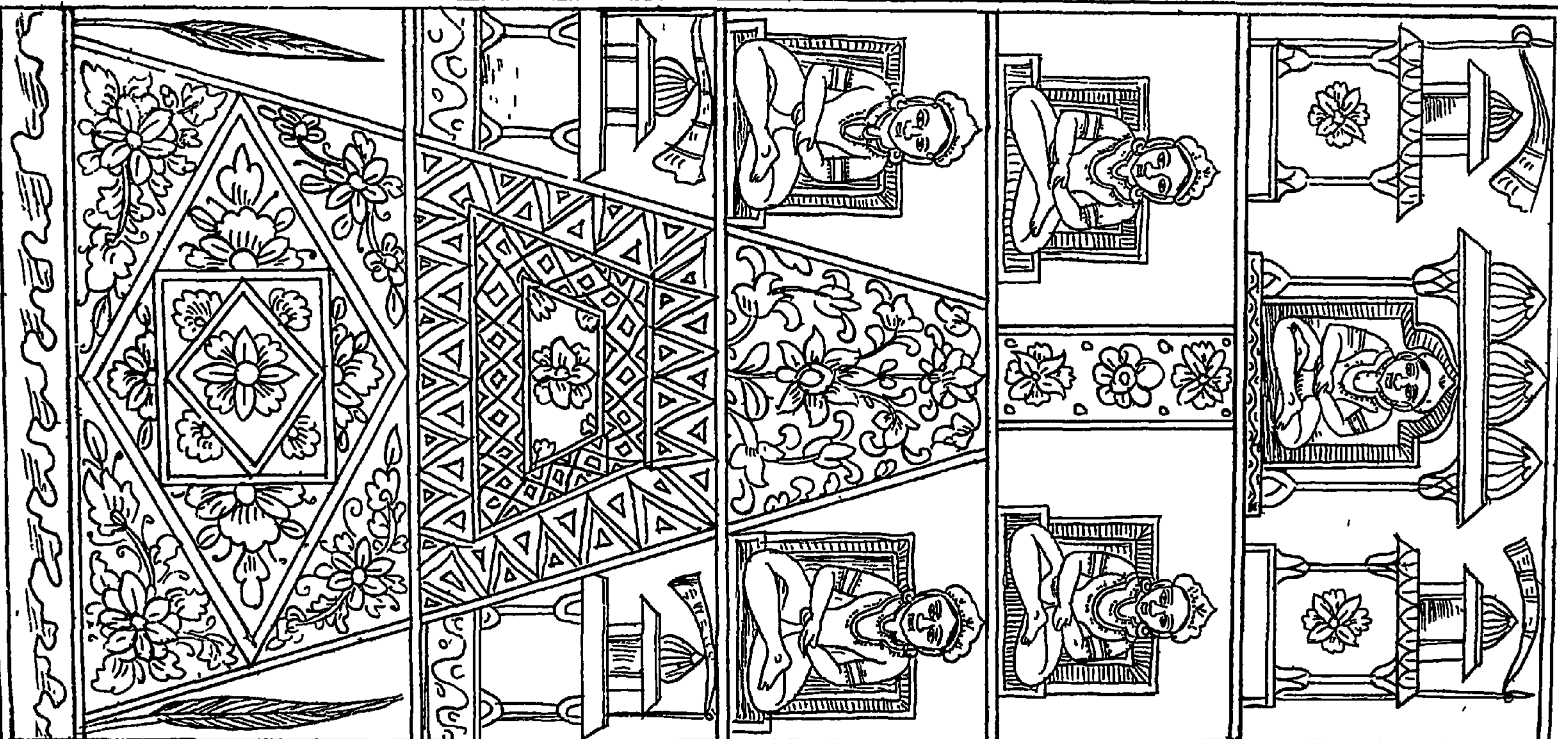
मेरुपर्वत ऊपरना नंदनवननी स्थापना



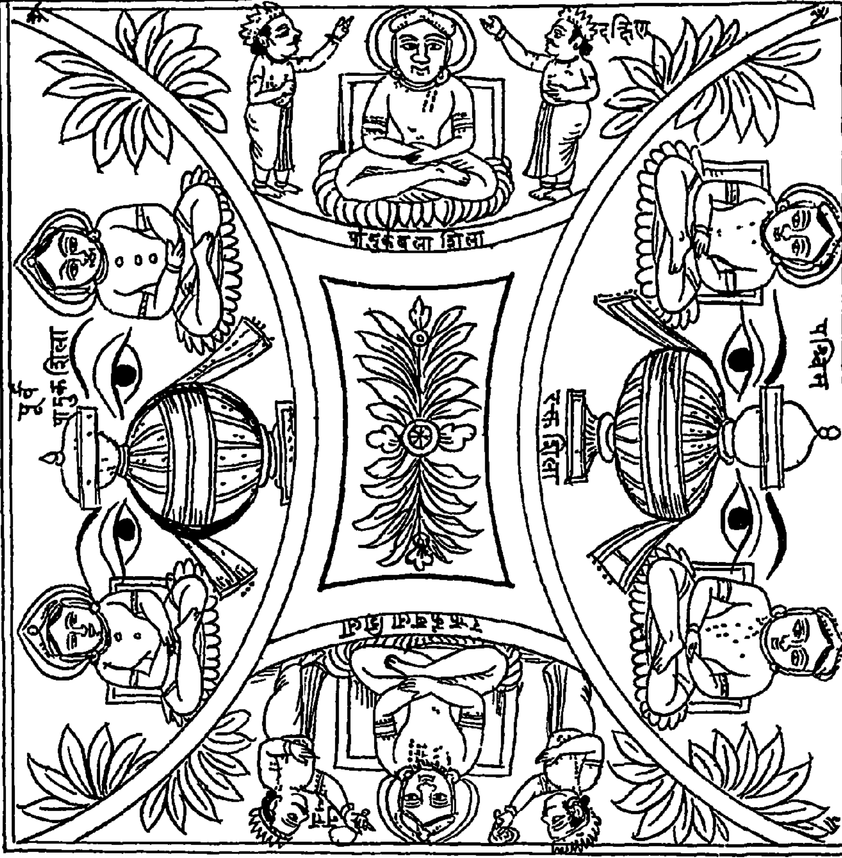
मेरुना सोमनसवननी स्थापना:

मेरु पर्वत स्थापना.

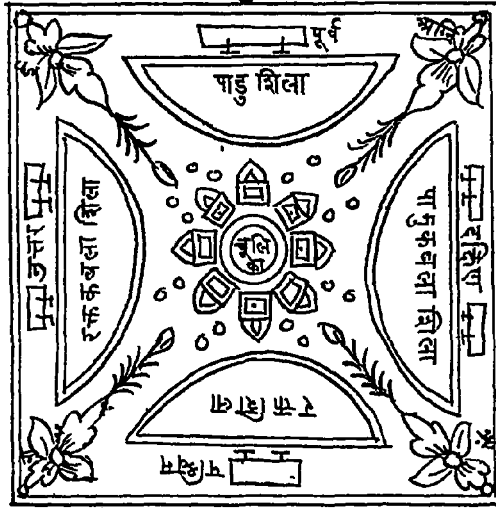
३८



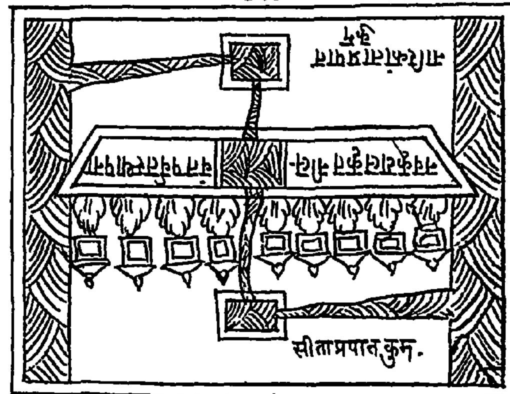
पांडुकवनने विषे श्री तीर्थंकरने जन्माभिषेक करवानी शिला तथा सिंहासननी स्थापना. ४४



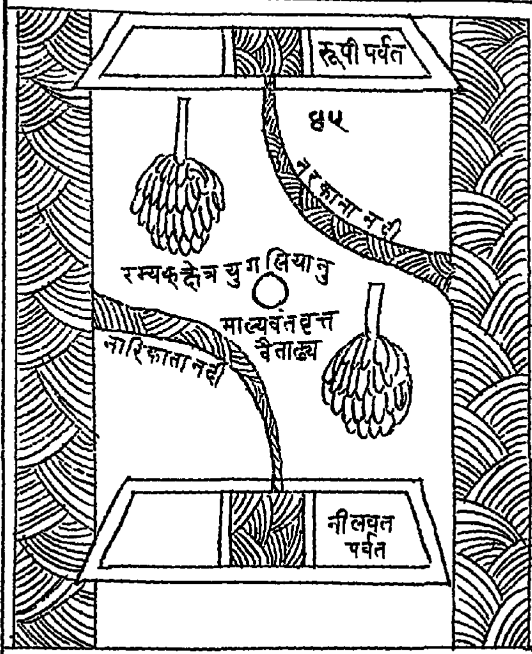
४३

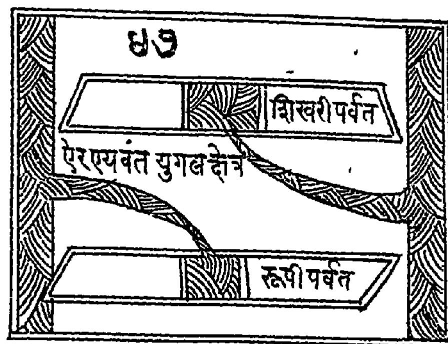


४५

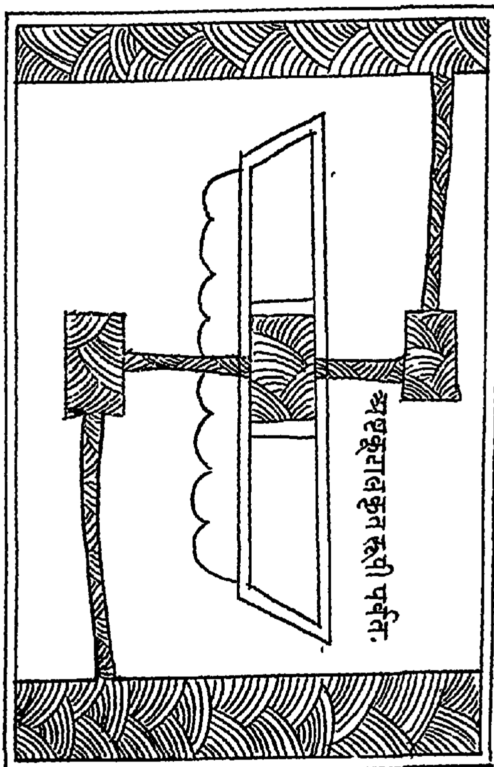


मेरुपर्वत उपर पांडुकवन स्थापना.

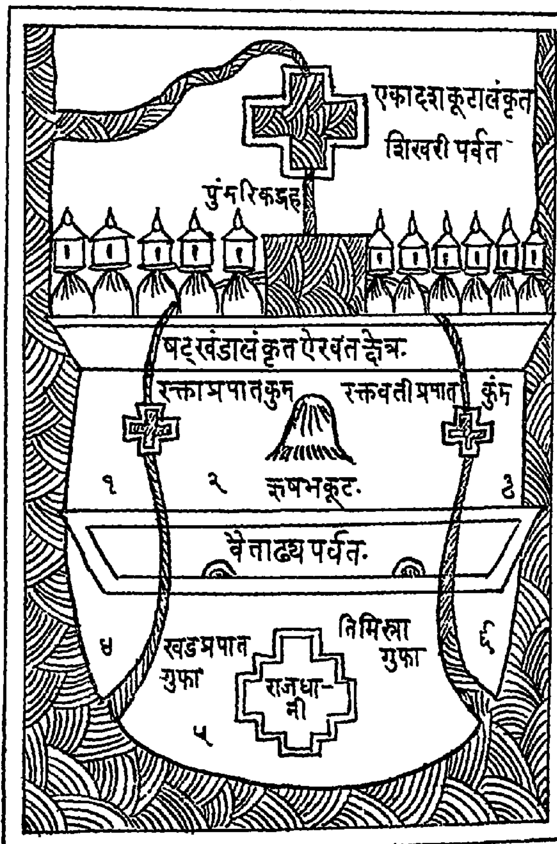

रूपी पर्वत
४५
नरकान्ता नदी
रम्यक् क्षेत्र युगलियानु
माल्यवंत वृत्त
वैताढ्य
नारिकांता नदी
नीलवंत
पर्वत


४७
शिखरी पर्वत
ऐरण्यवंत युगल क्षेत्र
रूपी पर्वत

४६


अष्टकूटालंकृत रूपी पर्वत.

४८


एकादशकूटालंकृत
शिखरी पर्वत
पुंडरिकद्रह
षट्खंडालंकृत ऐरवत क्षेत्र.
रक्ताप्रपातकुंड
रक्तवती प्रपात कुंड
१
२
ऋषभकूट.
३
वैताढ्य पर्वत.
४
खंडप्रपात
गुफा
तिमिस्रा
गुफा
६
राजधा-
नी
५

कच्छ नामे देवता एक पल्योपमायु वालो वशे छे तेम सर्व विजयने विषे ते ते विज यने नामे देवता पण कहेवा.

हवे विजयनी नदी कहेछे. निषध तथा नीलवंतने समीपें जे कुंमछे ते थकी नीकली एवी गंगा अने सिंधु, नामे जे नदी छे ते कच्छादिक आठ विजय तथा पद्मादिक आठ विजय मली शोल विजयने विषे ए बे बे नदी जाणवी. अने शेष बीजा जे वच्छादिक आठ विजय तथा वप्रादिक आठ विजय ए शोल विजयने विषे रक्ता अनें रक्तवती नामा बे बे नदी छे ते सर्व नदीउ वैताढ्य प्रत्यें नेदीनें शीतोदा तथा शीतामांहे प्रवेश करे छे. ए कच्छादिक विजयथी दक्षणावर्त्त गणीयें.

हवे महाविदेह क्षेत्रनेविषे पूर्व तथा पश्चिमदिशिए शीतोदा तथा शीतानदी जगतीने नेदीने ज्यां समुद्रमांहे मले छे. त्यां जगती मांहेनी दिशि शीतोदा तथा शीता नदीने बन्ने बाजु चार वन मुखछे तेनुं जगतीनी विवक्षाविना पहोलपणुं उंगणत्रीशसेने बावीस योज ननुं शीतोदा तथा शीता नदीने समीपे जाणवुं. पछी संकोचता संकोचता निषध तथा नील वंतने पाशे वनमुखनुं विस्तार एककला जाणवी. हवे कुलगिरि थकी नदी दिशि जातां वांछित स्थानकने विषे वनमुखनुं विस्तार जाणवानुं विधि कहेछे. निषध तथा नीलवं तने समीपे वनमुखनुं विस्तार एक कलाछे तो नदीने समीपे निषध तथा नीलवंत थकी सोल हजार पांचसेने बाणु योजन उपर बे कला जइए तेवारे वनमुखनुं विस्तार केटलुं थाय ते जाणवा माटे ए पूर्वोक्त सोल हजार पांचसे ने बाणु योजननी कला करीए ते कला त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश थाय, तेने नदीनें समीपे वनमुखनुं वि स्तार उंगणत्रीससेनें बावीश योजनछे तेनी साथे गुणीए तेवारे बाणुकोडी अगीआर लाख साठ हजारने पांचसे थाय, तेने ते क्षेत्रनुं विस्तार त्रण लाख पंदर हजार बसे ने पचाश साथे नाग आपीए तेवारे उंगणत्रीशसे ने बावीश योजन वनमुखनुं विस्तार थाय. ए प्रकारे ज्यां वांछिए त्यां वनमुखनुं विस्तार लावे. ए प्रत्येक वनमुख पद्मवरवे दिका अने वनखंमें करी वींटेला छे यावत् देवता बेसे छे. इत्यादि सर्व कहेवुं.

हवे ए विजयादिकनुं विस्तार एकठो करतां लाख योजन पूर्ण थाय ते कहेछे.

पांत्रीस हजार चारसेने छ योजन एटला सर्व विजयनुं विष्कंन जाणवो. अने बे वन मुखनुं विष्कंन अठावनसे ने चुमालीश योजन छे, सातसेने पचास योजन अंतरनदीनुं पहोलपणुंछे, अने चोपन हजार योजन मेरु तथा नद्रशाल वन छे, ते केम के नद्रशाल वनजे छे, ते मेरुथकी पूर्वदिशि अने पश्चिमदिशि बावीश बावीश हजार योजनछे. ते माटे बे बाजुना चुमालीश हजार योजन थया अने मेरुनुं मध्य विस्तार दश हजार यो

जन छे. ए एकठा करतां चोपन्न हजार योजन पूरण थाय तथा वक्षस्कार पर्वतनुं विस्तार चार हजार योजनछे ए सर्व एकठो करिए तेवारें लाख योजन पूर्ण थाय छे.

हवे अधो लोकमांहि गाम वखाणेछे.

मेरुना समभूतलनी अपेक्षाए मात्राएं मात्राएं भूमी नीची थती जायछे. ते मेरुपर्वत थकी पश्चिमदिशियें बेतालीश हजार योजन भूमिने विषे गया पछी त्यां एक हजार योजन भूमी समभूतलथी ऊंमीछे, त्यां अधोगामी माणस वसेंछे. समभूतलथी नवसें योजन हेठ अने नवसें योजन ऊंचा तिहां सुधी तिर्छो लोक कहीयें तथा नवसेंथी ऊंचुं ते ऊर्ध्व लोक कहीयें अने नवसेंथी नीचुं ते अधोलोक कहीयें. ए महाविदेहनो विचारकह्यो.

जंबूद्वीपना माहाविदेह संबंधि पूर्व पश्चिमनां लक्ष योजन मेलक यंत्र.

अं०	स्थानकनां नाम. (पूर्वदिसि.)	योजनसंख्या	अं०	स्थनकनां नाम. (पश्चिमदिसि.)	योजनसंख्या
१	सीतामुखवनजगतीसहीत.	२९२२	१९	भद्रशालवन पश्चिमदिसियें.	२२०००
२	आठमी नवमी, विजय.	२२१२ ७/८	२०	बत्रीशमी, सत्तरमी विजय.	२२१२ ७/८
३	वखारो पर्वत.	५००	२१	वखारो पर्वत.	५००
४	सातमी, दशमी विजय.	२२१२ ७/८	२२	एकत्रीशमीअढारमीविजय	२२१२ ७/८
५	अंतर नदी.	१२५	२३	अंतरनदी.	१२५
६	छठी अगीआरमी विजय.	२२१२ ७/८	२४	त्रीशमी,उगणीशमीविजय.	२२१२ ७/८
७	वखारो पर्वत.	५००	२५	वखारो पर्वत.	५००
८	पांचमी, बारमी विजय.	२२१२ ७/८	२६	उगणत्रीशमी,वीशमीविज.	२२१२ ७/८
९	अंतर नदी.	१२५	२७	अंतर नदी.	१२५
१०	चोथी, तेरमी विजय.	२२१२ ७/८	२८	अठावीशमी,एकवीशमीवि	२२१२ ७/८
११	वखारो पर्वत.	५००	२९	वखारो पर्वत.	५००
१२	त्रीजी चौदमी विजय.	२२१२ ७/८	३०	सत्तावीशमी,बावीशमीवि०	२२१२ ७/८
१३	अंतर नदी.	१२५	३१	अंतर नदी.	१२५
१४	बीजी, पंदरमी विजय.	२२१२ ७/८	३२	छवीशमी,त्रेवीशमीविजय.	२२१२ ७/८
१५	वखारो पर्वत.	५००	३३	वखारो पर्वत.	५००
१६	पहेली, शोलमी विजय.	२२१२ ७/८	३४	पच्चीशमी,चोवीशमीविजय	२२१२ ७/८
१७	भद्रशालवन पूर्वदिसियें.	२२०००	३५	सीतोदा मुखवनजगतीस०	२९२२
१८	मेरुपर्वतनुं विष्कंभ.	१००००	३६	सरवाळे.	१०००००

हवे तीर्थंकर तथा चक्रवर्त्ति प्रमुख क्यां उपजे ते कहेछे.

आ जंबूद्वीपने विषे जघन्य तो चार तीर्थंकर समकाले होए वली उत्कृष्टतो बत्रीश विजयना बत्रीश अने भरत तथा ऐरवतना बे मलीने चोत्रीश समकाले होए. तथा वासुदेव, चक्रवर्त्ति अने बलदेव ए त्रण पुरुष जघन्यतो समकाले प्रत्येके चार चार होए अने उत्कृष्टा त्रीश होए जेवारे चक्रवर्त्ति होए, तेवारें वासुदेव न होए, अने जेवारे वासुदेव होए, तेवारे चक्रवर्त्ति नहोए तेमाटे त्रीश समकाले होए, पण चोत्रीश नहोए, बत्रीश विजय तथा भरत अने ऐरवत मली चोत्रीश क्षेत्र उपजवाना जाणवा.

हवे नीलवंत पर्वतनो विचार कहेछेः—

महाविदेहने उत्तरदिसें अने रम्यकक्षेत्र युगलीयानुं तेनी दक्षण दिसें नीलवंत नामा वर्षधर पर्वत छे ते जेम निषध पर्वतनी वक्तव्यता कही तेमज लंबाइ पोहोलाइ आदिक एमां पण कहेवी अने इहां केशरी नामे द्रहछे तेनी दक्षणदिसि थकी सीता महानदी नीकली थकी उत्तरकुरु मांहे आवती बे थमक पर्वत तथा पांच द्रह प्रत्यें बे प्रकारें वेहेंचती थकी एनी वच्चें थइने चोरासी हजार नदीयें पूराती पूराती भद्रशालवन प्रत्यें आवती मेरुपर्वत पासें बे योजन अण पोहोती थकी पूर्वदिसि साहामी वली ते माल्यवंत नामे गजदंत पर्वतने नीचें भेदीने मेरुपर्वतनी पूर्वदिसें पूर्वमहाविदेह क्षेत्रने बे भागें वेहेंचती थकी एकेका चक्रवर्त्तिना विजयथकी अठावीश अठावीश हजार नदीयें पूराती पूराती ५३२००० नदीयें सहीत थकी विजय नामा जंबूद्वीपनां द्वारने नीचें जगती भेदीने पूर्वदिसें लवण समुद्रमां भलेछे शेष अधिकार सीतोदा परे जाणवुं.

इहां नारीकांता नदी, केशरी द्रहनी उत्तरदिसि थकी नीकली तेनुं अधिकार हरिकांता नदीनी पेरे जाणवुं पण एटलुं विशेष जे गंधापाती वृत्तवैताढ्य पर्वतने एक योजन अण पोहोती थकी पश्चिम साहामी वली थकी समुद्रमां भले छे शेष तेमज जाणवुं.

नीलवंत पर्वतना नव कूटना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट २ नीलवंत कूट ३ पूर्वविदेह कूट ४ सीता कूट ५ कीर्तिदेवी कूट ६ नारीकांता कूट ७ अपरविदेह कूट ८ रम्यककूट ९ उपदर्शन कूट ए सर्वकूट पांचशें योजनना जाणवा तथा ए पर्वतनुं नीलोवर्ण, नीलोकांति, सर्ववैडूर्यरत्नमय नीलो छे अने नीलवंत नामे देवता इहां एक पल्योपमायुयें वसे छे माटे एनुं नीलवंत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे रम्यक नामे युगलीयानुं क्षेत्र कहेछेः—नीलवंतपर्वतने उत्तरदिसें अने रूपी पर्वने दक्षण दिसें रम्यकक्षेत्र छे तेनो वर्णन जेम पूर्वें हरिवर्ष युगल क्षेत्रनो कह्युंछे तेनी परे जाणवुं. तथा नरकांता नदीने पश्चिमदिसें अने नारिकांता नदीने पूर्वदिसें ए क्षेत्रमां गंधापाती नामा वृत्तवैताढ्य पर्वतछे तेमां घणा कमल गंधापातीना वर्ण सरिखा रक्त

वर्णे छे ते उपर पद्मनामे देवता पल्योपमायु वाळो वसेछे तेमज ए रम्यक् क्षेत्र पण घणो रम्य मनोहर छे तथा रम्यक् नामे देवता वशेछे तेथी एनुं रम्यक् नाम शाश्वतुं छे.

हवे रुक्मि (रूपी) पर्वत कहेछेः—रम्यक्क्षेत्रने उत्तरदिसें अने हिरण्यवंत क्षेत्रने दक्षण दिसें रुक्मी पर्वतछे ते महाहिमवंतनी वक्तव्यतायें जाणवो इहां महापुंडरिक नामे इहछे तेमांथी नरकांता नामा नदी दक्षणदिसेंथी पूर्वोक्त रोहितानी परे पूर्वदिसें जाय छे तथा रूप कुला नदी उत्तर दिसेंथी नीकळी ते हरिकांतानी पेरे पश्चिम दिसें जायछे.

ए रूपी पर्वत उपर आठ कूटछे तेना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतनकूट २ रुक्मीकूट ३ रम्यक्कूट ४ नरकांता कूट ५ बुद्धिदेवीकूट ६ रूप्यकुलाकूट ७ हैरण्यवंतकूट ८ मणिकांचनकूट ए सर्व कूट पांचशें पांचशें योजननां छे ए पर्वत रूपामय छे रूपानी पेरे कांती छे अने रुक्मिनामा देवता पल्योपमनी स्थितियें वशेछे माटे एनुं रुक्मि एवुं शाश्वतुं नामछे.

ए रुक्मी पर्वतने उत्तरदिसें अने शिखरी पर्वतने दक्षणदिसें हैरण्यवंत नामे युगल क्षेत्र छे तेनो अधिकार हेमवंत क्षेत्रनी पेरे जाणवुं इहां सुवर्णकुला महा नदीने पश्चिम दिसें अने रूप्यकुला महानदीने पूर्वदिसें हैरण्यवंत क्षेत्रने मध्य नागे, माल्यवंत नामे वृत्तवैताढ्य पर्वत छे तेनो वर्णन शब्दापाती वृत्तवैताढ्यनी पेरे जाणवुं एना कमल ते माल्यवंत सरखा प्रनायें माल्यवंत सरखे वर्णछे तथा प्रनास नामे देवता पल्योपमनी स्थितियें इहां रहेछे तेथी तथा हैरण्यवंत क्षेत्र ते रुक्मी अने शिखरी पर्वत तेणे करी बे पासे सहीत छे तथा नित्यें हिरण्य एटले सुवर्णरूप प्रकाशेछे तथा आशनादिकें करी नित्यें हिरण्य दीएछे अने इहां हैरण्यवंत नामे देवता वशेछे तेथी एनुं नाम हैरण्यवंतछे.

हैरण्यवंत क्षेत्रने उत्तरदिसें अने ऐरवतक्षेत्रने दक्षणदिसें शिखरी नामे वर्षधर पर्वत छे तेनो लंबाइ आदिक सर्व अधिकार चूल हेमवंत पर्वतनी पेरे जाणवुं इहां पुंडरिक नामे इह छे तेमांथी सुवर्णकुला महानदी दक्षणदिसे नीकळी ते रोहीतांसानी पेरे पूर्वदिसि समुद्रमां जायछे अने जेम गंगा अने सिंधु ए बे नदी नरत क्षेत्रमां जायछे तेम इहां रक्ता अने रक्तवती ए बे नदी ऐरवतक्षेत्र मांहे जाय छे तेमां पूर्वदिसियें रक्तानदी अने पश्चिम दिसियें रक्तावती नदी जाणवी शेषअधिकार सर्व चूल्ल हेमवंतनीपेरेजाणवो

शिखरीपर्वतने विषे इग्यारकूट छे तेना नाम कहेछेः—१ सिद्धायतन कूट, बीजो शिखरी कूट, त्रीजो हैरण्यवंत कूट, चोथो सुवर्णकूला कूट, पांचमो सूरादेवी कूट, छठो रक्तावर्त्तन कूट, सातमो लक्ष्मी कूट, आठमो रक्तावत्यावर्त्तन कूट, नवमो इलादेवी कूट, दशमो ऐरवत कूट, अगीआरमो तिगिछि कूट ए सर्व कूट पांचशें योजननां जाणवा तथा ए शिखरी पर्वतने विषे घणा कूट शिखरीवृक्षने संस्थाने संस्थित छे, सर्व रत्नमय छे अने इहां शिखरी नामे देवता वशेछे तेथी एनुं शिखरी एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ऐरवतक्षेत्रनी वक्तव्यता कहे छे.

उत्तरदिशिना लवणसमुद्रनी दक्षिण दिशें ऐरवत नामें क्षेत्र छे एने विषे तुंग वृक्ष तथा कांटा प्रमुख नरतक्षेत्रनी पेरें घणा छे, तथा एनी बीजी पण सर्व वक्तव्यता नरत क्षेत्रनी पेरें जाणवी. परंतु एटलुं विशेष जे इहां ऐरावत नामें चक्रवर्त्ती जाणवो अने नरतक्षेत्रने विषे नरत नामें चक्रवर्त्ती कहेवो. तथा इहां ऐरवत नामे देवता वसे छे तेथी एनुं ऐरवत एवुं शाश्वतुं नाम छे.

हवे ए नरत अने ऐरवत क्षेत्रने विषे कालचक्रनुं स्वरूप कहे छे.

नरत तथा ऐरवत क्षेत्रमांहे छ आरे करी अवसर्प्पिणी अने छ आरे करी उत्सर्प्पिणी रूप बार आरानुं कालचक्र छे. ते सदा काल अनादि अनंत पणे अनुक्रमे न्रमण करे छे.

हवे ए बार आरानां नाम कहे छे. प्रथम सुखम सुखमा, बीजो सुखमा, त्रीजो सुखम डुखमा, चोथो डुखम सुखमा, पांचमो डुखमा, छठो डुखम डुखमा, ए छ आरा छे ते अवसर्प्पिणी कालनेविषे अनुक्रमें प्रथम सुखम सुखमाथी गणीयें अने उत्सर्प्पिणी कालें अवला गणीयें एटले डुखम डुखमाथी धुर मांमी गणीएं. एम बार आरा चडता पडता जाणवा. ए चक्रनी पेरें फिरता आवे माटे एने कालचक्र कहीएं. एमां अवसर्प्पिणी ते घटतो घटतो काल जाणवो अने उत्सर्प्पिणी ते चढतो चढतो काल जाणवो.

हवे ए आराना कालनुं प्रमाण कहे छे. पहेलो आरो चार कोडाकोडी सागरनो, बीजो आरो त्रण कोडाकोडी सागरनो, त्रीजो आरो बे कोडाकोडी सागरनो, ए त्रण आराने विषे अनुक्रमें करी मनुष्योनां आयुष्य कहे छेः—प्रथम आरे त्रण पल्योपमनुं, तथा बीजे आरे बे पल्योपमनुं, त्रीजे आरे एक पल्योपमनुं, ए रीतें मनुष्यनुं आयुष्य जाणवुं. हवे शरीरनुं मान कहे छे. प्रथम आराने विषे त्रण कोश ऊंचा मनुष्यनां शरीर होय, अने बीजे आरे बे कोश, त्रीजे आरे एक कोश, ए शरीरनुं ऊंचपणुं जाणवुं.

हवे ए त्रण आराने विषे मनुष्योने जे आहारनी इछा थाय छे,ते कहे छेः—पहेला आराने विषे चोथे दिवसें तुअर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय,अनें बीजे आरे त्रीजे दिवसें बोर प्रमाणे आहारनी वांछा थाय. तथा त्रीजे आरे एकांतरे आमला प्रमाणें आहारनी वांछा थाय. हवे शरीरने विषे पांसलीनी संख्या कहे छे. प्रथम आरामांहें बशेंने छप्पन्न पिठकरंम एटले पांसली होय, अने बीजे आरे ते पूर्वोक्त पांसलीनुं अर्द्ध एटले एकशोने अठावीश पांसली होय, तथा त्रीजे आरे वली तेनुं अर्द्ध एटले चोशठ पांसली होय.

हवे ए त्रण आराने विषे अपत्य पालना कहे छे. प्रथम आराने विषे युगलने प्रसव्या पछी ओगणपचास दिवस सुधी अपत्य एटले छोरु युगल तेहनी प्रतिपालना करे, तथा

बीजे आरे चोशठ दिवस अपत्यपालना होय, अने त्रीजे आरे ओगणाएंशी दिवससुधी अपत्यपालना जाणवी. तेवार पछी ते युगलनां मातपिता मरण पामे. ए त्रण आराने विषे निश्चयें समस्त पंचेंद्री जीव ते सर्वे युगलिया जाणवा. ते युगलिक केहेवा छे? तोके जला मनवाला एटले अल्प कषाय वाला, तथा रूपवंत तथा समचउरंस संस्थान वाला होय तेमाटे सुंदराकार छे, वली ते युगलिया मनुष्य तथा तिर्यंच ते सर्वे पोताना आयुष्यथी ओछी आयुष्य प्रमाणें अथवा पोताना आयुष्य प्रमाणेंज देवता मांहे जइ उपजे.

हवे ए त्रण आराने विषे युगलियाने मत्तंग प्रमुख दश जातिना कल्पवृक्ष छे ते पानक प्रमुख दश प्रकारना वांछित पदार्थ आपे,ते आवी रीतें:-प्रथम मत्तंग नामें कल्पवृक्ष ते वृक्ष खारेक प्रमुखना रस सरखा मीठा रस आपे, बीजो भृंगनामें कल्पवृक्ष, ते थाली तथा वाटली तथा चरु अने कलश प्रमुख भाजन आपे. त्रीजो तुर्यांगनामें कल्पवृक्ष ते महा वाजित्र सहित बत्रीश बद्धनाटक देखाडे छे, चोथो ज्योतिरंगनामें जे कल्पवृक्ष छे ते रात्रिने विषे पण सूर्यनी पेरें प्रकाश करे छे, तथा पांचमो दीपांग नामें जे कल्पवृक्ष छे, ते घरने विषे दीवानी परें अजुआलुं करे छे, तथा छठो चित्रांग नामें जे कल्पवृक्ष छे, ते पंचवर्ण अने सुगंधिक फूल, सहस्त्रदल कमल, मालती प्रमुख आपे, तथा सातमो चित्ररसा नामें जे कल्पवृक्ष छे ते आहार एटले मनोवांछित मिष्टान्न षट्रस भोजन आपे, तथा आठमो मणितांग नामे जे कल्पवृक्ष छे ते भूषण, आभरण, मुकुट, मुद्रिका, हार, कुंमल अने नेउर प्रमुख आपे. तथा नवमो गेहाकार नामें जे कल्पवृक्ष छे ते सप्तभूमिना, पंचभूमिना तथा त्रिभूमिना मनोहर आवास आपे, तथा दशमो अनितांग नामें कल्पवृक्ष छे ते भलां वस्त्र तथा देवदुष्य चीर, वरपटकूलादि आसन बेसवा योग्य तथा भद्रासन शय्या प्रमुख आपे. ए दश जातिना कल्पवृक्ष ते ए पूर्वोक्त वांछित पदार्थ पूरे छे.

हवे सर्व आरानेविषे सामान्य पणे तिर्यंचनां पण आयुष्य कहे छे.

मनुष्यना आयुष्य सरखां गज, हाथी, सिंह अने अष्टापद प्रमुखनां आयुष्य होय. मनुष्यना आयुष्यनो चोथो भाग घोडा अने वेसर प्रमुखनुं आयुष्य जाणवुं. तथा छाली, गाडर अने शीयाल प्रमुखनुं मनुष्यना आयुष्यने आठमे भागें आयुष्य जाणवुं. तथा गाय, भैंश, उंट अने गर्दभ प्रमुखनुं आयुष्य ते मनुष्यना आयुष्यने पांचमे भागें जाणवुं. तथा कूतरा प्रमुखनां आयुष्य ते मनुष्यना आयुष्यने दशमे भागें छे. ए तिर्यंचना आयुष्य प्रमुख प्रायें सर्वे आराने विषे ए प्रकारें सरखां होय.हवे त्रीजा आराने अंते नव कुलगर, राजनीति अने सर्वे संसार व्यहार तथा जिन धर्म आदि शब्दथी बादर अग्निकाय तथा ज्ञान विज्ञान प्रमुख सर्वेनी उत्पत्ति थाय.

अवसर्प्पिणी त्रीजा आरानेविषे नेव्याशी पखवाडा पाछला जेवारें शेष रहे, तेवारे पेहेला तीर्थंकर सिद्धिपद पामे अने चोथा आराना नेव्याशी पखवाडा पाछला जेवारें शेष रहे, तेवारें चोवीशमा तीर्थंकर सिद्धिपद पामे, अने उत्सर्प्पिणी कालना त्रीजा आराना नेव्याशी पखवाडा जेवारें जाय, तेवारें पहेला तीर्थंकर उपजे, तथा चोथा आराना नेव्याशी पखवाडा जेवारें जाय, तेवारें छेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर उपजे.

हवे चोथा आरानुं स्वरूप कहे छे.

बेंतालीश सहस्र वरसें ऊणो एक कोडाकोडी सागरोपमनो चोथो आरो होय, तेहने विषे मनुष्यनुं आयुष्य पूर्वकोडि वर्षनुं जाणवुं. अने शरीरनुं मान पांचशें धनुष्यनुं जाणवुं.

हवे पांचमा आरानुं स्वरूप कहे छे.

पांचमा आरानुं प्रमाण एकवीश सहस्र वरसनुं छे, ते पांचमा आरानेविषे सात हाथ ऊंचा मनुष्य होय, एकशोने त्रीश वरसनुं आयुष्य मनुष्यनुं होय, तथा पांचमा आराने अंते जिनधर्मादि पदार्थनो पण अंत एटले नाश थाय. व्यवहार, आचार, नीति, जाति, ए सर्वनो अंत आवशे. ए वात सिद्धांतमां कही छे. तथा केटला बोल विछेद जशे? ते कहे छे ॥गाथा॥ सुय सूरि संघ धम्मो, पुव्वण्हे छिज्जिही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणे सु ह, मंमंति तद्धम्म मज्झण्हे ॥१॥ दुप्पसहो समणाणं, फग्गुसिरि होइ साहुणीणं च ॥ सड्ढो नाइल नामा, सच्चसिरि सावियाणं च ॥ २ ॥ पुव्वाए सज्झाए, विछेउ होइ चरणधम्म स्स ॥ मज्झण्हे रायाणं, अवरण्हे जाइ तेयस्स ॥३॥इति ॥ तेवार पछी शुं थशे ? ते कहे छे. लवणादि खार तथा अग्नि अने कालकूटादिविष, तेनी वृष्टि तेणें करी पृथ्वी जे छे ते हाहाकार करशे तथा पक्षी जाति प्रमुखनां जे बीज छे, ते वैताढ्य प्रमुख पर्वतने विषे रहेशे तथा मनुष्य अने तिर्यंचना बीज छे ते सर्व बिलादि स्थाननेविषे रहेशे.

हवे ते बिल वखाणे छे.

वैताढ्यना बे पासानेविषे ज्यां घणां माछलां छे. वली गाम्डानां चक्रनी धारा सरखो प्रवाह छे जेहनो एहवी गंगा अने सिंधु तथा रक्ता अने रक्तवती नामें जे नदी तेहना बे तटने विषे नव नव बिल ते गुफा सरखां जाणवां. एटले दक्षिणभरत मांहे बे नदीना चार तट छे. अने उत्तर भरतमांहे बे नदीना चार तट छे, सर्व मली आठ तट छे, ते एकेक तटें नव नव बिल गणिएं, तेवारें बहोंतेर बिल थाय. एम ऐरवतने विषे पण बहोंतेर बिल छे, ते सर्व एकठा करीएं तो एकशोने चुम्मालीश बिल थाय.

हवे छठा आराने विषे मनुष्यादिकनुं जे स्वरूप छे, ते कहे छे.

एकवीश सहस्र वरस प्रमाणें पांचमा आरा सरखो जे छठो आरो छे, तेहनेविषे बे हाथ ऊंचा शरीर अने वीश वरस आयुष्यवालां एहवा मनुष्य होय, ते मनुष्य मत्स्यनो आ

हार करे तथा माता रूपवालां होय वली निर्दय परिणाम वालां होय, बिलने विषे रहेनारां होय, वली नरक तिर्यंचरूप दुर्गतिने विषे गमन करनारां होय. वली लज्जा रहित होय, तथा वस्त्र रहित पशुनी पेरें नग्न फिरे. तथा कठोरवचनना बोलनार होय, तथा ए पिता, ए पुत्र, ए स्त्री, ते ए बहेन, इत्यादि व्यवहार तेने न होय एटले तिर्यंचनी पेरें विवेकरहित होय. तथा छ वरषनी स्त्री गर्भ धारण करे, ते पण अतिदुःखें प्रसव करे. वली ते स्त्रीयोने घणां छोरु होय, एवी स्त्रीउ होय.

ए पूर्वोक्त छ आरा तेणे करी अवसर्प्पिणी काल होय अने तेने विपरीत पणे अवला गणीएं तेवारें उत्सर्प्पिणीकाल थाय. त्यां अवसर्प्पिणी ते प्रथम आराथी घटतो काल होय अने उत्सर्प्पिणी ते प्रथम आराथी चढतो काल होय. ए अवसर्प्पिणी तथा उत्सर्प्पिणीना बार आराना कालचक्रनेविषे वीश कोडाकोडी सागरोपम थाय.

हवे शेष क्षेत्रने विषे आरानुं सरखापणुं कहे छे.

देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे क्षेत्रनेविषे अने हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे तथा हेमवंत अने हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रनेविषे तथा पूर्वविदेह अने पश्चिमविदेह क्षेत्रनेविषे ए चार क्षेत्रना युगलनेविषे अनुक्रमें करी सदाकालें अवसर्प्पिणी कालना चार आरानो प्रथम काल जाणवो. ते केम के अवसर्प्पिणी कालनो पेहेलो आरो सुखमसुखमा छे. तेहना धुरनो जेहवो काल होय तेहवो काल सदैव देवकुरु अने उत्तरकुरु, ए बे कुरु क्षेत्रनेविषे होय एम बीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय तेहवो सदैव हरिवर्ष तथा रम्यक् ए बे क्षेत्रनेविषे होय. वली त्रीजा आरानो जेहवो प्रथम काल होय, तेहवो सदैव हेमवंत तथा हिरण्यवंत ए बे क्षेत्रने विषे होय तथा चोथा आरानो जेवो प्रथम काल होय, तेवो काल माहा विदेहक्षेत्रने विषे सदा जाणवो.

हवें चंद्रमा अने सूर्यनां चार क्षेत्र कहे छे.

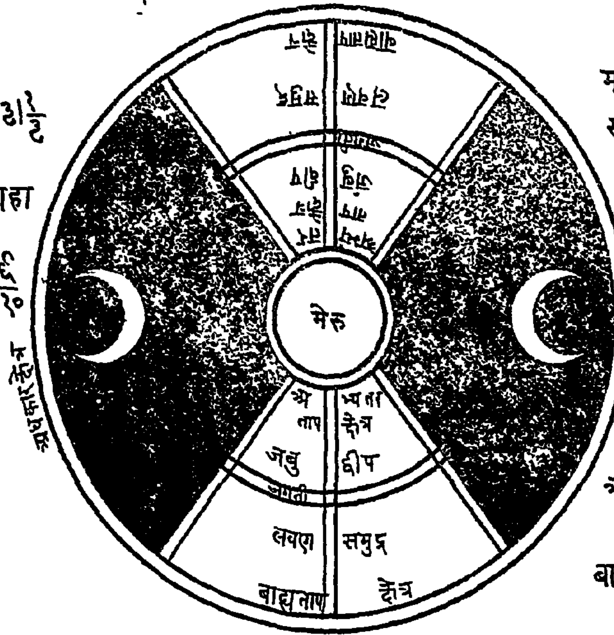
जंबूद्वीपने विषे बे चंद्रमा अने बे सूर्य छे तेनुं दक्षिण अने उत्तरदिशिनुं जे गमनागमन तेनुं क्षेत्र पांचशें दश योजन उपर एक योजनना एकसठीआ अडतालीश भाग जाणवा.

हवे चंद्रमा अने सूर्यना मंमलनी संख्या अने प्रमाण कहे छे. चंद्रमाना पंदर मांमलां छे अने सूर्यना एकशोने चोराशी मांमलां छे, ते एकयोजननां एकशठ भाग करिएं, तेवां छपन्नभाग प्रमाण चंद्रनां मांमलां छे, अने अडतालीशभाग प्रमाण सूर्यनां मांमलां छे. ए चंद्र सूर्यना विमानें रोधन करेली भूमि तेने मंमल कहीएं, ते मंमलनी संख्याथी मंमलना आंतरा एकेके उंछा जाणवा, एटले चंद्रमाना मांमला पंदरना चउद आंतरा थाय. अने सूर्यना मांमला एकशोने चोराशीना, आंतरा एकशोने त्र्याशी थाय.

तापक्षेत्रनु लांबपणुं
जंबुद्वीपे ४५०००

लवणसमुद्रे ३३३३३। १/३

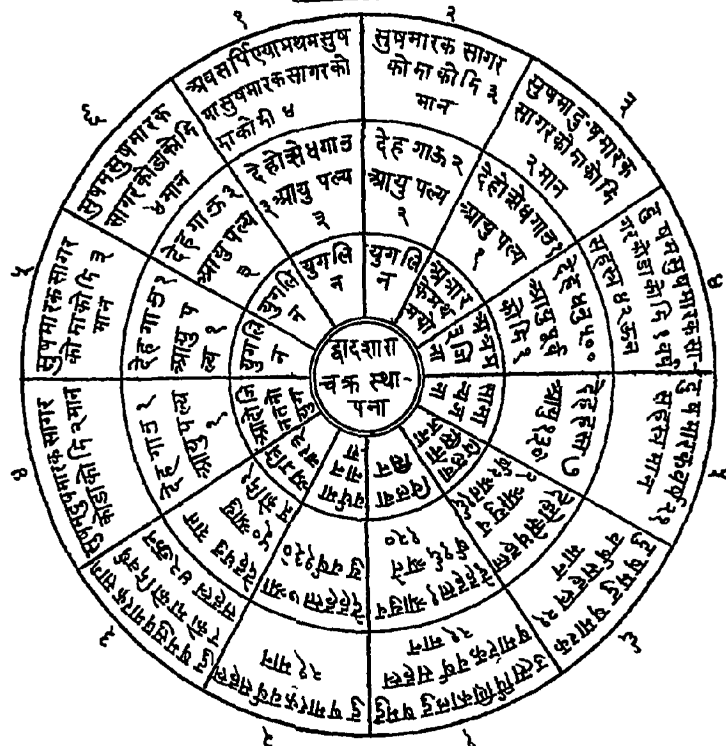
तापक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
६३२४। ६/१०
बाह्यबाहा ६३२४५। ६/१०

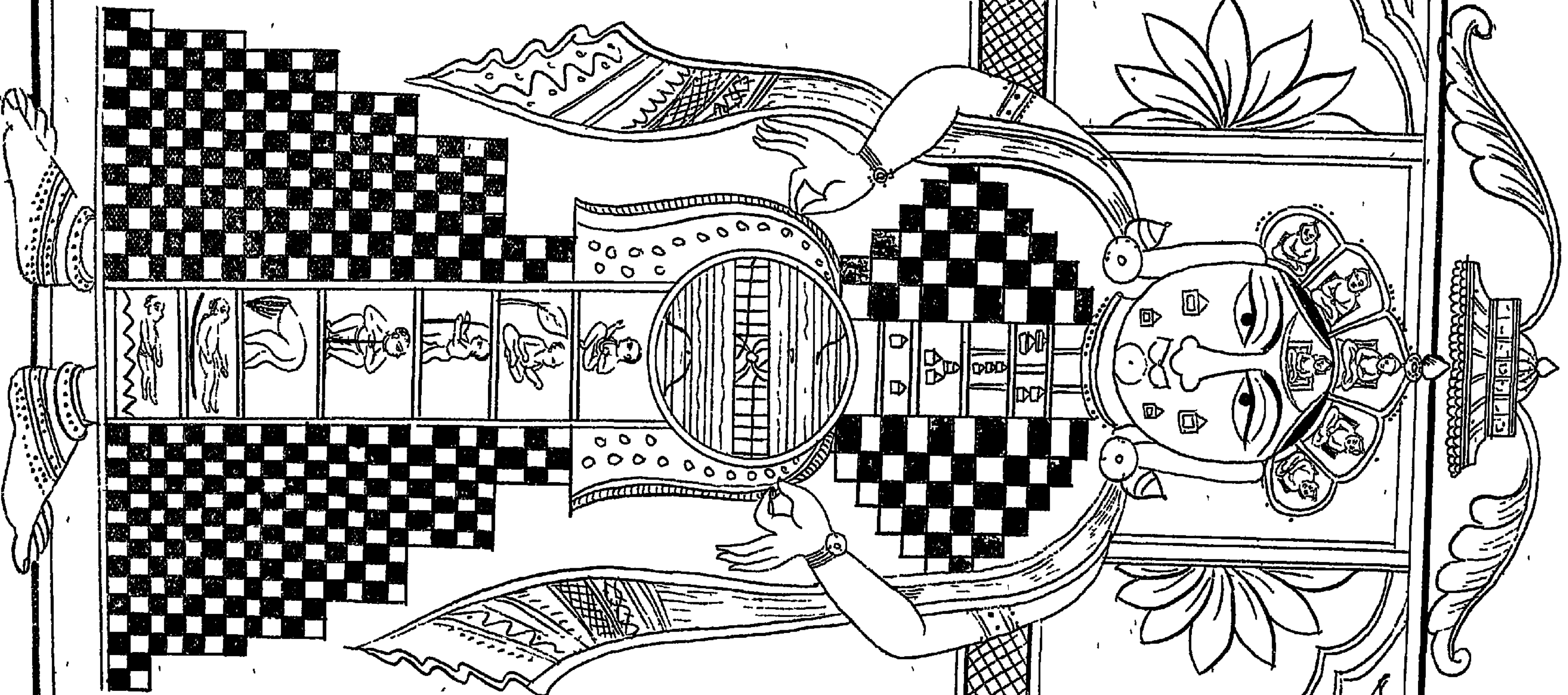


मकर संक्रांते प्रथम दिने
सर्व बाह्य मंडले सूर्यताप
क्षेत्र स्थिति
तथा
अंधकार क्षेत्र स्थिति
स्थापना.

दिनमान मुहूर्त १२
रात्रिमान मुहूर्त १८
अंधकार क्षेत्र अभ्यंतरबाहा
९४८६। ९/१०
बाह्यबाहा ९४८६८। ४/१०

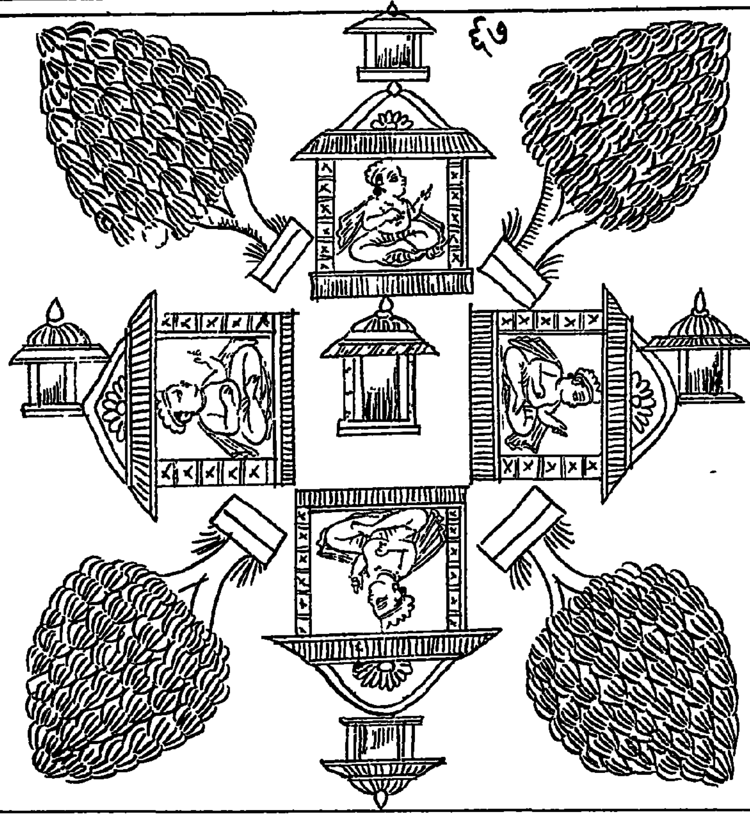
बारा आरानी स्थापना.





चौद राजलोकनी स्थापना.
मनुष्याकारें

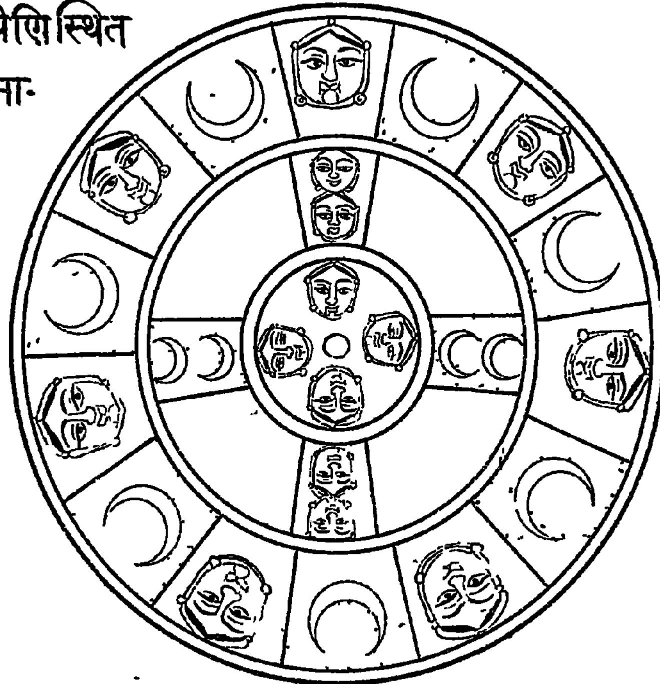
६७

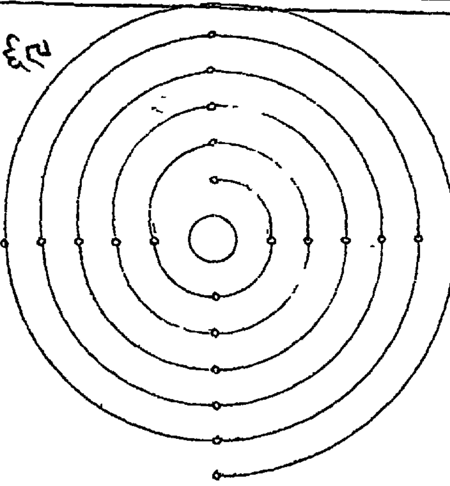


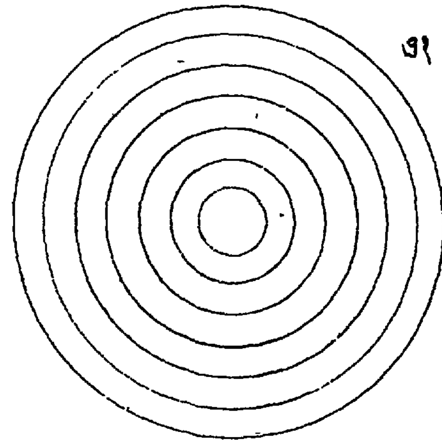
समुद्रमांही चार देवतानी स्थापना·

मनुष्यक्षेत्रे सूचिश्रेणि स्थित
चंद्रसूर्यस्थापना·

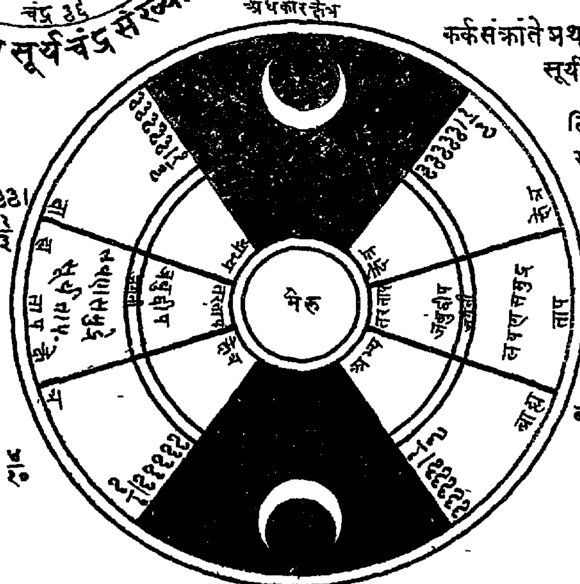
६८











कर्क संक्रांते प्रथम दिने सर्वाभ्यंतर मंडले सूर्यताप क्षेत्र स्थापना.

दिनमान मुहूर्त १८
रात्रिमान मुहूर्त १२

तापक्षेत्रनुं लांबपणुं.
जंबुद्वीपे ४५०००
लवणसमुद्रे ३३३३३। १/३
आयाम

तापक्षेत्र अभ्यंतर बाहा
९४८६। ९/१०

बाहेरली बाहा ९४८६८। ४/१०

अंधकार क्षेत्र अभ्यंतर बाहा
६३२४। ६/१०

बाह्य बाहा ६३२४५। ६/१०

हवे चंद्रमाना एक मंमलने बीजा मंमलनी वचमां अंतर कहे छे. पांत्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश भाग, वली एकसठिआ एक भागना सात भाग करिएं तेवा चार भाग अधिक, एटलुं चंद्रमाना एक मंमलथी बीजा मंमलनी वचमां अंतरनुं प्रमाण जाणवुं. ते जाणवानो परें लखोएं छैयें:—चंद्रमंमल पंदर छे, ते एकेकानुं परिमाण जे एकसठिआ छप्पन्न भाग छे तेने पंदरमंमल साथें गुणीयें तेवारें आठशें चालीश भाग थाय, तेने एकशठ भागें हरतां तेर योजन उपर एकसठिआ सुडतालीश भाग थाय, ते मूलगी जे चारना क्षेत्रनी राशि पांचशें दश योजन उपर एकसठिआ अडतालीश भागनी छे, ते मांहेथी बाद करतां बाकी चारशें सत्ताणुं योजन उपर एक भाग रहे, तेने चौद आंतरे वेहेंचीयें तेवारें पांत्रीश योजन आवे. उपर सात योजन वधे, तेना एकसठिआ चारशेंने सत्तावीश भाग थाय, तेनी साथें प्रथमनो उगर्यो एक भाग भेलीएं, तेंवारें चारशेंने अठावीश भाग थाय, तेने चउद भागें वेहेंचतां त्रीश भाग आवे, उपर आठ वधे, ते एकेकाना सात प्रतिभाग कल्पीएं तेवारें सात ने आठें गुणतां छप्पन्न थाय, तेने चउदें भाग देतां चार भाग लाभे, ए रीतें चंद्रमाना मंमलनो आंतरो पात्रीश योजन उपर एकसठिआ त्रीश भाग, तथा एकसठिआ एक भागना सात भाग करीएं तेवा चार भाग, अधिक थाय.

हवे सूर्यमंमलनुं अंतर कहे छे. सूर्यमंमल एकशोने चोराशी छे, ते एकेकनुं परिमाण एकसठिआ अडतालीश भागनुं छे, अने चार क्षेत्रनुं परिमाण पाचशें दश योजन उपर एकसठिआ अडतालीश भाग छे, तेमांथी एकशोने चोराशी मंमलना परिमाणना एकसठिआ आठ हजार आठशेने बत्रीश भाग थाय, तेना योजन एकशो चुम्मालीश उपर एकसठिआ अडतालीश भाग आवे, ते उपली चार क्षेत्रनी राशिमांथी बाद करतां बाकी त्रणशें ने छासठ योजन रहे छे, तेने एकशोने त्र्याशी अंतरे वेंचतां बे योजन आवे तो एक सूर्यमंमल अने बीजा सूर्यमंमलनी वचमां अंतर बे योजननो छे.

चंद्रमा तथा सूर्य जंबूद्वीपमांहे तथा लवण समुद्रमांहे केटला योजन आवे? ते कहे छेः—जंबूद्वीपमांहे एकशोने एंशी योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे पांच मंमल चंद्रमानां छे, अने पांसठ मंमल सूर्यनां छे. तथा लवण समुद्रमांहे त्रणशेंने त्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रने विषे दश मंमल चंद्रमानां छे, अने एकशोने ओगणीश मंमल सूर्यनां छे, एटले एकशोने एंशी योजन चंद्रमा अने सूर्य जंबूद्वीपमांहे आवे, अने लवण समुद्रमांहे त्रणशेंने त्रीश योजन चंद्रमा अने सूर्य जाय.

हवे चंद्रमानुं मंमल अने सूर्यनुं जे मंमल छे तेनुं परस्पर अंतर कहे छे. सर्व मंमल मांहेला मध्यना मंमलने विषे रहेलुं जे चंद्रमंमल अने सूर्यमंमल तेनुं परस्पर अंतर नवाणुं हजार छशोने चालीश योजननुं सूर्यमंमल अने चंद्रमंमलनुं मांहोमांहे अं

तर जाणवुं. तदनंतर चंद्रमंडळोना प्रतिमंडळने विषे बहोंत्तेर योजन अने एक योजनना एकसठ भाग करिएं, तेवा बावन्न भाग उपर एवी अंतर वृद्धि छे, अने सूर्यमंडळोमां प्रतिमंडळने विषे पांच योजन अने एक योजनना एकसठ भाग करिएं, तेवा पांत्रीश भाग उपर, एटली अंतर वृद्धि छे. तेमज बाह्य मंडळने विषे रहेलुं जे चंद्र मंडळ अने सूर्यमंडळ, तेनुं परस्पर वचमां अंतर एक लक्ष छशेंने साठ योजननुं छे.

हवें चंद्रमाना प्रत्येक मंडळने विषे मुहूर्त्त गति कहे छे.

चंद्रमा जेवारें निषध पर्वतने माथे सर्वाभ्यंतर मंडले उगे, तेवारें एक मुहूर्त्तमांहे पांच हजार तहोंतेर योजन,अने उपर एक योजनना तेर हजार सातशोने पचीश भाग करीएं तेवा सीत्योतेरसोने चुम्मालीश भाग उपर एटली मुहूर्त्त गति करे. त्यार पछी जेवारें बीजे त्रीजे मांडले जाय, तेवारे प्रतिमंडले पोणा चार योजननी वृद्धि करीएं. एम मंडळ मंडलप्रत्यें मुहूर्त्त दीठ पोणा चार योजन वधारतां जेवारें पंदर मंडळ सुधी मुहूर्त्त गतिएं चंद्रमा लवण समुद्रमांहे सर्व बाह्य मांडले उगे, तेवारें बावन योजन अधिक करिएं तो एकेक मुहूर्त्तेंपांच हजार एकशोने पचीश योजन उपर एक योजनना तेर हजार सातशेंने पचीश भाग करिएं, तेवा छ हजार नवशेंने नेवुं भाग अधिक जाणवी, एटली बाहेरने मंडले चंद्रमा एक मुहूर्त्तमांहे गति करे.

जे चंद्रमानी मांहेला मांडळानी मुहूर्त्तगति, पांच हजारने तहोंत्तेर योजन जाजेरी कही, तेज सर्वाभ्यंतर मांडले सूर्यनी गति छे, परंतु तेमांहे एकशोने अछोतेर योजन सहित करिएं एटली अधिक सूर्यनी मांहेले मंडलें मुहूर्त्त गति जाणवी. एटले जेवारें पांच हजार तहोत्तेर मांहे एकशोने अछोतेर भेळीएं. तेवारें पांच हजार बशेंने एकावन्न योजन, अने एक योजनना साठ भाग करिएं, तेवा उगणत्रीश भाग जाजेरी सूर्यनी गति जाणवी. अने चंद्रमानी बाहेरने मंडले जे मुहूर्त्त गति एकावनशोने पच्चिश योजन कही छे, तेमांहे एकशोने एंशी योजननी वृद्धि करिएं, तेवारें त्रेपनशेंने पांच योजन अने साठीआ पंदर भाग एटली बाहेरने मांडले सूर्यनी मुहूर्त्त गति जाणवी. कांइक ऊणा साठीआ अढार भाग एटला मांहिना मंडळथी बाहेरने मंडले आवतां प्रत्येक मंडळें सूर्यनी मुहूर्त्त गतिमांहे वृद्धि जाणवी.

हवे सूर्य उदय पामे त्यांथी केटले योजने अस्त थाय? ते कहे छेः—सूर्य जेवारें मांहिने मंडलें उदय पामे, तेवारें चोराणुं हजार पांचशेंने छव्वीस योजन उपर साठीआ बेंतालीश भाग एटला योजनने आंतरे वेगळो सूर्य आथमे, तेवारें दिवस अढार मुहूर्त्तनो होय.

हवे मांहेथी बाहेर मंडलें आवतां केटलो दिवस घटे, ते कहे छेः—मांहिना मंडळ थकी बाहेर आवतां एकेका मंडळ प्रत्यें एक मुहूर्त्तना एकसठ भाग करिएं, एवा बे भाग अ

ढार मुहूर्त्तना दिवसमांहेथी दिन प्रत्यें घटे एम घटाडतां छेहेले एकशोने चोराशीमे मंमलें जेवारें सूर्य आवे, तेवारें दिवस, बार मुहूर्त्तनो होय, अने रात्रि तो ते दिवस थकी विपरीत जाणवी. ते केम? के जेवारें दिवस बार मुहूर्त्तनो होय तेवारें रात्रि अढार मुहूर्त्तनी कर्कसंक्रांतिथी मकर संक्रांति सुधी जाणवी, अने जेवारें मांहेना मंमलथी सूर्य बाहेर आवे, तेवारें दिवसमांहे मुहूर्त्तना एकसठीआ बे जाग घटे, अने जेवारें मकर संक्रांतिथकी धुर मांमीने बाहेरना मंमलथी मांहे आवे, तेवारें मुहूर्त्तना एकसठीआ बे जाग दिवसमांहे वधे, अने रात्रिने विषे घटे, ते विपरीत जाणवुं.

हवे सूर्य बाहेर मांमले आवे, तेवारें उदय अस्तनुं अंतर कहे छेः—सूर्य जेवारें बाहेरने एकशोने चोराशीमें मांमले आवे, तेवारें त्रेशठ हजार छशेंने त्रेशठ योजन वेगलो अस्त थाय, कर्कसंक्रांतिथी धुर मांमीने मकर संक्रांति सुधी एकसोनें अडशठ योजन प्रति मंमले उंची गति करे. तथा एक चंद्रमाने परिवारें अजिजित् प्रमुख अठावीश नक्षत्र अने अंगारक प्रमुख अठाशी ग्रह जाणवा.

हवे एक चंद्रमानी पठवाडे तारानी संख्या कहे छेः—छाशठ हजार नवशेंने पंचोत्तेर कोडाकोडी एटला तारा, एक चंद्रमानी पठवाडे जाणवा. ए ताराना बाहुल्यपणाथकी क्षेत्र थोडुं छे, माटे कोइक आचार्य कोडाकोडीने संज्ञांतर एटले कोडीनुं बीजुं नाम कहे छे, अथवा उत्सेधांगुलें जेवारें तारानां विमान लेखवीएं, तेवारें कोडाकोडीनो संजव होय. पछी निश्चयनी वात ज्ञानवंत जाणे.

हवे ग्रहादिकनी संख्या जाणवानुं करण कहे छेः—ग्रह, नक्षत्र अने तारा ए त्रणनी संख्या, एक चंद्रमा आश्री जे कही, ते जे द्वीप समुद्रनेविषे जेटला चंद्रमानी संख्या होय, तेटला चंद्रमानी साथें गुणाकार करिएं,एम करतां जे ग्रहादिकनी संख्या आवे, तेटलो परिवार जाणवो. ए रीतें वांछित द्वीप समुद्रने विषे ए ग्रहादिकनुं प्रमाण जाणीयें.

हवे लवण समुद्र प्रमुखने विषे चंद्र सूर्यनी संख्या कहे छे. लवण समुद्रने विषे चार चंद्रमा अने चार सूर्य जाणवा तथा धातकी खंमने विषे बार चंद्रमा अने बार सूर्य जाणवा. तेवार पछी कालोद समुद्र तथा पुष्करवर द्वीप प्रमुखने विषे पूर्वें जे कह्या छे तेणे सहित त्रिगुण जाणवा, ते केम के धातकी खंमने विषे बार चंद्र तथा बार सूर्य कह्या छे, तेने त्रिगुणा करिएं, तेवारें छत्रीश थाय. तेमांहे पहेला जंबूद्वीपना बे अने लवण समुद्रना चार, एवं छ जेलीएं, तेवारें बेंतालीश सूर्य अने बेंतालीश चंद्र कालोद समुद्रने विषे थाय, हवे ए बेंतालीशने त्रिगुणा करिएं, तेवारें एकशोने छवीश थाय. तेनी साथें पूर्वोक्त बे, चार अने बार, एवं अढार जेलीएं, तेवारें एकशोने चुम्मालीश चंद्र अने एक

शोने चुम्मालीश सूर्य, पुष्करवर द्वीपने वीषे थाय छे तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें बहोंत्तेर सूर्य अने बहोंत्तेर चंद्र पुष्करवर द्वीपना अर्द्धनेवीषे जाणवा.

हवे चंद्र, सूर्य, ग्रह अने नक्षत्र ज्यां सुधी अढी द्वीप छे त्यां सुधी यावत् समश्रेणीएं चाले छे, ते सर्वे शीघ्र शीघ्रतर गति वाला छे, एटले चंद्रमाथकी सूर्यनी गति उतावली छे. सूर्य थकी ग्रहनी गति उतावली छे, ग्रहथकी नक्षत्रनी गति उतावली छे,ते चंद्र सूर्यादिकना क्षेत्रना प्रमाणथकी केटला वेगला मनुष्यनी दृष्टि गोचर आवे, ते कहे छे. एक वीश लाख चोत्रीश हजार पांचशेंने साडत्रीश योजन प्रमाण क्षेत्रथी पुष्करार्द्ध द्वीपना मनुष्य ते पूर्वदिशि उदय पामता अने पश्चिमदिशि अस्त पामता एवा सूर्य चंद्रमा प्रत्यें देखे छे, एटले त्यां तेटला क्षेत्रना वेगला विस्तारथकी देखे छे.

हवे मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनो विचार कहे छेः—मनुष्य क्षेत्रथकी बाहेर चंद्र सूर्यनी संख्या प्रथम कही छे, तेमज होय. अथवा बीजुं करण पण होय, ते उपाय शास्त्रांतरथकी जाणवो. पण संघयणी प्रमुख ग्रंथने वषे पूर्वोक्त करण वध आदर्युं छे तथा मनुष्य क्षेत्रथी बाहेर जे ज्योतिषी चंद्र सूर्यादिक छे, ते अचल एटले स्थिर जाणवा. अने मनुष्य क्षेत्रना चंद्र सूर्यना विमानथी तेमना विमान अर्द्ध प्रमाणें जाणवा.

ते पाकी इंटनें संस्थानें रह्या छे,जेम पाकी इंट पोहोल पणाथी लांब पणे बमणी होय अने चोरस होय तेम मनुष्य क्षेत्रथी बाहेरला चंद्रसूर्यनां तापक्षेत्र पचाश हजार योजन पोहोलपणे अने एक लक्ष योजन लांब पणें होय, तथा मनुष्य क्षेत्रनी पेरें तिहां चंद्रमानुं अत्यंत शीतल तेज न होय अने सूर्यनुं अत्यंत उष्ण तेज पण न होय परंतु सम तेजवंत होय ॥ इति ॥

॥ हवे परिधि प्रमुख आठ बोल कहे छे.

॥ एक तो जंबुद्वीपनी पेरें वाटला क्षेत्रने परिधि कहीयें; बीजुं वृत्त क्षेत्रनां जे योजन प्रमाण समचउरंस खंम करीयें, तेने गणितपद कहीयें, त्रीजुं छेदेला खंमादिकनुं जे बाण करीयें तेने इक्षु कहीयें,चोथुं धनुष्यने आकारें भरत वैताढ्य प्रमुखनी जे पणछ तेने जीवा कहीयें, पांचमुं अर्द्ध चंद्रमाने आकारें भरत प्रमुख जे क्षेत्र छे तेना पुंठना भागने धनुःपृष्ट कहीयें; छठुं वैताढ्य प्रमुख पर्वत तथा क्षेत्र प्रमुखना छेहेडानुं जे परिमाण करवुं तेने बाहु कहीयें, सातमुं जिहां लांबपणुं तथा पोहोल पणुं सरखुं होय, तेने प्रतर कहीयें, आठमुं जिहां लांबपणुं, पोहोलपणुं अने जाडपणुं, ए त्रणे सरखां होय, तेने घन कहीयें ए आठ बोल कह्या ॥

॥ हवे ए परिधि प्रमुख आठ बोलना वत्तीरानो विधि कहे छे.

तिहां प्रथम परिधि संबंधि गणित जाणवानो विधि कहे छे.

जे गोळ थाळीना आकारें पदार्थ होय, तेना मध्यनो विस्तार जो दश योजन होय तो ते पदार्थ गोळाकारें फरतो केटला योजन थाय? एवी रीतनुं जे गणित करवुं, तेने परिधि कहियें, ते परिधि करवानो विधि एक जंबूद्वीपना गणितें करी देखाडीयें छैयें. ते बीज रीतें जे जे स्थानकें परिधि करवो पडे, ते सर्वत्र स्थानकें एमज करवुं.

जंबूद्वीपनो विष्कंभ एटले मध्य विस्तार एक लाख योजननो छे, तेनो वर्ग करीयें एटले ते आंकने तद्गुणो करीयें अर्थात् लाखनें लाख गुणो करीयें तेवारें (१००००००००००) दश अब्ज थाय, ते आंकने वळी दश गुणो करीयें, एटलें ए वर्गना आंकने आगळे एक शून्य आपीयें तेवारें दश गुणो थाय, ते आंक (१०००००००००००) संख्यायें एकशो अबज अर्थात् एक खर्व थाय, हवे ए आंकनुं मूळ शोधीयें ते जेम बशेने छपन्ननुं मूळ शोधीयें तो शोळ शोळें बे छपन्ना एटलें शोळनो अंक थाय अथवा दश हजारनुं मूळ एकशो थाय अथवा छशेंने पच्चीशनुं मूळ पच्ची पच्चीराम छ पच्चीसां ए रीतें मूळनो अंक पच्चीश थाय, तेम इहां एक खर्वनी संख्यानो जे उपरलो आंक छे, तेनुं मूळ शोधीयें, तो केटलुं थाय? तेनी रीत देखाडे छे.

उपरला एक खर्वना आंकनो पहेलो आदिनो आंक जे एकडो छे, तेने धुरनो आंक कहियें अने छहेली शून्य छे तेने छहेलो आंक कहियें, ते छहेला आंक थकी विषम सम करतां धुरनां आंक सुधी आवीयें तिहां विषम ते। उभी लीटी करवी, अने सम ते–आवी आडी लीटी करवी. ते आ प्रमाणेः–१०००००००००००० आ प्रमाणे विषम सम कर्या पछी जो धुरना आंकें विषम एटले (।) आवी उभी लीटी आवे तो धुरनो एकलोज आंक तेने वर्गना आंक साथें शोधीयें, अने जो धुरनां आंकें सम एटले (–) आवी आडी लीटी आवे, तो धुरना बे आंकनें वर्गने आंके शोधीयें, तो आ ठेकाणे धुरना, आंके (–) आ प्रकारनी सम लीटी आवेली छे, माटे एक धुरनो आंक एकडो छे, अने तेनी पासें बीजो आंक शून्यनो छे, तेथी एक एकडो अने बीजो शून्य ए बे आंकनें वर्गना आंक साथें शोधवुं ते आवी रीतेंः–

एकडो अने शून्य मळी दशनो आंक थयो, तेनें शोधीयें तेवारें त्रण त्रिक नव जाय, शेष एकनो आंक रहे ते एकना आंक उपर वळी उपरनी राशि मांहेली बे शून्य चडावीयें, तेवारें फरी (१००) नो आंक थाय अने उपरलो जे एक एकडो अने अगीआर शून्य मळी बार आंकनी राशि छे ते मांहेलो एक एकडो अने त्रण शून्य मळी चार आंक गया बाकी ते राशिमांहेली मात्र आठ शून्य रही.

हवे एकसोना (१००) आंकने नांगवानो विधि कहे छे. पूर्वें जे वर्गनो आंक त्रण नो आव्यो छे, तेने एक बाजु स्थापन करी मूकेलो छे ते आंकने बमणो करीयें तेवारें छनो आंकडो थाय, ते छना आंक साथें उपरला एकशोनां आंकने शोधीयें तेवारें छ एकां छ अने एकनो नाग आव्यो माटे छनी नीचे वली एकेकां एकनो आंक चांपी मूकीयें तेवारें (६१) एकशठनो आंक थाय, ते उपरली एकशोनी राशिमांथी बाद करीयें तेवारें शेष (३९) उंगणचालीशनो आंक रहे, अने वर्गना मूलनो आंक जे पूर्वें त्रणनो हतो, तेनी नीचें एकडो मूकाणो, तेवारे एकत्रीशनो आंक थयो.

हवे शेष उंगणचालीशनो आंक वध्यो छे, तेनी नीचे उपरली महोटी राशि मांहेला जे आठ शून्य शेष रहेला छे, तेमांथी बे शून्य लहीयें तेवारे (३९००) नो आंक थाय. अने महोटी राशि मांहेली शेष छ शून्यो रहे.

पछी वर्गनो जे एकत्रीशनो आंक छे, तेने बमणो करीयें तेवारें बाशठनो आंक थाय ते बाशठना आंक साथे पूर्वोक्त (३९००) ना आंकनें शोधीयें, तेवारें बाशठ छक्कां ३७२ थाय. अने वली छनो नाग आव्यो छे, माटे छ छकां छत्रीशनो आंक नीचें चांपी मूकीयें तेवारें ३७५६ नो आंक थाय, तेने (३९००) नां आंकमांथी बाद करीयें तेवारें बाकी १४४ वधे अनें वर्गना मूलनो आंक जे पूर्वें ३१ नो हतो, तेनी नीचें हमणानी शोधनुं छगडो मूकीयें तेवारे ३१६ नो आंक थाय.

हवे शेष जे १४४ नो आंक वध्यो छे, तेनी नीचें वली उपरली महोटी राशि मांहेली छ शून्यो शेष रहेली छे तेमांथी बे शून्य लही मांमीयें तेवारें (१४४००) नो आंक थाय, अने महोटी राशि मांहेली शेष चार शून्यो रहे.

पछी वर्गनो आंक ३१६ नो छे, तेने बमणो करतां ६३२ नो आंक थाय, तेनी साथें १४४०० ना आंकनें शोधीयें, तेवारें (६३२) डु १२६४ अने वली बेनो नाग आव्यो माटे डुए डुए चारनो आंक थाय, तेने १२६४ ना आंकनी नीचें चांपी मांमीयें, तेवारें १२६४४ नो आंक थाय, ते १४४०० ना आंकमांथी बाद करीयें, तेवारें बाकी १७५६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६ नो हतो,तेनी नीचें बगडो मूकीयें तेवारे ३१६२ नो आंक थाय.

हवे जे शेष १७५६ नो आंक वध्यो छे तेनी नीचें उपरली महोटी राशि मांहेली जे चार शून्यो शेष रहेली छे, तेमांथी बे शून्य लहीयें, तेवारें १७५६०० नो आंक थाय अने महोटी राशि मांहेली शेष बे शून्यो रहे.

पछी वर्गनो आंक ३१६२ छे, तेने बमणो करीयें तेवारें ६३२४ नो आंक थाय,ते

आंकनी साथें १७५६०० ना आंकने शोधियें, तेवारें ६३२४ ड १२६४८ थाय, अने वली बेनो नाग आव्यो माटे डए डए चारनो आंक थाय. तेने १२६४८ ना आंकनी नीचें चांपी मांमीयें, तेवारें १२६४८४ नो आंक थाय, ते १७५६०० ना आंकमांथी बाद करीयें तेवारें बाकी ४९११६ नो आंक वधे, अने वर्गना मूलनो आंक प्रथम ३१६२ नो हतो तेनी नीचें बगडो लखीयें, तेवारें ३१६२२ नो आंक थाय.

हवे शेष जे ४९११६ नो आंक वध्यो ळे, तेनी नीचें उपरली महोटी राशि मांहेली जे बे शून्यो शेष रहेली ळे, ते लहियें तेवारें ४९११६०० नो आंक थाय, अने महोटी राशिमांहेली शेष रहेली शून्यो सर्वे खपी गइ.

पठी वर्गना मूलनो जे ३१६२२ नो आंक ळे, तेने पूर्वली रीतें द्विगुणो करीयें तेवारें ६३२४४ नो आंक थाय. ते आंकनी साथें ४९११६०० नां आंकने शोधीयें, ते आवी रीतें के ६३२४४ सातां ४४२७०८ थाय, अने वली सातनो नाग आव्यो माटे सातने सात गुणा करीयें तो सतियो सतियो ओगणपच्चाशनो आंक थाय, ते ४४२७०८ ना आंकनी नीचें चांपी मांमीयें,तेवारे ४४२७१२९ नो आंक थाय, ते ४९११६०० ना आंकमांथी बाद करीयें, तेवारें बाकी ४८४४७१ नो आंक वधे, अने वर्गमूलनो प्रथम ३१६२२नो आंक हतो तेनीनीचें सातडानोआंक लखीयें,तेवारें ३१६२२७नो आंक थाय.

हवे शेष जे ४८४४७१ नो आंक वध्यो ळे, तेनी आगल आंक वधारवा माटे महोटी राशिमांहेली शेष कोइ आंकनी संख्या रही नथी. तेमज वर्ग मूलना आंकनी राशि जे ३१६२२७ नी ळे, तेनें द्विगुणा करीयें तो ६३२४५४ नो आंक थाय, तेंनी साथें शोधवा मांमीयें तो शोधाय पण नही कोइ नाग पोहोंचे नही. तेमाटे ए योजननी राशिना एकेका योजनना चार चार कोश करी नाखीयें तेवारें १९३७८८४ कोश थाय. तेने वर्गमूलनी जे बमणी करेली ६३२४५४ ना आंकनी राशि ळे, तेणे करी नाग आपीयें तेवारें १८९७३६२ नी संख्यामां त्रण गाउ आवे. शेष ४०५२२ गाउ वधे अने मूलना आंकनी संख्या ३१६२२७ योजननी उपर त्रण गाउनी थाय.

हवे शेष रहेला ४०५२२ गव्यूतिनी संख्याने पण ६३२४५४ नां आंकनी राशिनो नाग पहोंचे नही माटे ए प्रत्येक गाउना बे हजार धनुष्य प्रमाणे ८१०४४००० धनुष्यनी संख्या करीने तेने ६३२४५४ नो नाग आपतां ८०९५४११२ नी संख्यामां १२८ धनुष्य आवे शेष ८९८८८ धनुष्यनी संख्या वधे, अने मूलनी राशि ३१६२२७ योजननी उपर त्रण गाउ तथा १२८ धनुष्य एटली थाय.

हवे ८९८८८ धनुष्यनी संख्याना अंगुल करवा सारु एक धनुष्यना ९६ आंगुलें गु

णीयें,तेवारें ८६२७२४८ अंगुलनी संख्या थाय,तेने ६३२४५४ ने नाग देतां ८५३८१२७ नी संख्यामां १३॥ अंगुल आवे, शेष ७१११७ अंगुल वधे अने मूलनी राशि ३१६२२७ योजन, त्रण गाउ, १२८ धनुष्यनी उपर साडातेर अंगुल थाय.

हवे शेष ७१११७ अंगुल वध्या छे,ते प्रत्येक अंगुलना आठ यव थाय छे माटे एने आठे गुणीयें तेवारें ४२८७५२ यव थाय, तेने ६३२४५४ नो नाग देतां एक यव आवे, शेष ७६४७८ नो आंक वधे अने मूल राशिनो आंक ३१६२२७ योजन, त्रण गाउ १२८ धनुष्य, साडातेर अंगुलनी उपर एक यव थाय.

हवे शेष ७६४७८ यवनो आंक रह्यो छे, ते प्रत्येक यवनी आठ यूका (जू) करतां ७७१७८४ यूका थाय तेने ६३२४५४ने नांजतां एक यूका आवे, शेष १३७५३० यूका वधे, तेने वली आठे गुणीयें तेवारे ११९६२४० लीख थाय तेने ६३२४५४ नो नाग देतां एक लीख आवे शेष ४८३७८६ लीख उगरे ते प्रत्येक लीखने आठ वालाग्रें गुणतां ३८७०२८८ एटला वाल थाय, तेने ६३२४५४ नो नाग देतां ३७७४७२४ ना आंकमां छ वाल आवे, शेष ७५५६४ वाल वधे, फरी एक वालाग्रना आठ रथरेणु थाय माटें एने आठे गुणतां ६०४५१२ एटला रथरेणु थाय तेने नाग पहोंचे नही माटें एक रथ रेणुना आठ त्रसरेणु थाय छे तेथी त्रसरेणु करवा सारु उपली राशिने आठें गुणीयें तेवारें ४८३६०७६ त्रसरेणुनी संख्या थाय तेने पूर्वोक्त ६३२४५४ ने नाग देतां ४४२७१७८ नी संख्यामां सात त्रसरेणु आवे. शेष ४०८७१८ त्रसरेणु वधे ते एक त्रसरेणुने विषे आठ व्यवहारिक बादर परमाणुआ थाय छे, माटे ए राशिने आठे गुणतां ३२७१३४४ एटला बादर एटले व्यवहारिक परमाणु थाय. तेने ६३२४५४ नो नाग देतां ३१६२२७० ना आंकमां पांच बादर परमाणुआ आवे, शेष १०७०७४ एटला बादर परमाणुआ वधे ए जेवारें अनंता सूक्ष्म परमाणु विस्रसा परिणामें मली एकठा थाय ते एक बादर परमाणु कहेवाय छे, माटे अनंताने नाग कोइ पोहोंचे नही तेथी शेष १०७०७४ बादर परमाणुने १७४ गुणा करीयें तेवारे १८७७८८७६ एटला एक बादर परमाणुना १७४ नाग करीयें, तेवा नाग थाय तेमांथी त्रीश नागमां १८७७३६२० खंम जाय ते बाद करीयें, तो शेष ५२५६ एटला एक परमाणुना १७४ नाग वाला बादर परमाणुना कटका वधें. ते प्रत्येक खंमना वली ६३२४५४ कटका करीयें,तो तेवा ५२५६ कटका उपर आवे एटलो जंबूद्दीपनो परिधि जाणवो,एटले ३१६२२७ योजन, त्रण गाउ, १२८ धनुष्य, साडातेर अंगुल, एक यव, एक यूका, एकलीख, छ वालाग्र अने रथरेणु बिल कुल नही परंतु सात त्रसरेणु, पांच बादर परमाणु, तथा एक

बादर परमाणुना १७४ भाग करीयें तेवा त्रीश भाग, तथा ते १७४ भाग मांहेला एके काना ६३२४५४ भाग करीयें तेवा (५२५६) भाग उपर एटलो जंबूद्वीपनो परिधि जाणवो.

हवे उपर लख्या मुजबनी हकीगत सर्वे नीचे अंके करी टांकी देखाडीयें छैयें.

१००००० एक लाख योजननो जंबूद्वीपनो विष्कंभ छे.

१००००० एनो वर्ग करवा सारुं लाखने लाख गुणो करीयें.

१०००००००००० लाखने लाखें गुणतां दश अब्जनी संख्या थइ.

१० उपला आंकने दश गुणवा सारु दशना आंके गुणीयें.

१००००००००००० दश गुणो करतां एकशो अब्ज एटले एक खर्वनी संख्या थइ.

१००००००००००० ए उपरनी राशिने विषम सम आवीरीतें करवो. विषम ते उभी लीटी करवी, अने सम ते आडी लीटी करवी. हवे ए विषम सम करेली राशिमांथी मूल शोधवानी रीत देखाडे छे.

१० प्रथम दशनो आंक उपली राशिमांथी लीधो. बाकी दश शून्य रही.

९ —३ दशमांथी त्रणत्रिक नव गया बाकी एक रह्यो.

(६) १००—१ एक रह्यो तेनी नीचें शेष रहेली दश शून्य मांहेली बे लीधी.

६ पछी त्रणने बमणा करी छनो भाग आपतां ७ एकां ७ थया.

१ १ भाग आव्यो,माटे एकेंकां एकना आंकने छनीनीचेंचांपीमांड्यो

६१ छनां आंकनी नीचें एकडो चांपी मांडतां एकशठ थया.

३९ ६१ नो आंक उपरला एकशोमांथी बाद करतां बाकी ३९ रह्या.

(६२) ३९०० (६ बाकी रहेला उगणचालीशनी नीचे उपरली राशिमांहेली शेष रहेली आठ शून्यमांथी बे शून्य लीधी तेवारें ३९०० थया.

मूलमां त्रणने नीचें एकडो मांडतां एकत्रीश थया तेने बमणां

३७२ करी बाशठनो भाग आपतां बाशठ छकां ३७२ थया.

३६ छनो भाग आव्यो माटे छ छक छत्रीशनोआंकनीचेंचांपी मांड्यो.

३७५६ छत्रीशनां आंकनें नीचें चांपी मांडतां सरवाळानी संख्या थइ.

१४४ ते उपरलां३९००ना आंकमांथी बाद करतां बाकी १४४ वध्या.

(६३२)१४४००(२) वधेला १४४नी नीचें शेष रहेली छ शून्यमांथी बे शून्य लीधी.

१२६४ ३१६ने बमणा करी ६३२ नो भाग आपतां ६३२ दु १२६४ थया.

४ बेनो भाग आव्यो माटे दुए दुए ४ नो आंक नीचें चांपी मांड्यो.

१२६४४ चारना आंकने नीचें चांपी मांडतां सरवाळानी संख्या थइ.

१७५६ उपरना आंकमांथी बाद करतां बाकी १७५६ वध्या.
(६३२४)१७५६००(२ वधेला १७५६ नी उपर शेषनी ४ शून्यमांथी बे शून्य लीधी. मूल शोधवा माटे ३१६२ ने बमणा करी ६३२४ नो भाग
१२६४८ आपतां ६३२४ डु १२६४८ थया.
४ बेनो भाग आव्यो माटे डुए डुए४ नो आंक नीचें चांपी मांड्यो.
१२६४८४ चारना आंकने नीचें चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.
४९११६ उपरला आंकमांथी बाद करतां बाकी वध्या ४९११६.
६३२४४(४९११६००(७ बाकी वधेला ४९११६उपर शेष बे शून्य रही हती ते लीधी. मूल शोधवा माटे३१६२ना आंकने बमणाकरतां६३२४४थया.
४४२७०८ तेनो भाग आपतां ६३२४४ सातां ४४२७०८ थया.
४९ सातनो भाग आव्यो माटे सातुं सतियां ४९ ना आंकने नीचे चांपी मांड्यो.
४४२७१२९ उगणपचाशना आंकने चांपी मांडतां सरवालानी संख्या थइ.
४८४४७१ उपरला ४९११६०० ना आंकमांथी बाद करतां बाकी वध्या.
४ उपला योजनना कोश करवाने अर्थें चारनां आंक साथें गुणीयें.
६३२४५४)१९३७८८४(३ चारे गुणतां कोशनी संख्या थइ.
१८९७३६२ मूल शोधवा माटे ३१६२२७ नो आंक आव्यो छे. तेने बमणो करतां ६३२४५४ थाय ए आंके भाग आपतां त्रण गाउमां १८९७३६२ गाउ नो आंक गयो.
४०५२२ एटलो आंक बाकी गाउनी राशिमांथी वध्यो.
२००० एना धनुष्य करवा सारुं बे हजारना आंक साथें गुणवो,
६३२४५४)८१०४४००० बे हजारनां आंक साथें गुणतां ८१०४४००० थया.
८०९५४११२) ६३२४५४ ने भाग देतां १२८ धनुष्यमां ८०९५४११२ गया.
८९८८८ बाकी ८९८८८ धनुष्य वध्या.
९६ एना अंगुल करवाने छन्नुं गुणा करवा.
६३२४५४)८६२९२४८ छन्नुं गुणा करतां एटला अंगुलनी राशि थइ.
८५३८१२९ एनें ६३२४५४) ने भाग देतां साडातेर अंगुलमां आंक जाय.
९१११९ एटलो आंक शेष अंगुलनी राशिनो उगर्यो.

८ तेना यव करवा सारुं एने आठे गुणीयें.

(६३२४५४)७२८९५२) आठे गुणाकार करतां यवनी राशि थइ.

६३२४५४) एक यवना भागाकारमां ६३२४५४ गया.

९६४९८ शेष यवनी राशि रही.

८ तेनी यूका करवाने आठे गुणाकार करीयें,

७७१९८४) एटली यूकानी राशि थइ.

६३२४५४) एने ६३२४५४) ने भाग देतां एक यूका आवे.

१३९५३० शेष १३९५३० यूकानी राशि रहे.

८ तेनी लीख करवाने अर्थे आठ गुणा करीयें,

१११६२४० एटली लीख थाय.

६३२४५४) एटली राशिये भागाकार करतां एक लीख आवे.

४८३७८६ शेष लीखनी राशि वधी.

८ तेना वालाग्र करवानें आठगुणा करीयें.

३८७०२८८ एटली वालाग्रनी राशि थइ.

३७९४७२४ एनें ६३२४५४) भागें देतां ६ वालाग्र आवे.

७५५६४शेष वालाग्रनी राशि वधी.

८ तेना रथरेणु करवाने आठ गुणा करीयें.

६०४५१२ एटला रथरेणु थाय तेने भाग पहोंचे नही.

८ माटें एना त्रसरेणु करवा सारु आठगुणा करीयें.

४८३६०९६ एटली त्रसरेणुनी संख्या थाय.

४४२७१७८ एने ६३२४५४) ने भाग देतां सात त्रसरेणु आवे.

४०८९१८ शेष एटली त्रसरेणुनी राशि वधी.

८ एना व्यवहारिक बादर परमाणु करवाने आठे गुणीयें.

३२७१३४४ एटली व्यवहारिक बादर परमाणुनी राशी थई.

३१६२२७० ६३२४५४)नो भाग देतां पांच बादर परमाणुमां ए आंक आवे.

१०९०७४ एटली बादर परमाणुनी राशि शेष रही.

१७४ एकेका परमाणुना १७४) खंम करवा सारु १७४ गुणीयें.

१८९७८८७६) एटला एकशो चमोतेरीया भाग थया.

१८९७३६२०) तेने ६३२४५४ नो भाग देतां त्रीश भागमां ए आंक आवे.
५२५६ शेष ५२५६) एकसो चमोतेरीया खंड वध्या.
३६१ प्रत्येक खंडना ३६१) कटका करवा सारु ३६१) गुणीयें.
१८९७४१६ (१७४ तेरीया एक खंडना ३६१) कटकानी राशी थइ.
१८९७३६२) ६३२४५४) भाग देतां त्रण भागमां एटला आंक आव्या.
५४ शेष चोपन कटका रह्या तेने कांइ भाग पहोचे नही.

योजन.	गाउ.	धनुष्य.	अंगुल.	यव.	यूका.	लीख.	वालाग्र.	रथरेणु.
३१६२२७—	३—	१२८—	१३॥—	१—	१—	१—	६—	०

त्रसरेणु.	बादरपरमाणु.	एक बादर परमाणुना. १७४ भाग करीये तेवा भाग.	एकशो चमोतेरीया एक भागना ३६१) भागकरीयें तेवाभाग	शेष. वध्या.
७	५	३०	३	५४

जंबूद्वीपनी परिधि गणवाना करणनो यंत्र लखीयें छैयें.

विष्कंभना योजन.	१०००००
तद्वर्ग योजनराशि.	१००००००००००
तेने दशगुणा करवानी राशि.	१०००००००००००
वर्गमूले लब्धयोजननी राशि.	३१६२२७
शेष राशि.	४८४४७१
छेदराशि.	६३२४५४
कोश करवाने अर्थे शेष राशिने चार गुणा करतां थयेली राशि.	१९३७८८४
छेदांकनो भाग आपवामां लाधा कोश.	३
शेषराशि.	४०५२२
धनुष्य करवाने अर्थे बे हजारनो गुणाकार करतां थयेली राशि.	८१०४४०००
छेदांकनो भाग आपवे करी लाधा धनुष्य.	१२८
शेष राशि.	८९८८८
अंगुल करवाने अर्थे छन्नुं गुणा करतां थयेली राशि.	८६२९२४८
छेदांकनो भाग आपवाथी लाधा अंगुल.	१३ ॥
शेष पूर्ण अंगुल राशि रही,	९१११९

हवे कमलादिक, द्वीपादिक, चूलिका, कूट, कंचनगिरि, कुंभादिक, कूटनां मूल, कूटनां शिखर, मेरुपर्वतनां मूल, मेरुनां शिखर, नंदनवननी बाहिर, नंदनवननी मांहेली कोर इत्यादिक स्थानकोनी परिधिनां गणित उपरली रीति प्रमाणें पोतें करवां, अथवा गुरु मुखथी धारवां, अहीआं मात्र ते मांहेला केटला एक स्थानकोनां नाम संक्षेपथी मांडीने तेनी परिधि करवाने अर्थें ते स्थानकोनो विष्कंभ तथा ते विष्कंभनो वर्ग, पछी ते वर्गने दश गुणो करतां जे संख्या आवे, तेनो आंक तथा तेनुं मूल शोधतां जेटला योजननो आंक लाधे, ते आंक तथा जेटला योजन शेष रहे, तेनो आंक तेमज शेष रहेला योजनना धनुष्य प्रमुख करीने पछी तेने वर्गनी राशिने शोधतां जे लब्धांक आव्यो होय, तेने बमणो करीयें, तेवारें जे राशि थाय ते राशियें करीने छेदीयें एटले भांजीयें तेने छेदराशि कहीयें, ते छेदराशिनो आंक तेनो यंत्र नीचे देखाड्यो छे, तिहांथी सुज्ञोयें जोइने गणित करी मलाववा,

जूदा जूदा स्थानकोनी परिधि विष्कंभादिकनो यंत्र,

अंक	स्थानकोनां नाम,	विष्कंभ.	वर्गनो अंक;	दशगुणो अंक.	लब्धांक,	शेषराशि	छेद,
१	कमलादिक.	१	१	१०	३	१	६
२	,,	२	४	४०	६	४	१२
३	,,	४	१६	१६०	१२	१६	२४
४	द्वीपादिक.	८	६४	६४०	२५	१५	५०
५	चूलिका मूल.	१२	१४४	१४४०	३७	७१	७४
६	क्रोशकूट.	२५	६२५	६२५०	७९	९	१५८
७	कांचनगिरिशिखर	५०	२५००	२५०००	१५८	३६	३१६
८	कांचनगिरि मूल.	१००	१००००	१०००००	३१६	१४४	६३२
९	कुंभादिक.	१२०	१४४००	१४४०००	३७९	३५९	७५८
१०	,,	२४०	५७६००	५७६०००	७५८	१४३६	१५१६
११	कूटशिखरादिक.	२५०	६२५००	६२५०००	७९०	९००	१५८०
१२	कुंभादिक.	४८०	२३०४००	२३०४०००	१५१७	२७११	३०३४
१३	कूटमूलादिक.	५००	२५००००	२५०००००	१५८१	४३९	३१६२
१४	मेरुशिखर.	१०००	१००००००	१०००००००	३१६२	१७५६	६३२४
१५	मेरुभूतलविष्कंभ	१००००	१०००००००	१००००००००	३१६२२	४९११६	६३२४४

आ उपरथी एम समजवुं के एक योजन विस्कंभवालो कोइ वाटलो गोलाकारें पदार्थ होय तेनी त्रण योजन जे लब्धांकना कोठामां मूक्या छे,ते तथा उपर शेष राशिमां एक योजन रह्यो छे तेना छेद छ करीयें एटले एक योजननो छठो भाग उपर एटलो फरतो परिधि थाय,अने बे योजनवाला वाटला पदार्थनी छ योजन पूरा अने तेनी उपर चार योजनना बारमा भागमा जेटली जगा आवे तेटली लेवी. एटलो परिधि जाणवो ए रीतें सर्व स्थानकोने विषे जाणी लेवुं. लब्धांकने बमणा करीयें तो छेदराशि थाय.

हवे पूर्वला यंत्रनी रीतेज मेरु पर्वतना नीचला तलीयानी तथा नंदनवनादिकनी भूमिमां योजनोनी जे संख्या कही छे, तेना उपर वली एक योजनना अगीआर भाग करीयें, तेवा भाग प्रत्येक स्थानकें आवे छे, माटें ते स्थानकोना विष्कंभना योजनोना अगीआरीआ भाग करीने परिधीनुं गणित कर्युं छे तेनो यंत्र नीचें लखीये छैयें.

चढतो अंक.	मेरुपर्वत मांहेला जूदाजूदा स्थानकोनां नाम.	मूलयोजन तथा एकयोजनना अगीआरीआभागनी कला संख्या.	एकंदरअगीआरीआ भाग संबंधी कलानी संख्या.	ते कलानो वर्ग करतां जे आंक आवें तेनी संख्या.
१	मेरुनो नीचेंनो तलीयो.	१००९० $\frac{१०}{११}$	१११०००	१२३२१००००००
२	नंदनवननीबाहिरनीपरिधि	९९५४ $\frac{६}{११}$	१०९५००	११९९०२५००००
३	नंदनवननी मध्यपरिधि.	८९५४ $\frac{६}{११}$	९८५००	९७०२२५००००
४	सोमनसवननी बाहिरपरि.	४२७२ $\frac{८}{११}$	४७०००	२२०९००००००
५	सोमनसवननी मध्यपरिधि	३२७२ $\frac{८}{११}$	३६०००	१२९६००००००

ते वर्गनी कलाने दश गुणी करतां जे आंक आवे तेंनी संख्या.	वर्गनुं मूल काहाडतां जे कला लाभे तेनो अंक.	शेष राशि जेटली कला रही तेनी संख्या.	छेद राशिनी संख्या.	परिधिना योजन तथा कलानो अंक.
१२३२१०००००००	३५१०१२	५७५८५६	७०२०२४	३१९१० $\frac{२}{११}$
११९९०२५०००००	३४६२६९	२७९६३९	६९२५३८	३१४७९
९७०२२५०००००	३११४८४	२१७७४४	६२२९६८	२८३१६ $\frac{८}{११}$
२२०९०००००००	१४८६२७	१४८७१	२९७२५४	१३५११ $\frac{६}{११}$
१२९६०००००००	११३८४२	१९८६३६	२२७६८४	१०३४९ $\frac{३}{११}$

॥ इति परिधिगणितं समाप्तम् ॥ ॥ आ एकज यंत्रना बे विभाग कीधा छे ॥

॥ अथ द्वितीयगणितपदप्रारंभः ॥

हवे हरेक वाटला क्षेत्रना योजन योजन प्रमाण समचतुरस्र खंम करवा, तेने गणित पद कहीयें. ते करवानी रीति कहे ठे. वाटला क्षेत्रनी परिधिनी संख्यानो जेटलो अंक होय, तेने तेज वाटला क्षेत्रनो जे विष्कंन होय तेना चोथा नागना आंक सार्थे गुणीये, तेवारें तेनुं गणित पद थाय ते एक जंबूद्वीप आश्रयी देखाडे ठे.

जंबूद्वीपनो परिधि (३१६२२७) योजन ठे, तेने एज जंबूद्वीपनो विष्कंन एक लाख योजननो ठे, तेना चोथा नागना पच्चीश हजार योजन थाय. तेनी सार्थे गुणीयें तेवारें ७९०५६७५००० योजन थाय, अने ते परिधिनी उपर त्रण कोश ठे, तेने पच्चीश हजार सार्थे गुणतां ७५००० कोश थाय. ते चार कोशनो एक योजन करतां १८७५० योजन थाय, तथा परिधिना एकशो ने अठावीश धनुष्य ठे तेने पच्चीश हजारें गुणतां बत्रीश लाख धनुष्य थाय, ते आठ हजार धनुष्यनो एक योजन गणतां ४०० योजन थाय. ए सर्व एकठा करीयें, तेवारें ७९०५६९४१५० योजननी संख्या थाय. हवे परिधि उपर साडातेर अंगुल ठे, तेने पच्चीश हजारें गुणतां ३३७५०० अंगुल थाय. ते एक धनुष्यमां ठन्नुं अंगुल आवे, माटे एने ठन्नुं नागें वेचतां ३५१५ धनुष्य थाय. उपर शाठ अंगुल वधे तेना एक कोशमां बे हजार धनुष्य प्रमाणे पोणा बे कोश अने पात्रीशशो धनुष्य थाय. तथा उपर पन्नर धनुष्य ठे ते एकेका धनुष्यना चार चार हाथ करतां शाठ हाथ थाय, तथा उपर शाठ अंगुल वध्या ठे, तेना अढी हाथ थाय, ए सर्व मली ७९०५६९४१५० योजन उपर पोणा बे कोश अने शाढा बाशठ हाथ एटलुं जंबूद्वीपनुं गणित पद थाय, ए एकेक योजनना खंडुक करीने जंबूद्वीपनी जेटली नूमि ठे. तेमां थापीयें. तो एटला रही शकें. एवी रीतें बीजा पण वाटला खेत्रना सर्व स्थानकें गणितपदना हिसाब करवा, एनो यंत्र नीचें देखाड्यो ठे. ए गणित पदनी यंत्रस्थापना,

चढतो अंक.	परिधिनां योजनादि.	विष्कंननो चोथोनाग.	गुणाकार करतां राशि थइ.	एकयोजनमां अंगुलादि.	सरवाले योजननी संख्या.	गाउ	धनुष्य	अंगुल.
१	३१६२२७	२५०००	७९०५६७५०००	पूरा योजन.	७९०५६७५०००			
२	कोश. ३	२५०००	७५०००	चारगाउयो०	१८७५०			
३	धनुष्य. १२८	२५०००	३२०००००	आठहजारध०	४००			
४	अंगुल. १३॥	२५०००	३३७५००	ठन्नुं अंगुलनुं.	०	१॥	१५	६०
५	एकंदरसंख्या.				७९०५६९४१५०	१॥	१५	६०

॥ अथ तृतीय जीवा करण प्रारंभः ॥

हवे त्रीजो जीवा करण कहेछे. जेवारें जीवा करीयें तेवारें आ वाटलुं क्षेत्र जे जंबूद्वीप एक लाख योजननुं छे,तेना ओगणीशीआ भाग करीयें,तेवारें (१९०००००) ओगणीश लाख कला थाय,तेमांथी दक्षिणार्द्ध भरतनी इषु कला (४५२५) छे ते बाद करीयें, तो (१८९५४७५) कला बाकी रहे, तेने चार गुणी करीयें, तेवारें (७५८१९००) थाय तेने इषुनी कला (४५२५) छे तेनी साथे गुणीयें अथवा (१८९५४७५) कला जे बाकी रही छे तेने इषुनी कला (४५२५) ने चोगुणी करीयें, तेवारें (१८१००) थाय. तेनी साथें गुणीयें, तेवारें (३४३०८०९७५००) थाय, तेने पूर्वली रीतें विषम सम करीने मूल शोधीयें,तेवारें (१८५२२४) एटलो आंक आवे,अने शेष (१६७३२४) एटली कला वधे, केम के (१८५२२४) आंकने एज आंक साथें गुणीयें, तेवारें ३४३०७९३०१७६ थाय, ते उपरली विषम सम वाली राशिमांथी बाद करीयें, तेवारें शेष (१६७३२४) कला वधे. हवे १८५२२४ कलाना योजन करवा सारु ए राशिने ओगणीश भागें वेचीयें, तेवारें ९७४८ योजननी उपर बार कला थाय, अने १६७३२४, कला वधी छे, तेना धनुष्य प्रमुख करीने पूर्वें जंबुद्वीपनी परिधिनी रीतें जो आनुं मूल शोधीयें, तो छेदकला (३७०४४८) आवे, तेनी साथें भागाकार करतां जेटला धनुष्य प्रमुख उपर आवे,तें ९७४८ योजन अनें बार कलानी साथें लेवा एटली दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा जाणवी. एवीज रीतें वैताढ्य प्रमुख सर्व स्थानकोनी जीवा करवी. आंहीं मात्र एनो यंत्रज नीचें लख्युं छे. अनें एकज आ दक्षिणार्द्ध भरतनो हिसाब करी बताव्यो छे. परंतु वैताढ्यादिकना हिसाब पोतेंज करीने मेलववा.

१९००००० ओगणीश लाख कलानो जंबूद्वीपनो विष्कंभ छे.
४५२५ तेमांथी दक्षिणार्द्ध भरतना इषुनी कला बाद करवी.
१८९५४७५) शेष कला रही.
१८१०० तेने ४५२५) इषुनी कलानें चार गुणी करतां १८१००) कला थाय, तेनी साथें गुणवा.
३४३०८०९७५०० एटली गुणाकार करतां कलानी राशि थइ.
३४३०८०९७५०० मूल शोधवा सारु विषम सम करीयें छैयें.
१ (१ धुरना आंके विषम छे माटे धुरना एकज आंकने शोधवो.
२) २४३ (८ एकेकां एक गयो बाकी बे रह्या उपर तेंतालीश लीधा.

૧૬	एक डु बेनो भाग आपतां आठ डु शोल थया.
૬૪	आठनो भाग आव्यो माटें आठुं आठुं चोशठ चांपी मांड्या.
૨૨૪	चोशठने चांपी मांडता बशोने चोवीश थया.
૧૯૦૮	ते बाद करतां बाकी ૧૯ रह्या नीचे (૦૮) बे आंक लीधा.
૩૬) ૧૮૦ (૫	छत्रीशनो भाग आपतां छत्री पांचुं ૧૮૦ थया.
૨૫	पांचनो भाग आव्यो माटें पांचुं पांचुं पच्चीश चांपी मांड्या.
૧૮૨૫	पच्चीशने चांपी मांडता ૧૮૨૫ थया.
૮૩૦૯	ते बाद करतां बाकी त्र्यासी रह्या नीचे (૦૯) बे आंक लीधा
૩૭૦) ૭૪૦ (૨	त्रणशें सीतेरनो भाग आपतां ૩૭૦ डु ૭૪૦ थया.
૪	बे नो भाग आव्यो माटें डुए डुए चार चांपी मांड्या.
૭૪૦૪	चारनें चांपी मांडतां ૭૪૦૪ थया.
૩૭૦૪) ૯૦૫૭૫ (૨	बाद करतां बाकी ૯૦૫ रह्या. नीचे ૭૫ बे आंक लीधा.
૭૪૦૮	૩૭૦૪ नो भाग आपतां ૩૭૦૪ डु ૭૪૦૮ थया.
૪	बेनो भाग आव्यो माटें डुए डुए चार चांपी मांड्या.
૭૪૦૮૪	चारने चांपी मांडतां ૭૪૦૮૪ थया.
૩૭૦૪૪) ૧૬૪૯૧૦૦	बाद करतां बाकी ૧૬૪૯૧ रह्या नीचे बे शून्य लीधी.
૧૪૮૧૭૬ (૪)	૩૭૦૪૪नो भाग आपतां ૩૭૦૪૪ चोकुं ૧૪૮૧૭૬ थया.
૧૬	चारनो भाग आव्यो माटे चार चोक शोल चांपी मांड्या.
૧૪૮૧૭૭૬	शोलने चांपी मांडतां ૧૪૮૧૭૭૬ थया.
૧૯) ૧૬૭૩૨૪ (૮	बाद करतां शेष कला ૧૬૭૩૨૪ रही लाधी कला ૧૮૫૨૨૪
૧૫૨	एना योजन करवा सारु उंगणी आठुं ૧૫૨ गया.
૧૯) ૧૫૩ (૮	बाकी पन्नर रह्या. उपर त्रण लीधा.
૧૫૨	वली उंगणी आठुं ૧૫૨ गया.
૧૯) ૧૨૪ (૦	बाकी ૧ रह्यो तेनो भाग न पह्योचे माटे ૦ लखवी उपर चोवीश लीधा.
૧૧૪ (૬	उंगणी छकें ૧૧૪ गया.
૧૦	बाकी दश कला रही.
૮૮૦૬) ૧૦	ए रीतें ૮૮૦૬ योजन उपर दश कला शेष रही.
૮૦૦૦	एना धनुष्य करवाने आठ हजारें गुणायें.

७०४४८०००	८८०६योजनने आठ हजारें गुणतां धनुष्य थया.
४२१०॥	दश कलाना ४२१०॥ धनुष्य उपर अडधी कला वधी.
३७०४४८)७०४५२२१०॥	सरवाले एकंदर धनुष्य थया.
३७०४४८	मूल १८५२२४ ने बमणा करी भाग आपतां एक आव्यो.
३७०४४८)३३४०७४१(९	बाकी ३३४०७४ रह्या उपर एक लीधो.
३३३४०३२	३७०४४८ नवा ३३३४०३२ गया.
६७०९०॥	शेष धनुष्य ६७०९ रह्या. उपर शून्य लीधो.
९६	अंगुल करवाने छन्नुंयें गुणवा.
४०२५४०	उपली राशिने छएं गुणतां आंक.
६०३८१०	उपली राशिने नवें गुणतां आंक.
४८	उपली राशिना छेहेला अडधा आंके गुणतां.
३७०४४८)६४४०६८८(१	सरवाले एकंदर अंगुल थया.
३७०४४८	मूलनी राशीने बमणा करी भाग देतां एक आव्यो.
३७०४४८) २७३६२०८ (७	बाकी २७३६२० रह्या उपर आठ लीधा.
२५९३१३६	फरी ३७०४४८ ने सातें गुणतां ए आंक आव्यो.
१४३०७२	शेष अंगुल १४३०७२ रही.
९२६१२	पा आंगुलमां ९२६१२ नो आंक गयो.
५०४६०	शेष अंगुल ५०४६० राशि रही.

ए दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा ९७४८) योजन उपर एक योजनना ओगणीश भाग करीयें, तेवा बार भाग तथा वली एक योजनना ओगणीशिया १६७२२४ भाग शेष वध्या छे, तेने छेद कला २०७०४४८ भागे वेंचीयें, तेवारें १९१) धनुंष्य अने सवा सतर अंगुल आवतां शेष ५०४६० अंगुल राशि वधे छे, तेने छेद कलानो आंक वधारे छे माटें भाग पोहोचे नही, तेथी तेना वली यव प्रमुख करीने जे रीतें ते भाग पहोचे तेम पहोंचाडवो अने गणित करी लेवुं जोइयें.

हवे ए जेम दक्षिणार्द्ध भरतनुं जीवाकरण कर्युं, तेम वैताढ्यादिक पर्वतोनी जीवानुं गणित पण करवुं. अहियां सर्वेना जूदां जूदां गणित करतां नथी, पण जंबूद्वीप मां हेला सर्व स्थानकोनी जीवा करवानो यंत्र नीचे लखियें छैयें. ते गणित समजी लेवुं.

नव स्थानकने विषे क्षेत्र विष्कंभ एक लाख योजन छे, तेनी एकेक योजननी ओगणीश कला करतां ओगणीश लाख कला थाय तेने विषे नव स्थानकनी जीवाना यंत्रनी स्थापना.

	जीवा करवानो क्रम नाम पूर्वक,	योजन प्रमाण इखु.	ओगणीश भाग करतां इखुकला	विष्कंभमांथी बाद करतां शेषकला	इखुकलाने चार गुणा करतां.
१	दक्षिण भरतार्द्ध.	२३८$\frac{३}{१९}$	४५२५	१८९५४७५	१८१००
२	वैताढ्य.	२८८$\frac{३}{१९}$	५४७५	१८९४५२५	२१९००
३	पूरण भरत.	५२६$\frac{६}{१९}$	१००००	१८९००००	४००००
४	हिमवंत पर्वत.	१५७८$\frac{१८}{१९}$	३००००	१८७००००	१२००००
५	हिमवंतयुगलक्षे	३६८४$\frac{४}{१९}$	७००००	१८३००००	२८००००
६	महाहिमवंतप०	७८९४$\frac{१४}{१९}$	१५००००	१७५००००	६०००००
७	हरिवर्षक्षेत्र.	१६३१५$\frac{१५}{१९}$	३१००००	१५९००००	१२४००००
८	निषध पर्वत.	३३१५७$\frac{१७}{१९}$	६३००००	१२७००००	२५२००००
९	महाविदेहमध्य	५००००	९५००००	९५००००	३८०००००

शेष कला रही तेने चार गुणी इखु कला साथे गुणतां.	मूल शोधतां शेष राशि रही तेनो आंक.	छेदराशिनो आंक.	मूलमां लाधी कला तेनो आंक.	लाधी कलाना योजन तथा ओगणीशीया भागनी कला.	
३४३०८०९७५००	१६७२३४	३७०४४८	१८५२२४	९७४८	$\frac{१२}{१९}$
४१४९००९७५००	७४०१९	४०७३८२	२०३६९१	१०७२०	$\frac{११}{१९}$
७५६००००००००	२९७७८४	५४९९०८	२७४९५४	१४४७१	$\frac{५}{१९}$
२२४४००००००००	७३०७३६	९४७४१६	४७३७०८	२४९३२	$\frac{१}{२}$
५१२४००००००००	२९५९५९	१४३१६४२	७१५८२१	३७६७४	$\frac{१५}{१९}$
१०५००००००००००	१५६९७५	२०४९३९०	१०२४६९५	५३९३१	$\frac{६}{१९}$
१९७१६०००००००००	२०९३५०४	२८०८२७२	१४०४१३६	७३९०१	$\frac{१७}{१९}$
३२००४०००००००००	६५०७४४	३५७७९३२	१७८८९६६	९४१५६	२
३६१००००००००००	०	०	१९०००००	१०००००	०

आहीं जगानी पहोलाइ न होवाथी एक यंत्रना बे भाग उपर अने नीचे कीधा छे.
एज प्रमाणे ऐरवत क्षेत्रमां पण जीवानुं करण जाणवुं. इति तृतीय करणम् ॥

हवे चोथुं इस्कु गणित कहेछे.

आ जंबूद्वीपने विषे एक देश जे नरत क्षेत्र अथवा ऐरवत क्षेत्र ते चढावेला धनुष्य ने आकारे छे, तिहां बाणना गामनी वच्चेनुं जे विष्कंन्न तेने इस्कु कहीयें ते इस्कुना जेटला योजन होय तेनें योजननो इस्कु कहीयें, अने ते एकेका योजनना उगणीश नाग करीने ते नागनो आंकडो जेवारें लखीयें तेवारें कलानो इस्कु कहेवाय. जेमके दक्षिणार्द्ध नरतनो इस्कु (२३८) योजननी उपर त्रण कला छे तेने उगणीशना आंक साथे गुणीयें तेवारे (४५२५) कला थाय ए कलानो इस्कु जाणवो. एटले दक्षिण नरत क्षेत्रनी सर एटले बाणनी कला. (४५२५) थइ ते आ प्रमाणेः—२३८) योजनने. ओगणीशें गुणतां. ४५२२ कला थाय तेनी साथें उपरनी त्रण कला छे ते मेलवीयें तेवारें ४५२५ कला थाय. एरीते नवे स्थानकना योजननुंइस्कु तथा कलानाइस्कु ते सर्व पाछला यंत्रमां आवी गया छे तेमांथी जोइ लेवा. इति चतुर्थ इस्कुगणितं समाप्तम् ॥

हवे पांचमो वैताढ्य प्रमुखनो धनुपृष्ठ एटले पुंठनो नाग तेनुं गणित करवानो उपाय कहे छे. तिहां जे स्थानकनुं धनुःपृष्ठ करवुं होय, तेना इस्कुनो जे आंक होय, तेने तेटलागुणो करीने वर्ग करीयें; पछी ते वर्गने छ गुणो करीयें तथा जीवानो जे आंक होय तेने पण तद्गुणो वर्ग करी पछी ए बेहु वर्गने एकठा करीनें तेनुं मूल शोधतां जे आंक आवे, तेटलुं ते स्थानकनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं. तेमां प्रथम दक्षिण नरतार्द्धना धनुःपृष्ठनुं गणित करी देखाडे छे.

४५२५	दक्षिणनरतार्द्धनी इस्कु कला ४५२५ छे.
४५२५	तेनो वर्ग करवा सारुं तद्गुणो करीयें.
२२६२५	उपला आंकने पांच साथें गुणतां संख्या.
एo५o	उपला आंकने बे साथे गुणतां संख्या.
२२६२५	उपला आंकने पांचसाथे गुणतां संख्या.
१८१००	उपला आंकने चार साथे गुणतां संख्या.
२०४७५६२५	एकंदर इस्कुकलाना वर्गनी राशि थइ.
६	ए राशिने छगुणी करवामाटे छयें गुणवुं.
१२२८५३७५०	ए इस्कुवर्गने छगुणो करतां एटली राशि थइ.
३४३०८०एo७५००	पूर्वोक्त जीवानी राशिना वर्गनो आंक साथे मेलवीयें.
३४४३०एo५१२५०	ए बेहुराशिना सरवालानो आंक थयो.

३४४३०९५१२५०	एनुं मूळ शोधवा सारु विषम सम करवुं.
१ १)	पहेलो अंक विषम छे, माटे एकज आंकने शोध्यो.
२) २४४ (८	शोधतां एकेकां एक गयो,बाकी बे रह्या. उपर चुमालीश लीधा.
१६	एकनो भाग आव्यो तेने बमणा करी बे अठा शोळ थया.
६४	आठनो भाग आव्यो,माटे आठे अठे चोशठने चांपी मांड्या.
२२४	सरवाळे बशें चोवीश थया, ते बाद करवा.
३६) २०३० (५	बाकी वीश रह्या उपर त्रीश लीधा.
१८०	अढारने द्विगुणा करी छत्रीश पंचां १८० थया.
२५	पांचनो भाग आव्यो माटे पांच पच्चा पच्चीश चांपी मांड्या.
१८२५	सरवाळो १८२५ थयो.
३७०) २०५९५ (५	ते बाद करतां बाकी २०५ रह्या उपर ९५ लीधा.
१८५०	१८५ ने द्विगुणा करी ३७० पांचु १८५० थया.
२५	पांचनो भाग आव्यो माटे पांच पच्चा पच्चीश चांपी मांड्या.
१८५२५	सरवाळे १८५२५ थया.
३७१०)२०७०१२(५	ते बाद करतां २०७० रह्या उपर बार लीधा.
१८५५०	मूळना १८५५ ने द्विगुणा करी ३७१० पंचां १८५५० थया.
२५	पांचनो भाग आव्यो माटे पांच पच्चां पच्चीश चांपी मांड्या.
१८५५२५	सरवाळे १८५५२५ थया.
३७११०) २१४८७५० (५	बाद करतां बाकी २१४८७ रह्या उपर पच्चास लीधा.
१८५५५०	१८५५५ ने बमणा करी पांचे भाग देतां ए राशि आवी.
२५	पांचनो भाग आव्यो, माटे पंचो पंचो २५ चापी मांड्या.
१८५५५२५	सरवाळे १८५५५२५ थया.
३७१११०) २९३२२५	बाद करतां शेष कळा रही तेने भाग पोहोचे नही.

ए रीतें १८५५५५ नो आंक आव्यो शेष कळा २९३२२५ वधी तेने १८५५५५ ने बमणा करियें तेवारें ३७१११० थाय. तेनो भाग पाहोंचे नही माटे पूर्वली रीतें कोश धनुष्यादिक करी भाग पहोंचाडवो. ए दक्षिण भरतार्द्धनुं गणित करी देखाड्युं. शेष स्थानकनुं पण ए रीतें गणित करवुं. ए दक्षिण भरतार्द्धादिक स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र नीचें लख्यो छे,तिहां महाविदेहना अर्द्धभाग पर्यंत जंबूद्वीपनी परिधिना अर्द्धभागनुं धनुःपृष्ठ आवे.

दक्षिण भरतार्द्धादिक नव स्थानकना धनुःपृष्ठनो यंत्र.

स्थानकोनां नाम.	इषुनी कला.	इषुना वर्गनीकला. नों आंक.	इषुवर्गने छगुणो करतां कला.	जीवाना वर्गनीकला नो आंक.
भरतार्द्धे.	४५२५	२०४७५६२५	१२२८५३७५०	३४३०८०९७५००
वैताढ्यें.	५४७५	२९९७५६२५	१७९८५३७५०	४१४९००९७५००
पूर्ण भरतें.	१००००	१००००००००	६००००००००	७५६००००००००
हिमवंतगिरि.	३००००	९००००००००	५४०००००००००	२२४४०००००००००
हिमवंतक्षेत्रें.	७००००	४९०००००००००	२९४००००००००००	५१२४०००००००००
महाहिमवं०	१५००००	२२५००००००००००	१३५००००००००००	१०५००००००००००
हरिवर्षक्षेत्रें	३१००००	९६१००००००००००	५७६६०००००००००	१९७१६०००००००००
निषधपर्वतें.	६३००००	३९६९०००००००००	२३८१४०००००००००	३२००४०००००००००
महाविदेहार्द्धे	९५००००	९०२५०००००००००	५४१५००००००००००	३६१००००००००००००

छ गुणी करेली इषुना वर्गनी कला तथा जीवाना वर्गनी कलानो सरवालो	वर्गमूल आणतां शेषराशि. नो आंक.	वर्गमूल आणतां छेदराशि. नो आंक.	वर्गमूलआणतां लब्धराशि. नो आंक.	लाधेली कलाना योजन तथा कलानी संख्या.
३४४३०९५१२५०	२९३२२५	३७१११०	१८५५५५	९७६६। १
४१६६९९५१२५०	७७८२६	४०८२६४	२०४१३२	१०७४३।१५
७६२००००००००	२६२१५१	५५२०८६	२७६०४३	१४५२८।११
२२९८०००००००००	५६८१२४	९५८७४८	४७९३७४	२५२३०। ४
५४१८०००००००००	९५५१००	१४७२१४०	७३६०७०	३८७४०।१०
११८५००००००००००	११५०७१	२१७७१५४	१०८८५७७	५७२९३।१०
२५४८२०००००००००	७६९१३६	३१९२६१६	१५९६३०८	८४०१६। ४
५५८१८०००००००००	१५६८१११	४७२५१६६	२३६२५८३	१२४३४६।९
९०२५००००००००००	४६६९४३१	६००८३२६	३००४१६३	१५८११३।१६॥

आ एकज यंत्र छे पण पुस्तकमां साहामी बाजु जगा न मलवाथी चालता अनुक्रमना कोठाने नीचें लइ लीधा छे. प्रथमना यंत्रोमां पण बे ठेकाणे एमज कर्युं छे.

इति पंचम धनुःपृष्ठगणितयंत्रं समाप्तम् ॥

अथ षष्ठ बाहा करण विधि प्रारंभः ॥

हवे छठुं बाहकरण कहे छे. आ ठेकाणे बे धनुष्पृष्ठनो विश्लेष करीयें, तिहां दक्षिण भरतार्द्ध अने वैताढ्यपर्वत ए बे धनुष्य छे, तेमां जे न्हानुं धनुष्य होय ते महोटा धनुष्यमांथी काहाडीयें तेने विश्लेष कहीयें, ते काहाडीनें पछी जे शेष रहे, तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें वैताढ्य तथा हिमवंत प्रमुख पर्वतनी बाह थाय. बाह एटले पर्वतना तथा क्षेत्रना छेडानो विस्तार जाणवो, ते आवी रीतें:—

दक्षिणार्द्ध भरतनुं धनुःपृष्ठ (९७६६) योजननी उपर एक कला छे, अने वैताढ्य पर्वतनुं धनुःपृष्ठ (१०७४३) योजनने पन्नर कला उपर छे, माटे वैताढ्यना धनुःपृष्ठनी अपेक्षायें-दक्षिणार्द्धभरतनुं लघु धनुःपृष्ठ कहेवाय,अने वैताढ्यनुं महा धनुःपृष्ठ कहेवाय, तेवारें महाधनुःपृष्ठनी राशिमांथी लघु धनुःपृष्ठनी राशि बाद करीयें, तो बाकी (९७७) योजन उपर चौद कला रहे, तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें (४८८) योजन उपर साडीशोल कला आवे. एटला योजन प्रमाण वैताढ्य पर्वतना बेहु तरफनी प्रत्येक एकेकी बाह जाणवी. एवी रीतें हिमवंत महाहिमवंतादिक सर्व पर्वतोनी तथा हिमवंतादिक क्षेत्रोनी बाहनुं गणित स्वयमेव करी लेवुं. आहिं मात्र एनो यंत्रज लखीयें छैयें.

अथ बाहा करण यंत्रम्.

बाहा करवाना स्थानकोनां नाम.	वैताढ्यादिकनुं महाधनुःपृष्ठ.		भरतार्द्धादिकनुं लघुधनुःपृष्ठ.		बेहुनो विश्लेष करतां बाकी.		तेनुं अर्द्धकरतांजे आंकआवे,तेबाह	
	योजन.	कला.	योजन.	कला.	योजन.	कला.	योजन	कला.
१ वैताढ्य पर्वत.	१०७४३	१५	९७६६	१	९७७	१४	४८८	१६॥
२ भरत क्षेत्र.	१४५२८	११	१०७४३	१५	३७८४	१५	१८९२	७॥
३ हिमवंतपर्वत.	२५२३०	४	१४५२८	११	१०७०१	१२	५३५०	१५॥
४ हिमवंतक्षेत्र.	३८७४०	१०	२५२३०	४	१३५१०	६	६७५५	३
५ महाहिमवंतपर्वत	५७२९३	१०	३८७४०	१०	१८५५३	०	९२७६	९॥
६ हरिवर्षक्षेत्र.	८४०१६	४	५७२९३	१०	२६७२२	१३	१३३६१	६॥
७ निषधपर्वत.	१२४३४६	९	८४०१६	४	४०३३०	५	२०१६५	२॥
८ विदेहार्द्ध.	१५८११३	१६॥	१२४३४६	९	३३७६७	७॥	१६८८३	१३।

इति पृष्ठ बाहा करणविधियंत्रादि संपूर्णम् ॥

अथ सप्तम प्रतरकरण गणितं.

हवे सातमो प्रतर करवानो उपाय कहे छे. भरत क्षेत्र प्रमुखने समचतुरस्र करवां, तेने प्रतर कहीयें. तिहां प्रथम छेल्लो खंड जे भरत क्षेत्र छे, तेना प्रतर करवानो उपाय देखाडे छे. भरतार्द्धनी इषु साथें जीवा गुणीयें, ते गुणतां जे आंक आवे, तेने चार भागें वहेंची नाखतां चोथा भागमां जे आंक आवे, तेने तद्गुणो करीयें एटले तेनो वर्ग करीनें ते वर्गने दशें गुणीयें. एम करतां जे आंक आवे, तेनुं मूल शोधियें, ते मूल शोधतां जे आंक आवे, ते प्रतिकला जाणवी; पछी ते प्रतिकलाने उगणीश भागें वेंचीयें, तेवारें तेनी कला थाय, अने शेष वधे, ते प्रतिकला कहीयें. फरी ते कलानी राशिने उगणीश भागें वेंचीयें, तेवारें योजननी संख्या थाय. जेम के भरतक्षेत्रनी इषुकला ४५२५) छे, तेंनी साथें भरतक्षेत्रनी जीवा संबंधी कला १८५२२५) किंचित् न्यून छे, तो पण ते सूक्ष्म गणित नथी करता, माटे एटलीज राशि साथें गुणतां ८३८१४३१२५ थाय, तेने चारनो भाग आपीयें, तेवारें २०९५३५७८१ थाय. शेष एक वधे. पछी ए राशिने एज राशि साथें गुणीनें एनो वर्ग करीयें, तेवारें ४३९०५२४३५१९२७९९६१ थाय. अने पछी एने दश गुणा करवा सारु एक मिंडुं नीचें आपीयें. तेवारें ४३९०५२४३५१९२७९९६१० थाय. तेने विषम सम करी मूल शोधीयें ते आवी रीतेंः—

४३९०५२४३५१९२७९९६१० (६६२६१०३१९ मूल शोधतां ए राशि आवे.

३६ (६	त्रेंतालीशमांथी छ छक छत्रीश गया.
१२)७९०(६	बाकी सात रह्या उपर नेवुं लीधा.
७२	छने बमणा करी बार छकां बहोंतेर थया.
३६	छनो भाग आव्यो माटे छ छक छत्रीश चांपी मांड्या.
७५६	बेहुनो सरवालो आपतां ७५६ गया.
१३२)३४५२(२	बाकी चोत्रीश रह्या, उपर बावन लीधा.
२६४	छाशठने बमणा करी १३२ दु २६४ थया.
४	बेनो भाग आव्यो माटे दुए दुए चार चांपी मांड्या.
२६४४	सरवाले २६४४ थया, ते बाद करवा.
१३२४)८०८४३(६	बाकी ८०८ रह्या उपर ४३ लीधा.
७९४४	६६२ नें बमणा करी १३२४ छकां ७९४४ थया.
३६	छनो भाग आव्यो माटे छ छकां छत्रीश चांपी मांड्या.

७९४७६ सरवाळे ७९४७६ थया ते बाद करवा.

१३२५२)१३६७५१(१ बाकी १३६७ रह्या उपर एकावन्न लीधा.

१३२५२ ६६२६ नु १३२५२) एकुं १३२५२ थया.

१ एकनो भाग आव्यो माटे एकेकुं एक चांपी मांड्यो.

१३२५२१ सरवाळे १३२५२१ गया.

१३२५२२)४२३०९२(० बाकी ४२३० रह्या,उपर ९२ लीधा भाग न पहोंचे माटे ० पडी.

१३२५२२०)४२३०९२७९(३ फरी ४२३०९२ नी उपर ७९ नो आंक लीधो.

३९७५६६० (६६२६१०नें बमणा करतां १३२५२२०त्रिकां ३९७५६६० थया.

९ त्रणनो भाग आव्यो माटे त्रण त्रिक नव चांपी मांड्या.

३९७५६६०९ सरवाळे ३९७५६६०९ गया.

१३२५२२०६)२५५२६७०९६ (१ बाकी २५५२६७० रह्या उपर छन्नुं लीधा.

१३२५२२०६ ६६२६१०३ने बमणा करी १३२५२२०६एकां एटलाज

१ एकनो भाग आव्यो माटें एकेकुं एक चांपी मांड्यो.

१३२५२२०६१ सरवाळे १३२५२२०६१ गया.

१३२५२२०६२)१२२७४५०३५१०(९ बाकी १२२७४५०३५ रह्या उपर दश लीधा.

११९२६९८५५८ ६६२६१०३१नें बमणा करतां १३२५२२०६२ नवां ११९२६९८५५८ थया.

८१ नवनो भाग आव्यो माटे नेवे नेवे ८१ चांपी मां०

११९२६९८५६६१ सरवाळे ११९२ ६९८५६६१ गया.

१३२५२२०६३८) ३४७५१७८४९ (शेष ३४७५१७८४९ राशि रही. एने लब्धराशिनो आंक ६६२६१०३१९ छे तेने बमणा करतां १३२५२२०६३८नो आंक थाय,तेनी सार्थें भाग पहोंचे नही तेने सूक्ष्म गणित नथी माटे एमज पडता मूकवा.

अने ६६२६१०३१९ ए लब्ध प्रतर प्रतिकला थइ, तेने उगणीश भागें वेंचीयें, तेवारें ३४८७४२२७ कलानी उपर छ प्रतिकला थाय. हवे एना योजन करवा सारु फरी उगणीश भागें वेंचियें तेवारें (१८३५४८५) योजननी उपर बार कला अने छ प्रतिकला तथा ३४७५१७८४९ एटली संख्यानी पूर्वोक्त १३२५२२०६३८ छेद राशि वाळी शेष राशि रही, ए दक्षिणभरतार्द्धना प्रतर करी देखाड्या. तेना यंत्रनी स्थापना नीचें करीयें छैयें.

दक्षिण भरतार्द्धना प्रतर करवानो यंत्र.

१	इषु कला.	४५२५
२	किंचित् न्यून जीवा कला.	१८५२२५
३	इषु कलाने जीवा कला साथें गुणतां.	८३८१४३१२५
४	तेने चार भागें वेचतां कला.	२०९५३५८८१
५	चोथा भागनी कलानो वर्ग करतां	४३९०५२४३५१९२७९९६१
६	तेने दशगुणो करतां	४३९०५२४३५१९२७९९६१०
७	ते वर्गनुं मूल शोधतां लाधेलो आंक.	६६२६१०३१९
८	शेष राशि रही.	३४७५१७८४९
९	छेद राशि.	१३२५२२०६३८
१०	लाधेली प्रतिकलाने १९ भागें वेंचतां कला.	३४८७४२२७१६ प्रतिकला.
११	फरी ते कलाना योजन करवा १९ नो भाग आपतां	१८३५४८५

एटला योजननी उपर १२) कला अने छ प्रतिकला जाणवी.

हवे वैताढ्य प्रमुख मध्यक्षेत्रोना प्रतर करवानो उपाय कहे छे. लघु जीवानो वर्ग अने महोटी जीवानो वर्ग ए बे वर्गनो शरवालो बांधी एकठा करीने तेनुं अर्द्ध करीयें, पछी तेनुं मूल शोधियें, ते मूलनो जे आंक आवे, ते पोताना विस्तार साथें एटले वैताढ्यादिक पर्वतोना पहोल पणा साथें गुणियें, तेवारें वैताढ्यादिक पर्वतोनो प्रतर थाय. तिहां प्रथम वैताढ्य पर्वतना तलीया संबंधि भूमिकानुं प्रतरकरण कहे छे.

॥ अथ वैताढ्यस्य प्रतरकरणं लिख्यते ॥

दक्षिण भरतार्द्धनी लघु जीवानो वर्ग करतां कला.	३४३०८०९७५००
वैताढ्यनी गुरु जीवा कहेवाय तेनो वर्ग करतां कला.	४१४९००९७५००
ए बन्ने जीवानो सरवालो करतां कला.	७५७९८१९५०००
तेनो अर्द्धभाग करतां कला.	३७८९९०९७५००
एनुं मूल शोधतां लाधेली कला.	१९४६७६
शेष राशिनी कला.	३५२५२४
छेद राशिनी कला.	३८९३५२

ए सामान्यथी विधि कह्यो; परंतु विशेष विधि तो आवी रीतें छे, ते आगल लखीयें छैयें.

वैताढ्य पर्वतना दक्षिणना पासानुं जेटलुं लांब पणुं छे, तेने जीवा कहीयें, ते जीवाना योजनना ओगणीशिया भाग करीयें, तेने कला कहियें. ते कलानो वर्ग करियें, तेने लघु जीवा वर्ग कहीयें, अने ए वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासानुं जेटलुं लांबपणुं छे, तेनी कला करीने तेनो वर्ग करियें, ते महोटो जीवा वर्ग कहीयें. पछी लघु जीवाना वर्गनो आंक अने महोटी जीवाना वर्गनो आंक, ए बे आंक एकठा मेलवतां जे आंक आवे, तेने बे भागें वेंचीयें एटले अर्ध करी नाखीयें, तेवारें (३७८९९०९७५००) एटलो आंक आवे, पछी तेनुं पूर्वोक्त रीतें मूल शोधीयें, तेवारें त्रण राशि थाय, तेमां जे आंक उगरे तेने शेष राशि कहीयें, अने जे आंक नीचें लाभे, ते छेद राशि कहेवाय. अने ते छेद राशिनो अर्ध लाभे ते लब्धांक राशि कहेवाय, ए त्रण राशिमांथी जे शेष राशिनो आंक (३५२५२४) आवशे, तेने बारना आंके अपवर्त्तना करीयें. अपवर्त्तना एटले पाछुं उसरवुं चालवुं विशेष भाषायें बारने आंकें भाग आपीयें तेवारें (२९३७७) नो आंक आवे, ते एक बाजु मांभी राखीयें, तथा वली छेद राशिनो आंक (३८९३५२) छे, तेने पण बारें अपवर्त्तना करीयें, तेवारें (३२४४६) आवे. ए आंक पण एक बाजु मांभी राखीयें, तथा ए करणी करतां जे कला लब्ध थइ छे, तेनो आंक (१९४६७६) नो छे तेनें वैताढ्यनुं पहोल पणुं पच्चास योजननुं छे, तेनी साथें गुणाकार करीयें, तेवारें (९७३३८०००) नो आंक आवे, ते पण एक बाजु लखी राखीयें, तथा शेष राशिना आंकनें बारनो भाग आपतां जे २९३७७ नो आंक लाधो छे, तेनें पण वैताढ्य पर्वतना तलीयाना पहोल पणाना पच्चाश योजन साथें गुणाकार करीयें, तेवारें (१४६८८५०) थाय. ए आंकनें प्रथम छेदराशिना आंकनें बारें भाग आपतां जे(३२४४६)नो आंक आव्यो छे, ते आंके भाग आपीयें, तेवारें (४५) आंक आवे, अनें शेष (८७८०) आंक वधता रहे, हवे पीस्तालीशना आंकने पूर्वोक्त लब्धराशिनें पच्चास गुणी करतां जे (९७३३८००) नो आंक आव्यो छे, तेनी साथें मेलवीयें तेवारें (९७३३८४५) थाय एटली शेष कलानी राशि उगरी. तेना योजन करवानें अर्थें ओगणीशनो भागाकार आपीयें, तेवारें (५१२३०७) योजन उपर बार कला एटला चोसला एटले समचतुरस्र चोखूणा योजनना खांभवा वैताढ्य पर्वतनी नीचली तलीयानी भूमिकामांहे थाय छे.

हवे वैताढ्य पर्वत उपर दश योजन ऊंचा चढियें, तेवारें पहेली मेखला आवे, तिहां प्रतर गणित केटलुं थाय ? ते कहीयें छैयें.

ए पण वैताढ्य पर्वतनो लघु जीवानो वर्ग तथा महोटी जीवानो वर्ग ए बेहु वर्गने

मेलवी सरवालो करी पछी तेनुं अर्ध करी, ते अर्ध भागमां जे आंक आव्यो तेनी कर णी करवी एटले मूल शोधवुं. पछी तेनी त्रण राशि कलानी लाधी, त्यां सुधी तो बधो पूर्वेली रीतें वर्त्तारो वर्त्तवो. तेवार पछी पहेली मेखलाने विषे एटलुं विशेष करवुं, के पूर्वें वैताढ्य पर्वतना तलियानी करणीमां शेष राशिने बारें अपवर्त्तन करतां जे १९४६७६ कला लाधेली छे, तेने वैताढ्यना तलियानुं पहोलपणुं पचास योजननुं छे, ते नी साथें गुणाकार कीधो हतो ते इहां पहेली मेखलायें वैताढ्य पर्वत त्रीश योजन प होलो छे, माटे ए लब्ध कलाने त्रीशे गुणीयें, तेवारें ५८४०२८० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांमी राखीयें, अने शेष राशिनी द्वादश अपवर्त्तनायें एटले बारना आंके भाग दे तां जे २९३७७ नो आंक आव्यो छे, ते आंकनें वैताढ्यनी पहेली मेखलाना त्रीश यो जन सायें गुणीयें, तेवारें ८८१३१० नो आंक आवे, ते आंकने छेदराशिना आंकने बारें भाग आपतां जे ३२४४६ नो आंक आव्यो छे, ते आंकें भागाकार आपीयें, तेवा रें (२७) नो आंक आवे, अने उपर ५२६८ नो आंक वधे. ते वधेलो आंक कांइ भा गाकारमां काम न आवे माटे एमज रहेवा दइयें. बाकी मात्र सत्तावीशना आंकने पूर्वो क्त लब्ध कलाने वैताढ्यनी पहेली मेखलाना पहोल पणाना त्रीश योजननी सायें गुण तां जे ५८४०२८० नो आंक आव्यो छे, तेनी सायें मेलवीयें, तेवारें ५८४०३०७ नो आंक कलानो थाय, तेना योजन करवाने अर्थें ए आंकने उगणीशनो भाग आपीयें, तेवारें (३०७३८४) योजन उपर अगियार कला एटला एकेका योजनना समचतुरस्र खांमवा वैताढ्य पर्वतनी पहेली मेखलानी भूमिकायें थाय.

हवे वैताढ्य पर्वतनी बीजी मेखलायें प्रतर गणित करवानो उपाय कहीयें छैयें. ति हां पहेली मेखलायें जे करणी करतां १९४६७६ कला लब्धमान हती, ते आंकने इहां बीजी मेखला दश योजननी पहोली छे, माटे दशना आंक सायें गुणीयें, तेवारें १९४६७६० थाय. ते आंकने एक बाजुयें लखी राखीयें.

पछी शेष राशिने बारें भागतां जे २९३७७ नो आंक आव्यो छे, ते आंकने वैता ढ्यनी बीजी मेखलानुं दशयोजन पहोलपणुं छे, तेनी सायें गुणीयें. तेवारें २९३७७० नो आंक थाय. ते आंकने वली छेद राशिना आंकने बार भागें वेचतां जे ३२४४६ नो आंक आवेलो छे, ते आंके भागाकार आपीयें तेवारें ९ नो आंक आवे, अने उपर १७५६ अंश वधे, ते अंशने भाग पहोंचे नही माटे एमज रहेवा दइयें. अने नवना आंकने पूर्वोक्त लब्ध राशिना आंकने वैताढ्यनी बीजी मेखलाना पोहोलपणाना दश योजन सायें गुणीने जे १९४६७६० कलानो आंक आवेलो छे, तेनी सायें मेलवीयें,

तेवारें १९४६७६९ कला थाय. पछी कलाना योजन करवा सारु ए आंकने उगणी शनो भागाकार आपीयें, तेवारें १०२४६१ योजननी उपर दश कला थाय, एटला वैताढ्यनी बीजी मेखलाना सम चोरस खांमवा थाय, ए वैताढ्यपर्वतनी बीजी मेखलानुं प्रतरगणित कह्युं. ए सर्वेना यंत्रनी स्थापना आगल करशुं.

हवे उत्तर भरतार्द्धनुं प्रतरकरण लखीयें छैयें. इहां वैताढ्य पर्वतना उत्तरना पासानी जे जीवा तेनी कला करीने पछी तेनो वर्ग करीयें, तेने लघु जीवावर्ग कहीयें, अने हिमवंत पर्वतना दक्षिण पासानी लांबपणानी जे जीवा तेनी कला करीने पछी तेनो वर्ग करीयें, तेने गुरुजीवा वर्ग कहीयें. पछी बेहु जीवाना वर्गने एकठा करी शरवालो आपतां जे आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीयें, पछी तेनी करणी करी मूल शोधीयें, तेवारें लब्ध कला २४१९६० आवे. तथा शेष राशि ४०७१५० आवे, तथा छेदराशि ४८३९२० आवे, एवी त्रण राशि थाय.

हवे शेषराशिनो अंक ४०७१५० छे, तेने शून्यें करी अपवर्त्तियें, एटले शेषराशिने छेहडे शून्य अर्थात् मींडुं छे, तेने भांजी नाखीयें,तेवारें दशक पड्युं. ए भाव जाणवो. अर्थात् दशने आंके भागाकार कीधो तेवारें ४०७१५ नो आंक रह्यो. तथा छेदराशिनो आंक ४८३९२० छे, तेने पण शून्यें अपवर्त्तियें, तेवारें ४८३९२ नो आंक रहे.

हवे पूर्वोक्त लब्ध राशिनो आंक २४१९६० छे, तेने भरतार्द्धना बाणनी कला एटले पहोल पणानी कला ४५२५ छे. तेनी सायें गुणीयें, तेवारें १०९४८९९००० आवे.

वली शेषराशिने शून्यें अपवर्त्तन करीने ४०७१५ नो आंक रह्यो छे, तेने पण भरतार्द्धना पृथुत्व एटले बाणनी कला ४५२५ नी सायें गुणाकार करीयें तेवारें १८४२३५३७५ नो आंक आवे. हवे ए आंकने छेदराशिना शून्यें अपवर्त्तेलो जे ४८३९२ नो आंक छे, ए आंके भाग आपीयें, तेवारें ३८०७ नो आंक लाभे, शेष ७०३१ एटलो आंक वधे. ते एमज राखीयें अने प्रतिकला ३८०७ लाधी, ते पूर्वोक्त ४५२५ पहोलपणानी राशियें गुणाकार करेली प्रतिकलानी राशि १०९४८९९००० आंकनी छे, तेनी सायें मेलवियें, तेवारें १०९४८७२८०७ एटलो प्रतिकलानो आंक थाय. कारण के, एने पहोलपणाना २३८ योजनथी गुणाकार कर्यो होय तो ए कलानी राशि कहेवाय. परंतु आ ठेकाणें उत्तरार्द्ध भरतना योजन २३८ ने त्रण कलानी सर्व कला ४५२५ करीने तेनी सायें गुणाकार करेलो छे, माटे एने प्रतिकला कहियें छैयें.

हवे ए १०९४८७२८०७ जे प्रतिकला थइ तेने उगणीशनो भाग आपीयें, तेवारें

५७६२४८८४ कला थाय, अने उपर अगीयार प्रतिकला उगरे तेना योजन करवा सा रु फरी ए कलानी राशिने उंगणीशनो नागाकार आपीयें, तेवारें ३०३२८८८ योजन बार कला अने अगीयार प्रतिकला थाय एटला एकेका योजनना चोसला खांमवा उत्तरार्द्ध नरतना जाणवा. इति उत्तर नरतार्द्धस्य प्रतरकरणविधिः समाप्तः ॥

हवे हिमवंत पर्वतने तलीये प्रतरनी संख्या करवाने अर्थें वरतारो करवानी रीत ल खीयें बैयें. हिमवंत पर्वतनी दक्षिणने पासें जे उत्तरनरतार्द्धनो ७५६०००००००० जी वा वर्ग ले ते लघु जीवा वर्ग जाणवो, अने हिमवंत पर्वतनी उत्तर दिशियें जे २२४४०००००००००० जीवावर्ग, ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेलवीयें, तेवारें ३०००००००००००० ए आंक आवे, तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें १५०००००००००० थाय. ए आंकने करणी करी मूल शोधियें, तेवारें ३८७२९८ लब्धराशि थाय. अने शे ष राशि २५५१९६ एटली उगरे, तथा लेदराशि ७७४५९६ थाय. पछी शेष राशिनो २५५१९६ नो आंक आव्यो ले, ते आंकने चारना आंक साथें अपवर्त्तन करीयें, एटले चारे नागाकार आपीयें, तेवारें ६४७९९ नो आंक आवे, तथा लेदराशिना आंकने चारे अपवर्त्तन करीयें, एटले चारने आंके नागाकार आपीयें तेवारें १९३६४९नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक जे ३८७२९८ नो आव्यो ले ते आंकने हिमवंत पर्वतनुं प होलपणुं जे वीश हजार कलारूप ले, तेनी साथें गुणीयें, तेवारें ७७४५९६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजुयें लखी मूकीयें.

पछी शेष राशिने चारें अपवर्त्तन करतां जे ६४७९९ नो आंक आव्यो ले, ते राशि ने हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीश हजार कला साथें गुणाकार करीयें, तेवारें १२९५९८०००० नो आंक आवे, तेने लेदराशिने चारें अपवर्त्तन करेला १९३६४९ ना आंके नाग आपियें, तेवारें ६६९२ नो आंक आवे, अने उपर ८८८९२ नो आंक शेष रहे, तेने नाग पहोंचे नही माटें ते आंक पडतो मूकीने ए ६६९२ नुं जे आंक ले ते हिमवंत पर्वतना पहोल पणानी वीशहजार कलायें गुणेला लब्धराशिना ७७४५९६०००० आंक साथें मेलवीयें, तेवारें ७७४५९६६६९२नो आंक प्रतिकलारूप थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकने ओगणीशनो नागाकार आपीयें, तेवारें ४०७६८२४५७नो आंक उपर नव प्रतिकला वधे, वली ए आंकना योजन करवाने अर्थें फरी उंगणीशें नाग आपीयें, तेवारें २१४५६९७१ योजननी उपर आठ कला अने नव प्रतिकला थाय. ए टला एकेक योजनना चोशला खांमवा हिमवंत पर्वतना जाणवा इति ॥

हवे हिमवंत क्षेत्रना प्रतर गणितनो वरतारो कहियें छैयें. इहां हिमवंत पर्वतना उत्तर पासानो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग कहीयें, अने हिमवंत क्षेत्रने छेहडे महाहिमवंत पर्वतने अडतो जे जीवावर्ग,ते महोटो जीवावर्ग जाणवो. ए बे वर्ग एकठा मेलवीने तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें ३६७४०००००००० एटलीकलानो आंक आवे, तेनुं सम विषम करी करणी करी मूल शोधियें,तेवारें ६०६९५९ कलानो आंक लब्धराशिनो आवे, ते एक बाजुयें लखी राखीयें. अने शेषराशि ७७३३१९ नो आंक रहे, तथा छेदराशि १२१३९१८ नो आंक रहे. पछी लब्ध राशिनो ६०६९५९ नो आंक छे तेने हिमवंतक्षेत्रना पोहोलपणानी ४०००० कला बाणरूप छे. तेनी सार्थे गुणियें तेवारें २४२७८३६०००० नो आंक आवे, ते एक बाजु मांमी मूकीयें,पछी शेषराशिना आंकने एकें अपवर्त्तन करीयें,तेवारें तेहीज७७३३१९नो आंक आवे तेने हिमवंतक्षेत्रना पहोल पणानी बाण रूप ४०००० कला छे तेनी सार्थे गुणीयें तेवारें ३०८९२७६०००० नो आंक आवे. ते आंकने छेदराशिनो १२१३९१८ नो आंक छे, तेने एकें अपवर्त्तन करतां एहीज आंक आवे ते आंके भागाकार आपीयें, तेवारें २५४४८नो आंक आवे, अने शेष ९७४७३६नो आंक रहे तेने भाग पहोंचे नही माटें पडतो मूकीयें. पछी लब्धराशिना चालीश हजारें गुणेला आंकनी सार्थे ए २५४४८ नो आंक मेलवीयें, तेवारें २४२७८३८५४४८ नो आंक आवे एटली प्रतिकला थइ तेनी कला करवा सारु एने उगणीशनो भाग आपीयें, तेवारें १२७७८०९७६० कला अने उपर आठ प्रतिकला थाय तेना वली योजन करवा सारु ए आंकने उगणीशनो भाग आपीयें, तेवारें ६७२५३१४५ योजननी उपर पांच कला अने आठ प्रतिकला एटला योजनना चोसला खांमवा हिमवंत क्षेत्रना थाय.

हवे महाहिमवंत पर्वतना प्रतरनुं गणित करवुं, तेनो वरतारो लखीयें छैयें. हिमवंत क्षेत्रना उत्तरनी पासें जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कहीयें अने महाहिमवंत पर्वतना छेहडानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग कहीयें. ते बेहुने एकठा मेलवीनें तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें ७८१२०००००००० एटलो आंक थाय तेनुं मूल शोधीयें तेवारें लब्धराशि ८८३८५५ आवे अने छेदराशिनो आंक १७६७७१० नो आवे. तथा शेषराशि ३३८९७५ नो आंक आवे, तेने पांत्रीशना आंक सार्थे अपवर्त्तियें, एटले पांत्रीशें भाग आपीयें तेवारें ९६८५ नो आंक आवे. पछी छेदराशिनो आंक १७६७७१० छे, तेने पांत्रीशें अपवार्त्तियें, तेंवारें ५०५०६ नो आंक आवे.

हवे पूर्वे जे मूल शोधतां ८८३८५५ नो आंक लब्धराशिनो आव्यो छे,ते आंकने महा हिमवंत पर्वतना पहोलपणाना बाण रूप एंशी हजार कला छे, तेनी साथें गुणियें, ते वारें ७०७०८४०००००० नो आंक थाय.

हवे शेष राशिने अपवर्त्तन करतां जे ९६८५ नो आंक आव्यो छे, तेनें महाहिमवंत पर्वतनी पृथुत्व रूप आठ हजार कलानी साथें गुणीयें, तेवारें ७७४८०००००० नो आंक थाय, ते आंकने अपवर्त्तन करेलो जे छेदराशिनो ५०५०६ नो आंक छे, ते आंकें भागाकार आपीयें तेवारें १५३४० नो आंक आवे, शेष ३७९६० नो आंक वधे, तेने भाग पोहोंचे नही माटे पडतो मूकीयें अने १५३४० ना आंकने पूर्वे जे एंशीहजार गुणो करेलो लब्धराशिनो ७०७०८४०००००० नो आंक छे, तेनी साथें मेलवियें, तेवा रें ७०७०८४१५३४० नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवा सारु ए आंकनें छ गणीशें भाग आपीयें, तेवारें ३७३१४९५५४४ एटली कला उपर चार प्रतिकला थाय. वली एना योजन करवा सारु ए कलाना आंकने बीजी वार छगणीशें भाग आपीयें, ते वारें १९५८६८१८६ योजन उपर दश कला अने चार प्रतिकला थाय, एटला सम चोरस योजनना खांमवा महाहिमवंत पर्वतना जाणवा.

हवे हरिवर्षक्षेत्र बीजुं नाम हरिवास क्षेत्र तेनुं प्रतर करवानो वरतारो कहीयें छैयें, महाहिमवंत पर्वतनी उत्तर पासें जे जीवानो वर्ग ते लघु जीवावर्ग कहीयें, अने हरि वास क्षेत्रने छेहडे निषध पर्वतने लगतो लांबपणानो जे जीवावर्ग ते गुरु जीवावर्ग क हीयें. ए बे जीवावर्गनो सरवालो करी एकठो मेलवीने पछी तेनुं अर्द्ध करीयें तेवारें १५१०८०००००००० नो आंक आवे, तेने समविषम करी मूल शोधियें तेवारें वर्ग मूल १२२९१४६ लब्धराशिनो आंक आवे, अने ११०६७४ शेष राशिनो आंक आवे तथा २४५८२९२ एटले छेदराशिनो आंक आवे.

हवें शेषराशिना आंकने चारे अपहरियें तेवारें २७६७१ नो आंक आवे, तेमज छेदराशिना आंकने पण चारें भाग आपीयें, तेवारें ६१४५७३ नो आंक आवे.

हवे मूलनी लब्धराशिना आंकने हरिवासक्षेत्रना पहोलपणानो बाण १६०००० कला रूप छे, तेनी साथें गुणीयें तेवारें १९६६६३३६०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु मांमी राखीयें.

पछी शेषराशिना आंकने चारें अपवर्त्तन करतां जे २७६७१ नो आंक आव्यो छे, तेने हरिवर्ष क्षेत्रना पहोल पणानी १६०००० कला सार्थे गुणीयें,तेवारें४४२७३६००००

नो आंक थाय. ए आंकने चारें अपवर्त्तना करेली छेदराशिना जे ६१४५७३ नो आंक छे, ते आंकें नाग आपीयें, तेवारें ७२०३ नो आंक आवे. शेष ५९०६०१ नो आंक वधे, तेने नाग पहोंचे नही, माटे एमज रहेवा आपीयें. अने ७२०३ ना आंकने एक लाखने शाठ हजारें गुणेला लब्धराशिना आंक साथें मेलवीयें तेवारें १९६६६३३६७२०३ नो आंक प्रतिकलानो थाय, तेनी कला करवाने अर्थे उंगणीशनो नाग आपीयें, तेवारें १०३५०७७०३५३७ कला थाय, तेना योजन करवा सारु फरी बीजीवार उंगणीशें नाग आपीयें, तेवारें ५४४७७३०८७० योजननी उपर सात कला थाय. एटला हरिवास क्षेत्रनी नूमिना एक योजनीया समचतुरस्र खंमुक जाणवा.

हवे निषधपर्वतनुं प्रतर करवानुं गणित कहियें छैयें, हरिवासक्षेत्रने छेहडे निषधपर्वतनें लगतुं जे लांबपणुं तेनी जीवानो वर्ग ते लघुजीवा वर्ग कहीयें, तथा निषधपर्वतनी उत्तरनी पासें मेरुपर्वत तरफ जे निषधनुं लांबपणुं तेनी जीवानो जे वर्ग, ते गुरु जीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गना आंकनो सरवालो करी तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें २५८६०००००००००० नो आंक थाय,तेनुं वर्गमूल शोधियें तेवारें १६०८१०४ लब्ध राशि थाय, अने १५२५१०४ एटली शेषराशि रहे, तथा ३२१६२०८ एटली छेद राशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिनो आंक मांमीनें तेने शोळने आंके अपवर्त्तियें एटले नागाकार आपीयें, तेवारें ९५३२४ नो आंक आवे. तेमज ते छेदराशिना आंकने शोळें अपवर्त्तियें तेवारें २०१०१३ नो आंक आवे.

पछी लब्धराशिनो आंक जे १६०८१०४ नो छे तेने निषध पर्वतना पहोळपणानी ३२०००० कळानी साथें गुणीयें, तेवारें ५१४५९३२८०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजु लखी राखीयें.

हवे शेषराशिनें शोळना आंकें अपवर्त्तन करेलो जे ९५३२४ नो आंक छे, तेने निषध पर्वतना पहोळपणानी जे ३२०००० कळा छे, तेनी साथें गुणीयें, तेवारें ३०५०३६८०००० नो आंक आवे, तेने शोळे अपवर्त्तन करेली छेदराशिनो जे २०१०१३ नो आंक छे, ते आंकें नागाकार आपीयें, तेवारें १५१७४९ नो आंक आवे. शेष १५८२६३ नो आंक वधे, तेने नाग पहोंचे नही माटें पडतो मूकियें, अने त्रण लाख वीश हजारें गुणेला लब्धराशिना आंकनी साथें ए १५१७४९ नो आंक मेळवियें, तेवारें ५१४५९३४३१७४९ नो आंक प्रतिकळारूप थाय, तेनी कळा कर

वानें अर्थें ए आंकनें उगणीशनो नागाकार आपियें, तेवारें २७०८३८६४८२८ कला नी उपर सत्तर प्रतिकला थाय तेना योजन करवा सारु फरी पण उगणीशनो नाग आपीयें, तेवारें १४२५४६६५६९ योजन उपर सत्तर कला अनें सत्तर प्रतिकला थाय, एटलुं निषेध पर्वतनुं प्रतर गणित जाणवुं. एटले नूमिना एकेका योजनना समचतुरस्र खंमूक एटला थाय ॥ इति ॥

हवे विदेहार्द्धनुं प्रतर गणित करी देखाडियें ठेयें, निषधपर्वतनो मेरु तरफ जे ठेहडो तेनो जे जीवावर्ग ते लघुजीवावर्ग जाणवो, अने जंबूद्दीपनी मध्यनो वचमांनो जे अर्द्धनाग तिहां सुधी जे बाण अथवा जीवा तेनो जे वर्ग ते गुरुजीवावर्ग जाणवो. ए बे जीवावर्गने एकठा करतां जे आंक आवे,तेनुं अर्द्ध करीयें, तेवारें ३४०५२००००००००
नो आंक आवे तेनुं मूल शोधियें, तेवारें १८४५३१८ नो आंक आवे, अने १४७८८७६ एटली शेष राशि रहे, तथा ३६९०६३६ एटली ठेदराशि आवे, ए त्रण राशि थइ.

हवे शेषराशिना आंकने चारें अपवर्त्तन करीयें,तेवारें ३६९७१९ नो आंक आवे अने ठेदराशिने चारें अपवर्त्तन करीयें, तेवारें ९२२६५९ नो आंक आवे.

हवे लब्धराशिनो आंक १८४५३१८ नो ठे, ते आंकने विदेहार्द्धनुं जे बाण एटले पहोलपणुं तेनी ३२०००० कला ठे, तेणें करी गुणाकार करीयें तेवारें ५९०५०१७६०००० नो आंक आवे, तेने एक बाजुयें मांमी राखीयें. पठी शेषराशिने चारें अपवर्त्तन करतां जे ३६९७१९ नो आंक आव्यो ठे, तेने विदेहार्द्धना पहोलपणानी ३२०००० कलानी साथें गुणीयें,तेवारें ११८३१००८०००० नो आंक आवे, तेने चारे अपवर्त्तन करेली ठेदराशिनो जे ९२२६५९ नो आंक ठे,तेणे करी नागाकार आपीयें तेवारें १२८२२७ नो आंक आवे अने उपर २८४४०७ नो आंक वधे, तेने नाग पहोंचे नही, माटे तेनें पडतो मूकीयें, अने १२८२२७ नो जे आंक ठे ते पूर्वें अपवर्त्तन करीने विदेहार्द्धनी लंबाइनी कला साथें गुणेलो जे लब्धराशिनो आंक तेनी साथें मेलवीयें, तेवारें ५९०५०१८८८२२७ नो आंक प्रतिकलानो थाय. पठी एनी कला करवा सारु उगणीशें नाग आपियें. तेवारें ३१०७९०४६७४८ एटली कला थाय, उपर पन्नर प्रतिकला वधे, तेना योजन करवाने अर्थें फरी ए आंकने उगणीशें नाग आपीयें, तेवारें १६३५७३९३०२ योजननी उपर दश कला अने पन्नर प्रतिकला थाय. एटलुं विदेहार्द्धनुं प्रतर गणित जाणवुं ॥

हवे ए प्रतरना सरवालानो अवशेष कहे ठे. ए दक्षिणनरतार्द्ध आदें देइने जे क्षेत्रो

तथा पर्वतो तेना प्रतरनुं गणवुं, एटला चोसला योजनना गणितपदनुं करवुं ते व्यवहार मार्गे देखाड्युं, तेमज मेरुथकी उत्तरदिशियें जे ऐरवत क्षेत्र आदें देइने क्षेत्रो तथा पर्वतो छे तेनो पण उत्तरविदेहार्द्ध पर्यंत एज रीतें वरतारो वर्त्तवो,पछी सर्वनो सरवालो एकठो मेलववो अथवा जंबूद्वीपना विदेहार्द्ध पर्यंत अर्द्धभागना चोसला योजनीयां खंड जेनुं गणित उपर करी आव्या छैयें, तेनें एकठा करी सरवालो वांधीने पछी बमणा करीयें, तेवारें "सगसयनउय" ए गाथामां कहेली संख्या जेटलां प्रतर थाय. ए प्रतर करवाना यंत्रनी स्थापना नीचें करीयें छैयें.

प्रतरकरणं.	उत्तरभरतार्द्धस्य १	हिमवगिरेः २	हिमवंतक्षेत्रस्य ३
लघुजीवावर्गकला.	४१४९००९७५००	७५६००००००००	२२४४००००००००
गुरुजीवा वर्ग कला.	७५६००००००००	२२४४००००००००	५१२४००००००००
उभयमीलनेकला.	११७०९००९७५००	३०००००००००००	७३६८००००००००
तद्दलीकरणेकला.	५८५४५०४८७५०	१५००००००००००	३६८४००००००००
वर्गमूललब्धकला.	२४१९६०	३८७२९८	६०६९५९
शेषराशिः ॥	४०७१५०	२५९१९६	७७२३१९
छेदराशिः ॥	४८३९२०	७७४५९६	१२१३९१८
अपवर्त्तनांक १०	शून्येनापवर्त्तना.	४	०
कृतेऽपवर्त्तनेशेषराशिः	४०७१५	६४७९९	०
कृतेऽपवर्त्तनेछेदराशिः	४८३९२	१९३६४९	०
पृथुत्वकलाः ॥	४५२५	२००००	४००००
तद्गुणोलब्धराशिः	१०९४८६९०००	७७४५९६००००	२४२७८३६००००
पृथुत्वेनशेषांशगुणाः	१८४२३५३७५	१२९५९८००००	३०८९२७६००००
छेदभागेनलब्धकला.	३८०७शेष७०३१	६६९२शेष८०८९२	२५४४८शें९७४७३६
तासांवृत्तराशिक्षेत्र.	१०९४८७२८०७	७७४५९६६६९२	२४२७८३८५४४८
एकदा १९ भागकला॥	५७६२४८८४प्र०११	४०७६८२४५७ प्र०९	१२७७८०९७६०प्र८
पुनः १९ भागेयो० ॥	२०३२८८८क०१२—प्र०११	२१४५६९७१क०८—प्र०१०	६७२५३१४५क०५ प्र०८

महाहिमवद्गिरेः ४	हरिवर्षक्षेत्रस्य ५	निषधगिरेः ६	विदेहार्द्धस्य ७
५१२४००००००००	१०५००००००००००	१९७१६००००००००	૩૨૦૦૪૦૦૦૦૦૦૦૦
१०५००००००००००	१९७१६००००००००	३२००४००००००००	૩૬૧૦૦૦૦૦૦૦૦૦૦
१५६२४००००००००	३०२१६००००००००	५१७२०००००००००	૬૮૧૦૪૦૦૦૦૦૦૦૦
७८१२००००००००	१५१०८००००००००	२५८६०००००००००	૩૪૦૫૨૦૦૦૦૦૦૦૦
८८३८५५	१२२९१४६	१६०८१०४	૧૮૪૫૩૧૮
३३८९७५	११०६८४	१५२५१८४	૧૪૭૮૮૭૬
१७६७७१०	२४५८२९२	३२१६२०८	૩૬૯૦૬૩૬
३५	४	१६	૪
९६८५	२७६७१	९५३२४	૩૬૯૭૧૯
५०५०६	६१४५७३	२०१०१३	૯૨૨૬૫૯
८००००	१६००००	३२००००	૩૨૦૦૦૦
७०७०८४०००००	१९६६६३३६००००	५१४५९३२८००००	૫૯૦૫૦૧૭૬૦૦૦૦
७७४८०००००	४४२७३६००००	३०५०३६८००००	૧૧૮૩૧૦૦૮૦૦૦૦
१५३४०शेष३७९६०	७२०३ शेष.५९०६८१	१५१७४९शे१५८२६३	૧૨૮૨૨૭શેષ૨૮૪૦૭
७०७०८४१५३४०	१९६६६३३६७२०३	५१४५९३४३१७४९	૫૯૦૫૦૧૮૮૮૨૨૭
३७२१४९५५४४प्र०४	१०३५०७०३५३७	२७०८३८६४८२८प्र१७	૩૧૦૭૯૦૪૬૭૪૮પ્ર૧૫
१९५८६८१८६क०१०	५४४७७३८७० क० ७	१४२५४६६५६९क१७	૧૬૩૫૭૩૯૨૦૨ક૦૧૦
प्र० ४		प्र० १७	પ્ર૦૧૫

हवे घनगणित गणवानी रीत कहे छे.

पूर्वें जे प्रतरगणित कह्युं ते प्रतरनुं गणित भूमिकानुं गणाय छे, तेहीज प्रतर गणितनो आंक मांमीने पर्वतोनुं घन गणित करीयें; केम के, पर्वतनी भूमिकाना तलियां प्रतर गणित जेटलां होय, माटें तेटलो आंक मांमीने ऊंचपणाना आंकें गुणीयें, तेवारें तेनुं घनगणित थाय. ए संक्षेपथी कह्युं.

विशेषार्थ तो आम छे, के वैताढ्यने तलीयें भूमिकानुं प्रतर ५१२३०७योजन उपर बार कला एटलुं छे. पहेली मेखला पर्यंत पचास योजन पहोलुं अने दश योजन ऊंचुं छे, माटे ए प्रतरना गणित पदनो आंक तेने दशें गुणाकार करीयें, तेवारें ५१२३०७६ योजन उपर छ कला एटलुं भूमिकाथी मांमीनें पहेली मेखला सुधी घनगणित होय.

हवे पहेली मेखलायें पर्वत सांकडो छे. केम के, पचास योजन वैताढ्यनी लंबाइमांथी

दश योजन एक पासें मूक्या, अने दश योजन बीजे पासें मूक्या, तेवारें त्रीश योजन वैताढ्य पहोळो छे, माटें पहेली मेखलायें पर्वतनुं तलियुं त्रीश योजन छे, तिहां प्रतर (३०७३०४) योजन उपर अगीयार कला छे, अने तिहांथी दश योजन ऊंचा चडियें तिहां सुधी ए पर्वत बेहु पासें सरखो त्रीश योजन पहोळो छे, माटें प्रतरना आंकने दश योजननी उंचाइ सार्थे गुणीयें, तेवारें (३०७३०४५) योजन उपर पन्नर कला एटलुं पहेली मेखलायें घनगणित जाणवुं.

वली बीजी मेखलायें ए पर्वतना दश योजन उत्तरनी पासें मूकीयें, अने दश योजन दक्षिणनी पासें मूकीयें, तेवारें वैताढ्य पर्वत दश योजन पहोळो छे, अनें बन्ने पासें मथाला पर्यंत पांच योजन उंचो छे, तेमाटें तिहां दश योजन पहोळो छे, तेना प्रतर गणितनो आंक १०२४६१ उपर दश कलानो छे,तेने उंचपणाना पांच योजन सार्थे गुणीयें, तेवारें ५१२३०७ योजन उपर बार कला एटलुं बीजी मेखलायें घनगणित थाय.

हवे समस्त वैताढ्य पर्वतनुं घन गणित कहीयें छैयें. वैताढ्यनुं प्रतर गणित ए२२१५३ योजन उपर चौद कला छे, ए आंकने वैताढ्यनी पच्चीश योजननी उंचाइ छे, परंतु तेमां जुदी जुदी त्रण राशिने जुदा जुदा उंचाइना योजन सार्थे त्रण प्रकारनो पूर्वोक्त रीतें गुणाकार करीयें, तेवारें सर्व मली ८७०ए२२ए योजन उपर चौद कला थाय.

हवे हिमवंत पर्वतनुं घन गणित कहे छे. हिमवंतने तलीये २१४५६ए७१ योजन आठ कला अने दश प्रतिकला एटलुं प्रतरगणित छे, तेनें हिमवंत पर्वतनी एकशो योजननी ऊंचाइ छे, तेनी सार्थे गुणतां (२१४५६ए७१४४) योजननी उपर शोल कला अने बार प्रतिकला एटलो आंक घनगणितनो थाय.

महा हिमवंत पर्वतनुं घनगणित कहे छे, एने तलीये प्रतर गणित १ए५८६८१८६ योजन दश कला अने पांच प्रतिकला छे, ए पर्वत बेहु पासें सरखो बशें योजन उंचो छे, माटें प्रतर गणितना आंकनें बशें गुणो करतां ३ए१७३६३७३०८ योजन उपर बार प्रतिकला एटलुं घनगणित थाय एटले योजनना चोसला खंडुक थाय.

निषध पर्वतनुं घनगणित कहे छे. निषध पर्वतने तले १४२५४६६५६ए योजन उपर अढार कला एटलुं प्रतर गणित छे, तेने ए पर्वतनी चारशें योजननी ऊंचाइ सार्थे गुणीयें, तेवारें (५७०१८६६२७ए७८) योजन उपर अढार कला घनगणितनी थाय.

जे मनुष्य पूर्वोक्त गणित प्रमुख करवाने आलसु होय ते मनुष्यने वास्ते यंत्रोनी स्थापनाउ करेली छे, तेना उपरथी जोइ लेवुं, अनें जे मनुष्य म्हाह्या निपुणबुद्धिवाला उद्यमवंत हशें, ते तो पोतेंज गणित करी वत्तीरो करी लेशें.

घनगणितनां यंत्रनी स्थापना.

घनगणित कला.	१८३५४८५	क. १२	प्रति ६	प्रतर प्रमाणम्.	उच्चत्वम्	उच्चपणा साथे गुणवुं.
वैताढ्यधनूमौ.	५१२३०७	१२	०	५१२३०७ कला१२	१०	५१२३०७६। ६
वैताढ्य प्र.मे.	३०३२८८८	१२	११	३०७३८४ ।११	१०	३०७३८४५।१५
वैताढ्यद्वि.मे.	२१४५६९७१	८	१०	१०२४६१ ।१०	५	५१२३०७।१२
सकल वैता०	६७२५३१४५	५	८	९२२१५३ ।१४	श्री २५	८७०९२२९।१४
हिमवति.	१९५८६८१८६	१०	५	२१४५६९७३।८।१०	१००	२१४५६९७१४४।१६।१२
महाहिमवति.	५४४७७३८७०	७	५	१९५८६८१८६।१०।५	२००	३९१७३६३७३०८।प्र१२
निषधे.	१४२५४६६५६९	१७	१७	१४२५४६६५६९।१८	४००	५७०१८६६२७९७९
विदेहार्द्धे.	१६३५७३९३०२	१०	१			

एवं ३८९५९३८७२८ योजनानि ॥

३८९५९३८७२८ मेरोरुत्तरतः ॥

७७९१८७७४५६ सर्वप्रतराणामेकादयोरपि पार्श्वयोरयमंकः॥

द्वितीयप्रकारे ११३८१६६९५ । क्रो. २ ध० ४८५ अं. ३६ न्यूनं जवति ।

पूर्वोक्तं गणितपदमिदं ७९०५६९४१५० । क्रो. १ ४/३ ह. ६२ २/७

इषुप्रमुख सर्वना सिद्ध थयेला आंकनो यंत्र.

सिद्धांकाः ।	इषवः	जीवाः ।	धनुःपृष्ठानि.	बाहवः ।
दक्षिणभरतार्द्धे.	२३८।३	९७४८।१२	९७६६ क. १	०
वैताढ्ये.	२८८।३	१०७२०।११	१०७४३।१५	४८८।१६।१/२
संपूर्णभरते.	५२६।६	१४४७१।५	१४५२८।११	१८९२।७।१/२
हिमवति.	१५७८।१८	२४९३२।१/२	२५२३०।४	५३५०।१५।१/२
हैमवति.	३६८४।४	३७६७४।१५	३८७४०।१०	६७५५।३
महाहिमवति.	७८९४।१४	५३९३१।६	५७२९३।१०	९२७६।९।१/२
हरिवर्षे.	१६३१५।१५	७३९०१।१२ १/२	८४०१६।४	१३३६१।६।१/२
निषधे.	३३१५७।१७	९४१५६।२	१२४३४६।९	२०१६५।२ १/२
विदेहार्द्धे.	५००००	१००००० .	यो.१५८१११।१६ १/२	१६८८३।१३।१/४

प्रतरगणितानि. क. प्र.

१८३५४८५ १२।६॥
५० वि० ५१२३०७।१२।१० वि० १०२४
३० वि० ३०७३८४॥११६१।१०
३०३२८८८।१२।११
२१४५६९७१।८।१०
६७२५३१४५।५।१०
१९५८६८१८६।१०।५
५४४७७३८७००।७
१४२५४६६५६९।१७।१७
१६३५७३९३०२।१०।१

घनगणितानि वैताढ्य भूमौ.

५१२३०७६।६
३०७३८४५।१५
५१२३०७।१२
सकलवैताढ्यग. ८७०९२२९ क० १४
२१४५६९७१४४१६। प्रतिकला. १२
०

३९१७३६३७३०८। प्रतिकला १२
५७०१८६६२७९७९
०

इति अष्टप्रकारगणितं समाप्तं ॥

हवे ए जीवाप्रमुख गणितनी संग्रह गाथा कहे छे ॥ जोयण सहस्स नवगं, सत्ते वसया हवंति अडयाला ॥ बारसय कला सकला, दाहिण भरहद्ध जीवाउ ॥१॥ दसचेव सहस्साइं, जीवा सत्तय सयाइ वीसाइं ॥ बारसय कला ऊणा, वेयड्ढ गिरिस्स विन्नेया ॥ २ ॥ चउदसय सहस्साइं, सयाइं चत्तारि एग सयराइं ॥ भरहद्धुत्तर जीवा, छच्चकला ऊणिया किंचि ॥ ३ ॥ चउवीस सहस्साइं, नवयसए जोयणाण बत्तीसे ॥ चुल्लहिमवंत जीवा, आयामेणं कलद्धं च ॥ ४ ॥ सत्ततीस सहस्सा, छच्चसया जोयणाण चउ सयरा ॥ हेमवयवासजीवा, किंचूणा सोलस कला य ॥ ५ ॥ तेवन्न सहस्साइं, नवयसया जोयणाण इगतीसा ॥ जीवाय महाहिमवे, अद्धकला छक्कलाउ य ॥६॥ एगुत्तरा नवसया, तेवत्तरिमेव जोयण सहस्सा ॥ जीवा सत्तरस कला, अद्धकला चेव हरिवासे ॥ ७ ॥ चउणवइ सहस्साइं, छप्पन्नहियं सयंकला दोय ॥ जीवा निसहस्सेसें, लक्खं जीवा विदेहद्धे ॥ ८ ॥ ॥ इति जीवासंग्रहगाथा ॥ नवचेव सहस्साइं, छावट्ठाइं सयाइं सत्तेव ॥ सविसेस कलाचेगा, दाहिणभरहद्ध धणुपिट्ठं ॥ ९ ॥ दसचेव सहस्साइं, सत्तेव सया हवंति तेयाला ॥ धणुपिट्ठं वेयड्ढे, कलाय पन्नरस हवंति ॥ १० ॥ सोलस चेव कलाउ, अहियाउ हुंति अद्धभागेणं ॥ बाहावेयड्ढस्सउ, अट्ठासीया तहा चउरो ॥ ११ ॥ चउदस य सहस्साइं, पंचेव सयाइं अट्ठवीसाइं ॥ इक्कारसय कलाउ, धणुपिट्ठं उत्तरद्धस्सं ॥ १२ ॥ भरहद्धुत्तर बाहा, अट्ठारस हुंति जोयण सयाइं ॥ बाणउय जोयणाणिय, अद्धकला सत्तय कलाउ ॥ १३ ॥ धणु हिमवे कल चउरो, पणवीस सहस्स दुसय तीस

हिया ॥ बाहा सोलद्ध कला, तेवन्न सयाय पन्नहिया ॥ १४ ॥ अडतीस सहस्स स
गसय, चत्ताधणुदस कलाय हेमवए ॥ बाहा सत्तठिसए, पणपन्नेतिन्निय कलाउ ॥ १५ ॥
धणु महहिमवे दसकल, दोसय तेणउ सहस्स सगवन्ना ॥ बाहा बाणउयसए, छहत्तरे
नवकलद्धं च ॥ १६ ॥ चुलसी सहसासोलस, धणुहरिवासे कला चउक्कं च ॥ बाहा तेरस
हस्सा, तिसयइगसट्ठा छकल सद्धा ॥ १७ ॥ निसह धणुनवकलालक्खु, सहसचउवीस
तिसय छायाला ॥ बाहा पन्नठिसयं, सहस्स वीस्सं इकलअद्धं ॥ १८ ॥ सोलस सहस्स
अडसय, तेसीयासद्धतेरस कला य ॥ बाहा विदेहमज्झे, धनुपिट्ठं परियरस्सद्धं ॥ १९ ॥
॥ इति धनुःपृष्ठबाहासंग्रहगाथा ॥ लक्खछारसएण, ससहस्सा चउस्सया य पणसीया ॥
बार कल छविकला, दाहिण भरहद्धपयरंतु ॥ २० ॥ सत्तहियातिन्निसया, बार सयस
हस्स पंच लक्खा य ॥ बारसय कला पयरं, वेयड्ढगिरिस्स धरणितले ॥२१॥ जोयण ती
सं वासे, पढमाए मेहलाइ पयरमिमं ॥ लक्खतिगतिसयरिसया, चुलसी इक्कार सक
लाउ ॥ २२ ॥ दस जोयण विक्खंभे, बीयाइं मेहलयपयरमिमं ॥ लक्खोचउवीस सया,
इगसठा दस कलाउय ॥ २३ ॥ अडसीया अठसया, बत्तीस सहस्स तीस लक्खा य ॥
कलबार विकलिगारस, उत्तर भरहद्ध पयरमिमं ॥ २४ ॥ दोकोडि चउद लक्खा, सह
सा छप्पन्न नवसइग सयरा ॥ अठकला दसविकला, पयरमिमं चुल्लहिमवंते ॥ २५ ॥ हे
मवए छक्कोडी, बावत्तरि लक्ख सहस तेवन्ना ॥ पणयालसयं पयरो, पंचकला अठविकला य
॥२६॥ गुणवीसकोडि अडव, न्न लक्ख अडसठि सहस सयमेयं ॥ चुलसीयंदससय कला,
पणविकला पयरुमहहिमवे ॥ २७ ॥ चउवन्नं कोडीउ, लक्खासीयालतिसयरि सह
स्सा ॥ अठसय सतरिसत्तय, कलाउ पयरं तु हरिवासे ॥२८॥ बायालं कोडिसयं, लक्खा
चउपन्न सहस छासठी ॥ पणसयगुणत्तरकल, अठारस्स निसहपयरमिमं ॥ २९ ॥ ते
सठिं कोडिसयं, लक्खा सगवन्न सहस गुणयाला ॥ तिसय छडुत्तर दसकल, पन्नरसकला
विदेहद्धे ॥३०॥ इतिप्रतरप्रमाणसंग्रहगाथा ॥ दस जोयणुसए पुण, तेवीस सहस्स लक्ख
इगवन्ना ॥ जोयण छावत्तरि छ, कलाय वेयड्ढ घणगणियं ॥ ३१ ॥ अठसया पणयाला,
तीसं लक्खातिहत्तरि सहस्सा ॥ पनरस कलायघणो, दसस्सुए होइ बीयम्मि ॥ ३२ ॥
सत्तहिया तिन्निसया, बारसय सहस्सा पंच लक्खाया ॥ अवराय बारसकला, पणुस्स
ए होइ घणगणियं ॥ ३३ ॥ सत्तासीई लक्खा, उणवीसहियाय बिणवइ सयाइं ॥ अउ
णावीसयभागा, चउदस वेयड्ढ घणगणियं ॥ ३४ ॥ हिमवंति डसय चउदस, कोडी छप्प
न्न लक्ख सग नउई ॥ सहसा चउयाल सयं, सोलस कलबार विकलघणं ॥ ३५ ॥ गुणया
ल सयासत्तर, कोडी छत्तीस लक्ख सगतीसा ॥ सहसातिसय अडुत्तर, बारविकलघण

महाहिमवे ॥३६॥ भगवन्नसहस अद्दा,र कोडि बासद्दि लक्क गुणतीसं॥सहसानव सयएगु, णसीइनिसहस्स घणगणियं ॥ ३७ ॥ इति घनगणितसंग्रहगाथा ॥ इति जंबुद्विपाधिकारः॥

हवे लवणसमुद्रनो अधिकार कहे छे.

जेम गाय पाणी पीवाने तलावमां प्रवेश करे, तेवारें तेनी पाछली बाजु ऊंची होय, अने आगली बाजु नीची होय तेने गोतीर्थ कहीयें, तेम लवण समुद्रमांहे पण एक जंबुद्वीपनी जगतीथकी अनें बीजो पहेली तरफथी लवणसमुद्रनी जगती थकी एम बे पासाथी नीकलीने वचमां पंचाणुं पंचाणुं हजार योजन सुधी पाछली भूमि ऊंची अने आगलीभूमि नीची छे, जगतीथकी लवणसमुद्रनी दिग्माल तरफ जातां थोडी थोडी जलवृद्धि थतां ज्यां पंचाणुं हजार योजन थाय छे, त्यां समभूतलथकी सातशें योजन पाणीनी ऊंची वृद्धि छे अने एक हजार योजन पाणी ऊंडुं छे.

नीचें तथा उपर दश हजार योजन पहोली अनें मूलथकी सत्तर हजार योजन ऊंची, एवी लवणसमुद्रनी मध्यमां पाणीनी शिखा छे, तेनी उपर बे गाउ ऊंची पाणीनी वेल छे ते एक अहोरात्रमां बे वखत वधे छे.

लवणसमुद्रने विषे वचमां पाणीनी मेखलायें चार दिशिने विषे वज्रमय चार पाताल कलशा छे, ते कलशानी एक हजार योजन ठींकरी जाडी छे. तथा नीचें अने उपर दश हजार योजन पहोला छे, अने वचमां एक लाख योजननुं पेट पहोलुं छे तथा ते कलशा एक लाख योजनभूमिमांहे ऊंडा छे. ते चारे पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक वडवामुख, बीजो केयूप, त्रीजो यूप, चोथो ईश्वर, ए चार नामें चार कलशा जाणवा.

हवे जंबूद्वीपथकी पंचाणुं हजार योजन जातां लवणसमुद्रना दश हजारयोजन विस्तारवाली पाणीनी शिखा आवे, तिहां बे लाख, नेवुं हजार योजन विष्कंभ छे. तेनो वर्ग करी ते वर्गने दशें गुणतां जे राशि आवे, तेनुं मूल शोधीयें. तेवारें (९१७०६०) योजन मध्यपरिधि थाय. तेमांथी चार दिशाना चार कलशें चालीश हजार योजन रुंध्या छे, ते बाद करतां बाकी (८७७०६०) योजन रहे, तेने चारे भागें वहेंचतां २१९२६५ योजन थाय, एटलो एकेकी दिशिना महोटा कलशनुं मांहोमांहे अंतर थाय, ते अंतरना योजनमांहे वली एकेकी दिशायें नव नव श्रेणी न्हाना पाताल कलशोनी छे, तेणें (२१५०००) योजन रुंध्या छे, अने (४२६५) योजन ते कलशनी ठींकरीने जाडपणे रुंध्या छे. तिहां प्रथम श्रेणिमां २१५ बीजीमां २१६ त्रीजीमां २१७ एम एकेको कलश वधारतां यावत् नवमी श्रेणिमां (२२३) कलशा छे, ते नव श्रेणिनो सरवालो करतां (१९७१) कलशा एक दिशिना अंतरने विषे छे, तेवी चार दिशिना कलश मेल

वीयें, तेंवारें (७८८४) कलश थाय. ते प्रत्येकनी ठींकरी दश योजन जाडी छे, अने एक शो योजन प्रमाण नीचें तथा उपर पहोला छे, अने एक हजार योजन भूमिमांहे उंमा छे, तेटलाज मध्यमां पेटें पहोला छे. एवा न्हाना कलश ते जे स्थानकें महोटा कलशें भूमि रुंधी नथी तेवा जलमेखलाना प्रदेशें ठामें ठामें ए कलशा छे.

महोटा चार पाताल कलशाना अनुक्रमें पूर्वदिशिथी दक्षिणावर्त्त लेतां एक काल, बीजो माहाकाल, त्रीजो वेलंब, अने चोथो प्रभंजन, ए चार नामें चार अधिष्ठायिक देवता छे तेनुं एक पल्योपमायु छे. अने बीजा न्हाना कलशना अधिष्ठायिक देवोनुं अर्द्धपल्योपमायु छे.

महोटा पातालकलशाने अधोभागें वायु छे, अने वचला भागमां वायु तथा पाणी बेहु छे अने उपरला भागमां एकलुं पाणीज छे. ते वायु एक अहोरात्रमां पाणीने बे वखत क्षोभ पमाडे छे, तेथी पाणीना वेलनी वृद्धि थाय छे, जेवारें पाणीना जोरथी कलशा उभराय छे, तेवारें समुद्रनुं पाणी वधे छे, एवो सहेजथी चाल छे.

बहेंतालीश हजार नागकुमार देवता ते मांहे पेसती पाणीनी वेलने धरी राखे छे, वली शाठ हजार नागकुमार देवता तो उपरनी बे कोशथी उपरांत जे वेल वधे छे, तेने वारी राखे छे. तथा बहोंतेर हजार नागकुमार देवता ते बाहिरली धातकीखंडमां प्रवेश करती वेलने निवारण करे छे. ए रीतें (१७४०००) नागकुमार देवो पाणीनी वेलने धरी राखे छे, माटें ए वेलंधर देवो कहेवाय छे.

जंबुद्वीपनी जगतीथकी पूर्वादि चारे दिशायें (४२०००) योजन लवणसमुद्रमांहे जातां अनुक्रमें पूर्वदिशियें गोथुभनामें आवास पर्वत छे, दक्षिणें दिग्भास नामें आवास पर्वत छे, पश्चिमें शंख नामें आवास पर्वत छे, अने उत्तरें दिक्सीम नामें आवास पर्वत छे. ए चारे दिशिना पर्वतोने विषे अनुक्रमें एक गोथूभ, बीजो शिवदेव, त्रीजो शंख अने चोथो मणोसिल, ए नामें वेलंधर देवताना राजा एवा नागकुमार देवो रहे छे. जे दिशियोने विषे रहे छे, तेने वेलंधर कहीयें अने विदिशियोने विषे रहे तेने अनुवेलंधर कहीयें.

ईशान प्रमुख चार विदिशिने विषे कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलास अने अरुणप्रभ, ए वे नामें चार आवास पर्वत छे तेने विषे अनुक्रमें कर्कोटक, कर्दम, कैलास अने विद्युत्प्रभ एवे नामें चार वेलंधर देवोना राजा नागकुमार देवता रहे छे.

ए वेलंधर अने अनुवेलंधर नामें जे आवास पर्वतो छे ते (१०२२) योजन मूलने विषे पहोला छे, अनें (४२४) योजन शिखरने विषे पहोला छे, तथा (१७२१) योजन उंचा छे, ते आठे पर्वत सर्व वेदिका अने वनखंम तेणें करी सहित छे, तथा पूर्वदिशिथी अनु

क्रमें सुवर्ण, अंकरत्न, रूपुं, अने स्फाटिकरत्नना गोथूनादिक चार पर्वत छे अने विदिशिने विषे जे चार पर्वत छे ते रत्नमय जाणवा.

ए आठ पर्वत जंबुद्वीपनी दिशा तरफ ८८९ योजननी उपर एक योजनना पचाणुं जाग करीयें, तेवा चालीश जाग अधिक एटला पाणीनी उपर देखाय छे, अने मांहेली लवण समुद्रनी शिखानी दिशिथी जोतां ८८३ योजननी उपर एकयोजनना पंचाणुं जाग करीयें, तेवा (७७) जाग जेटला पाणीनी उपर देखाय छे.

लवणसमुद्र मध्यें पंचाणुं हजार योजने जतां सातशें योजननी जलवृद्धि छे. तो बहेंतालीश हजार योजन जइयें, त्यां वेलंधर पर्वत छे, ते स्थानकें केटली जलवृद्धि होय? ते जाणवानी रीति बतावे छे. आहींयां प्रथम श्रेणि पंचाणुं हजारनी, बीजी सातशेंनी, अने त्रीजी श्रेणी बेहेंतालीश हजारनी, एवी आंकनी त्रण श्रेणि मांमीयें, ए त्रण आंकनी राशि मांम्या पछी ते राशि "एणमच्छिन्न ए" गाथाना विधियें गणीयें, ते आवी रीतें के वचमांनी जे सातशेंनी श्रेणि तेने छेली बहेंतालीश हजारनी श्रेणीयें गुणीयें, तेवारें बे क्रोड ने चोराणुं लाख थाय. पछी पहेली श्रेणी जे पंचाणुं हजारनी छे, तेनी साथें जाग वेहेंचीयें, तेवारें त्रणशें ने नव योजन उपर एक योजनना पंचाणुं जाग करीयें, तेवा पीस्तालीश जाग आवे, ए रीतें संजूतलें जंबुद्वीपें जोतां बहेंतालीश हजार योजनें एटली जलवृद्धि होय.

अने पंचाणुं हजार योजने एक हजार योजन लवण समुंद्र उंमो छे, तो बहेंतालीश हजार योजने केटलो उंमो छे? तेनुं गणित आवी रीतें करवुं, के बहेंतालीश हजार योजनने हजारनें आंकें गुणीयें, तेवारें चारकोडीने वीश लाख थाय. तेने पंचाणुं हजार जागें वेहेंचीयें, तेवारें चारशें ने बहेंतालीश योजन उपर एक योजनना पंचाणुं जाग करीयें, तेवा दश जाग आवे. एटलो समुद्र उंमो छे, पछी जलवृद्धि तथा उंमपणुं ए बे एकगं करीयें तेवारें सातशें ने एकावन्न योजन उपर एक योजनना पंचाणुं जाग करियें, तेवा पंचावन जाग थाय, ते सतरशें ने एकवीश योजन वेलंधर पर्वतनुं उंचपणुं छे, तेमांहेथी बाद करीयें तेवारें नवशें उगणोतेर योजन, अने उपर पंचाणुआ चालीश जाग रहे. एटलो जंबू द्वीपथी जतां वेलंधर पर्वत पाणीथी उंचो छे.

हवे त्यां पर्वतनो विस्तार केटलो छे? ते आणवानो विधि कहे छे. जलवृद्धि अने उंमपणुं ए बे सातशें एकावन योजन उपर पंचाणुआ पंचावन जाग छे, ते सर्वना पंचाणुआ जाग करीयें, तेवारें एकोतेर हजार ने चारशें जाग थाय, पछी "विछारङ्गविसेसो" ए करण गाथायें करतां पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बावीश योजन छे,

अने शिखर विस्तार चारशें ने चोवीश योजन छे, ते अधिका मांहेथी ठंबुं काढतां बाकी पांचशें ने आठाणुं रहे, ते पर्वतनुं सत्तरशें ने एकवीश योजन उंचपणुं छे, तेनी साथें नाग वेहेंचतां नाग पहोंचे नही, ते माटें एकोतेर हजार ने चारशें एटली जल वृद्धि, तथा उंचपणानां पंचाणुआ नाग छे, तेने पांचशें ने अठाणुं साथें गुणीयें, तेवारें चार क्रोड छवीश लाख सत्ताणुं हजार ने बशें थाय, तेने पर्वतना उंचपणाना सत्तरशें ने एकवीश योजन साथें नाग वेहेंचीयें, तेवारें चोवीश हजार आठशें ने नव आवे, शेष नवशें ने अगीयार वधे. ते माटें ते चोवीश हजार आठशें ने नव जे छे, तेमांहे एक ने लीयें. पछी पंचाणुं नागें वेहेंचीयें, तेवारें बशें ने एकशठ योजन उपर पंचाणुआ पं दर नाग आवे. हवे पर्वतनो मूल विस्तार एक हजार ने बावीश योजन छे. तेमांहेथी जेवारें ए बशें एकशठ योजन, अने पंचाणुआ पन्नर नाग काढीयें, तेवारें सातशो ने साठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी नाग रहे, एटलो पर्वतनो विस्तार जाणवो.

हवे मांहेली दिशियें जलनी वृद्धि आणवानें अर्थे ए पर्वतना विस्तारनो आंक जे सातशें शाठ योजन उपर पंचाणुआ एंशी नाग छे, तेने पंचाणुयें गुणीयें, तेवारें बहो तेर हजार बशें ने एंशी एटला पंचाणुआ नाग थाय. पछी एक पंचाणुं हजारनी बीजी सातशेंनी, अने त्रीजी बहोंतेर हजार बशें ने एंशीनी, एवा आंकनी त्रण राशि मांडियें तेमां वचेंनी जे सातशेंनी श्रेणी छे, तेनी साथें जेवारें छेहली श्रेणी गुणीयें, तेवारें पांच क्रोड पांच लाख ने छन्नुं हजार एटला प्रतिनंग थाय. पछी जे पहेली राशि पंचाशे ह जारनी छे, तेना प्रतिनंग करवा माटें तेने पंचाणुयें गुणीयें, तेवारें नेवुं लाख ने पचीश हजार थाय. एटला प्रतिनंगें उपरना प्रतिनंगनी राशि वेहेंचीयें, तेवारें योजन पांच आवे, शेष पांच हजार चारशें ने एकोतेर वधे. तेने पंचाणुं नागें वेहेंचतां सत्तावन्न कला आवे, शेष छप्पन उगरे, ते माटें एक नेलीयें तेवारें कला अठावन्न थाय, एटले पांच योजन उपर अठावन्न कला एटली मांहेली दिशियें जलवृद्धि छे, ते जलथकी पर्वतनुं उंचपणुं नवशें उगणोतेर योजनने उपर पंचाणुआ चालीश नाग छे,तेमांहेथी पांच यो जन ने आठावन्न नाग बाद करीयें, तेवारें नवशें त्रेशठ योजन उपर पंचाणुआ सत्त्यो तेर नाग होय. एटला लवण समुद्रनी शिखादिशिथी जोतां वेलंधर पर्वत उंचा छे. तथा ए आठ पर्वतना मूलने विषे त्रण हजार बशें ने बत्रीश योजननो परिधि छे, अने शिखरने विषे तेरशें ने चौद योजननो परिधि छे, हवे मांहोमांहे ते पर्वतनो आंतरो आणवानो विधि कहे छे.

जंबू द्वीपनी जगतीथकी बहेंतालीश हजार पांचशें ने अगीयार योजन लवण समुद्र मांहे गया पछी पर्वतना विष्कंननुं मध्य छे, त्यां समुद्रनुं वृत्तविष्कंन एक लाख पं

चाशी हजार ने बावीश योजन छे, तेनो परिधि पांच लाख पंचाशी हजार ने एकाणुं योजन थाय, ते मांहेथी आठ वेलंधरनुं विष्कंभ आठ हजार एकसो ने छहोंतेर योजन बाद करियें, तेवारें पांच लाख छहोंतेर हजार नवशें ने पन्नर योजन बाकी रहे; तेने आठ जागें वेहेंचीयें, तेवारें बहोंतेर हजार एकशो ने चउद योजन उपर एक योजनना तेर जाग करियें, तेवा आठ जाग एटलुं प्रत्येक वेलंधर पर्वतने वचें अंतर जाणवुं ॥२१॥

हवे छप्पन्न अंतरद्वीपनी विवक्षा करे छे.

हेमवंत पर्वतना बन्ने छेडाने विषे समुद्रमांहे बे बे दाढा विदिशिनें विषे नीकली छे, ते प्रत्येक दाढाने विषे सात सात अंतरद्वीप छे, ते अंतरद्वीपमांहे पहेला चार अंतर द्वीप जगतीथकी त्रणशें योजन दूर छे, तो तेनो विस्तार पण एकेक अंतरद्वीपनो त्रण शें योजन प्रमाणें जाणवो. बीजुं चतुष्क जगतीथकी चारशें योजन दूर छे, तो तेनो विस्तार पण चारशें योजन छे, एम सर्वने विषे एकशो योजननी वृद्धि करतां सातमुं अंतरद्वीपनुं चतुष्क जगतीथकी नवशें योजन दूर छे, ते एकेंकानो विस्तार पण नवशें योजन प्रमाण छे. ते यंत्रथी जाणवो.

हवे ए अंतरद्वीप, पाणी उपर केटला उंचा छे? ते कहे छे.

अंतरद्वीपनुं पहेलुं चतुष्क ते बाहेर जंबुद्वीपनी दिशायें अढी योजन उपर पंचाणुं आ वीश जाग एटलुं पाणीथी उपर उंचुं जाणवुं, बीजा अंतरद्वीपोनां छ चतुष्क अढी योजन उपर पंचाणुआ नेवुं जाग पाणीथी उंचा जाणवा, अने लवणसमुद्रनी शिखानी दिशियें बे कोश प्रमाण सर्वद्वीपनो प्रकाश जाणवो. ते यंत्रमांहे लख्यो छे ॥ २१२ ॥

हवे अंतरद्वीपनां नाम कहे छे.

सर्व अंतरद्वीप, वेदिका अने वनखंडें करी मंडित जाणवा. अंतरद्वीपना पहेला चतुष्कने विषे ईशान कूणथी दक्षिणावर्त्त गणतां एक रुचक बीजुं आजासिक, त्रीजुं वैषाणिक, चोथुं लांगुलिक ए चार नाम अनुक्रमें जाणवां. अंतरद्वीपना बीजा चतुष्कनेविषे हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने शष्कुलीकर्ण, एवां नाम जाणवां. त्रीजा चतुष्कने विषे आदर्शमुख, मेंढमुख, अयोमुख, अने गोमुख, एवे नामें चार द्वीप छे. चोथा चतुष्कने विषे हयमुख, गजमुख, हरिमुख अने व्याघ्रमुख, एवा चार नामें चार द्वीप छे. अने अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, अकर्ण अने कर्णप्रावरण, एवे नामें पांचमा चतुष्कनेविषे अंतरद्वीप जाणवा. उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख अने विद्युद्दंत. एवे नामें छठा चतुष्कना अंतर द्वीप छे. सातमा चतुष्कनेविषे घनदंत, लष्टदंत, गूढदंत, अने सिद्धदंत, एवां चार नाम जाणवां. ए अठावीश अंतरद्वीपनां नाम कह्यां.

हवे अंतरद्वीपनो परिधि कहे छे. पहेला चतुष्कने विषें नवशें ने ओगण पचास योजननो परिधि छे, पछीना छ चतुष्कने विषे प्रत्येकें त्रणसो ने सोल योजननी वृद्धि करीयें ॥ यथा॥ सोलुत्तर तिसयजुय, सपढम परिहिं बराबर चउक्कं ॥ पढमे नवगुणवन्ना, सावीए बारपण सठी ॥ १ ॥ तइए पनरिक्कारसि, चउत्थए पुणअढार सगणउआ ॥ जोयण बावीस सया, तेरहिया पंचम चउक्कं ॥ २ ॥ पणवीस इगुणतीसा, छठे चरमेडवीस पणयाला ॥ परिहीअंतरदीवा, सत्तचउक्काण नायव्वा ॥ ३ ॥ २१७ ॥

ए पूर्वोक्त प्रकारें वली शीखरी पर्वतने विषे पण ईशानकूण प्रमुख चार विदिशिने विषे चार दाढा छे, अने एकेकी दाढायें सात सात अंतरद्वीप छे, तेवारें चार दाढाना अठावीश थाय. ए रीतें हेमवंत तथा शिखरीना एकठा गणतां सर्व मलीने छप्पन्न अंतरद्वीप जाणवा. ए सर्व छप्पन्न अंतरद्वीपने विषें युगल मनुष्य रहे छे. तेनुं पल्योपमने असंख्यातमे नागें आयुष्य जाणवुं.

ते युगलीयाना आठशें धनुष्यनां उंचां शरीर छे, वली तेना शरीरने विषें चोसठ पांसली छे. वली आहारनी इछा एकांतरें उपजे छे, अने ओगण्याएंशी दिवस लगें अपत्य पालन करे छे.

मेरुपर्वतथकी पश्चिमदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे सुस्थित एवे नामें जे लवणसमुद्रनो स्वामी देव छे, तेनो गौतम एवे नामें एक द्वीप छे. ते गौतमद्वीपनी बन्ने बाजु जंबुद्वीपना बे सूर्य अने लवणसमुद्रना बे सूर्य, तेना बे बे द्वीप जाणवा. एटले वचमां गौतमद्वीप छे, अने बन्ने पासें बे बे सूर्यद्वीप छे.

जगतीथकी द्वीपनुं वेगलाइपणुं अने द्वीपनो मांहोमांहे अंतर तथा द्वीपनो विस्तार ते बार हजार योजन जाणवो. वली ए प्रकारेंज पूर्वदिशिने विषे जगतीथकी बार हजार योजन लवणसमुद्रमांहे बे चंद्रमा जंबुद्वीपना अने बे चंद्रमा लवणसमुद्रना. ए रीतें चार चंद्रमाना चार द्वीप छे.

ए प्रकारें बाहेरथकी धातकीखंडने विषे तथा मंदरपर्वतथकी पूर्वपश्चिम दिशें लवणसमुद्रनी जगतीथकी बार हजार योजन लवण समुद्रमांहे शिखानीदिशि फरे तिहां बे चंद्रमा लवण समुद्रना, अने छ चंद्रमा धातकीखंडना, ए रीतें आठ चंद्रमा ना द्वीप पूर्वदिशियें छे, तथा बे सूर्य लवणसमुद्रना, अने छ सूर्य धातकीखंडना ए वं आठ सूर्यना द्वीप पश्चिम दिशें छे.

ए चंद्रमा अने सूर्यना द्वीप पाणी उपर केटला छे ? ते कहे छे.

ए पूर्वें कह्या जे चंद्रमा अने सूर्यना द्वीप ते जंबूद्वीप तथा धातकीखंडनी दिशिथी जोतां साडी अठ्याशी योजन उपरें पंचाणुआ चालीश नाग एटला पाणीथी उपर छे,

ते जाणवाने अर्थे प्रथमनी पेरें आंकनी त्रण राशि मांमीयें. एक पंचाणुं हजार, बीजी सातशें, अने त्रीजी चोवीश हजार, सुलनपणा माटें बिंड टालीने वचेनी राशि, ठे हेली राशि सायें गुणतां सोल हजार ने आठसो थाय, तेने पहेली राशिना पंचाणुं ह जार ठे, तेना बिंड टालतां पंचाणुं नागें वेहेंचीयें, तेवारें एकसो ठोंतेर योजन उपर पंचाणुआ एंशी नाग आवे. एटली लवणसमुड्नी शिखादिशियें जलवृद्धि ठे. तेनुं अर्द्ध अठ्याशी योजन थाय ठे. तेनी सायें पाणीथकी बाहेरनी उंचाइना बे कोश नेलीयें, तेवारें साडी अठ्याशी योजन उपर पंचाणुआ चालीश नाग. एटला जंबुद्वीप तथा धातकीखंमनी दिशियी जोतां पाणी उपर द्वीप ठे. वली मांहेनी लवणशिखानी दि शाथकी जोतां बन्ने बाजुयें बे कोश पाणीथकी सर्व द्वीप उंचा ठे. हवे द्वीपनो प रिधि कहे ठे ॥ उक्तं च ॥ सगतीस सहस्स नवसय, डयाल परिहिं जलाडकोस बहिं ॥ उ च्चा अंतो जोयण,अडसी पण नउअ चत्तंसा ॥ १ ॥

हवे ते चंड सूर्यद्वीपमांहे प्रासादनां प्रमाण कहे ठे.

ए चंड सूर्यद्वीपने विषे कुलगिरिना प्रासाद सरखा साडीबासठ योजन उंचा, अने सवाएकत्रीश योजन पहोला, एवा रमवा योग्य पोतपोताना प्रभु एटले स्वामी जे सुस्थि तदेव तथा चंड सूर्य, तेमना प्रासाद ठे, तथा ए सर्व चंडसूर्य प्रमुख जे ज्योतिषीयोनां विमान ठे ते स्फाटिक रत्ननां ठे. तथा लवणसमुड्ने विषे जे ज्योतिषी ठे, तेनां विमान दगपाटन जे स्फाटिकरत्न तेनां ठे, ते विमानने संयोगें लवणसमुड्नो पाणी फाटे ठे, ए रत्ननो जातिगुणज ठे. वली ते रत्ननी कांति उंची लवणशिखाने विषे पण प्रकाश करें ठे. लवणसमुड्नें विषे चार चंड्मा, चार सूर्य, त्रणशें नें बावन ग्रह, एकशो ने बार न क्षत्र, अने बे लाख सडसठ हजार ने नवशें एटली तारानी कोडा कोडी जाणवी. लव णसमुड्नो परिधि पन्नर लाख एक्याशी हजार एकसो ने उंगणचालीश योजन जाण वो. समुड्नी जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर, त्रण लाख पंचाणुं हजार बशें ने सवाएंशी यो जन ठे. हवे लवणसमुड्नुं प्रतरघन करवानी गाथा लखे ठे ॥ दससहस्स रहियविछर, अर्द्ध दस सहस संजुअं तेण ॥ गणियाय मज्ज परिही, पयरो लवणस्सिमो होइ ॥१॥ नव नवइ कोडिसया, इगसठी कोडिसत्तरस लरका ॥ पन्नरसहसाय इमो, घणोसव्वे सत्तर सहस्स गुणो ॥ २ ॥ सो सोलकोडिकोडी,तिणवइलरकागुणचत्त सहसाया ॥ नवसय को डीपन्नर, कोडी पन्नास लरकाय ॥ ३ ॥ इति लवणसमुड्राधिकारः ॥

हवे धातकीखंम नामा बीजा द्वीपनो अधिकार वखाणे ठे.

लवणसमुड्नी जगतीथकी बाहेर वलयने आकारें चार लाख योजन पहोलो ए

वो बीजो धातकीखंम नामें द्वीप छे, ते धातकीखंम, इस्कार नामें जे बे पर्वत तेणें बे जागें वेहेंच्यो छे, एटले एक पूर्व धातकीखंम, अने बीजो पश्चिम धातकीखंम. ए बे जाग जाणवा. हवे ते इस्कार पर्वत दक्षिणदिशें, अने उत्तरदिशियें, लांबा छे. वली एक हजार योजन मूलनें विषे, अने शिखरने विषे सरखा पहोला छे. तथा पांचशें योजन उंचा छे. लवणसमुद्रनी जगतीना दक्षिण उत्तरदिशिना वैजयंत, अपराजित एवे नामें जे बारणां छे, तेमांथी इषु एटले बाणने आकारें चार लाख योजन धातकी खंमना विस्तार सुधी लांबा निकल्या छे, एवा ते पर्वतो छे.

हवे धातकीना बे खंमने विषे कुलगिरि तथा क्षेत्र वखाणे छे.

धातकी खंमना पूर्व अने पश्चिम दिशाना एकेका खंमनेविषे छ छ कुलगिरि जाणवा, अने सात सात क्षेत्र जाणवां. ते जेम गाडीनां पइडांने विषे, वच्चेंनी नाभिथकी आराना आंतरा होय, तेम जंबुद्वीप अने लवण समुद्र जे छे, ते नाभि सरखा छे. अने धातकी खंममांहे जे इखुकार तथा कुलगिरि प्रमुख पर्वत छे, ते आरा सरखा छे, अने क्षेत्र जे छे ते आराना विवर एटले आंतरा सरखा छे. वली ते कुलगिरि इस्कार मूलनेविषे अने छेहडाने विषे सरखा पहोला छे. वली वासक्षेत्र जे छे, ते लवणसमुद्रथकी मांमीने पिहुल पिहुलतर छे.

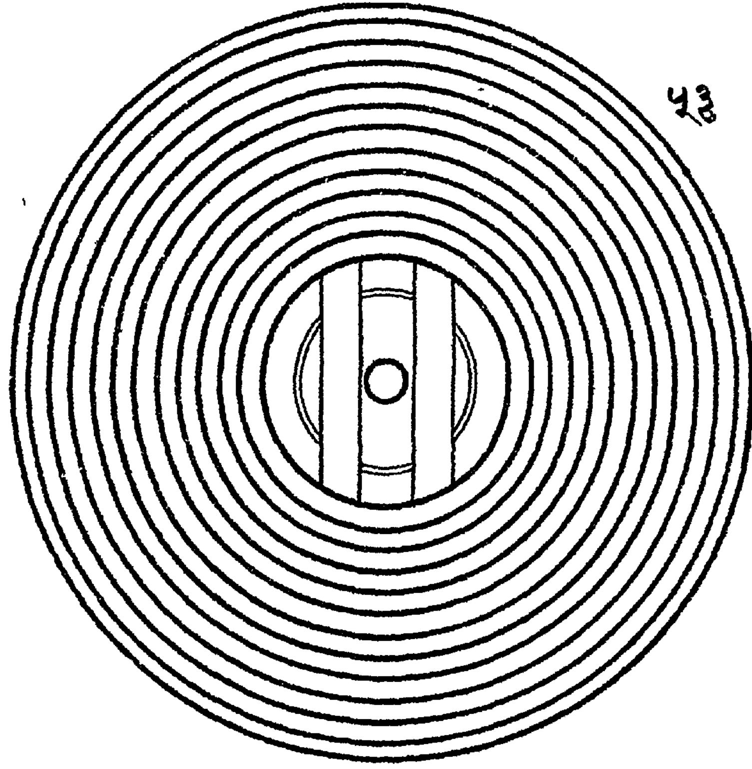
हवे धातकीखंममांहे जे पदार्थ जंबुद्वीप मांहेला पदार्थ सरखा छे, ते कहे छे.

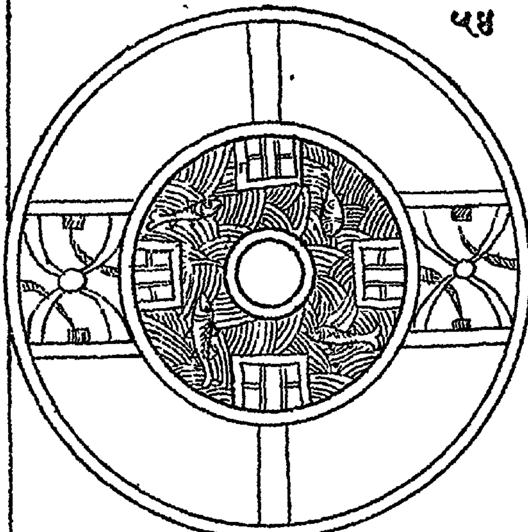
धातकी खंमनेविषे जे द्रह, कुंमनुं उंमपणुं तथा मेरुपर्वत टालीने कुलगिरि, गयदंतगिरि, वक्षस्कार, यमलगिरि, कांचनगिरि अने वैताढ्य प्रमुख पर्वतनुं उंचपणुं, तथा सुमेरुपर्वत वर्जिने वैताढ्यनो विस्तार अने बीजा वैताढ्य प्रमुख वृत्त पर्वतनो विस्तार ते सर्व पहेला कह्या छे, तेना सरखो जाणवो, एटले जंबुद्वीपनी पेरें जाणवो.

हवे धातकीखंमनें विषे बे मेरु छे, ते वखाणे छे.

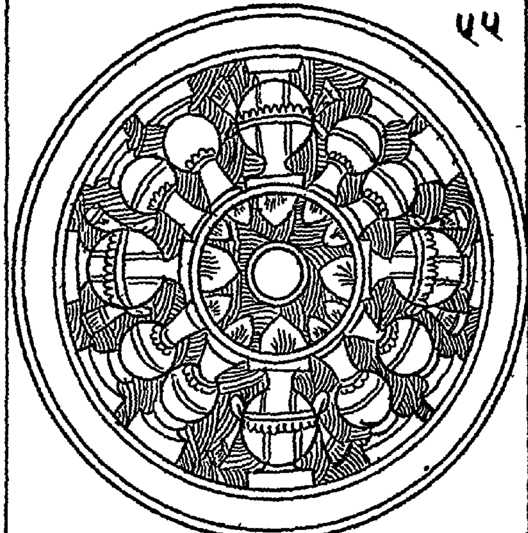
धातकीखंमना जे बे मेरु पर्वत छे, ते जंबुद्वीपना मेरु सरखा जाणवा. पण एटलुं विशेष छे के, जंबुद्वीपना मेरुनी भूमिथी पांचशें योजन उपर चडियें, त्यां नंदनवन छे; तेथकी उपर साडीबासठ हजार योजन चडीयें. तेवारें सौमनस्य वन छे, त्यांथकी छत्रीश हजार योजन उंचुं पांडुक वन छे, अनें धातकीखंमना मेरुनुं एटलुं विशेष जे भूमिथकी पांचशें योजन उंचुं नंदनवन छे, ते थकी साडीपंचावन हजार योजन उंचें चडीयें, त्यां सौमनस्य वन छे, त्यांथी अठ्यावीश हजार योजन उंचा चडीयें, त्यां पांडुक वन छे, ए चोराशी हजार योजन थया. अने एक हजार योजन भूमिमांहे उंमा छे, एम सर्व मली पंचाशी हजार योजन उंचा छे.

तथा नव हजार ने पांचशें योजन मूलमां नीचें विस्तार छे, अने नव हजार ने चारशें

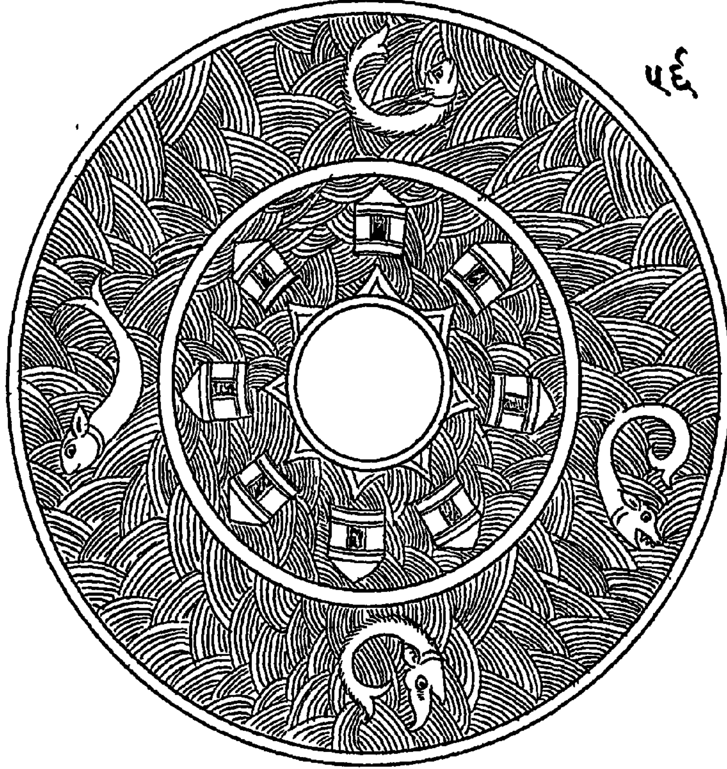




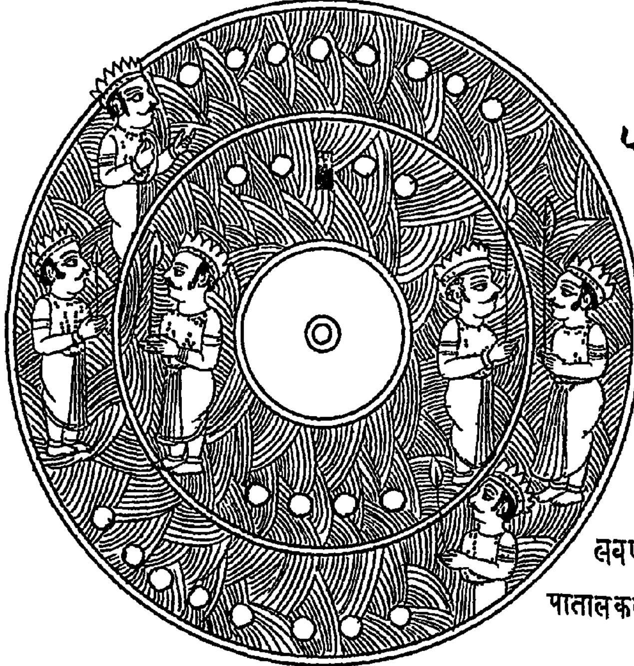
लवण समुद्र अने धातकी खंडनी स्थापना.



लवण समुद्रे पाताल कलश स्थापना.



लवण समुद्र अने तदन्तरगत वेलंधरावास
पर्वत स्थापना.



लवण समुद्र गत
पातालकलश संख्या स्थापना

योजन नूतल विस्तार छे, तथा नव हजार ने साडा त्रणशें योजन नंदनवननो विस्तार जाणवो, त्रण हजार ने आठशें योजन सौमनस्य वननो विस्तार जाणवो, अने एक हजार योजन शिखानो विस्तार जाणवो.

हवे वांछित स्थानकने विषे विस्तार आणवानो विधि आवी रीतें केः—नूतलनुं पहोलपणुं नव हजार ने चारशें योजन छे, तेमांथी शिखरनुं पहोलपणुं एक हजार योजन काढीयें, तो बाकी आठ हजार ने चारशें योजन रहे. ते नूतलथकी उंचुं चोराशी हजार योजन छे, तेनी साथें नाग आपतां, नाग पहोंचे नहीं. तेमाटें आठ हजार चारशेंने दशगुणा करियें, तेवारें चोराशी हजार थाय, ते उंचपणाना चोराशी हजार योजन साथें गुणीयें, तेवारें एक योजननो दशमो नाग आवे. तो नूतलथकी जेवारें एक योजन उंचे चडीयें, तेवारें विष्कंनमांहे एक योजनना दश नाग मांहेलो एक नाग घटे अने उतरतां वधे, एम प्रथमनी पेरें जाणवुं.

प्रथम जंबूद्वीपने विषे जे नदी, प्रपातकुंम, कुंममांहेला द्वीप, वनमुख, द्रह, लांबा पर्वत तथा कमल, एटला पदार्थनो विस्तार तथा नदीनुं उंमपणुं, वली द्रहनुं लांबपणुं जे कह्युं, तेथी आ धातकीखंमने विषे बमणुं जाणवुं.

हवे नद्रशालवननुं परिमाण कहे छे.

एक लाख सात हजार आठशें ने उंगण्याएंशी योजन मेरुपर्वतथकी पूर्व पश्चिम दिशायें लांबपणे नद्रशालवन छे, एने जेवारें अठ्याशी नागें वेहेंचीयें, तेवारें बारशें ने छवीश योजन कांइक उणा आवे; एटलुं मेरुथकी नद्रशालवन उत्तर तथा दक्षिण दिशा पहोलुं छे. कुरुक्षेत्रनी जीवा बे लाख त्रेवीश हजार एकशो ने अठावन योजन जेटली जाणवी.

हवे गयदंत गिरि वखाणे छे.

पूर्व अने पश्चिम दिशाना बेहु धातकीखंमने विषे बाहेरनी दिशायें धातकीखंमनी जगतीना पासाना चार गयदंत गिरि छे. ते पांच लाख उंगणोतेर हजार बशें ने उगणसाठ योजन लांबा जाणवा. अने बीजा जंबुद्वीपनी जगतीनी दिशाना मांहेला चार गयदंत गिरि जे छे, ते त्रण लाख छप्पन हजार बशे ने सत्तावीश योजन लांबा जाणवा. तथा एक बाहेरनो गयदंतगिरि, अने एक मांहेनो गजदंतगिरि, ए बन्ने एकठा करीयें, तेवारें कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ थाय, तेनुं प्रमाण नव लाख पच्चीश हजार चारशें ने छयाशी योजन थाय. एटलुं धातकीखंमने विषे कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं ॥ २२१ ॥

हवे वक्खस्कार अंतर नदी प्रमुखनां प्रमाण कहे छे.

कुलगिरि तथा गजदंतनां प्रमाण कह्यां अने तेथकी अन्य जे वक्खस्कार, अंतरन

दी विजय, अने वनमुख तेनो विस्तार ते क्षेत्रना अनुमानें करी जाणवो. एटले पूर्व धातकी खंम तथा पश्चिमधातकी खंमनुं बन्ने इखुकार दिशियें जेवुं क्षेत्रनुं लांबपणुं छे, तेवुं वक्षस्कारादिकनुं पण लांबपणुं जाणवुं. तथा पूर्व धातकीखंमनां सात क्षेत्र, अने पश्चिम धातकीखंमनां सात क्षेत्र, ते चार लाख योजन लांबां जाणवां.

हवे वासक्षेत्रना विजयनो विस्तार कहे छे.

क्षेत्रना आंक जे एक, चार, सोल ने चोशठ. एनी सायें ध्रुवांक गणीयें, पछी बशें ने बार जागें वेहेंचीयें, तेवारें वासक्षेत्रनो सर्वत्र आदि, मध्य अने अंत्यनो विस्तार होय.

हवे धातकी खंमना ध्रुवांक कहे छे.

प्रथम क्षेत्रना चउद लाख बे हजार बशें ने सत्ताणुं एटला ध्रुवांक जाणवा. तथा मध्यक्षेत्रना छवीश लाख सडसठ हजार बसो ने आठ ध्रुवांक जाणवा. तथा अंतक्षेत्रना ध्रुवांक ३९३२११९ जाणवा.

अंहीयां प्रथम क्षेत्रना ध्रुवांक जे चौद लाख बे हजार बशें ने सत्ताणुं छे अने क्षेत्रनो आंक एक छे, माटें एकें गुणीयें, तेवारें तेहीज आंक आवे. तेने बशें ने बार जागें वेहेंचतां छ हजार छसो ने चौद योजन जाझेरा, एटलो जरत तथा ऐरवतनो आदिविस्तार जाणवो. अने बार हजार पांचशें ने एक्याशी योजन जाझेरो मध्यविस्तार छे, तथा अढार हजार पांचशें ने सुडतालीश योजन जाझेरो अंत्यविस्तार छे.

हेमवंतने ऐरण्यवतनो आदिविस्तार छवीश हजार चारशें ने अठावन योजन जाझेरो छे, मध्यविस्तार पचास हजार त्रणशें ने चोवीश योजन जाझेरो छे अने अंत्यविस्तार चम्मोतेर हजार, एकसो ने नेवुं योजन जाझेरो छे ए सर्व चारें गुणतां चौगुणा थया.

हरिवर्ष अने रम्यक क्षेत्रनो आदिविस्तार एक लाख पांच हजार आठशें ने तेत्रीश योजन जाझेरो छे, अने मध्यविस्तार बे लाख एक हजार बशें ने अठाणुं योजन जाझेरो छे, तथा अंत्यविस्तार बे लाख, छन्नुं हजार, सातशें ने त्रेशठ योजन जाझेरो छे.

विदेहनो आदिविस्तार चार लाख, त्रेवीश हजार, त्रणशें ने चोत्रीश योजन जाझेरो छे, अने मध्यविस्तार आठ लाख, पांच हजार एकसो ने चोराणुं योजन जाझेरो छे, तथा अंत्यविस्तार अगियार लाख सत्त्याशी हजार ने चोपन्न योजन जाझेरो छे, ए रीतें ए चार स्थानकनो आदि, मध्य तथा अंत्यनो विस्तार कह्यो. ए ध्रुवांक चोशठांके गुण्या.

अहीयां आदि ध्रुवांक चौद लाख, बे हजार, बशें ने सत्ताणुं योजन जाझेरा छे. तेने एक, चार, सोल, चोसठनी सायें गणीयें, पछी बशें ने बार जागें वेहेंचतां यथोक्त मान लाजे. अने मध्यध्रुवांक छवीश लाख, सडसठ हजार, बशें ने आठ छे. तेने एक, चार,

ळोळ ने चोसठ साथें गुणीने पछी बशें बार नागें वेहेंचतां पूर्वोक्त मध्यविस्तार लाने, तथा अंत्यनो विस्तार (३९३२११९) छे, तेने एक, चार, सोळ, अने चोसठसाथें गणी यें, पछी बशें ने बार नागें वेहेंचतां पूर्वोक्त क्षेत्रनो अंत्यविस्तार आवे. अने उपर जे योज न रहे, तेनी कळा करी बशें ने बार नागें वेहेंचीयें, तेटलुं उपर आवे. तेमाटें जाजेरा छे.

हवे विजयनुं परिमाण कहे छे.

अंतरनदीयें पन्नरशें योजन रुंध्या छे,वक्षस्कारें आठ हजार योजन रुंध्या छे, मेरुथकी पूर्व पश्चिमें नद्रशालवने तथा मेरुपर्वतें बे लाख पच्चीशहजार एकसो ने अठावन्न योज न रुंध्या छे, वनमुखें अगिआर हजार छशें ने अठ्याशी योजन रुंध्या छे,ए सर्व एकठा क रियें, तो बे लाख, छेंतालीश हजार, त्रणशें ने छेंतालीश योजन थाय. ते धातकीखंमनो विस्तार चार लाख योजननो छे. ते मांहेथी काढीयें, तेवारें एक लाख, त्रेपन हजार छशें ने चोपन योजन बाकी रहे. तेने सोळविजय छे.माटेसोळ नागें वेहेंचीयें,तेवारें नवहजार छसें ने त्रण योजन उपर सोळहीआ छ नाग आवे. एटलुं एकेका विजयनुं प्रमाणपहोळपणे छे.

ए नदी, गिरि, वन अने विजय ए सर्वनां प्रमाण जेवारें एकठां करियें, तेवारें चार लाख योजन, धातकीखंमनो विस्तार पूर्ण थाय, अने ए धातकी खंमना बत्रीश विज यनां नाम प्रथम नरतक्षेत्रनां सरखां कच्छादिक जाणवां.

हवे नगरी अने वृक्ष वखाणे छे.

ए धातकी खंमने विषे नगरी अने वृक्ष ते पहेला जंबुद्वीपने विषे जे रीतें कह्यां, ते रीतें जाणवां, परंतु एटलुं विशेष छे के जे पूर्व अने पश्चिमना बेहु खंमने विषे बे उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे धातकीने महाधातकी एवे नामें जे बे वृक्ष छे, ते बे वृक्षने विषे सुदर्शन अने प्रियदर्शन एवे नामें बे देवता अनुक्रमें वसे छे, अने बे देवकुरुक्षेत्रने विषे तो जंबुद्वीपनी पेरें गरुड देवतानें वसवायोग्य बे शाल्मली वृक्ष छे.

हवे धातकी खंमना त्रण परिधि कहे छे.

प्रथम कही जे ध्रुवांकनी त्रण राशि तेनी साथें एक लाख अठ्योतेर हजार आठशें ने बे हेंतालीश. एटला योजन मेळवीयें, तेवारें अनुक्रमें धातकी खंमना त्रणे परिधिनुं परिमाण थाय, ते यंत्रथी समजवुं. हवे ए ध्रुवांक केवी रीतें नीपजे? तेनो विधि ग्रंथांतरथी कहे छे ॥ यडुक्तं ॥ इहवासहराजंबू, सेलइगुणविछराचउसु आरा ॥ खित्तं फुसंति लक्खो, अडसयरिसहस बियाला ॥ १ ॥ तप्पणलवणपरिहि, धायइसंमस्सआइ ध्रुवरासी ॥ गिरिपिहुणा तम्मज्ज्ञ, परिहीसमज्ज्ञ ध्रुवरासी ॥ २ ॥ अंतस्सविजा परिही, गिरिविछर रहिय अंतध्रुवरासी ॥ गिरिविछरेण मिलियं,परिहिंतिगणुकमेण नवे ॥३॥ इतिधातकी खंमाधिकारः

हवे कालोद समुद्रनो चोथो अधिकार कहे छे.

कालोदधि नामें जे समुद्र ते धातकीखंडनी जगतीबाहेर वलयने आकारें छे,ते सर्वत्र हजार योजन उंडो छे एटले गोतीर्थनी परें नथी. वली एमां पाणीनी हानी वृद्धि थती नथी. ते कालोद समुद्रनेविषे लवणसमुद्रना सुस्थितदेव सरखा काल, अने महाकाल नामे जे बे देवता तेने रहेवायोग्य पूर्व अने पश्चिमदिशानेविषे गौतमद्वीप सरखा बे द्वीप छे.

लवण समुद्रनी पेरें धातकी खंडनी जगतीथकी बार हजार योजन कालोद समुद्र मांहे पूर्वदिशानेविषे धातकीखंडना बार चंद्रमाना बार द्वीप छे, अने पश्चिमदिशाने विषे बार सूर्यना बार द्वीप छे, तथा कालोदनी जगतीथकी कालोद समुद्रमांहे बार हजार योजनें पूर्वदिशाने विषे कालोदधिना बहेंतालीश चंद्रमाना बहेंतालीश द्वीप छे, अने पश्चिम दिशायें बहेंतालीश सूर्यना बहेंतालीश द्वीप छे. ते सर्व द्वीप बाहेरनी दिशायें सर्वत्र जोतां पाणीथकी उपर बे कोश उंचा छे, तथा एकाणुं लाख सत्योतेर हजार छशें ने पांच योजन कालोद समुद्रनो परिधि जाणवो. अने बावीश लाख बाणुं हजार छशें ने बहेंतालीश योजन अने उपर त्रण कोश एटलुं जगतीना द्वार द्वारनुं अंतर जाणवुं ॥

हवे पांचमो पुष्करदल द्वीपनो अधिकार कहे छे. कालोद समुद्रनी जगतीथी बाहेर वलयने आकारें सोललाख योजन पहोलो पुष्कर द्वीप छे, ते पुष्कर द्वीपनुं अर्द्ध आठ लाख योजन छे, त्यांथकी बाहेरनी दिशायें जगतीनी पेरें वलय सरखो मानुष्योत्तर एवे नामें पर्वत छे, ते वेलंधरगिरिने मानें छे. मूलनें विषे एक हजार बावीश योजन, अनें शिखरने विषे चारशें ने चोवीश योजन पहोलो छे, अने सत्तर शें एकवीश योजन उंचो छे. वली जेम सिंह बेसे, तेवारें आगले भागें उंचो होय,अने पाछले भागें नीचो होय, तेम मानुष्योत्तर पण मांहेनी दिशायें उंचो छे, अने बाहेरनी दिशायें नीचो ढाल मांहे छे. वली निषध पर्वतने वर्णें मानुंषोत्तर पण राता सुवर्णनो छे,

हवे त्यां क्षेत्र अने पर्वतनां स्वरूप वखाणे छे.

जेम भरतादिक क्षेत्र अने हेमवंत प्रमुख पर्वत तेनां संस्थान जे आकारविशेष धातकीखंडने विषें कह्यां छे. एटले त्यां जेम चक्रना आरा अने विवर सरखा छे, तेमज ए पुष्करवर द्वीपने विषे पण जाणवा. धातकीखंडना भद्रशाल वनथकी पुष्करार्द्धनुं भद्रशाल वन ते लांबपणे अने पहोलपणे बमणुं जाणवुं. तो मेरुनी पूर्व पश्चिमदिशायें भद्रशालवननो धातकी खंडने विषे विस्तार एक लाख सात हजार आठशें ने उगण्याएंशी योजन छे. तेने बमणो करीयें, तेवारें बे लाख पन्नर हजार सातशें ने अठावन योजन थाय. ने एने जेवारें अठ्याशी भागें वेहेंचीयें, तेवारें बे हजार चारशें एकावन्न

योजन उपर एक योजनना अठ्याशी नाग करीयें, तेवा सित्तेर नाग एटलो मेरु थकी दक्षिण उत्तर दिशाना नद्रशाल वननो विस्तार पुष्करार्द्धने विषे जाणवो. तथा पुष्करार्द्धना बे मेरु अने इखुकार पर्वत तेनो विस्तार धातकीखंम सरखो जाणवो.

हवे बाहेरना चार गजदंता वखाणे छे.

ए पुष्करार्द्धने विषे मानुषोत्तर पर्वतनी दिशायें बाहेरना चार गजदंतगिरि जे छे, ते वीश लाख, त्रेंतालीश हजार, बशें ने उंगणीश योजन लांबा छे. कालोद समुद्रनी जग तीनी दिशाना मांहेला चारे गजदंतगिरि जे छे, ते सोल लाख, छवीश हजार, एकशो ने सोल योजन एटला लांबा छे. तथा चार लाख, छत्रीश हजार, नवशें नें सोल योजन एटली कुरुक्षेत्रनी जीवा छे. वली सत्तर लाख, सात हजार, सातशें नें चउद उपर एक योजनना बशें बार नाग करियें, तेवा आठ नाग एटलो कुरुक्षेत्रनो विस्तार जाणवो. त्रणशें तेत्रीश योजन उपर एक योजननो त्रीजो नाग एटलुं कंचनगिरिनुं माहोमांहे अंतर जाणवुं. बे लाख, चालीश हजार, नवशें ने उंगणसाठ योजन उपर सातीयो एक नाग एटलुं कुलगिरि, जमक अने द्रहनुं मांहोमांहे अंतर जाणवुं. तथा छत्रीश लाख, उंगणोतेर हजार, त्रणशें ने पांत्रीश योजन एटलुं कुरुक्षेत्रनुं धनुःपृष्ठ जाणवुं.

हवे शेष, नदी तथा पर्वतनां परिमाण कहे छे.

शेष बीजां क्षेत्र, नदी अने द्रह प्रमुखनुं प्रमाण ते जेम जंबूद्वीपथकी कोइक बमणा, कोइक सरखा, इत्यादि धातकी खंमने विषे जेम कह्या छे, तेम अहियां पुष्करार्द्धने विषे पण कोइक धातकीखंमथी बमणा, कोइक धातकीखंम सरखा पण जाणवा. एटले जे जंबूद्वीप सरखा धातकीखंममांहे छे, ते धातकीखंम सरखा पुष्करार्द्धमांहे छे, अने जे जंबूद्वीपथकी धातकीखंममांहे बमणा कह्या छे, ते पुष्करार्द्धने विषे धातकीखंमथकी बमणा जाणवा ॥ हवे धातकीखंमने विषे दीर्घ वैताढ्य जंबूद्वीप सरखा वखाणे छे ॥ यथा ॥ कंचण यमसुरकुरु नग, वेयड्ढा चेव वट्ट दीहाय ॥ विरकंनबाहसमु, स्सएणजह जंबुदीवुच्चा ॥ १ ॥ पुष्करार्द्धने विषे तो दीर्घ वैताढ्यनो विस्तार बशें योजन कह्यो छे ॥ यथा ॥ उव्वेहो वेयड्ढाणं, जोयणाइं तु छसय कोसाइं ॥ पण विसं उच्चिट्ठो, दोचेव सयाइं विच्छिन्ना ॥ २ ॥ अहियां निश्चयनी वात तो ज्ञानी जाणे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रनो ध्रुवांक कहे छे. अठ्याशी लाख, चउद हजार, नवशें ने एकवीश एटला योजन आदिक्षेत्रना ध्रुवांकनी राशि जाणवी. ते सर्व प्रथमनी परें क्षेत्रना आंक साथें गणीयें. पछी बशें ने बार नागें वेहेंचतां परिमाण लन्यमान थाय. एक कोडी, तेर लाख, चुम्मालीश हजार, सातशें ने त्रेंतालीश योजन. एटली पुष्करवरद्वीपना

मध्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. एक करोड,आडत्रीश लाख, चम्मोतेर हजार, पांचशें ने पांशठ, एटली पुष्करार्द्धना अंत्यक्षेत्रनी ध्रुवांकराशि जाणवी. हवे ए ध्रुवांक जाणवानी पेरें लखीयें ठैयें ॥ यथा ॥ पुरकरदलंमिउसुया,र धायइसंमा उ डुगुण वासहरा ॥ खित्तं फुसंति लरकति,पणवन्न सहस्स ठसय चुलसी ॥१॥ तेएूणा कालोयहि,परिही इहपढमहो धुवरासी ॥ दीवद्द मद्य परिही,गिरिपीढूणोय मज्जि धुवो ॥ २ ॥ नरखित्त अंतपरिही, गिरिपिढूणाय अंत धुवरासि ॥ पुवंचगणणहरणो, खित्तपमाणं नवे पयडं ॥ ३ ॥

हवे अनुक्रमें क्षेत्रप्रमाण विवरीने लखीयें ठैयें. पुष्करार्द्धने विषे जरत ऐरवतना आदिध्रुवांक अठ्याशी लाख, चउद हजार,नवशें ने एकवीश तेने एक साथें गुणीयें,ते वारें तेहीज आंक आवे, तेने बशें ने बार जागें वेहेंचीयें, तेवारें एकतालीश हजार, पांचशें ने उगण्याएंशी योजन लन्यमान थाय. उपर एकशो ने त्रहोंतेर योजन वधे, ते एक योजनना बशें बार जाग करी, तेने बशें ने बार जागें वेहेंचीयें, तेवारें उपर बशें ने बारीया एकशो ने त्रहोंतेर जाग आवे, एटलो प्रथम विस्तार ठे. तेमज त्रेपन हजार, पांचशें ने बार योजन उपर बशें बारीया, एकशो ने नवाणुं जाग, एटलो मध्यविस्तार जाणवो. पांसठ हजार चारशें ने ठेंतालीश योजन उपर बशें ने बारीया तेर , एटलो अंत्यविस्तार जाणवो.

हेमवंत ऐरण्यवंतनो आदिविस्तार एक लाख,ठासठ हजार, त्रणशें ने उगणीश योजन उपर बशें ने बारीया ठप्पन जाग ठे, अने मध्यविस्तार बे लाख, चउद हजार ने एकावन योजन उपर बशें बारीया एकसो ने साठ जाग ठे, तथा अंत्यनो विस्तार बे लाख, एकसठ हजार, सातशें ने चोराशी योजन उपर बशें नें बारीया बावन जाग ठे.

हरिवर्ष तथा रम्यकनो आदिविस्तार ठ लाख,पांसठ हजार,बशें ने सत्त्योतेर योजन उपर बशें ने बारीया बार जाग ठे, अने मध्यविस्तार आठ लाख,ठप्पन हजार, बशें ने सात योजन उपर बशें नें बारीया चार जाग ठे,तथा अंत्यविस्तार, दश लाख, सुडतालीश हजार,एकशो ने ठत्रीश योजन उपर, बशें ने बारीया बशें ने आठ जाग ठे.

विदेह क्षेत्रनो आदिविस्तार, ठवीश लाख,एकसठ हजार,एकशो ने आठ योजन उपर बशें ने बारीया अडतालीश जाग ठे, अनें मध्यविस्तार चोत्रीश लाख, चोवीश हजार,आठशें ने अठ्यावीश योजन उपर बशें ने बारीया सोल जाग ठे,तथा अंत्यविस्तार एकतालीश लाख,अठ्याशी हजार, पांचशें नें ठेंतालीश योजन उपर बशें ने बारीया एकशो ने ठन्नुं जाग ठे. ए गुणांक, क्षेत्रांक अने ध्रुवांक, ते सर्व यंत्रथी जाणवा.

हवे प्रथमनी पेरें नदी, गिरि अने वनमुखनुं परिमाण काढीने शेष रहे, तेने सोल

मे जागें एक विजयनुं परिमाण उंगणीश हजार, सातशें ने सवाचोराणुं योजन थाय. तथा ए पुष्करार्द्ध द्वीपने विषे, बाहेरनी दिशायें जेनां पाणी वहे छे, एवी जें नदी ते नी नजीक कोइ समुद्र नथी, तेमाटें मानुषोत्तरने हेठे मूलमां पेसे छे.

ए पुष्करार्द्धने विषे बन्ने उत्तर कुरुक्षेत्रमांहे पद्म अने महापद्म एवे नामें वे वृक्ष छे, तेने विषे पद्म तथा पुंमरीक एवे नामें बे देवता रहे छे, अने देव कुरुक्षेत्रने विषे तो जं बूद्वीपनी पेरें गरुडदेवने वसवायोग्य बे शाल्मलीनां वृक्षो छे.

पुष्करार्द्ध क्षेत्रने विषे पूर्व पश्चिम दिशाना बन्ने खंममांहे बे हजार योजन पहोला एवा बे कूट कह्या छे, ते कूटनां स्थानक गीतार्थ ज्ञानवंत होय ते जाणे.

हवे मनुष्यक्षेत्रमांहे सर्व पर्वतनी संख्या कहे छे.

एक मेरु, ठ कुलगिरि, चार गयदंता, सोल वक्षस्कार, चोत्रीश लांबा वैताढय, चार वृत्त वैताढय, चार यमलगिरि, अने बशें कांचनगिरि. ए सर्व मली बशें ने उंगण्योतेर प र्वत जंबूद्वीपमांहे जाणवा. अने आठ पर्वत लवणसमुद्रमांहे छे, बीजा धातकीखंममां हे जंबूद्वीपना बशें ने उंगण्योतेरने बमणा करीनें बे इखुकार पर्वत नेलीयें, तेवारें पांचशें ने चालीश थाय. अने त्रीजा पुष्करार्द्धने विषे पण पांचशें ने चालीश पर्वत जाणवा. एम तेरशो ने सत्तावन पर्वत सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमांहे जाणवा, तेमां पांच मेरुपर्व त विना सर्व पर्वतो उंचपणानें चोथे नागें नूमिमांहे जाणवा. अनें मानुषोत्तर पर्वत पण एज रीतें उंचपणांने चोथे नागें नूमिमांहे छे.

पुष्करार्द्ध द्वीपना आदि, मध्य अनें अंत्यना त्रण परिधि कहें छे.

प्रथम जे ध्रुवांकनी श्रेणी कही छे, तेमांहे त्रण लाख, पंचावन हजार, ठशें नें चोरा शी एटला योजन जेवारें त्रणे परिधिमांहे मेलवीयें, तेवारें अनुक्रमें पुष्करार्द्धना त्रण प रिधि होय, ते संख्या यंत्रथकी जाणवी ॥ उक्तं च ॥ अड्ढाइदीव ड समु, द रूव तप्परिहिं जोयणिग कोडी ॥ बायाल लक्ख तीसं, सहसा दोसय इगुणवन्ना ॥ १ ॥ सोलस कोडी ल क्खा, नव कोडिसयातिकोडि इग लक्खा ॥ पणवीस सहस्सासे, गणियपयं पुणसु करणेहिं ॥ २ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्र बाहेर जे पदार्थ न होय, ते कहें छे.

नदी, इह, मेघ, मेघनो गर्जारव, बादर, अग्निकाय, तीर्थंकर, बलदेव, वासुदेव, चक्र वर्त्ती अने बीजा पण सामान्य मनुष्य तेना जन्म अने मरण तथा मुहूर्त्त, प्रहर, दिवस, चंद्र सूर्यनां परिवेष, विजली, चय, अपचय अने उपराग, एटला पदार्थ पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यक्षेत्रमांहे होय. पण बाहेर न होय. एवुं नरक्षेत्रना स्वना वनुं विशेष जाणवुं ॥ इति पंचमोऽधिकारः ॥ ५ ॥

हवे पुष्करार्द्धादिकना पर्वत प्रमुखनेविषे जिनजवन छे, ते कहे छे.

प्रथम कह्या जे धातकीखंम तेने विषे बे इखुकार, अने बे इखुकार पुष्करार्द्धना,ते चारे इखुकार पर्वतने विषे प्रत्येकें चार कूट छे. तेमांहे छेल्ला सिद्धकूटने विषे चार पर्वतें ए केक जिनजवन छे, बधां मली चार जिनजवन छे. अने मानुषोत्तर पर्वतना चार कूट नी उपर चार जिनजवन छे, ते जिनजवन कुलगिरिना जिनजवनने परिमाणें पचास योजन लांबां, पच्चीश योजन पहोलां अने छत्रीश योजन उंचां जाणवां.

हवे नंदीश्वर, कुंमल अने रुचकद्वीपनेविषे जिनजवन कहे छे.

एकसो योजन लांबा अने पचास योजन पहोलां तथा बहोंतेर योजन उंचा अने चार बारणे सहित एवां, आवमा नंदीश्वरद्वीपनेविषे बावन जिनजवन छे, तथा कुंमल द्वीपनेंविषे कुंमलने आकारें जे मध्यगिरि छे, तेने कुंमलगिरि कहे छे, तेनी चारदिशाने विषे एवाज प्रकारना चार जिनजवन जाणवां. एम रुचकद्वीपने विषे पण चार जिनज वन छे, ए सर्व साठे जिनजवन ते चार बारणानां छे.

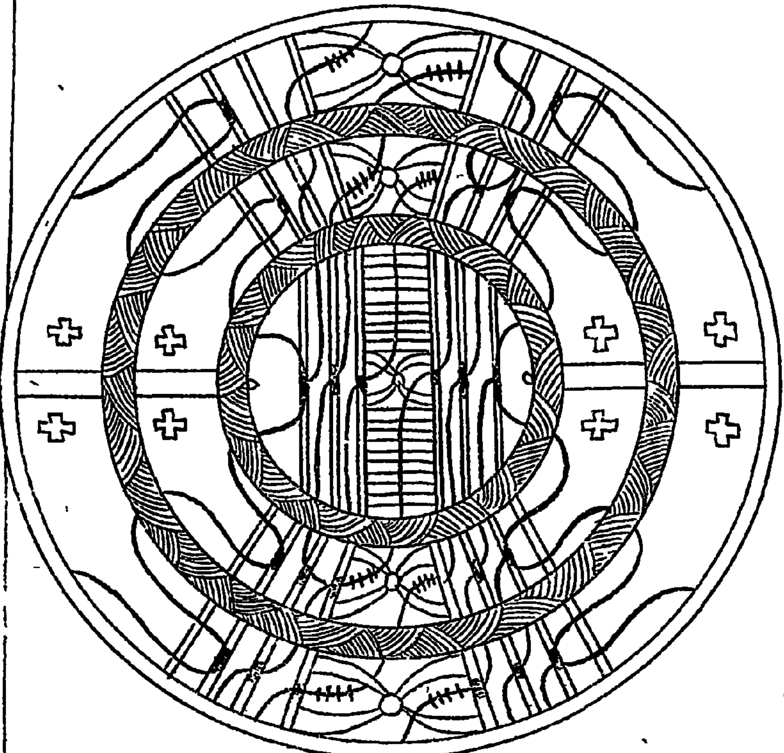
अढीद्वीपने विषे गर्जज मनुष्य संख्यायें केटलां छे ? ते कहे छे.

सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, बाणुं लाख कोडाकोडी कोडी,अठ्यावीश हजार कोडा कोडी कोडी, एकशो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडा कोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, छशें कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्री श लाख कोडी, उंगणसाठ हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश ला ख, पच्चास हजार, त्रणशें ने छत्रीश, एटले आंकें स्त्री पुरुषनी संख्या जाणवी.

एटले सात क्रोड, बाणुं लाख,अठ्यावीश हजार, एकशो ने बासठ कोडाकोडी कोडी, तथा एकावन लाख, बहेंतालीश हजार, छशें ने त्रेंतालीश कोडाकोडी, तथा साडत्रीश लाख, उंगणशाठ हजार, त्रणशें ने चोपन कोडी, तेनी उपर उंगणचालीश लाख, पच्चा सहजार, त्रणशें ने छत्रीश,एटला आंक स्त्री पुरुषना एकठा साथें जाणवा. एटले ७९२२ ८१६२,५१४२६४३,३७५९३५४,३९५०३३६, ए उंगणत्रीश आंकनी संख्या जाणवी.

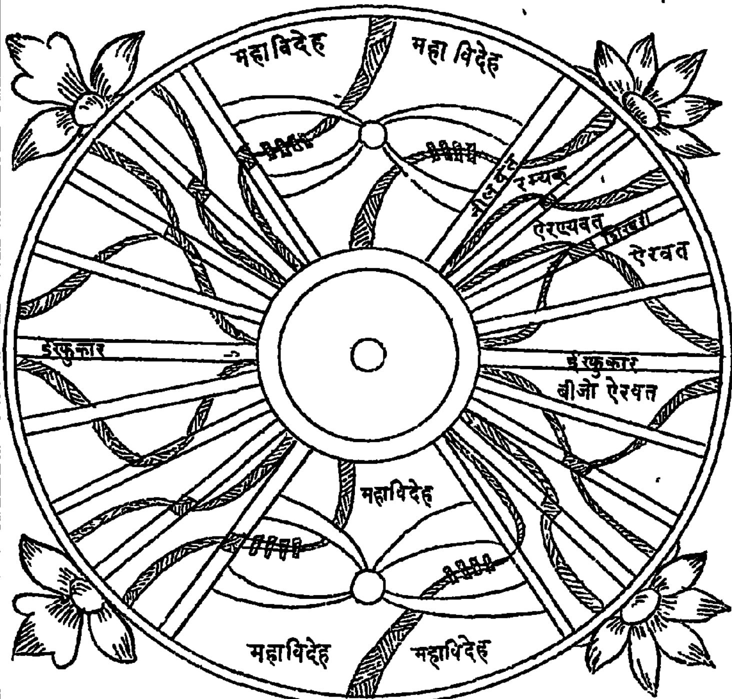
ए आंकना अठ्यावीश जाग करीयें,तेवारें एक जागमां २८२९५७७, ३२३६५२२, ९७७३११९, ७९९८२३६,ए अठ्यावीश आंक आवे,एटले अठ्यावीश लाख कोडाको डी कोडी, उंगणत्रीश हजार कोडाकोडी कोडी, पांचशें कोडाकोडी कोडी, सत्त्योतेर कोडाकोडी कोडी, तथा त्रेवीश लाख कोडाकोडी, छवीश हजार कोडाकोडी, पांचशें को डाकोडी, बावीश कोडाकोडी, सत्ताणुं लाख कोडी, सत्त्योतेर हजार कोडी, एकशो को डी अने उंगणीश कोडी, तेनी उपर उंगण्याएंशी लाख, अठाणुं हजार, बशें ने छवीश,

अढी द्वीप स्थापना.



६२

धातकी खंड स्थापना



६३

शाश्वत जिन प्रासाद संख्या यंत्र.

एवं मनुष्यक्षेत्रे चैत्य संख्या.

स्थान	प्रासाद	प्रतिमा	अंक	स्थान		प्रासाद	प्रतिमा
सौधर्म	३२०००००	५७६००००००	५	मेरु		८५	१०२००
ईशान	२८०००००	५०४००००००	२०	गजदंत गिरि		२०	२४००
सनत्कुमार	१२०००००	२१६००००००	८०	वखकारा पर्वत		८०	९६००
महेंद्र	८०००००	१४४००००००	१००	कांचन गिरि		१०००	१२००००
ब्रह्म	४०००००	७२००००००	५	विचित्र पर्वत		५	६००
लांतक	५००००	९००००००	५	चित्र पर्वत		५	६००
शुक्र	४००००	७२०००००	१०	यमकाचल		१०	१२००
सहस्रार	६०००	१०८००००	३०	वर्षधर पर्वत		३०	३६००
आनत	२००	३६०००	४	इखुकार पर्वत		४	४८०
प्राणत	२००	३६०००	२०	वृत्त वैताढ्य		२०	२४००
आरण्य	१५०	२७०००	१७०	दीर्घ वैताढ्य		१७०	२०४००
अच्युत	१५०	२७०००	४०	दिग्गज कूट		४०	४८
प्रथम त्रिक ३	१११	१३३२०	१०	जंबवादिवृक्ष		११७०	१४०४००
द्वितीय त्रिक ३	१०७	१२८४०	३८०	कुंड		३८०	४५६००
त्रितीय त्रिक ३	१००	१२०००	७०	महानदि कुंड		७०	८४००
पंचानुत्तर	५	६००	८०	द्रह चैत्य		८०	९६००
एवमूर्द्ध्वलोके	८४९७०२३	१५२९४४४७६०	मनुष्यक्षेत्रनी बाहेरना चैत्योनी संख्या	१	मानुषोत्तरपर्वत	४	४८०
एवं त्रिभुवने	८५७००२८२	१५४२५८३६०८०		१	नंदीश्वर द्वीप	६८	८३६८
				१	रुचक द्वीप	४	४९६
				१	कुंडल द्वीप	४	४९६

स्थान	प्रासाद	प्रतिमा.
असुरकुमार	६४०००००	११५२००००००
नागकुमार	८४०००००	१५१२००००००
सुवर्णकु०	७२०००००	१२९६००००००
विद्युत्कु०	७६०००००	१३६८००००००
अग्निकु०	७६०००००	१३६८००००००
द्वीपकु०	७६०००००	१३६८००००००
उदधिकु०	७६०००००	१३६८००००००
दिशाकु०	७६०००००	१३६८००००००
स्तनितकु०	७६०००००	१३६८००००००
वायुकु०	९६०००००	१७२८००००००
एवमधोलो-	७७२०००००	१३८९६००००००

एटला आंक अठ्यावीशमा नागमां आवे,उपर आठनो आंक वधे. एटली संख्यायें पुरुष जाणवा. एटले २८२९५७७ एटली कोडाकोडी कोडी, अने २३२६५२२ एटली कोडाकोडी तथा ९७७७११९ एटली कोडी तेनी उपर ७९९८२२६ एटला पुरुष जाणवा.

हवे पुरुषथी सत्तावीश गुणी स्त्री छे,माटें ए आंकने सत्तावीश गुणो करीयें, तेवारें ७६३९८५८५, २८१६१२०, ३९८२२३४, ५९५२१०२ ए उगणत्रीश आंक आवे, तेटली संख्यायें स्त्री जाणवी. एटलें सात क्रोड कोडाकोडी कोडी, त्रेशठ लाख कोडाकोडी कोडी, अठाणुं हजार कोडाकोडी कोडी; पांचशें कोडाकोडी कोडी, पंचाशी कोडाकोडी कोडी, तथा अठ्यावीश लाख कोडाकोडी,शोळ हजार कोडाकोडी, एकशो कोडाकोडी, वीश कोडाकोडी, तथा उगणचालीश लाख कोडी, बासी हजार कोडी, बशें क्रोडी, चोत्रीश कोडी, उपर उगणसाठ लाख, बावन हजार, एकशो ने बे. एटलें आंके स्त्री जाणवी. अर्थात् (७६३९८५८५) एटली कोडाकोडी कोडी, तथा (२८१६१२०) एटली कोडाकोडी, तथा (३९८२२३४) एटली कोडी तेनी उपर (५९५२१०२) एटले आंकें स्त्री छे. ए स्त्रीना आंकनी साथें पूर्वोक्त पुरुषना आंकनी संख्यानो आंक तथा जे अठ्यावीशें नाग आपतां उपर आठ वध्या छे,ते सर्व एकठा मेळवीयें,तेवारें पूर्वोक्त उगणत्रीश आंक पूर्ण थाय. एटला आंकें गर्भज मनुष्य छे. ए प्रकारें गर्भज मनुष्य पूर्वोक्त आंक जेटला होय परंतु आंक न्हाना महोटा न होय, तेमां पुरुषथी स्त्री सत्तावीश गुणी अधिक होय. अल्पबहुत्वमां पुरुषथकी स्त्री संख्यातगुणी अधिक कही छे. इहां पूर्वोक्त आंकने अठ्यावीशें नाग आपतां उपर आठनो आंक वधे छे,पण सत्त्यावीश वधता नथी तेवात गीतार्थगम्य जाणवी. तेनो निर्णय गीतार्थ करी आपे.

वळी अल्पबहुत्वना अठाणुं द्वार जोतां सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य कह्यां छे, ते संख्याती कोडाकोडी प्रमाण पूर्वोक्त उगणत्रीश आंकें संख्या जाणवी.

इहां केटलाएक एम कहे छे के उगणत्रीश आंकें गर्भज मनुष्य छे, ते आंक खरे खरा छे परंतु तेमां काळविशेषें न्हाना महोटा आंक लेवा जोइयें. जेम बे एकडायें अगीयारनो आंक थाय अने बे नवडायें नवाणुंनो आंक पण थाय. तेम श्रीअजितनाथजीना वखतमां मनुष्यनी संख्या घणी होय तेवारें महोटा आंक लेवा अने छठा आराने विषे माणस स्वल्प होय तेवारें न्हाना आंक लेवा, एवी रीतें केटलाक श्रीजिनशासनना रहस्यना अनभिज्ञपणाथी कहे छे. ते असत्य कहे छे. जेमाटें पंचांगीने विषे एटलाज आंक कह्या छे ते न्हाना महोटा केम थाय ?

जे कारणें श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमध्यें कह्युं छे केः— जेवारें जघन्यथी मनुष्य होय, ते

वारें एकडानो आंक मांमी तेने छन्नुं वार बमणो करीयें, तेवारें जे आंक आवे,ते आंक प्रमाण मनुष्य छे. अथवा एकनो वर्ग न होय अने बेनो वर्ग चार थाय, ए प्रथम वर्ग कहेवाय. चारनो वर्ग शोल थाय ए बीजो वर्ग. शोलनो वर्ग बशे छप्पन थाय,ते त्रीजो वर्ग. तेनो वर्ग ६५५३६ थाय ते चोथो वर्ग. तेनो वर्ग ४२९४९६७२९६ थाय ते पांचमो वर्ग. तेनो वर्ग १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ ए छठो वर्ग. इहां पांचमो वर्ग छठा वर्ग साथें गणतां पूर्वोक्त आंक आवे ते आंकप्रमाणें गर्भज मनुष्य छे.

हवे ए पूर्वोक्त ओगणत्रीश आंकप्रमाणें जे गर्भज मनुष्यनी संख्या कही, ते सर्व मनुष्य जो अढीद्वीपमां विचरता लहीयें, तो समाइ शके नही. केम के अढीद्वीपनी भूमि पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण छे. तेनी परिधि १४२३०२४९ योजन एक गाउ १७६६ धनुष्य उपर चार अंगुल छे. अने अढीद्वीपनुं गणितपद करीयें, तो पीस्तालीशलाख विष्कंभनो चोथो भाग सवा अगीयार लाख योजन थाय, तेने पूर्वोक्त परिधिना योजन साथें गणीयें, तो १६००९०३०६१९४४५ योजन, त्रण गाउ, ८८१ धनुष्य थाय. ए सर्व प्रमाणांगुलें योजन जाणवा. ते एक प्रमाणांगुल योजन मनुष्य संबंधी दश लाख योजन थाय, तेनी रीत बतावे छे.

उक्तं च ॥ अंगुलसप्ततिकायां ॥ सहस्समाणे चउरं, सजोयणे दीह पिहुल भावाणं ॥ हुंति परुप्परगणणे, लरका दस जोयणाण फुडं ॥ १ ॥ एक प्रमाणांगुल योजन छे, ते उत्सेधांगुल सहस्रगुणुं जाणवुं. तो एक जोयण चउरस्र प्रमाणांगुलें छे, ते सहस्रगुणुं लांबु अने सहस्रगणुं पहोलुं होय, तेवारें सहस्रने सहस्रगणुं करतां माणसना दश लाख योजन स्फुट एटले प्रगट थाय.

हवे एक योजनभूमिना प्रमाणांगुल ५८९८२४००००००० एटले अठावन हजार कोडी, नवशें कोडी, बासी कोडी, उपर चालीश लाख थाय. ते आवी रीतें केः— एक योजन भूमिनां आठ हजार धनुष्य थाय. तेनें एक धनुष्यना छन्नुं अंगुलें गुणतां ७६८००० थाय, ते समचउरस्र योजन छे, माटें तद्गुणा करीयें तेवारें पूर्वोक्त ५८९८२४००००००० प्रमाणांगुल थाय. तेने पूर्वोक्त अढीद्वीप संबंधी गणितपदना जेटला योजन कह्या छे, तेनी साथें गुणीयें तेवारें ९४४२५१०४९६८१२७९४७६८१०९८९७७६ एटला प्रमाणांगुल गणितपदना जे योजन, गाउ, धनुष्य तथा अंगुल कह्या तेना थाय.

एवुं एक समचउरस्र प्रमाणांगुल ते मनुष्यना हजार आंगुल लांबुं अने हजार आंगुल पहोलुं समचउरस्र जाणवुं. माटें हजारने हजार गुणुं करतां दश लाख उत्सेद अंगुल थाय, तेने एक समचउरस्र हाथनी चोवीशआंगुलने चोवीशें गुणतां ५७६ आंगुल

थाय. ते आंगुलें भाग आपीयें, तेवारें १७३६ हाथ लाभे. शेष ६४ अंगुल वधे.

हवे ते पूर्वोक्त गणितपदना अंगुलने सत्तरशें ने छत्रीश हाथे गुणीयें, तेवारें १६३७८१९८२२२४६७०११७१७४३८९२१११३६ एटला हाथ उच्छेद अंगुलें थाय. तथा चोशठनो आंक वध्यो छे, ते गणितपदना अंगुल साथें चोशठ गुणो करी ५७६ भागें वहेंचतां १०४९१६७८३२९७९२१०५२९७८९६८२२ हाथ थाय. शेष ४९२ वधे. हवें ए हाथनी राशि पूर्वोक्त मूलहाथनी राशि मध्यें प्रक्षेपियें, तेवारें १६३७९२४७३९०२९९९९०९२७९६८७१०७९५८ एटला हाथ थाय. ते सर्व गणितपदना उच्छेद आंगुलें हाथ जाणवा. आ बे पानाना गणित तपास्या नथी.

हवे ए सर्व त्रीश आंक छे, ते पीस्तालीश लाख योजन मनुष्य क्षेत्र छे, माटें पीस्तालीश लाखनें भागें वहेंचीयें, तेवारें एक भागें २६३९८३२७५३३९९९९७९८३९९३० एटला आवे. शेष २१०७९५८ एटला आंक वधे, तेने भाग पहोंचे नही.

हवें पीस्तालीश लाख योजनमां पण वीश लाख समुद्रनी भूमि छे, अने पच्चीश लाख द्वीपनी भूमि छे, तिहां समुंद्रनी भूमिमां माणसनी वस्ती नथी. मात्र अंतरद्वीप छे ते स्वल्प छे तेनी विवक्षा करता नथी. ते माटें समुद्रनी भूमि रहित मात्र द्वीपनी पच्चीश लाख योजन भूमि छे, तेने एक भागमां आवेली पूर्वोक्त हाथनी राशि साथें गुणतां ९०९९५८१८८३४९९९९४९५९९८२५००००००० एटली राशि आवे. ए पण उगणत्रीश आंक छे, ते पूर्वोक्त सातकोडी इत्यादि गर्भज मनुष्यना उगणत्रीश आंकनी राशिने वहेंची आपतां एकेका माणसने भागें एकेक हाथ भूमिभाग आवे छे तेमां सुवाय बेसाय नही. तेमज पर्वत, नदी, द्रह, वन, अटवी प्रमुख माणस विनानी भूमि पण घणी छूटी पडेली देखाय छे अने अल्पमात्र भूमिमध्यें मनुष्य रहे छे माटें पूर्वोक्त संख्याना मनुष्य एटली भूमिमां समाइ शके नही? एवी शंका उत्पन्न थाय.

हवे पूर्वोक्त शंकानुं समाधान करें छे. जे माटें श्रीवीतरागना वचनमां कांइ पण संदेह नथी. जे उगणत्रीश आंक प्रमाण गर्भज मनुष्य कह्यां छे. ते सदा सर्वदा काल एटलांज छे, पण उछां अधिकां नथी. इहां समाधान आ छे, केः—पुरुषथी स्त्री सत्त्यावीश गुणी अधिक छे. अने गर्भ धारण करनारी पण तेज छे अने तेना गर्भमां उत्कृष्टथी नवलाखनी संख्यायें पण गर्भज मनुष्य होय छे. अने जघन्य मध्यम पण होय छे पण स्त्रीनी राशि महोटी छे तेथी तेना गर्भमां गर्भज मनुंष्योनी महोटी संख्या सर्वदा रही शके एवो निर्धार छे माटें घणा जीव गर्भमां होवा जोइयें. अने स्वल्पजीव गर्भ बाहेर होवाथी तेटला जीव पृथ्वीमां सुखथी रही शके छे. एम कहेवाथी जैनक्रियानो

लोप न थाय. पछी केवली कहे ते सत्य जाणवुं. पण गोंखवुं, चिंतववुं, अने पूछवुं. एनुं नाम त्रिपक्षीविद्या कहेवाय. जगतमां त्रिपक्षी विद्यानी कहेवत छे तेथी सांशयिक वातोनुं समाधान थाय छे ॥ इति अढीद्वीप मनुष्य संख्याप्रमाणं समाप्तम् ॥

॥ अथ चोवीश दंमक उपर पांत्रीश बोल उतारवानो थोकडो प्रारंनियें छैयें ॥

समस्त संसारीजीव, चारगतिमां रहेला चोवीश दंमकोने विषे परिभ्रमण करे छे. ते चोवीश दंमकनां नाम कहे छे.

१ प्रथम सात नारकीनो एक दंमक, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र नीचें प्रमाणें छे.

नाम. १ घमा. २ वंसा. ३ सैला. ४ अंजणा. ५ रिष्ठा. ६ मघा. ७ माघवती.

गोत्र. रत्नप्रज्ञा. शर्करप्रज्ञा. वालुकप्रज्ञा. पंकप्रज्ञा. धूमप्रज्ञा. तमःप्रज्ञा. तमस्तमःप्रज्ञा.

॥ ११ त्यार पछी दश जुवनपतिदेवोना जे दश दंमक छे तेनां नाम लखियें छैयें ॥

१ असुरकुमार निकायनो दंमक. २ नागकुमार निकायनो दंमक.
३ सुवर्णकुमार निकायनो दंमक. ४ विद्युत्कुमार निकायनो दंमक.
५ अग्निकुमार निकायनो दंमक. ६ द्वीपकुमार निकायनो दंमक.
७ उदधिकुमार निकायनो दंमक. ८ दिशिकुमार निकायनो दंमक.
९ वायुकुमार निकायनो दंमक. १० स्तनितकुमार निकायनो दंमक.

१२ बारमो पृथिवीकायनो दंमक, तेनां मूल नाम छ छे, ते लखियें छैयें.

१ सुना. २ सुधा. ३ वालुया. ४ मणसिल. ५ शर्करा. ६ खरपुढवी.

॥ हवे ए पृथिवीकायना नेद कहे छे ॥

१ स्फाटिकरत्न. २ मणिरत्न. ३ परवालां. ४ रागरत्न. ५ हिंगलो. ६ हरताल. ७ मणसिल. ८ पारो. ९ सोनुं. १० रूपुं. ११ त्रांबुं. १२ लोढुं. १३ जसत. १४ शींसुं. १५ कथिर. १६ खडीमाटी. १७ हरमजी वानी. १८ अरणेटो पाषाण. १९ पलेवो पाषाण. २० अबरखनी जाति. २१ तूरी माटीनी जाति. २२ खारी माटीनी जाति. २३ माटीनी सर्व जाति. २४ पाषाणनी सर्व जाति. २५ सुरमानी जाति. २६ अंजननी जाति. २७ लूणनी जाति. इत्यादि पृथिवीकायना असंख्य नेद जाणवा.

१३ तेरमो अप्कायनो दंमक, तेना नेद कहे छे.

१ जमीननुं पाणी. २ आकाशनुं पाणी. ३ ठारनुं पाणी. ४ हिमनुं पाणी. ५ रोयडानुं पाणी. ६ नीलीवनस्पति उपर पाणीना बिंड. ७ मांकनुं पाणी. ८ घनोदधि.

१४ चौदमो तेउकायनो दंमक छे. तेना नेद कहे छे.

१ अंगारानो अग्नि. २ ज्वालानो अग्नि. ३ नासडनो अग्नि.
४ उल्कापातनो अग्नि. ५ कणियानो अग्नि. ६ विजलीनो अग्नि.

१५ पंदरमो वाउकायनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ उद्भ्रामकवायु. २ मंदवायु. ३ औत्कलिकवायु. ४ मांमलिकवायु.
५ मुखशुद्धवायु. ६ गुंजवायु. ७ घनवात. ८ तनुवात.

१६ शोलमो वनस्पतिकायनो दंमक छे,तेनी मूलजाति पांच छे,ते कहे छे.

१ गुह्वा. २ गुमा. ३ वलया. ४ वह्नी. ५ पतिरण.

ह्वे एना बे नेद कहे छे.

१ जे एक शरीरमां अनंता जीव होय, ते साधारण वनस्पति. २ जे एक शरीरमां एक जीव होय, ते प्रत्येक वनस्पति. ए रीतें एना पण नेदानुनेद असंख्य छे.

१७ सत्तरमो बेंड्रियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ शंख. २ कोडा. ३ गंमोला. ४ जलो. ५ अलसीयां.
६ लारीयां. ७ मेहरी. ८ क्रमिया. ए पाणीना पूरा.

१८ अढारमो त्रींड्रियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ कानखजुरा. २ मांकड. ३ जू. ४ कीडियो. ५ उदेही. ६ मंकोडा
७ ईल. ८ घीमेल. ए सावा. १० गोकीडा. ११ गद्दहीयां. १२ विष्टाना कीडा.
१३ गोबरना कीडा. १४ धनेडियां. १५ कंथुआ. १६ गोपालिक. १७ ईड्रगोप.

१ए उंगणीशमो चौरिंड्रियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ वींछी. २ ढंकण. ३ नमरा. ४ नमरी. ५ टीड. ६ माखी.
७ मांस. ८ मच्छर. ए पतंगिया. १० कंसारी. ११ कोईवाडा.

२० वीशमो तिर्यंच पंचेंड्रियनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१ जलचर. २ स्थलचर. ३ खेचर. ४ उरःपरिसर्प्प. ५ नुजपरिसर्प्प. ए पांच गर्प्नज तिर्यंच अने एज पांच संमूर्छिम तिर्यंच पंचेंड्रिय एम सर्व दश नेदें थाय.

२१ एकवीशमो मनुष्यनो दंमक छे, तेना नेद कहे छे.

१५ पंदर कर्मनूमिक्षेत्रना. ३० त्रीश अकर्मनूमिक्षेत्रना. ५६ उप्पन अंतरद्वीपना. ए सर्व मली एकशो ने एक क्षेत्रवासी होवाथी एटलाज नेदो थया.

२२ बावीशमो व्यंतरदेवोनो दंमक ले, ते बे प्रकारें ले.

तिहां एक व्यंतर निकाय, तेना आठ नेद ले.

१ पिशाच. २ नूत. ३ यक्ष. ४ राक्षस. ५ किन्नर. ६ किंपुरुष. ७ महोरग. ८ गंधर्व.

बीजी वाणव्यंतरनिकाय, तेना पण आठ नेद ले.

१ अणपन्नि. २ पणपन्नि. ३ इसिवादी. ४ नूतवादी. ५ कंदी. ६ महाकंदी. ७ कोहंम. ८ पतंग.

२३ त्रेवीशमो ज्योतिषी देवोनो दंमक, पांच प्रकारें ले.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.

२४ चोवीशमो वैमानिक देवोनो दंमक, तेना मूल बे नेद ले.

१ एक कल्प एटले आचारवाला देवो, ते बार देवलोकना नेदें करी बार प्रकारें ले,

ते बार देवलोकनां नाम कहियें लैयें.

१ सौधर्म देवलोक. २ ईशान देवलोक. ३ सनत्कुमार देवलोक. ४ माहेंद्र देवलोक.
५ ब्रह्मदेवलोक. ६ लांतक देवलोक. ७ महाशुक्र देवलोक. ८ सहस्रार देवलोक.
९ आनंत देवलोक. १० प्राणत देवलोक. ११ आरण देवलोक. १२ अच्युत देवलोक.

२ बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक संबंध नथी एवा देवो तेनां मूल बे प्रकार ले. एक नव ग्रैवेयकवासी, बीजा पांच अनुत्तरविमानवासी.

तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे ले.

१ सुदर्शन. २ सुप्रतिबद्ध. ३ मनोरम. ४ सर्वतोनद्र. ५ विशाल.
६ सुमनस. ७ सोमनस. ८ प्रितिकर. ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तरविमाननां नाम कहे ले.

१ विजय. २ विजयंत. ३ जयंत. ४ अपराजित. ५ सर्वार्थसिद्ध.

ए रीतें ए चोवीश दंमकनां नेद सहित नाम कह्यां.

हवे ए प्रत्येक दंमकें पांत्रीश द्वार कहेशे, तेनां नाम लखीयें लैयें.

तिहां पहेलुं शरीरद्वार पांच प्रकारें ले तेना नाम कहे ले.

१ औदारिक शरीर. २ वैक्रिय शरीर. ३ आहारकशरीर. ४ तैजस शरीर. ५ कार्मणशरीर.

२ बीजुं अवगाहनद्वार, ते प्रत्येक दंमकें जघन्य तथा उत्कृष्ट ए बेनेदें शरीरनुं प्रमाण कहेवुं.

३ त्रीजुं संघयणद्वार ते ल प्रकारें ले.

१ वज्रऋषजनाराच संघयण. २ ऋषजनाराच संघयण. ३ नाराच संघयण.
४ अर्द्धनाराच संघयण. ५ कीलिका संघयण. ६ लेवटुं संघयण.

४ चोथुं संज्ञाद्वार, दश प्रकारें छे. तेनां नाम कहे छे.

१ आहारसंज्ञा. २ नयसंज्ञा. ३ मैथुनसंज्ञा. ४ परिग्रहसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. ७ लोजसंज्ञा. ए लोकसंज्ञा. १० उंघसंज्ञा.

तथा नीचें लखेली व संज्ञा साथें मेलवतां शोल प्रकार पण थाय छे. तेनां नाम कहे छे.

१ सुखसंज्ञा. २ दुःखसंज्ञा. ३ मोहसंज्ञा. ४ डुगंबसंज्ञा. ५ शोकसंज्ञा. ६ धर्मसंज्ञा.

५ पांचमुं संस्थानद्वार व प्रकारें छे. तेना नाम कहे छे.

१ समचतुरस्र संस्थान. २ निगोहपरिमंमल संस्थान. ३ सादि संस्थान.
४ कुब्ज संस्थान. ५ वामन संस्थान. ६ हुंमक संस्थान.

आहीं पंचेंड्रियनां संस्थान कहे छे.

१ स्पर्शेंड्रियनुं नाना प्रकारनुं संस्थान छे. २ रसेंड्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान छे. ३ घ्राणेंड्रियनुं अचंता वृक्षना सरखुं संस्थान छे. ४ चक्षुरिंड्रियनुं मसूरनी दाल सरखुं अर्द्ध चंड्राकारें संस्थान छे. ५ श्रोत्रेंड्रियनुं कल्पवृक्षना फूल सरखुं संस्थान छे.

६ बहुं कषाय द्वार, ते १ क्रोध. २ मान. ३ माया. अने ४ लोज. ए चार प्रकारें छे,

७ सातमुं लेश्याद्वार व प्रकारें छे.

१ कृष्णलेश्या. २नीललेश्या. ३कापोतलेश्या.४ तेजोलेश्या. ५पद्मलेश्या. ६शुक्ललेश्या.

आठमुं इंड्रियद्वार, पांच प्रकारें छे.

१ स्पर्शेंड्रिय. २ रसेंड्रिय. ३ घ्राणेंड्रिय. ४ चक्षुरिंड्रिय. ५ श्रोत्रेंड्रिय.

ए नवमुं समुद्घात द्वार सात प्रकारें छे.

१ वेदना समुद्घात. २ कषाय समुद्घात. ३ मरण समुद्घात. ४ वैक्रिय समुद्घात. ५ तैजससमुद्घात. ६ आहारक समुद्घात. ७ केवलि समुद्घात.

१० दशमुं दृष्टिद्वार. १ सम्यक्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि. ए त्रण प्रकारें छे.

११ अगीयारमुं दर्शनद्वार, चार प्रकारें छे.

१ चक्षुदर्शन. २ अचक्षुदर्शन. ३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

१२ बारमुं ज्ञानद्वार आठ प्रकारें छे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनः पर्यवज्ञान.
५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ७ विजंगज्ञान.

ए रीतें पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञान मली, आठ प्रकारें ज्ञानद्वार छे.

१३ तेरमुं योगद्वार पन्नर प्रकारें छे.

१ सत्यमनोयोग. २ असत्यमनोयोग. ३ सत्यामृषामनोयोग. ४ असत्यामृषामनोयोग.

५ सत्यवचनयोग. ६ असत्यवचनयोग. ७ सत्यामृषावचनयोग. ८ असत्यामृषावचनयोग. ए औदारिक काययोग. १० औदारिकमिश्र काययोग. ११ वैक्रियकाययोग. १२ वैक्रियमिश्र काययोग. १३ आहारक काययोग. १४ आहारकमिश्र काययोग. १५ कार्मण काययोग. एवं पन्नर योग जाणवा.

चौदमुं उपयोगद्वार. ते पांच ज्ञान, तथा त्रण अज्ञान अने चार दर्शन मली, बार प्रकारें ले.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान. ४ मनःपर्यवज्ञान.
५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान. ७ श्रुतअज्ञान. ८ विभंगज्ञान.
ए चक्षुर्दर्शन. १० अचक्षुर्दर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

१५ पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव आवी उपजे? तेनी जघन्य तथा उत्कष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१६ सोलमुं च्यवनद्वार ते प्रत्येक दंडकने विषे एक समयमां केटला जीव च्यवे, तेनी जघन्य तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

१७ सत्तरमुं आयुष्य ते चार गतिआश्री चार प्रकारें ले. तेमां कया कया दंडकें केटलुं आयुष्य ले? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

१८ अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार ल प्रकारें ले.

१ आहारपर्याप्ति. २ शरीरपर्याप्ति. ३ इंद्रियपर्याप्ति.
४ श्वासोश्वासपर्याप्ति. ५ नाषापर्याप्ति. ६ मनःपर्याप्ति.

१ए उंगणीशमुं दिग्आहार द्वार ल प्रकारें ले.

१ अधोदिशि आहार. २ ऊर्ध्वदिशि आहार. ३ पूर्वदिशि आहार.
४ पश्चिमदिशि आहार. ५ दक्षिणदिशि आहार, ६ उत्तरदिशि आहार.

२० वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें ले.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा. २ हितोपदेशिकी संज्ञा. ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा.

एकवीशमुं गतिद्वार ते कयादंडकनो जीव मरीने कया कया दंडकमां जाय? ते कहेवानुं द्वार.

बावीशमुं आगति ते कया दंडकनें विषे कया दंडकना जीव, आवी उपजे? ते कहेवानुं द्वार.

२३ त्रेवीशमुं वेद द्वार. १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद. ए त्रण प्रकारें ले.

२४ चोवीशमुं अल्पाबहुत्वनुं द्वार. अगणुं प्रकारें ले. ते प्रकार कहे ले.

१ सर्वथकी थोडा गर्भज मनुष्यसंख्याती कोडाकोडी प्रमाण ले, तेमाटें अल्प ले.
२ तेथकी मनुष्यनी स्त्री संख्यातगुणी अधिक ले, एटले सत्त्यावीश गुणी ले. ए बे बोल मली अढीद्वीपमांहेला एकशो ने एक क्षेत्रना मनुष्यनी संख्या कहे ले

(७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६) एटले सात क्रोड कोडा कोडीकोडी, बाणुं लाख कोडाकोडीकोडी, अठ्यावीश हजार कोडाकोडीकोडी, एक शो कोडाकोडी कोडी, बाशठ कोडाकोडी कोडी, एकावन लाख कोडाकोडी, बहेंतालीश हजार कोडाकोडी, बशो कोडाकोडी, त्रेंतालीश कोडाकोडी, साडत्रीश लाख कोडी, उंगणशाठ हजार कोडी, त्रणशें कोडी, चोपन कोडी, उंगणचालीश लाख, पचास हजार, त्रणशें ने बत्रीश. एटली संख्यायें मनुष्य छे. तेना अठ्यावीश नाग करीयें, तेमां एक नाग जेटला पुरुष छे, अने सत्त्यावीश नाग जेटली स्त्री छे.

३ तेथकी बादर तेउकायपर्याप्ता असंख्यातगुणा एक आवलिकाना समयनो वर्ग करी तेने कांइक न्यून आवलिकाना समयसाथें गुणतां जेटला समय थाय, तेटला छे.

४ तेथकी अनुत्तरविमानवासी देवो असंख्यात गुणा छे. क्षेत्र पल्योपमनें असंख्यातमे नागें जेटला आकाशप्रदेश होय तेटला छे.

५ तेथकी उपरला त्रण ग्रैवेयकना देवता संख्यात गुणा छे. विमान घणा छे माटे.

६ तेथकी मध्य त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

७ तेथकी नीचला त्रण ग्रैवेयकना देवो संख्यात गुणा छे.

८ तेथकी अच्युतदेवलोकना देवता संख्यात गुणा छे.

९ तेथकी आरणदेवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१० तेथकी प्राणात देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

११ तेथकी आनत देवलोकना देवो संख्यात गुणा छे.

१२ तेथकी सातमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे. घनीकृत लोकनी एक श्रेणिना असंख्याता नागमां जेटला आकाश प्रदेशनी राशि छे, तेटली संख्यायें छे.

१३ तेथकी छठी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे, केम के नरकावासा घणा छे, तथा उत्कृष्ट पापी जीवोथकी हीनपापी जीवो घणा होय ते इहां उपजे.

१४ तेथकी सहस्रार देवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

१५ तेथकी माहाशुक्र देवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे, तिहां विमान घणां छे माटें.

१६ तेथकी पांचमी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१७ तेथकी लांतकदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे.

१८ तेथकी चोथी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

१९ तेथकी ब्रह्मदेवलोकना देवो असंख्यात गुणा छे.

२० तेथकी त्रीजी नरकपृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे.

२१ तेथकी माहेंद्रदेवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे.
२२ तेथकी सनत्कुमार देवलोकना देवता असंख्यात गुणा छे.
२३ तेथकी बीजी शर्करप्रजा नरक पृथिवीना नारकी असंख्यात गुणा छे. बारमा बोल थी मांमीने आ त्रेवीशमा बोल पर्यंतना बार बोलमां प्रत्येकें सर्व घनीकृत लोक नी एक श्रेणीने असंख्यातमे जागें जेटला आकाश प्रदेश होय, ते प्रमाणें छे अने एकेकथी असंख्यात गुणा कह्या छे. कारण के असंख्याताना असंख्याता जेद छे तेमाटें एमां विरोधता समजवी नहीं.
२४ तेथकी संमूर्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा छे. अंगुल प्रमाण क्षेत्र प्रदेश रासिसंबंधी त्रीजा वर्ग मूलने प्रथम वर्ग मूलसाथे गुणतां जे प्रदेश थाय तेटला छे.
२५ तेथकी ईशानदेवलोकना देवता असंख्यातगुणा छे. अंगुल मात्र आकाश क्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी बीजो वर्ग मूल तेने त्रीजा वर्ग मूल साथें गुणतां जेटला प्रदेश थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणियो लेवी, तेने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय, तेटला ईशानदेवलोकना देवता छे.
२६ तेथकी ईशानदेवलोकनी वसनारी देवीयो संख्यातगुणी अधिक छे,बत्रीश गुणी छे माटें.
२७ तेथकी सौधर्मदेवलोकना देवता संख्यातगुणा छे, केम के तिहां विमान घणां छे, अने वली दक्षिणदिशियें कृष्णपक्षी जीव घणा छे माटें.
२८ तेथकी सौधर्म देवलोकवासी देवी, बत्रीश गुणी छे, माटें संख्यातगुणी छे.
२९ तेथकी जवनपति देवता असंख्यात गुणा छे. कारण के एक अंगुलमात्र आकाशक्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथम वर्गमूल तेने त्रीजा वर्गमूल साथें गुणतां जे प्रदेशराशि थाय, तेटली घनीकृत लोकनी एकप्रादेशिक श्रेणिउने विषे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला छे. इहां यद्यपि प्रदेश असंख्याता छे तथापि असत्कल्पनायें २५६ कल्पीयें तेनो प्रथम वर्ग मूल १६ थाय, बीजो वर्गमूल चार थाय अने त्रीजो वर्गमूल बे थाय माटे शोलने बे साथें गणीयें तेवारें बत्रीश थाय.
३० तेथकी जवनपतिनी देवीयो बत्रीश गुणी छे, माटें संख्यातगुणी छे.
३१ तेथकी पहेला रत्नप्रजा नामा नरकपृथ्वीना नारकी असंख्यात गुणा छे, अंगुल प्रमाण आकाशक्षेत्रनी प्रदेशराशि संबंधी प्रथमवर्ग मूल तेने बीजा वर्गमूलनी साथें गणतां जे प्रदेश थाय,तावत् प्रमाण श्रेणियोमां जे आकाश प्रदेश थाय तेटला छे.
३२ तेथकी खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यात गुणा छे, जेमाटें एकप्रदेशी प्रतरना असंख्यातमा जागमां असंख्याती आकाश प्रदेशनी श्रेणिगत प्रदेश प्रमाण छे,

३३ तेथकी खेचर पंचेंड्रिय तिर्यंच योनिनी स्त्रीयो त्रिगुणी छे, माटें संख्यात गुणी छे.

३४ तेथकी स्थलचर पंचेंड्रिय योनिया पुरुष संख्यात गुणा छे जेमाटें एक वृहत्प्रतरना असंख्यातमा नागमां जे आकाश प्रदेशनी असंख्याती श्रेणी छे, तेटली श्रेणीमां जेटला आकाश प्रदेश छे, तावत् प्रमाण ए जीवो छे.

३५ तेथकी स्थलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनि संबंधी स्त्रीयो त्रिगुणी छे, संख्यातगुणी जाणवी.

३६ तेथकी जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया पुरुष संख्यात गुणा छे,जे माटें अतिप्रनूत एक प्रतरना असंख्यातमा नागमां असंख्य आकाश प्रदेशनी श्रेणीगत जेटला आ काश प्रदेश छे, तावत् प्रमाण छे.

३७ तेथकी जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंच योनिवाली स्त्रीयो त्रिगुणी छे, माटें संख्यातगुणी.

३८ तेथकी व्यंतरनिकायना देवो संख्यातगुणा छे, संख्यात कोडाकोडी योजन प्रमाण एक प्रतरनें विषे जेटला सूचीरूप खंरु थाय, तावत् प्रमाण छे.

३९ तेथकी व्यंतरदेवीयो संख्यातगुणी छे, बत्रीश गुणी माटें.

४० तेथकी ज्योतिषी देवता संख्यातगुणा छे, एक प्रतरने विषे बशें छप्पन अंगुल प्रमाण एक सूचीरूप खंरु एवा जेटला खंरु थाय तेटली संख्यायें छे.

४१ तेथकी ज्योतिषिक देवीयो बत्रीश गुणी छे माटें संख्यात गुणी कहेवी.

४२ तेथकी खेचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.

४३ तेथकी स्थलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.

४४ तेथकी जलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा छे.

४५ तेथकी चौरिंड्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणा छे. एक प्रतरने विषे जेटला एक अंगु लना संख्यातमा नाग प्रमाण वाला जेटला सूचीखंरु थाय, तेटला छे.

४६ तेथकी सर्व पंचेंड्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

४७ तेथकी बेंड्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

४८ तेथकी त्रींड्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक छे.

४९ तेथकी पंचेंड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. एक प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा नाग प्रमाण जेटला सूची खंरु थाय, तेटला छे.

५० तेथकी चौरिंड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

५१ तेथकी त्रींड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

५२ तेथकी बेंड्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक छे.

५३ तेथकी प्रत्येक शरीर वाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे.

एक प्रनूत प्रतरमां अंगुलना असंख्यातमा नाग प्रमाण जेटला सूचीखंम थायतेटला बे.

५४ तेथकी बादरनिगोद पर्याप्ता अनंतकायनां शरीर असंख्यात गुणां बे. जे माटें संख्याता प्रतरमां एक अंगुलना असंख्याता नाग जेवडा जेटला सूचीखंम समाइ शके, तेटला खंम प्रमाण बे.

५५ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया पर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा बे, जेमाटें प्रनूत संख्याता प्रतरमध्यें अंगुलना असंख्यात नाग मात्र सूचीखंम जेटला समाइ शके तेटला बे.

५६ तेथकी बादर अप्कायिया पर्याप्ता असंख्यात गुणा बे. जेमाटें अत्यंत प्रनूत संख्याता प्रतर मध्यें अंगुलना असंख्य नागमात्र जेटला सूचीखंम समाइ शके, तेटला बे.

५७ तेथकी बादरवायुकायिया पर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा बे, घनीकृत लोकना असंख्याता प्रतरने विषे जेटला आकाश प्रदेश बे तेटला प्रदेश प्रमाण बे.

५८ तेथकी बादर तेजकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा बे, जेमाटें असंख्याता लोकाकाश प्रदेश राशि प्रमाण बे.

५९ तेथकी प्रत्येक शरीरवाला बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता जीव असंख्यात गुणा बे.

६० तेथकी बादर निगोदीया अपर्याप्ताना शरीर असंख्यात गुणा बे.

६१ तेथकी बादर पृथ्वीकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा बे.

६२ तेथकी बादर अप्कायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा बे.

६३ तेथकी बादर वायुकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा बे.

६४ तेथकी सूक्ष्म तेजकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा बे. सर्वलोक व्यापी माटें.

६५ तेथकी सूक्ष्मपृथ्वीकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक बे.

६६ तेथकी सूक्ष्मअप्कायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक बे.

६७ तेथकी सूक्ष्मवायुकायिया अपर्याप्ता विशेषाधिक बे.

६८ तेथकी सूक्ष्म तेजकायिया पर्याप्ता संख्यात गुणा बे. इहां ए सूक्ष्म मध्यें स्वनावेंज अपर्याप्ताथी पर्याप्ता घणा बे माटें.

६९ तेथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक बे.

७० तेथकी सूक्ष्म अप्कायिया पर्याप्ता विशेषाधिक बे.

७१ तेथकी सूक्ष्म वायुकायिया पर्याप्ता विशेषाधिक बे.

७२ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर अपर्याप्ता असंख्यात गुणां बे.

७३ तेथकी सूक्ष्म निगोदनां शरीर पर्याप्ता संख्यात गुणां बे.

७४ तेथकी अनव्यसिद्धिया जीव अनंतगुणा बे. जघन्ययुक्त चोथा अनंता जेटला बे माटें.

७५ तेथकी पडिवाइ प्रतिपत्ति सम्यग्दृष्टि जीव अनंतगुणा छे.
७६ तेथकी सिद्धना जीव अनंतगुणा छे. मध्यमयुक्त पांचमा अनंता जेटला छे, माटें.
७७ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया पर्याप्ता जीव अनंतगुणा छे. जेमाटें एक निगोदने अनंतमे नागें सिद्ध छे,एवा असंख्याता निगोद पर्याप्ता बादर वनस्पतिमांहे छे,माटें.
७८ तेथकी बादर पर्याप्ता जीव विशेषाधिक छे. बादर पर्याप्ता पृथिव्यादिक प्रक्षेपवा थकी.
७९ तेथकी बादर वनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा छे, जेमाटें एकेक बादर निगोद पर्याप्तानी निश्रायें असंख्याता अपर्याप्ता निश्रें होय, ते माटें.
८० तेथकी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे, बादर अपर्याप्ता पृथिव्यादिक प्रक्षेपवाथकी.
८१ तेथकी सर्वपर्याप्ता अपर्याप्ता बादर जीव विशेषाधिक छे.
८२ तेथकी सूक्ष्मवनस्पतिकायिया अपर्याप्ता असंख्यात गुणा छे,केम के बादर जीवोथी सूक्ष्म घणा छे अने वली सर्व लोकव्यापी छे माटें.
८३ तेथकी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक छे. केम के सूक्ष्म अपर्याप्ता पृथिव्यादिकने तेमां प्रक्षेपवाथकी विशेषाधिक थाय.
८४ तेथकी सूक्ष्मपर्याप्ता वनस्पतिकायिया जीव संख्यातगुणा छे, केम के सूक्ष्मपर्याप्ता मांहे सूक्ष्म अपर्याप्ता स्वनावें सदैव संख्यात गुणा प्राप्त होय, माटें.
८५ तेथकी सर्व सूक्ष्मपर्याप्ता जीव विशेषाधिक छे.सूक्ष्मपर्याप्ता पृथिव्यादिक साथें नेलवाथी.
८६ तेथकी सर्व पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्मजीव विशेषाधिक छे.
८७ तेथकी नव्यसिद्धिक नव्यजीव विशेषाधिक छे जेमाटें जघन्ययुक्त अनंता प्रमाण अनव्य जीवो छे तेने टालीने बीजा सर्व नव्यजीवो छे ते माटें.
८८ तेथकी निगोदना जीव विशेषाधिक छे, जे नणी निगोदना जीव टाली बीजा सर्व जीव असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाणज छे, माटें.
८९ तेथकी वनस्पतिना जीव विशेषाधिक छे, निगोदमां प्रत्येक वनस्पति प्रक्षेपवाथकी.
९० तेथकी एकेंद्रिय जीव विशेषाधिक छे. वनस्पतिमां वली पृथिव्यादिकना प्रक्षेपवाथकी.
९१ तेथकी तिर्यंचयोनिया विशेषाधिक छे, बेंद्रियादिकना नेलवाथकी.
९२ तेथकी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक छे, ए जीव चारे गतिमां लाने, माटें.
९३ तेथकी अविरति जीव विशेषाधिक छे, अविरति सम्यग्दृष्टि जीव एमां नलवाथकी.
९४ तेथकी सकषायिजीव विशेषाधिक छे, देशविरत्यादिना नलवाथकी.
९५ तेथकी छद्मस्थ जीव विशेषाधिक छे, उपशांत मोही पण एमां नल्याते थकी.
९६ तेथकी सयोगी विशेषाधिक छे, सयोगी केवलीना नलवा थकी.

ए७ तेथकी सर्व संसारी जीव विशेषाधिक छे, एमां अयोगी केवली पण नल्या.
ए८ तेथकी सर्व जीव विशेषाधिक छे,एमां सिद्धना जीव पण नल्या.इति अल्पबहुत्व समाप्तं॥

२५ पच्चीशमुं चवन द्वार. ते प्रत्येक दंमकने विषे चवन कहेवानुं द्वार जाणवुं.
२६ छवीशमुं विरहकालद्वार. एटले अमुक दंमकें जघन्य तथा उत्कृष्टथी अमुक काल पर्यंत कोइ जीव मरे नहीं अथवा उपजे नही, ते विचार कहेवानुं द्वार.

२७ सत्त्यावीशमुं चउद गुणठाणानुं द्वार. चौद प्रकारें छे.

१ मिथ्यात्व.	२ सास्वादन.	३ मिश्र गुणठाणुं.	४ अविरतिसम्यग्दृष्टि.
५ देशविरति.	६ प्रमत्त.	७ अप्रमत्त.	८ अपूर्वकरण.
ए अनिवृत्ति.	१० सूक्ष्मसंपराय.		११ उपशांतमोह.
१२ क्षीणमोह.	१३ सयोगीकेवली.		१४ अयोगी केवली.

२८ अठ्यावीशमुं प्राणद्वार दश प्रकारें छे.

१ स्पर्शेंद्रिय.	२ रसेंद्रिय.	३ घ्राणेंद्रिय.	४ चक्षुरिंद्रिय.	५ श्रोत्रेंद्रिय.
६ कायबल.	७ वचनबल.	८ मनोबल.	ए श्वाशोश्वास.	१० आयु.

२ए उंगणत्रीशमुं संयतिद्वार, त्रिभंगी पूर्वक आठ प्रकारें छे.

१ संयती,	२ व्रती,	३ पच्चरकाणी,	४ पंमिया,
५ संवुमा,	६ जगरा,	७ धम्मिया,	८ धम्मविवसाइया.
१ असंयति,	२ अव्रती,	३ अपच्चरकाणी.	४ बाला.
५ असंवुमा,	६ च्युता,	७ अधम्मिया,	८ अधम्मविवसाइया.
१ संयतासंयती,	२ व्रताव्रती,	३ पच्चरकाणापच्चरकाणी.	४ बालापंमिया.
५ संवुमाअसंवुमा,	६ च्युताजगरा,	७ धम्माधम्मीया,	८ धम्माधम्मविवसाइया.

३० त्रीशमुं आहारद्वार, त्रण प्रकारें छे. १ सचित्ताहार. २ अचित्ताहार. ३ कवलाहार.
३१ एकत्रीशमुं आहारजातिनो द्वार त्रण प्रकारें छे. १ उंजाहार. २ लोमाहार. ३ कवलाहार.
३२ बत्रीशमुं आहारनी इछानुं द्वार. ते प्रत्येक दंमकवालाने जघन्य तथा उत्कृष्टथी केटले कालें आहार लेवानी इछा थाय? तेनो विवरो कहेवो, ते आहार इछाद्वार.
३३ तेत्रीशमुं कायस्थितिनुं द्वार. ते प्रत्येक दंमकवालाने पोतानी कायाने विषे अनुक्रमें पुनः पुनः उपजवुं, केटली वार थाय? तेना कालनुं प्रमाण कहेवुं.
३४ चोत्रीशमुं योनिद्वार, ते चोराशी लाख भेदें प्रसिद्ध छे.
३५ पांत्रीशमुं कुलकोडिद्वार, ते प्रत्येक दंमकमां केटला लाख कुलकोडि छे? एम कहेवानुं द्वार. ए रीतें पांत्रीश द्वारनां नाम कह्यां.

हवे पूर्वोक्त चोवीश दंमकमांना प्रत्येक दंमकें ए पांत्रीश द्वार कहियें वैयें.

१ तिहां प्रथम सात नारकीना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे ले.

१ वैक्रिय, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहना नवधारणीय शरीर जघन्यथी मांमीउत्कृष्ट पांचशें धनुष्य होय तथा उत्तर वैक्रिय शरीर तेथी बमणुं होय. तेमां जघन्यथी साडा पन्नर धनुष्य नें बार अंगुल अने उत्कृष्टुं एक हजार धनुष्य होय. उपजतां नवधारणीय अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय अने उत्तर वैक्रिय अंगुलनो संख्यातमो नाग होय.

३ नारकीने संघयण नथी. असंघयणी ले.

४ संज्ञा आश्रयी संज्ञा, दश पण होय, अथवा शोल होय.

५ नारकीने हुंमसंस्थान होय.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ नारकीने कृष्ण, नील अनें कापोत, ए त्रण लेश्या होय.

८ इंड्रियो पांचे होय.

९ वेदना, कषाय, मरण अने वैक्रिय ए चार समुद्घात होय.

१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय. सम्यक्त्व, मिश्र अने मिथ्यात्व.

११ चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ मत्यादि त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान होय.

१३ मनना चार योग, वचनना चार योग, तथा कायना त्रण योग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग तथा कार्मण काययोग मलीने अगीयार योग होय.

१४ उपयोग प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने चक्षुरादिक त्रण दर्शन सर्व मलीने नव होय.

१५ उपपात एक समयमां जघन्यथी एक, बे, त्रण, जीव उपजे अने उत्कृष्टथी संख्याता असंख्याता जीव पण उपजे.

१६ उपपातनी परें च्यवनद्वार पण समजवुं. एटले जेम उपजे, तेम चवें.

१७ आयुष्य जघन्यथी दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपम जाणवुं.

१८ पर्याप्ति ल होय, परंतु नाषा अनें मन ए बे पर्याप्ति साथेंज उपजे, तेथी प्रकारांतरें पांच पर्याप्ति पण कहेवाय.

१९ आहार, ल दिशिनो लिये ले.

२० दीर्घकालिकी संज्ञा एकज होय.

२१ चवीने गर्नज मनुष्य तथा गर्नज तिर्यंच ए बे दंमकमां आवे.

२२ तिर्यंच पंचेंड्रिय तथा गर्नज मनुष्य ए दंमकना जीवो नारकीमां आवी उपजे.

२३ वेदद्वारमां नारकीने एक नपुंसक वेद होय.

२४ अल्प बहुत्वमां सर्वथकी थोडा, सातमी नरकपृथ्वीना नारकी जाणवा. पली अल्पपापना सेवनार घणा माटें तेथकी लहीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी पांचमीना असंख्यात गुणाधि

क. तेथकी चोथीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी त्रीजीना असंख्यातगुणाधिक, तेथकी बीजीना असंख्यातगुणाधिक. तेथकी पहेलीना असंख्यातगुणाधिक जाणवा.

२५ नवनद्वारआश्री साते नरक पृथिवीना मली, उगणपचास प्रतर अने चोराशी लाख नरकावासा जाणवा.

२६ बवीशमा विरहकाल द्वारमां जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो ब महिनानो विरह जाणवो. प्रथम नरकें जघन्य एक समय उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त्त. बीजीमां सात दिवस, त्रीजीमां पंदर दिवस, चोथीमां एक मास, पांचमीमां बे मास, बठीमां चार मास, अने सातमीमां ब मास. तथा जघन्यथी सर्वमां एक समय.

२७ गुणगणा प्रथमना चार लाने.

२८ नारकीने दश प्राण जाणवां.

२९ संयतिद्वार आश्री असंयती, अव्रती, अपच्चरकाणी, बाला, असंवुमा, च्युता, अधार्मिक अने अधर्मव्यवसायिका, ए आठ नांगा होय.

३० आहारद्वारमां नारकी जीवो एकज अचेत आहार लिये.

३१ आहार जातिना द्वारमां नारकीने उजाहार अने लोमाहार. ए बे रीतें आहार लेवानुं होय.

३२ आहारनी इच्चा आश्रयी साते नरक पृथ्वीना नारकीने जघन्यथी एक समयें अने उत्कृष्टी अंतर मुहूर्त्तें उपजे.

३३ कायस्थितिआश्री जेटली नवस्थिति होय, तेटलो काल कायस्थिति पण जाणवी. कारण के नरकनो जीव मरीने फरी नरकमां न जाय.

३४ योनिद्वार आश्रयी नारकी जीवोनी चार लाख योनि उपजवानी जाणवी.

३५ कुलकोडीद्वार आश्रयी नारकी जीवोना पच्चीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए नरकाश्री पांत्रीशद्वारनो विचार कह्यो.

---

११ हवे दश नवन पतिना दश दंमकने विषे पांत्रीश द्वार कहे बे.

१ शरीरद्वार आश्रयी, वैक्रिय तेजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ अवगाहनाद्वार आश्रयी उपजतां वखत, अंगुलनो असंख्यातमो नाग शरीर होय. पढी उत्कृष्ट, सात हाथनुं शरीर होय. अने उत्तरवैक्रिय करे तो एक लाख योजन सुधी करे.

३ संघयण आश्रयी देवोने कोइ पण संघयण नथी असंघयणी बे माटें.

४ संज्ञा आश्रयी दश अथवा शोल होय.

५ संस्थानआश्रयी देवोने एकज समचतुरस्त्र संस्थान होय.

६ कषायाश्रयी क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ लेश्या आश्रयी कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो, ए चार लेश्या होय.

८ इंद्रिय आश्रयी पांचे इंद्रिय होय.
ए समुंदूघात आश्रयि वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय अने तैजस, ए पांच होय.
१० दृष्टि सम्यक्त्वादिक सम्यक्त्व, मिथ्यात्व अने मिश्र. ए त्रणे होय.
११ दर्शन, आश्रयी चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शन, ए त्रण होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
१३ योग आश्रयी नारकीनी पेरें चार मनना, चार वचनना अने त्रणा कायना मलीनें ए अगीयार योग होय.
१४ उपयोगघार आश्रयी प्रथमना त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान अने प्रथमनां त्रण दर्शन. ए रीतें नव उपयोग होय.
१५ जघन्यथी एक समयमां एक,बे, त्रण, उपजे अने उत्कृष्टपणे संख्याता अथवा असंख्याता पण एक समयमां उपजे.
१६ उपजवानी पेरें च्यवनघार पण जाणवुं.
१७ आयुष्यघार आश्रयी, जघन्यथी दश हजार वर्ष, अनें उत्कृष्ट, एक सागरोपम जाजेरुं आयुष्य जाणवुं.
१८ पर्याप्ति ठ होय परंतु जाषा अने मन, ए बे पर्याप्ति सार्थे होय. तेथी प्रकारांतरें पांच पण कहेवाय.
१ए आहारआश्री जवनपति देवो ठए दिशिनो आहार लिये ठे.
२० संज्ञामां एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ च्यवीने मनुष्य, तिर्यंच पंचेंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय, ए पांच दंमकने विषे जाय.
२२ एक गर्जज मनुष्य अने बीजा तिर्यंच पंचेंद्रिय, ए बे दंमकवाला आवी,जवनपतिनी दशे निकायने विषे उपजे.
२३ वेदमां पुरुषवेद अने स्त्रीवेद,ए बे होय.
२४ अल्पबहुत्वमां सौधर्म, देवलोकनी देवी योथकी असंख्यात गुणा ठे.
२५ जवनघारमां दशे निकायना वीश इंद्रना जवननी संख्या ७७२०००००ठे.
२६ विरहकाल, जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त जाणवो.
२७ गुणगणां आश्रयी प्रथमनां चार होय.
२८ प्राणघारआश्रयी एमने दशे प्राण होय.
२ए संयतीना ८ जांगा नारकीनी पेरें होय.
३० आहारआश्री अचित्ताहार लिये.
३१ उंजाहार नें लोमाहार बे आहार करे.
३२ दश हजार वर्षना आयुष्य वालाने चोथजत्तें आहारनी इछा उपजे. पल्योपमना आयुष्यवालाने दिवस पृथक्त्वें आहारनी इछा उपजे. एक सागरोपम आयुवालाने एक हजार वर्षें आहारनी इछा उपजे. सागरोपम जाजेरा आयुष्यवालाने हजार वर्ष जाजेरे आहारनी इछा उपजे.
३३ जवनपति मरीने जवनपति न थाय. माटें जेटली जवस्थिति होय, तेटली ज एमनी कायस्थिति पण जाणवी,
३४ जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी ने वैमानिक,ए चारे निकायना देवोनी चार लाख योनि उपजवानी कही ठे.
३५ ए देवोना तेरे दंमकने विषे ठवीश लाख कोडी कुल जाणवां.

१२ हवे बारमा पृथ्वी कायना दंमकने विषे पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ अवगाहना जघन्य तथा उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो जाग होय.
३ एक छेवढुं संघयण होय.
४ संज्ञा, आहार, जय, मैथुन अने परिग्रह,ए चार अथवा दश होय.
५ एक हुंमक संस्थान मसूरने आकारें छे.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्याओ होय अने पर्याप्ताने कृष्ण,नील ने कापोत,ए त्रण लेश्या होय.
८ इंड्रियद्वारें एक स्पर्शेंड्रियज होय.
९ समुद्घात द्वार आश्रयी वेदन, कषाय ने मरण, ए त्रण समुद्घात होय.
१० दृष्टि आश्रयी एक मिथ्यादृष्टि होय.
११ दर्शन आश्रयी एक अचक्षुदर्शन होय.
१२ ज्ञानद्वार आश्रयी मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञान, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय. मन अने वचन एने नथी.
१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन,ए त्रण उपयोग होय.
१५ उपपात द्वार आश्रयी एक समयमां असंख्याता पृथिवीकाय जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्यात जीव च्यवे.
१७ जघन्य, अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट बावीश हजार वर्षनुं आयुष्य जाणवुं.
  १ सुंहानुं हजार वर्ष.
  २ सुधानुं बार हजार वर्ष.
  ३ वालुकानुं चौद हजार वर्ष.
  ४ मणसिलनुं शोल हजार वर्ष.
  ५ शर्करानुं अढार हजार वर्ष.
  ६ खरपुढवीनुं बावीश हजार वर्ष.
१८ आहार, शरीर, इंड्रिय अने श्वासोश्वास. ए चार पर्याप्ति होय.
१९ आहारद्वारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लिये.
२० त्रण संज्ञामांहेली कोइ पण संज्ञा ए दंमकें न होय.
२१ पृथिवीकाय मरीने पांच स्थावरना पांच दंमक तथा विकलेंड्रियना त्रण दंमक, पंचेंड्रियतिर्यंचनो दंमक अने मनुष्यनो दंमक, ए दश दंमकमां जइ उपजे.
२२ नारकी वर्जीने बाकी त्रेवीशे दंमकना जीव, पृथिवीकायमां आवी उपजे.
२३ एकज नपुंसक वेद होय. परंतु स्त्री अने पुरुष ए बे वेद एमां नथी.
२४ अल्पबहुत्वमां त्रींड्रियथकी पृथिवीकायिया जीव अधिक छे.
२५ जुवनद्वारें पृथिवीकायमां जवन नथी.
२६ ए दंमकने विषे विरहकाल पण नथी.
२७ ए दंमकने विषे एकज मिथ्यात्व गुणगाणुं जाणे. केम के सर्व मिथ्यादृष्टि छे.

२८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
२९ नारकीनी पेरें संयतीना आठ नांगा होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमे करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इच्छा उपजे.
३३ सूक्ष्म पृथिवीकायनी कायस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी जाणवी. बादरपृथिवीकायनी कायस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी.
३४ सात लाख योनि जाणवी.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१३ हवे तेरमा अप्कायना दंडकने विषे पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ शरीरद्वार आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अने उत्कृष्टी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय.
३ एक छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एक हुंम संस्थान पाणीना पर्पोटानें आकारें होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय, ए दंडकें होय.
७ अपर्याप्ताने प्रथमनी चार लेश्या होय, अनें पर्याप्ताने प्रथमनी कृष्ण, नील नें कापोत ए त्रण लेश्या होय,
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय, एकेंद्रिय छे माटें.
९ समुद्घात आश्रयी वेदना, कषाय ने मरण ए त्रण समुद्घात होय.
१० दृष्टिद्वारमां एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ दर्शनद्वारमां एक अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ योगद्वार आश्रयी औदारिक काययोग, औदारिक मिश्रकाययोग अने कार्मण काययोग, ए त्रण योग होय.
१४ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने अचक्षुदर्शन. ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता मरण पामे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट सात हजार वर्षायु होय.
१८ पर्याप्ति, आहार, शरीर, इंद्रिय अने श्वासोश्वास, ए चार होय.
१९ आहारआश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक कोइ पण संज्ञा न होय.
२१ ए दंडकवालाजीव पण पृथिवीकायनी पेरें दश दंडकने विषे जाय.
२२ एक नारकी वर्जी बाकी त्रेवीश दंडकना जीवो अप्कायमां आवी उपजे.
२३ वेद आश्रयी एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्प बहुत्वमां पृथ्वीकायथी अप्कायिक. जीव अधिक छे.
२५ अप्कायनें नवन नथी.
२६ विरहकाल पण नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे.

२० पृथिवीकायनी पेरें चार प्राण होय.
२एअसंयतीना आठ नांगा, नारकी पेरें जाणवा
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिविकायनी पेरें जाणवी.
३४ सात लाख जीवायोनि जाणवी.
३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१४ हवे तेउकायना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ शरीर आश्रयी औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य तथा उत्कृष्टी अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय.
३ एकज छेवहुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंम संस्थान सूइनी अणीने आकारें.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत, त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
ए प्रथमनी त्रण समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शन ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता जीव उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता जीव च्यवे.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्ट त्रण अहोरात्रिनुं आयुष्य होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१ए आहार आश्रयी त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घ कालादिक त्रणे संज्ञारहित होय.
२१ मरीने पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय अने एक तिर्यंच, पंचेंद्रियनो दंमक मलीने नवदंमकने विषे जाय.
२२ एमां दश दंमकना जीवो आवी उपजे.
२३ एमां एकज नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्व अगाणुं बोलमां कह्युं छे.
२५ जुवन ए दंमकमां नथी.
२६ विरहकाल नथी. निरंतर उपजे छे.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगाणुं लाने.
२८ स्पर्शेंद्रिय, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए चार प्राण होय.
२एअसंयतीना नारकीनी पेरें आठ नांगा होय.
३०सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरें जाणवी.
३४ सात लाख योनि उपजवानी छे.
३५ त्रण लाख कोडी कुल जाणवां.

१५ हवे पन्नरमा वायुकायना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्योत्कृष्ट अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग होय.
३ एकज छेवहुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंमसंस्थान, ध्वजा ने पताकाने आकारें.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत, ए त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रिय होय.
९ प्रथमना चार समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्र काययोग अने कार्मणकाययोग. ए पांच योग होय.
१४ प्रथमनां बे अज्ञान अने एक अचक्षु दर्शन, ए त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां असंख्याता उपजे.
१६ एक समयमां असंख्याता च्यवे.
१७ जघन्यथी अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण हजार वर्षायु होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो पण आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा रहित होय.
२१ तेउकायनी पेरें नव दंमकने विषे जाय.
२२ पांच स्थावर, त्रण विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य, ए दश दंमकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ वेदद्वारें एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वद्वारमां अप्कायथकी वायुकायिया जीव अधिक छे.
२५ ए दंमकें नवन नथी.
२६ विरहकाल नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणठाणुं लाने.
२८ तेउकायनी पेरें चार प्राण होय.
२९ नारकीनी पेरें संयतीना आठ बोल छे.
३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
३१ उज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति पृथिवीकायनी पेरें जाणवी.
३४ सात लाख जीवा योनि छे.
३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१६ हवे सोलमा वनस्पतिकायना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग उत्कृष्टी एक हजार योजन प्रमाण शरीरनी अवगाहना जाणवी.
३ एकज छेवहुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ हुंमसंस्थान नाना प्रकारना आकारनुं.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो. ए चार लेश्या अपर्याप्ताने होय, अने पर्याप्ताने पहेली त्रण लेश्या होय.
८ एक स्पर्शेंद्रियज होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० एकज मिथ्यादृष्टि होय.
११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ मति अने श्रुत, ए बे अज्ञान होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय.
१४ तेउकायनी पेरें त्रण उपयोग होय.
१५ एक समयमां अनंता जीव उपजे.
१६ एक समयमां अनंता जीव च्यवे.
१७ जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट दश हजार वर्षायु होय.
१८ प्रथमनी चार पर्याप्ति होय.
१९ त्रण, चार, पांच अथवा छ दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिक संज्ञा रहित होय.
२१ पांच स्थावरना, त्रण विकलेंद्रियना, एक तिर्यंच पंचेंद्रियनो अने एक मनुष्यनो. ए रीतें दश दंमकने विषे जइ उपजे.
२२ नारकी वर्जिने बाकी त्रेवीश दंमकवाला जीवो, ए दंमकमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां वायुकायथी वनस्पतिकायिया जीव अधिक छे.
२५ नवन नथी.
२६ विरहकाल नथी.
२७ एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाने.
२८ तेउकायनी पेरें चार प्राण होय.
२९ संयतीना आठ नेद नारकीनी पेरें.
३० सचित्तादिक त्रण प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ समय समय आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति प्रत्येक वनस्पति आश्रयी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी होय अने अनंतकाय आश्रयी अनंती उत्सर्पिणी ने अवसर्पिणी होय.
३४ प्रत्येकनी दश लाख अने साधारणनी चौदलाख मली चोवीश लाखयोनि छे.
३५ अठ्यावीश लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१७ हवे सत्तरमा बे इंद्रियना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस ने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.
२ अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी बार योजन होय.
३ एकज छेवठुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंमसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण लेश्या.
८ स्पर्शेंद्रिय अने रसेंद्रिय, ए बे इंद्रिय होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ अपर्याप्तावस्थायें कोइएकने मति अने श्रुत ए बे ज्ञान होय अनें एज बे अज्ञान पण होय. तथा पर्याप्तावस्थायें तो बे अज्ञानज होय.
१३ औदारिककाययोग, औदारिक मिश्र काययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषा वचनयोग,ए चार योग होय.
१४ कोइएक अपर्याप्ताने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने अचक्षुदर्शन. ए पांच उपयोग होय, अने पर्याप्ताने बे ज्ञान न होय,माटें त्रणज उपयोग होय.
१५ एक समयमां जघन्य, एक, बे, त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टथी संख्याता अथवा असंख्याता जीव आवी उपजे.
१६ उपजवानी पेरें मरण पण जाणी लेवुं.
१७ आयुष्य आश्रयी जघन्य अंतर मुहूर्त्त अने उत्कृष्टथी बार वर्षायु होय.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जइ उपजे.
२२ दश दंमकना जीव एमां आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां पंचेंद्रिय तिर्यंचथकी बेंद्रिय जीव अधिक होय.
२५ च्यवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ एमां मिथ्यात्व अने सास्वादन ए बे गुण गणां लाभे.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय,वचनबल,कायबल, श्वासोश्वास अनें आयु.ए६ प्राण होय.
२९ संयतीना आठ भेद नारकीनी पेरें.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनोआहार लीयें.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी अंतरमुहूर्त्तें आहारनी इच्छा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता वर्षनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि जाणवी.
३५ सात लाख कोडी कुल जाणवां.

---

१८ हवे अढारमा त्रींद्रियना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्म्मण. ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टी त्रण गाउनी अवगाहना.
३ एकज छेवहुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंमसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील अने कापोत. ए त्रण लेश्या होय.
८ स्पर्शेंद्रिय रसेंद्रिय अने घ्राणेंद्रिय, ए त्रण इंद्रियो होय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.

११ एकज अचक्षुदर्शन होय.
१२ ज्ञान द्वींद्रियनी पेरें जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्य अमृषा वचनयोग,ए चार योग होय.
१४ द्वींद्रियनी पेरें उपयोग जाणवा.
१५ द्वींद्रियनी पेरें उपपात जाणवो.
१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं उंगणपचास दिवसायु जाणवुं.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ ब दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जइ उपजे.
२२दश दंमकवाला जीवो एमांआवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां बेंद्रियथकी तेंद्रियजीव अधिक होय.
२५ नवन नथी.
२६ जघन्य एक समयने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमना बे गुणठाणां लाने.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु, ए सात प्राण होय.
२९ संयतीना आठ नंग, नारकीनी पेरें.
३०सचित्तादिक त्रणेप्रकारनोआहारलीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता दिवसनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि बे.
३५ आठ लाख कोडि कुल जाणवां.

---

१९ हवे उंगणीशमा चउरिंद्रियना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे बे.

१ औदारिक, तैजस अने कार्मण,ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी चार गाउनी अवगाहना.
३ एकज बेवहुं संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ एकज हुंमसंस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण लेश्या.
८स्पर्श,रस,घ्राणनेचक्षु,एचार इंद्रियोहोय.
९ प्रथमना त्रण समुद्घात होय.
१० सम्यक् अने मिथ्या, ए बे दृष्टि होय.
११ चक्षु ने अचक्षु, ए बे दर्शन होय.
१२ ज्ञान, द्वींद्रियनी पेरें जाणी लेवुं.
१३ औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्य अमृषावचनयोग. ए चार योग होय.
१४ अपर्याप्ता लगें कोइकने प्रथमनां बे ज्ञान, बे अज्ञान अने बे दर्शन. ए ब उपयोग होय, अने पर्याप्ताने प्रथमना बे ज्ञान विना चार उपयोग होय.
१५ द्वींद्रियनी पेरें उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त, उत्कृष्टुं छ मासायु.
१८ मनःपर्याप्ति वर्जीने पांच पर्याप्ति होय.
१९ छ दिशिनो आहार लीये.
२० एक हितोपदेशिकी संज्ञा होय.
२१ वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जाय.
२२ एमां दश दंमकवाला जीवो आवी उपजे.
२३ एक नपुंसक वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां ज्योतिषी देवोथकी चौरिंद्रिय जीव अधिक होय.
२५ जवन नथी.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो एक मुहूर्त्त विरहकाल होय.
२७ प्रथमनां बेज गुणठाणां लाने.
२८ स्पर्शेंद्रिय, रसेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, वचनबल, कायबल, श्वासोश्वास अने आयु. ए आठ प्राण होय.
२९ संयतीना आठ नंग नारकीनी पेरें छे.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३२ जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक अंतर मुहूर्त्तें आहारनी इञ्चा उपजे.
३३ कायस्थिति संख्याता मासनी जाणवी.
३४ बे लाख योनि छे.
३५ नव लाख कोडी कुल जाणवां.

२० हवे वीशमा पंचेंद्रिय तिर्यंचना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ संमूर्छिमने औदारिक,तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय. तथा गर्नजनें औदारिक, वैक्रिय, तैजस अनें कार्मण, ए चार शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टो एक हजार योजन शरीर,तेमां गर्नज जलचरनुं हजार योजननुं, स्थलचरनुं छ गाउ,खेचरनुं धनुष्य पृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं हजार योजन अने जुजपरिसर्पनुं गाउ पृथक्त्व. तेमज उत्तर वैक्रियशरीर करे, तो नवशें योजन प्रमाण जाणवुं. तथा संमूर्छिममां जलचरनुं एक हजार योजन, स्थलचरनुं गाउ पृथक्त्व,खेचरनुं धनुष्यपृथक्त्व, उरःपरिसर्पनुं योजनपृथक्त्व, जुजपरिसर्पनुं गाउपृथक्त्व जाणवुं.
३ संमूर्छिमने एकज छेवहुं संघयण होय. अने गर्नजने छए संघयण होय.
४ संज्ञा चार अथवा दश होय.
५ संमूर्छिमने एक हुंमसंस्थान अने गर्नजने छ ए संस्थान होय.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय. अने गर्नजने छए लेश्या होय.
८ इंद्रिय पांचे होय.
९ संमूर्छिमने प्रथमना त्रण समुद्घात होय अने गर्नजने पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधि दर्शन, ए त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अ ज्ञान मली ठ ज्ञान होय.

१३ संमूर्छिमने औदारिककाययोग, औ दारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग अने असत्यअमृषावचनयोग. ए चार योग होय. तथा गर्नजने मनना चार, वचनना चार अने औदारिककाय योग, औदारिकमिश्रकाय योग, वैक्रि यकाय योग, वैक्रियमिश्रकाय योग, कार्मणकाय योग. ए तेर योग होय.

१४ संमूर्छिममां कोइएकने अपर्याप्ताव स्थायें चौरिंद्रियनी पेरें ठ उपयोग होय अने पर्याप्तावस्थायें चार होय, ने गर्नजने नारकीनी पेरें नव उपयोग.

१५ द्वींद्रियनी पेरें उपपात जाणवो.

१६ उपपातनी पेरें मरण जाणवुं.

१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त आयु होय अने उ त्कृष्टुं त्रण पल्योपमायु होय. तेमां ग र्नज तिर्यंचनुं आयु आ प्रमाणें ठे.

१ जलचरनुं पूर्वकोटि वर्षायु जाणवुं,
२ खेचरनुं पल्योपमनो असंख्य नाग.
३ स्थलचरनुं त्रण पल्योपमायु.
४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु.
५ नुजपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु. संमूर्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं आयु कहे ठे.
१ जलचरनुं पूर्वकोडी वर्षायु.
२ स्थलचरनुं चोराशी हजार वर्षायु.
३ खेचरनुं बहोंतेर हजार वर्षायु.
४ उरःपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु.
५ नुजपरिसर्पनुं पूर्वकोडी वर्षायु.

१८ संमूर्छिमने मनपर्याप्ति वर्जी बाकीनी पांच पर्याप्ति अने गर्नजने ठ पर्याप्ति होय.

१९ ठ दिशिनो आहार लीये.

२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.

२१ संमूर्छिम,तिर्यंच तो एक ज्योतिषी तथा बीजा वैमानिक,ए बे दंडक वर्जिने बाकी ना बावीश दंडकमां जइ उपजे अने गर्न ज तिर्यंचतो चोवीश दंडकमां जइ उपजे.

२२ संमूर्छिममां दश दंडकवाला जीवो. आवी उपजे अने गर्नजमां चोवीशे दंडकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्छिमनें एक नपुंसकवेद होय अने गर्नजने त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां चौरिंद्रिय जीवथकी पं चेंद्रिय तिर्यंच जीव अधिक ठे.

२५ नवन नथी.

२६ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीशमुहूर्त्त, तथा गर्नजने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो बार मु हूर्त्त विरहकाल जाणवो.

२७ संमूर्छिममां प्रथमनां बे गुणठाणां लाने अने गर्नजमां प्रथमनां पांच गुणठाणां लाने.

२८ संमूर्छिमने मन विना नव प्राण होय, अने गर्नजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्छिममां संयतीना आठ नंग ना

रकीनी पेरें होय अने गर्नजमां संयती तथा असंयतासंयती, ए बे नंग होय.
३० सचित्तादिक त्रणे प्रकारनो आहार लीये.
३१ उंजादिक त्रणे प्रकारें आहार लीये.
३१ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अनें उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें तथा गर्नजनें जघन्य, एक अंतरमुहूर्त्तें अने उत्कृष्टी उछजकें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति सात आठ नवनी जाणवी.
३४ चार लाख योनि जाणवी.
३५ साडी त्रेपन लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२१ हवे एकवीशमा मनुष्यना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे बे.

१ संमूर्छिमने औदारिक, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय अने गर्नजने पांचे शरीर होय.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी त्रण गाउनी अवगाहना.
३ संमूर्छिमने एक बेवढुं संघयण होय अने गर्नजनें बए संघयण होय.
४ संज्ञा चार, दश अनें शोल होय.
५ संमूर्छिमने एक हुंमसंस्थान. अने गर्नजने ब संस्थान होय.
६ केवली अने क्षीणमोही विना बाकीना सर्व मनुष्यने चारे कषाय होय.
७ गर्नजने ब लेश्या अनें संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण लेश्या होय.
ए इंद्रिय पांचे होय.
ए संमूर्छिमने प्रथमनी त्रण समुद्घात होय अने गर्नजने साते समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुआदिक चारे दर्शन होय.
१२ गर्नजने पांच ज्ञान अने त्रण आज्ञन, ए आठे ज्ञान लाने, अने संमूर्छिमने प्रथमनां बे ज्ञान,अने बे अज्ञान होय.
१३ संमूर्छिमने औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग अने कार्मणकाययोग, ए त्रण योग होय अने गर्नजने पन्नरे योग होय.
१४ संमूर्छिमने प्रथमना बे अज्ञान अने प्रथमनां बे दर्शन,ए चार उपयोग होय अने गर्नजने बारे उपयोग होय.
१५ संमूर्छिमनेविषे एक समयमां असंख्याता जीव उपजे. ते सर्वेमिथ्यादृष्टि जाणवा अने गर्नजने विषे जघन्यथी एक, बे,त्रण तथा उत्कृष्टा संख्याता उपजे.
१६ उपजवानी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य अंतरमुहूर्त्त अने उत्कृष्टुं त्रण पल्योपमायु जाणवुं.
१ए संमूर्छिमने प्रथमनी चार पर्याप्ति अने गर्नजने सर्वे बए पर्याप्ति होय.
१ए ब दिशिनो आहार लीये.
२० दीर्घकालादिकी त्रणे संज्ञा होय.
२१ संमूर्छिम मरीने वनस्पतिनी पेरें दश दंमकमां जाय अने गर्नज मरीने चोवीशे दंमकमां जाय.
२२ संमूर्छिममां पृथिवी, अप्, वनस्पति,

त्रण विकलेंड्रिय, तिर्यंच अने मनुष्य, ए आठ दंमकवाला जीवो आवी उपजे. अने गर्नजमां तो तेउ अने वाउ, ए बे दंमक वर्जीने शेष बावीश दंमकना जीवो आवी उपजे.

२३ संमूर्छिमने एक नपुंसक वेद होय अने गर्नजनें त्रणे वेद होय.

२४ अल्पबहुत्वमां गर्नज मनुष्य, संख्यायें सर्वदंमकथकी स्वल्प छे.

२५ एमनां च्यवन नथी.

२६ विरहकाल तिर्यंच पंचेंड्रियनी पेरें छे.

२७ संमूर्छिममां एकज मिथ्यात्व गुणगणुं लाने अने गर्नजमां चउदे गुणगणां लाने.

२८ संमूर्छिमने मनोबल अने वचनबल विना आठ अथवा सात प्राण होय, अने गर्नजने दशे प्राण होय.

२९ संमूर्छिमने संयतीना आठ नंग नारकीनी पेरें होय, अने गर्नजने विषे संयतीना चोवीश नंग सर्व प्रकारें लाने.

३० सचित्तादिक त्रणेप्रकारना आहार लीये.

३१ उंजादिक त्रण प्रकारें आहार लीये.

३२ संमूर्छिमने जघन्य एक समय अने उत्कृष्टथी एक अंतरमुहूर्त्तें अने गर्नजने जघन्य एक अंतरमुहूर्त्तें अने उत्कृष्टथी अष्टमनक्तें आहारनी इछा उपजे.

३३ कायस्थिति सात आठ नवनी जाणवी.

३४ चौद लाख योनि जाणवी.

३५ बार लाख कोडी कुल जाणवां.

---

२२ हवे बावीशमा व्यंतर देवोना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे छे.

१ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर होय.

२ उपजतां जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो नाग अने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना होय तथा उत्तरवैक्रिय करे तो जघन्यथी अंगुलनो संख्यातमो नाग अने उत्कृष्ट एक लाख योजन जाणवो.

३ संघयण रहितहोय असंघयणी छे माटे.

४ संज्ञा चार, दश, शोल, होय.

५ एक समचतुरस्त्र संस्थान जाणवुं.

६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.

७ तेजो पर्यंत प्रथमनी चार लेश्या होय.

८ पांचे इंड्रिय होय.

९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.

१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.

११ प्रथमनां त्रण दर्शन होय.

१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान तथा त्रण अज्ञान मली छ होय.

१३ मनना चार, वचनना चार तथा वैक्रियकाययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग अने कार्मण काययोग. ए अगीयारयोग होय.

१४ नारकीनी पेरें नव उपयोग होय.

१५ एकसमयें जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टा संख्याता असंख्याता उपजे.

१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.

१७ जघन्य दश हजारवर्ष अने उत्कृष्टुं एक पल्योपमायु जाणवुं.

१८ पर्याप्ति छ होय परंतु नाषा अने मन स

थें उपजे मार्टें पांच पर्याप्ति पण कहियें.
१९ ठ दिशिनो आहार लीये.
२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ पृथिवी,अप्, वनस्पति,तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य. ए पांच दंडकमां जइ उपजे.
२२ गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्य. ए बे दंडकवाला जीवो एमां आवी उपजे.
२३ पुरुष अने स्त्री,ए बे वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचिणीथकी एजीव संख्यातगुणा ठे. अथवा नारकीथकी अधिक ठे.
२५ एमनां च्यवन असंख्यातां ठे.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो.
२७ प्रथमना चारें गुणठाणां लाजे.
२८ प्राण आश्रयी दशे प्राण होय.
२९ संयतीना आठ नंग त्रीजे प्रकारें लाजे.
३० एकज अचित्ताहार लीये.
३१ उंज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ दशहजार वर्षायुवालाने चोथनकें आहारनी इछा अने पल्योपमायुवालाने दिवस प्रथक्त्वें आहारनी इछा उपजे.
३३ कायस्थिति नवस्थिति जेटली जाणवी. ए मरीने फरी देव गतिमां न उपजे.
३४ चारे निकायनी ४ लाखयोनि जाणवी.
३५ कुलकोडी पण चारे निकायनी साथें ज नवनपतिना दंडकमां कही ठे.

---

२३ हवे त्रेवीशमा ज्योतिषीदेवोना दंडकें पांत्रीश द्वार कहे ठे.

१ वैक्रिय, तैजस अने कार्मण. ए त्रण शरीर होय.
२ जघन्य तथा उत्कृष्टावगाहना व्यंतर देवोनी पेरें जाणवी.
३ संघयण रहित ठे असंघयणी ठे.
४ संज्ञा, चार, दश, शोल होय.
५ एक समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ एकज तेजोलेश्या होय.
८ पांचे इंद्रियो होय.
९ प्रथमना पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होये.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान.
१३ व्यंतरनी पेरें अगीयार योग होय.
१४ नारकीनी पेरें नव उपयोग होय.
१५ व्यंतरदेवोनी पेरें उपपात जाणवो.
१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणवुं.
१७ जघन्य एक पल्योपमनो आठमो नाग अने उत्कृष्टुं एक पल्योपम एक लाख वर्षें अधिक एटलुं आयु जाणवुं.
१८ पर्याप्ति ठ होय परंतु नाषा अने मन साथें लेतां पांच पर्याप्ति पण कहियें.
१९ ठ दिशिनो आहार लीये.
२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ व्यंतरनी पेरें पांच दंडकमां जइ उपजे.
२२ व्यंतरनी पेरें बे दंडकना जीवो एमां आवी उपजे.

२३ पुरुषवेद अने स्त्रीवेद, ए बे वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां व्यंतरिकदेवोथकी ज्यो तिषी देवो अधिक ले.
२५ एमनां जवन असंख्यातां ले.
२६ जघन्य एक समय अने उत्कृष्टो चोवीश मुहूर्त्त पर्यंत विरहकाल जाणवो.
२७ प्रथमना चारे गुणगणां लाजे.
२७ एमने दश प्राण होय.
२ए संयतीना आठ जंग त्रीजें प्रकारें लाजे.
३० एकज अचित्ताहार लीये.
३१ उज अने लोमें करी आहार लीये,
३२ जघन्योत्कृष्ट दिवस पृथक्त्वें आहार नी इछा उपजे.
३३ ज्योतिषी मरी फरी ज्योतिषी न थाय.
३४ योनिद्वार बधा देवोनुं साथें कहेवाणुं ले.
३५ कुलकोडी द्वार पण साथें कहेवाणुं ले.

---

२४ चोवीशमा वैमानिक देवोना दंमकें पांत्रीश द्वार कहे ले.

१ वैक्रिय तैजस अने कार्मण, ए त्रण शरीर.
२ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग अने उत्कृष्टी सात हाथनी अवगाहना तथा उत्तर वैक्रिय शरीर करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो जाग अने उत्कृष्ट लाख योजन सुधी ते बारमा देवलोक सुधीना देवो करे, उपरांतना न करे.
३ संघयण रहित ले असंघयणी ले.
४ संज्ञा चार, दश, शोल होय.
५ एकज समचतुरस्र संस्थान जाणवुं.
६ क्रोधादिक चारे कषाय होय.
७ तेजो, पद्म अने शुक्ल. ए त्रण लेश्या होय.
७ इंद्रियद्वार आश्रयी पांचे इंद्रिय होय.
ए प्रथमना पांच समुद्घात होय.
१० सम्यक्त्वादिक त्रणे दृष्टि होय.
११ चक्षुरादि त्रण दर्शन होय.
१२ प्रथमनां त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान होय.
१३ व्यंतरनी पेरें अगीयार योग होय.
१४ बार देवलोक अने नव ग्रैवेयकना देवोने विषे नारकीनी पेरें नव उपयोग होय अने पांच अनुत्तर विमानवासी देवो, बधा सम्यक्दृष्टि ले, माटें तेमने तो प्रथमनां त्रण ज्ञान अने त्रण दर्शन मली ल उपयोग होय.
१५ जघन्यथी एक समयमां एक, बे, त्रण उपजे अने उत्कृष्टथी तो आठमा देव लोक पर्यंत संख्याता असंख्याता पण उपजे. परंतु नवमा देवलोकथी मांमी ने सर्वार्थसिद्धनामा पांचमा अनुत्तर विमान पर्यंत संख्याताज उपजे, कारण के, त्यां मात्र मनुष्यमांथीज आवी उपजे ले अने फरी च्यवे, तेवारें पण मनुष्यमांज जाय, बीजे क्यांहि न जाय.
१६ उपपातनी पेरें च्यवन पण जाणी लेवुं.
१७ जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट ते त्रीश सागरोपमायु जाणवुं.
१७ ल पर्याप्ति होय पण जाषा अने मन. ए बे पर्याप्ति एके वखत साथेंज उपजे ले तेथी पांच पर्याप्ति पण कहियें.
१ए ल दिशिनो आहार लिये.

२० एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय.
२१ पहेला अने बीजा देवलोकना देवो मरीने पृथिवीकायनी पेरें पांच दंमकमां जइ उपजे अने त्रीजाथी आठमा सुधी ठ देवलोकना देवो गर्नज तिर्यंच अने गर्नज मनुष्यमां आवी उपजे.
२२ आठमा देवलोक सुधी गर्नज तिर्यंच अने गर्नज मनुष्य, ए बे दंमकना जीवो जाय अने उपरांतना देवलोकोमां तो एक गर्नज मनुष्यज आवी उपजे.
२३ पहेला अने बीजा देवलोकने विषे पुरुष तथा स्त्री, ए बे वेद होय अने उपरांतना देवोमां एकज पुरुष वेद होय.
२४ अल्पबहुत्वमां बादर अग्निकायिया जीवोथकी वैमानिक देवो अधिक ठे.
२५ नवन(८४९७०१३) ठे पाथडा ६२ ठे.
२६ जघन्य सर्व स्थानकें एक समय अने उत्कृष्टो पल्योपमनो संख्यातमो नाग विरहकाल जाणवो. तिहां जुदे जुदे स्थानकें उत्कृष्टो विरह आ प्रमाणें.
१ पहेला बीजा देवलोकेंचोवीशमुहूर्त्त.
२ त्रीजा देवलोकेंनवदिवसवीशमुहूर्त्त.
३ चोथा देवलोकें बार दिवसदशमुहूर्त्त.
४ पांचमा देवलोकेंसाडीबावीशदिवस.
५ ठठा देवलोकें पीस्तालीश दिवस.
६ सातमा देवलोकें एंशी दिवस.
७ आठमा देवलोकें एकशो दिवस.
८ नवमा तथा दशमा देवलोकें संख्याता महीनानो विरहकाल जाणवो.
९ अगीयारमा तथा बारमा देवलोकें संख्याता वर्षनो विरहकाल जाणवो.
१० ग्रैवेयकना पहेला त्रिकने विषे संख्याता शेंकडा वर्षनो विरह जाणवो.
११ बीजा मध्यम ते वचला त्रिकने विषे संख्याता हजार वर्षनो विरह जाणवो.
१२ त्रीजा उपरला त्रिकने विषे संख्याता लाख वर्षनो विरहकाल ठे.
१३ विजयादि चार अनुत्तर विमानें पल्योपमनो असंख्याततमो नाग विरह काल जाणवो.
१४ पांचमा सर्वार्थसिद्धविमानें पल्योपमनो संख्यातमो नाग विरह ठे.
२७ गुणठाणां द्वार आश्री बे नेद ठे.
१ बार देवलोक अने नवग्रैवेयकना देवोमां प्रथमना चारें गुणठाणां लाने.
२ पांच अनुत्तरविमानना सर्व देवोमां एकज चोथुं गुणठाणुं लाने.
२८ वैमानिक देवोमां दश प्राण होय.
२९ संयतिना आठबोल त्रीजा प्रकारें लाने.
३० एकज अचित्त आहार लीये.
३१ उज अने लोमें करी आहार लीये.
३२ आहारनी इछा आ प्रमाणें उपजे.
१ एक पल्योपमायुवाला देवोने बे दिवसथी मांमीने नव दिवस पर्यंतें आहारनी इछा उपजे.
२ जेनुं एकसागरोपमायु होय, तेने एक हजारवर्षें आहारनी इछा उपजे.
३ एक सागरोपम उपरांत जेटला सा

गरोपमनुं आयु होय तेटला हजार वर्षे आहारनी इच्छा उपजे.
४ सर्वार्थसिद्ध विमानें तेत्रीश सागरोपमायु छे माटें तेने तेत्रीश हजार वर्षे आहारनी इच्छा उपजे.
३३ वैमानिक देवोनी कायस्थिति तो एमनी नवस्थिति जेटली जाणवी. मरीने वैमानिकमां पाछा उपजता नथी.
३४ चारेनिकायना देवोनी ४ लाख योनि छे.
३५ चारे निकायना देवो संबंधी तेरे दंमकमां छवीश लाख कोडी कुल जाणवां.

ए रीतें चोवीश दंमक मांहेला प्रत्येक दंमकने विषे पांत्रीश द्वारनो विचार संक्षेपथी लख्यो अने ए सबंधि देव नरकादिकोनां प्रतरें प्रतरें जूदां जूदां आयु तथा शरीरनी अवगाहना प्रमुख अनेक वातो विस्तारें समजवामां आववा माटें आगल तेना खुलासा पूर्वक यंत्रो दाखल करेला छे,ते जोइ लेवा.

तिहां चार निकायना देवोमां प्रथम नवनपति देवोनी वक्तव्यता कहे छे.

एक लाख एंशी हजार योजन रत्नप्रनानो पृथ्वीपिंम छे, तेमां एक हजार योजन उपर मूकी आपीयें अने एक हजार योजन तलीये मूकी आपीयें, बाकी वच्चेना १७८००० योजननो पिंम तेमांहे यथायोग्य पणे दश जातिना नवनपति देवतानां नवन छे.

नवन एटले देवतानी काया प्रमाण महामंमप समान आवास जाणवा. ते बाहेर वाटला गोलाकारें छे अने मांहे चोखूणां तथा तलीयामां कमलना मोमा सरखां छे.

ते नवनमध्यें जे न्हानामां न्हानां नवन छे, ते जंबूद्वीप प्रमाण एक लाख योजन लांबां पहोलां छे. अने जे मध्यमनवन छे, ते संख्याता कोटि योजन प्रमाण छे, तथा जे अत्यंत महोटां नवन छे, ते असंख्याता कोटाकोटि योजन प्रमाण छे. ते महोटा एकेका नवनमां असंख्य देवोनो निवास छे.

मेरुमध्यवर्त्ती जे आठ रुचक प्रदेश छे, तिहांथी अर्द्धोअर्द्ध बे खंम करीयें, एक दक्षिण दिशिनुं अर्द्ध अने बीजुं उत्तरदिशिनुं अर्द्ध. एवा बे नागें वहेंचतां एकेक निकायनो एक दक्षिणदिशिना इंद्र अने बीजो उत्तरदिशिनो इंद्र जूदा जूदा गणतां दश निकायना वीश इंद्र छे. ते दशनिकायमां पहेला निकायनुं नाम असुरकुमार निकाय छे, केम के वैमानिक देवोने सुर कहीयें, ते वैमानिक ए नही माटें एने असुर कहीयें, तथा बालकनी पेरें क्रीडाना करनार माटें कुमार कहीयें. तेमनुं आयुं आ प्रमाणें छे, ते कहे छे.

१ दक्षिणदिशिनो अधिपति असुरकुमारनो राजा चमरेंद्र, तेनुं उत्कृष्टायु एक सागरोपम.
२ उत्तरदिशिनो अधिपति बलींद्र असुरकुमारनो राजा, तेनुं उत्कृष्टायु सागरोपम जाझेरुं.
३ चमरेंद्रनी देवीनुं उत्कृष्टायुं साडा त्रण पल्योपम जाणवुं.

४ बलींद्रनी देवीनुं उत्कृष्टायु साडाचार पल्योपम जाणवुं.
५ शेष दक्षिणदिशिना धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु प्रत्येकें दोढ पल्योपम जाणवुं.
६ उत्तरदिशिना भूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनुं उत्कृष्टायु देशें कणा बे पल्योपम जाणवुं.
७ धरणेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु अर्द्ध पल्योपम जाणवुं.
८ भूतानंदेंद्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीनुं उत्कृष्टायु देशोन एक पल्योपम जाणवुं.
९ ए सर्वेनुं जघन्यायु दश हजार वर्षनुं जाणवुं. अने जघन्यथी उपरांत उत्कृष्टथी नीचुं ज्यां सुधी उत्कृष्ट पूर्ण न थाय, त्यांसुधीनुं सर्व मध्यमायु कहेवुं. एम ए दशे निकायनां नाम तथा प्रत्येक निकायना दक्षिण उत्तरदिशिना बे बे इंद्रोनां नाम तथा दक्षिण उत्तरना भेदें करी प्रतिनिकायना भवननी संख्या तथा ते देवोसंबंधी पोतपोताना निकाय जेथको उळखाय तेवां चिन्ह, तेमना आभरणोनें विषे होय छे. ते चिन्ह तथा तेमना शरीरना वर्ण, तथा वस्त्रना वर्ण, तथा ते इंद्रोना सामानिक देवो जे इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय ते प्रत्येक इंद्रने केटला होय ? तेनी संख्या तथा प्रत्येक इंद्रना आत्मरक्षक देवोनी संख्या तथा कटकना देवो इत्यादिक वातो सर्व नीचें लखेला यंत्रोथी जाणवी.

भवनपतिनी दशनिकायनां चिन्ह तथा वर्ण, वस्त्रवर्ण,अने सामानीक देव, तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्यानो यंत्र.

निकायनां नाम.	निकाय चिन्ह.	निकाय शरीरवर्ण.	निकायना वस्त्रवर्ण.	दक्षिणश्रेणिसामनिकदेव.	उत्तरश्रेणिसामानिकदेव०	दक्षणश्रेणिना आत्मरक्षकदेवता.	उत्तरश्रेणिना आत्मरक्षकदेव.
असुरकुमार.	चूडामणि	कृष्णवर्ण.	रक्तवर्ण.	६४०००	६००००	२५६०००	२४००००
नागकुमार.	फणी	धवलवर्ण.	नीलवर्ण.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
सुवर्णकुमार.	गरुड.	कनकवर्ण.	धवलवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
विद्युत्कुमार.	वज्र.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
अग्निकुमार.	कलश.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
द्वीपकुमार.	सिंह.	रक्तवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
उदधिकुमार.	अश्व.	धवलवर्ण.	नीलांवस्त्र.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
दिशिकुमार.	हाथी.	रक्तवर्ण.	धवलांवस्त्र	६०००	६०००	२४०००	२४०००
वायुकुमार.	मकर.	नीलवर्ण.	संध्याराग.	६०००	६०००	२४०००	२४०००
स्तनितकुमार.	वर्द्धमान.	कनकवर्ण.	धवलांवस्त्र	६०००	६०००	२४०००	२४०००

भवनपति अनें व्यंतर देव तथा तेमनी देवीयोनां जे जघन्य उत्कृष्टायु तेनो यंत्र.

इंद्रोनां नाम.	देवोनुं जघन्यायु.	देवोनुं उत्कृष्टायु.	देवीनुं जघन्यायु.	देवीनुं उत्कृष्टायु.
दक्षिण चमरेंद्र.	दश हजार वर्ष.	एक सागरोपम.	दश सहस्र वर्ष.	३॥ पल्योपम.
उत्तरश्रेणि बलींद्र.	दश हजार वर्ष.	१ सागर जाझेरुं.	दश सहस्र वर्ष.	४॥ पल्योपम.
दक्षिण ९ निकाय.	दश हजार वर्ष.	दोढ पल्योपमनुं.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपमनुं.
उत्तर नव निकाय.	दश हजार वर्ष.	बे पल्यदेशें ऊणो.	दश सहस्र वर्ष.	एकपल्यदेशेंऊणुं.
व्यंतर.	दश हजार वर्ष.	एक पल्योपम.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपम.
वाणव्यंतर.	दश हजार वर्ष.	एक पल्योपम.	दश सहस्र वर्ष.	अर्द्ध पल्योपम.

दशभवनपतिना तथा दक्षिणोत्तरेंद्रनां नाम तथा दक्षिण उत्तर भवन संख्यानो यंत्र.

दशनिकायनां नाम.	दक्षिणेंद्रनां नाम.	उत्तरेंद्रनां नाम.	दक्षिणेंद्रभवन संख्या.	उत्तरेंद्रभवन संख्या.	उभयमलीभवन संख्या.
असुरकुमार.	चमरेंद्र.	बलींद्र.	३४०००००	३००००००	६४लाखभवन.
नागकुमार.	धरणेंद्र.	भूतानंदेंद्र.	४४०००००	४००००००	८४लाखभवन.
सुवर्णकुमार.	वेणुदेव.	वेणुदाली.	३८०००००	३४०००००	७२लाखभवन.
विद्युत्कुमार.	हरिकांत.	हरिशिख.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
अग्निकुमार.	अग्निशिख.	अग्निमाणव.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
द्वीपकुमार.	पूर्णेंद्र.	वशिष्ठेंद्र.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
उदधिकुमार.	जलकांत.	जलप्रभ.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
दिशिकुमार.	अमितगति.	अमितवाहन.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
पवनकुमार.	वेलंबक.	प्रभंजन.	५००००००	४६०००००	९६लाखभवन.
स्तनितकुमार.	घोष.	माहाघोष.	४००००००	३६०००००	७६लाखभवन.
शरवाले संख्या.			४०६०००००	३६६०००००	७७२०००००.

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहे छे.

रत्नप्रभा पृथ्वीनी उपर मूकेलो जे एकहजार योजननो रत्नमयकांड, तेमांथी एक शो योजन नीचेंना तथा शो योजन उपरना मूकीने वचला आठशें योजननी भूमिकामध्यें व्यंतरदेवोनां माहारमणीय असंख्यातां नगर छे, तेमां रह्यां थकां व्यंतरिक देवो वरप्रधान तरुणीयोनां गीत गानना अनें वाजित्रो वजाववाना शब्द सांभलवे करी प्रमुदित थया थका गत कालने पण जाणता नथी.

ते व्यंतरदेवोना आठ निकाय छे,तेना पण दक्षिण श्रेणि अनें उत्तर श्रेणिना प्रत्येकें एकेक इंद्र गणतां आठ निकायना शोल इंद्रो छे.

ते व्यंतरोनां नगर, उत्कृष्टां महोटां ते जंबूद्वीप जेवडां लांबां पहोलां छे, अने घणां न्हानां छे, ते भरतक्षेत्र जेवडां (५२६) योजननें छ कला प्रमाण छे. तथा मध्यमविमान ते माहाविदेह समान (३३६८४) योजननी उपर उंगणीया चार भाग जेवडा छे, ते आठ व्यंतर निकायनां नाम तथा तेमना इंद्रोनां नाम तेमज चिन्ह प्रमुख पूर्वोक्त भवनपतिनी पेरें सर्व वातो नीचेंना यंत्रथी जोइ लेवी.

हवे जेम व्यंतर देवोना आठनिकाय कह्या तेम वली रत्नप्रभाना उपरलां एकशो योजनना पिंममांहे दश योजन नीचें तलीये मूकीयें अनें दश योजन उपर मूकीयें, शेष एंशी योजन पृथ्वीपिंममांहे बीजा वाणव्यंतरना आठ निकाय छे, एटले मेरुमध्यवर्त्ती गोस्तनने आकारें आठ रुचक प्रदेशथी नीचें दश योजन मूकीने नीचला एंशी योजनमां आठ निकायना दक्षिणदिशि अने उत्तरदिशिना भेदें करी बे बे इंद्रो छे, तेमनां नाम तथा निकायनां नाम आदिक चिन्ह वर्ण प्रमुख सर्व, नीचला यंत्रोथकी जाणवां.

इहां व्यंतरना शोल तथा वाणव्यंतरना शोल मली बत्रीश इंद्र व्यंतर देवोना अनें वीश भवनपतिना. तेमज यद्यपि सूर्य अने चंद्र असंख्याता इंद्र छे, तथापि जातिनी अपेक्षायें एक चंद्रमा अने एक सूर्य, ए बे इंद्र ज्योतिषीना लेवा अने पहेला देवलोकथी आठमा देवलोक सुधी एकेक इंद्र छे, अने नवमा दशमा ए बे देवलोकनो एक, तथा अगीयारमा, बारमा, ए बे देवलोकनो एक, मली बार देवलोकना दश इंद्र गणतां सरवाले चोशठ इंद्र संख्यायें जाणवा.

वली एटलुं विशेष छे जे, ज्योतिषी अने व्यंतर, ए बे निकायने विषे इंद्रोना लोकपाल तथा गुरुस्थानीया जे त्रयस्त्रिंशद्देवता, ते नथी.

हवे व्यंतर देव देवीयोनुं जघन्योत्कृष्टायु कहे छे.

व्यंतर अनें वाणव्यंतरना देवो तथा देवीयोनुं जघन्यायु दश हजार वर्ष जाणवुं, अने देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पल्योपमनुं जाणवुं. तथा देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्ध पल्योपमनुं जाणवुं. अने श्री ह्री धृति, कीर्त्ति, बुद्धि अनें लक्ष्मी, ए छ देवीयोनुं जे एक पल्योपमायु कह्युं छे, ते देवीयो भवनपतिनी छे, पण व्यंतरनी नथी. व्यंतरना आयुना यंत्रनी स्थापना नीचें करीयें छैयें, तेथी तेनुं आयु जाणवुं.

आठ जातिना व्यंतरदेवो संबंधि प्रतिभेद कहे छे.

पिशाचनाप्रकार.	१५	१	कूष्मांड १ पटक २ जोष ३ आन्हिक ४ काल ५ माहाकाल ६ मोक्ष ७ आमोक्ष ८ तालपिशाच. ९ पिखरपिशाच १० अधस्तारक ११ देव १२ माहादेव १३ उश्निक १४ वनपिशाच १५.
भूतनाप्रकार.	९	२	सुरूप १ प्रतिरूप २ श्वेतभद्र ३ भूतोत्तम ४ स्कंदिक ५ अतिपातकभद्र ६ माहावेग ७ प्रतिवेग ८ आकाशवेग ९.
यक्षनाप्रकार.	१३	३	पूर्णभद्र १ माणिभद्र २ श्वेतभद्र ३ हरिभद्र ४ सुमनोभद्र ५ व्यतिपाकभद्र ६ सुभद्र ७ सर्वतोभद्र ८ मनुष्यभद्र ९ धनाधिपति १० धनहार ११ सूपयक्ष १२ यक्षोत्तम १३.
राक्षसनाप्रकार.	७	४	भीम १ महाभीम २ विघ्नविनायक ३ जलराक्षस ४ रुक्षराक्षस ५ ब्रह्मराक्षस ६ दत्तराक्षस ७.
किन्नरनाप्रकार.	१०	५	किंनर १ किंपुरुष २ किंपुरुषोत्तम ३ हृदयंगम ४ रूपशाली ५ अनिंदतई ६ किंनरोत्तम ७ मनोरम ८ रतिप्रिय ९ रतिश्रेष्ठ १०
किंपुरुषनाप्रकार	१०	६	पुरुष १ सत्पुरुष २ माहापुरुष ३ पुरुषवृषभ ४ पुरुषोत्तम ५ अतिपुरुष ६ माहादेव ७ मरुत ८ मेरुकांत ९ भास्वत १०
महोरगनाप्रकार	१०	७	भुजंग १ भोगशाली २ माहाकाय ३ अतिकाय ४ स्कंधशाली ५. मनोरम ६ माहावेग ७ महेश्वक्ष ८ मेरुकांत ९ भास्वत १०
गंधर्वनाप्रकार.	१२	८	हाहा१ हूहू२ तुंबरु३ नारद४ ऋषिवादक५ भूतवादक६ कादंब७ महाकादंब ८ रैवत ९ विश्वावसु १० गीतरति ११ गीतयशा १२

हवे ज्योतिषी देवोनी वक्तव्यता कहे छे.

मेरुमध्य रुचकथकी नवशें योजन उपर अने नवशें योजन नीचें मली अढारशें योजन प्रमाण तिर्यक् लोक छे. तिहां समभूतला पृथ्वीथकी ७९० योजन उपरांत एकशो ने दश योजनमांहे ज्योतिषचक्र रहे छे, ते केंवी रीतें? तो के प्रथम समभूतल थकी ७९० योजनें तारानां विमान छे ८०० योजनें सूर्यनुं विमान छे, अने ८८० योजनें चंद्रमानुं विमान चाले छे, ८८४ योजने नक्षत्रनां विमान चाले छे, ८८८ योजनें बुधनुं विमान चाले छे, ८९१ योजने शुक्रनुं विमान चाले छे. ८९४ योजने बृहस्पतिनो तारो चाले छे, ८९७ योजने मंगलनुं विमान चाले छे, अने ९०० योजनें शनिनुं विमान चाले छे. एम ११० योजनमां ज्योतिषचक्र चार चाले छे.

१ ज्योतिषीयोनां विमान मेरुपर्वतथकी ११२१ योजन उरहां एटलां दूर मनुष्य

लोकमांहे चरे छे,नमे छे अनें ११२१ नुं योजन अलोकथी उरहां एटले चारे दिशायें लोक ना छेहडाथकी ११२१ योजनमांहेली कोरें अलोकनी अबाधायें ज्योतिपचक्र स्थिर रहे छे.

हवे सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र अने तारा, ए पांच जातिना ज्योतिषी देव देंवीयोनुं ज घन्योत्कृष्टायुं कहे छे. ते ज्योतिषी देवो अढी द्वीपमांहे जेटला छे, ते सर्व चर छे, अने अढीद्वीपथी बाहिर जे असंख्याता द्वीप समुद्र छे, तेमां जेटला ज्योतिषीदेवो छे, ते सर्वे स्थिर जाणवा. ए चर तथा स्थिर, बेहु प्रकारना ज्योतिषी देव तथादेवीनुं आयु कहेछे.

१ चंद्रमानुं तथा चंद्रमाना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपम एक लाख वर्षें अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं अर्द्धपल्योपम पच्चास हजार वर्षें अधिक जाणवुं.

२ सूर्य तथा तेना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपम एक हजारवर्षें अधिक तथा तेमनी देवीयोनुं आयु पांचशें वर्षें अधिक अर्द्धपल्योपम जाणवुं.

३ ग्रह तथा ग्रहना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु संपूर्ण एक पल्योपम जाणवुं. तथा तेमनी देवीयोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपल्योपमनुं जाणवुं.

४ नक्षत्र तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु अर्द्धपल्योपम अनें तेमनी देवीयोनुं आयु एक पल्योपमनो चोथो भाग जाणवुं.

५ तारा तथा ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्टायु पल्योपमनो चोथो भाग कांइक जाजेरुं अने तेमनी देवीयोनुं एक पल्योपमनो आठमो भाग विशेषाधिक जाणवुं.

६ जघन्यायुमां चंद्रमा अने सूर्य, ए बे तो इंद्र छे,तथा ग्रह, नक्षत्र अने तारा,ए त्रण विमानना धणी छे तेमनुं आयु जघन्य मध्यम न होय परंतु उत्कृष्टज होय,तेथी चंद्रना विमानवासी देव तथा देवीयो ए एक युगल तथा सूर्यना विमानवासी देव तथा देवीयो ए बीजुं युगल,तथा ग्रहना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए त्रीजुं युगल,तथा नक्षत्रना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए चोथुं युगल. ए चार युगलनुं जघन्यायु पल्योपमनो चोथो भाग तथा ताराना विमानवासी देव तथा देवीयो. ए पांचमुं युगल छे,तेनुं आयु पल्योपमनो आठमो भाग जाणवुं एना यंत्रो आगल आवशे.

हवे वैमानिकदेवोनुं जघन्य तथा उत्कृष्टायु कहे छे.

१ सौधर्मदेवलोकने छेहला तेरमें प्रतरें उत्कृष्टायु बे सागरोपमनुं जाणवुं अनें जघन्यथी तो सर्वे तेरे प्रतरें एक पल्योपमायु जाणवुं.

२ ईशान वदेलोकें उत्कृष्ट बे सागरोपम पल्योपमना असंख्यातमे भागें अधिक अनें जघन्यथी पल्योपमने असंख्यातमे भागें अधिक, एक पल्योपमायु जाणवुं.

३ सनत्कुमारें उत्कृष्ट सात सागरोपम अने जघन्य बे सागरोपम जाणवुं.

४ माहेंद्रे उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमे नागें अधिक सात सागरोपम अने जघन्यथी बे सागरोपम जाजेरुं जाणवुं.
५ ब्रह्मदेवलोकें उत्कृष्ट दश सागरोपम अने जघन्यथी सात सागरोपम.
६ लांतक देवलोकें उत्कृष्ट चौद सगरोपम, अने जघन्यथी दश सागरोपम.
७ शुक्रदेवलोकें उत्कृष्ट सत्तर सागरोपम. अने जघन्यथी चौद सागरोपम.
८ सहस्रारें उत्कृष्ट अढार सागरोपम अने जघन्य सत्तर सागरोपम.
९ आनत देवलोकें उत्कृष्ट उगणीश सागरोपम अने जघन्यथी अढार सागरोपम.
१० प्राणत देवलोकें उत्कृष्ट वीश सागरोपम अने जघन्यथी उगणीश सागरोपम.
११ आरण देवलोकें उत्कृष्ट एकवीश सागरोपम अने जघन्यथी वीश सागरोपम.
१२ अच्युत देवलोकें उत्कृष्ट बावीश सागरोपम अने जघन्यथी एकवीश सागरोपम.
१३ पछी नवग्रैवेयकें प्रत्येक एकका ग्रैवेयकें जघन्य उत्कृष्ट बेहुमां अच्युतदेवलोकथी एकेक सागरोपमनी वृद्धि करीयें, तेवारें नवमा ग्रैवेयकें उत्कृष्टा एकत्रीश सागर अने जघन्यथी त्रीश सागरोपमायु थाय.
१४ पांच अनुत्तर विमानमांहेला पहेला विजयादि चार विमानें उत्कृष्ट तेत्रीश सागर अने जघन्य एकत्रीश सागरायु कह्युं छे, अने पांचमा सर्वार्थसिद्ध विमानें तो अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे, एमां वध घट नथी.

हवे वैमानिक देवीयोनुं जघन्य उत्कृष्ट आयु कहे छे.

वैमानिक देवीयोनी उत्पत्ति मात्र प्रथमना सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकमांज छे,ते देवीयो बे प्रकारनी छे एक तो परिग्रहीता ते परणेली कुलांगना सरखी जाणवी अने बीजी अपरिग्रहीता ते वेश्या सरखी जाणवी. ए देववेश्या कहेवाय.

१ तिहां सौधर्मदेवलोकें परिग्रहीता अपरिग्रहीता एबेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम छे, अने ईशान देवलोकें बेहुनुं जघन्यायु एक पल्योपम जाजेरुं जाणवुं.
२ सौधर्म देवलोकें परिग्रहीता देवीयोनुं उत्कृष्टायु सात पल्योपम छे, तथा अपरिग्रहीतानुं उत्कृष्टायु पचास पल्योपम छे, तेमज ईशानदेवलोकें परिग्रहीतानुं उत्कृष्टायु नव पल्योपम छे अने अपरिग्रहीतानुं पचावन पल्योपम छे.

हवे चारे निकायना देवो संबंधि इंद्रोनी सर्व अंतेउरमां प्रधान मुख्य पट्टराणी सरखी जे देवीयो, तेने अग्रमहीषी कहीयें, ते कया कया इंद्रनें केटली केटली होय?

१ नवनपतिनी पहेली निकायना चमरेंद्र तथा बलींद्रने प्रत्येकें पांच पांच होय.

२ जवनपतिनी नागकुमारादिक नव निकायना धरणींद्र अने जूतानंदेंद्र आदिक अढार इंद्रोने प्रत्येकें छ छ अग्रमहीषी होय.
३ व्यंतर देवोना काल महाकालादिक बत्रीश इंद्रोने प्रत्येकें चार चार अग्रमहीषी होय.
४ ज्योतिषीना इंद्र जे चंद्रमा अने सूर्य, तेने प्रयेकें चार चार अग्रमहीषीयो होय.
५ सौधर्म तथा ईशान, ए बे देवलोकना इंद्रोने प्रत्येकें आठ आठ अग्रमहीषीयो होय.
६ बे देवलोकथी उपरांतना देवलोकमां देवीयोनी उत्पत्ति नथी माटें तिहांना इंद्र तथा तिहांना निवासी देवोने जेवारें विषय सेववानी वांछा थाय, तेवारें सौधर्म ईशानवासी अपरिग्रहीता देवीयो यथायोग्य पणे तेमने उपजोगमां आवें.

हवे वैमानिक देवोनुं प्रतरें प्रतरें जूडुं जूडुं आयु कहेवा माटें प्रतरसंख्या कहे छे. तिहां जेम घरनी उपर जूदा जूदा चार पांच मजला होय, तेम पहेला अने बीजा देवलोकनी उपराउपर तेर जूमिरूप तेर मजला छे, तेनें प्रतर कहीयें. ते आवी रीतें केः— बे देवलोक मध्यां वलयाकारें छे. तिहां पूर्वमहाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी उपर आवेली देवलोकसंबंधी जूमिनी वचमांहे अर्द्धवलयाकार खंमथकी एक दक्षिणदिशिखंम अनें बीजो उत्तरदिशिखंम, एवा बे खंम अर्द्धोअर्द्ध करीयें, तेमां दक्षिणदिशिखंमना अर्द्धवलयाकार खंम प्रतर सौधर्मेंद्रना अने उत्तरदिशिना अर्द्धवलयाकार खंम प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा. एम बीजा पण वलयाकार देवलोकना युगलमां एज व्यवस्था करवी. एटले त्रीजा, चोथा, देवलोकना मध्या वलयाकार बार प्रतर छे, तेमां दक्षिण दिशि सनत्कुमारनी अने उत्तरदिशि माहेंद्रनी जाणवी. पांचमे छ प्रतर, छठे पांच प्रतर, सातमे चार प्रतर, आठमे चार प्रतर, नवमा दशमा मली बेहुना चार प्रतर, अगीयारमा बारमाना चार प्रतर, तथा नव ग्रैवेयकें प्रत्येकें एकेक प्रतर गणतां नवप्रतर छे, अने पांच अनुत्तरविमाननो एकज प्रतर छे. एम सर्व मली ऊर्ध्वलोकें बासठ प्रतर छे.

हवे ए प्रत्येक प्रतरें जघन्य उत्कृष्ट आयुष्य जाणवां, माटें प्रथम सौधर्मदेवलोकें उपाय कहे छे. सौधर्मदेवलोकें उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपमनी छे अने प्रतर तेर छे, माटें एक सागरना तेर जाग करी प्रतरें प्रतरें एकेका सागरोपमें एकेको जाग आपीयें, ते एवी रीतें के तेरैया बे सागरोपमना छवीश जाग थाय, तेने प्रतरें प्रतरें वहेंचीयें, तो पहेला प्रतरें तेरैया बे जाग आवें, तेटलुं पहेला प्रतरें उत्कृष्टायु जाणवुं. पछी बीजे प्रतरें बे साथें गुणीयें, तेवारें बीजे प्रतरें चार जाग, त्रीजे त्रणथी गुणीयें तेवारें छ जाग, एम यावत् तेरमे प्रतरें बेहु सागरना छवीशे जाग पूर्ण थाय. तिहां उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम पूर्ण थाय. एम ईशानदेवलोकें पण प्रतरें प्रतरें एज जाग जाजेरा कहेवा.

यावत् तेरमे प्रतरें बे सागरोपम जाजेरा कहेवा. अने जघन्य तो सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरें एक पल्योपम पूर्ण आयु जाणवुं. अने ईशानदेवलोकें जघन्यथी एक पल्योपम उपर पल्योपमनो असंख्यातमो नाग अधिक एटली स्थिति प्रतरें प्रतरें कहेवी.

हवे इंड्ना लोकपालोनुं आयु कहे ले. सघला इंड्ना लोकपाल पोतपोताना देवलोकना लेहला प्रतरें इंड्ना विमाननी फरता चारे दिशायें चार लोकपाल रहे, ते लोकपाल पोतपोताना विमानना धणी ले, तथापि तेमनुं आयु आ प्रमाणें ले.

सौधर्मेंड्ना सोम अने यम ए बें लोकपालनुं उत्कृष्टायु एक पल्योपमनी उपर एक पल्योपमना त्रण नाग मांहेलो एक नाग जाणवुं. अने वरुणनुं देशें ऊणां बे पल्योपमायु जाणवुं तथा वैश्रमणनुं उत्कृष्टायु बे पल्योपम पूर्ण जाणवुं.

ईशानेंड्ना सोम तथा यमनुं उत्कृष्टायु एक पल्योमनी उपर एक पल्योपमना त्रण नाग करीयें, तेवा बे नाग जाणवा. तथा वरुणनुं आयु बे पल्योपम पूर्ण जाणवुं. अने कुबेरनुं बे पल्योपमनी उपर एक पल्योपमना त्रण नाग करीयें तेवुं एक नाग जाणवुं,

तथा सौधर्मेंड्ना पुत्र सरखा अपत्य देवोनुं आयु एक पल्योपम जाणवुं.

हवे सनत्कुमारादि देवलोकें प्रतरें प्रतरें उत्कृष्ट जघन्यस्थिति जाणवा नणी उपाय कहे ले.

जेम के सौधर्मदेवलोकें उत्कृष्टीस्थिति बे सागरोपम ले अने सनत्कुमार देवलोकें उत्कृष्टी स्थिति सात सागरोपम ले, तेमांथी बे सागरोपम काहाढीयें, बाकी पांच सागरोपम रहे,तेने सनत्कुमारना बार प्रतर ले. तेनो नाग पहोंचे नही, माटें एकेक सागरना बार बार नाग करीयें, तेवारें पांच सागरना शाठ नाग थाय, तेने बार नागें वहेंचतां एकेक प्रतरें पांच पांच नाग आवे, तिहां पहेले प्रतरें एक आंक ले, माटे पांच एकां पांच नाग आवे. तेनी साथें सौधर्म देवलोकनी उत्कृष्टी स्थिति बे सागरोपम ले,ते नेलीयें,तेवारें पहेले प्रतरें बे सागरोपमनी उपर बारड्या पांच नाग आयु जाणवुं. बीजे प्रतरें बे आंक ले तो पांच डु दश नाग बारड्या आवे,तेवारें बे सागरोपम उपर दशनागायु जाणवुं, त्रीजे प्रतरें त्रण आंक ले, तो पांच त्रिक पन्नर नाग आवे, तेमां बार नागनुं एक सागरोपम थाय. उपर त्रण नाग वधे, तेनी साथें बे सागरोपम नेलतां त्रण सागरने बारड्या त्रण नागआयु ले. एम यावत् बारमे प्रतरें सात सागरोपम उत्कृष्टायु थाय. अने जघन्यस्थिति तो बारे प्रतरें सनत्कुमार देवलोकनी बे सागरोपमनी जाणवी. तेमज चोथा माहेंड् देवलोकें प्रतरें प्रतरें सनत्कुमार देवलोकथी साधिक स्थिति कहेवी. ए प्रमाणें पांचमा ब्रह्म आदिक देवलोकें पण प्रतरें प्रतरें आयु जाणवा, माटें एज उपाय करवो, ए सर्वेना यंत्रोनी स्थापना आगल करी ले, ते जोवुं.

बार देवलोक, नवग्रैवेयक, अने पांच अनुत्तरविमान. एटलां स्थानक एक बीजानी उपर केवी रीतें छे? ते देखाडनारो तथा ते प्रत्येक स्थानकें जघन्य उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

बीजा विजयंत विमानें. जघन्यायु सागर एकत्रीश. अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. पहेला विजयविमानें.	सर्वार्थ सिद्धिविमानें. अजघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु छे.	त्रीजा जयंतविमानें जघन्य सागर एकत्रीश अने उत्कृष्ट सागर तेत्रीश. चोथा अपराजित विमानें.
नवमा आदित्य ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर ३०	९ उत्कृष्ट सागर ३१
आठमा प्रीतिकर ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २९	८ उत्कृष्ट सागर ३०
सातमा सौमनस्य ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २८	७ उत्कृष्ट सागर २९
छठा सुमनस ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २७	६ उत्कृष्ट सागर २८
पांचमा विशाल ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २६	५ उत्कृष्ट सागर २७
चोथा सर्वतोभद्र ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २५	४ उत्कृष्ट सागर २६
त्रीजा मनोरम ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २४	३ उत्कृष्ट सागर २५
बीजा शुभंकर ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २३	२ उत्कृष्ट सागर २४
पहेला सुदर्शन ग्रैवेयकें.	जघन्य सागर २२	१ उत्कृष्ट सागर २३
बारमा अच्युत देवलोकें.	जघन्य सागर २१	१२ उत्कृष्ट सागर २२
अगीयारमा आरण्यदेवलोकें.	जघन्य सागर २०	११ उत्कृष्ट सागर २१
दशमा प्राणतदेवलोकें.	जघन्य सागर १९	१० उत्कृष्ट सागर २०
नवमा आनतदेवलोकें.	जघन्य सागर १८	९ उत्कृष्ट सागर १९
आठमा सहस्रार देवलोकें.	जघन्य सागर १७	८ उत्कृष्ट सागर १८
सातमा शुक्रदेवलोकें.	जघन्य सागर १४	७ उत्कृष्ट सागर १७
छठा लांतक देवलोकें.	जघन्य सागर १०	६ उत्कृष्ट सागर १४
पांचमा ब्रह्मदेवलोकें.	जघन्य सागर ७	५ उत्कृष्ट सागर १०
चोथा माहेंद्र देवलोकें.	जघन्य साधिकसागर २	४ उत्कृष्ट साधिक सागर ७
त्रीजा सनत्कुमार देवलोकें.	जघन्य सागर २	३ उत्कृष्ट सागर ७
बीजा ईशान देवलोकें.	जघन्यसाधिकपल्योपम १	२ उत्कृष्ट साधिक सागर २
पहेला सौधर्म देवलोकें.	जघन्य एक पल्योपम.	१ उत्कृष्ट सागर २

ज्योतिषीदेवोना जघन्य उत्कृष्टायुनो यंत्र.

चंद्रउत्कृष्टायु.	एक पल्य एक लक्ष वर्षाधिक.	जघन्य पल्य चतुर्थ भाग.	चंद्रदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्धपल्य पच्चास ह० वर्षाधिक	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
सूर्यउत्कृष्टायु.	एक पल्य सहस्र वर्षाधिक.	जघन्यपल्य चोथो भाग.	सूर्यदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्धपल्य पांच सोवर्षाधिक.	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
ग्रहउत्कृष्टायु.	एक पल्योपम.	जघन्यपल्य चोथो भाग.	ग्रहदेवी उत्कृष्टायु.	अर्द्ध पल्योपम ॥	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
नक्षत्र उत्कृष्टायु.	अर्धपल्योपम.	जघन्यपल्य चोथो भाग.	नक्षत्रदेवी उत्कृष्टायु.	पल्यनो चोथो भाग.	जघन्यपल्य चतुर्थ भाग.
ताराणामुत्कृष्टायु.	पल्य चतुर्थ भाग साधिक.	जघन्यपल्याष्टम भाग.	तारादेवी उत्कृष्टायु.	पल्य अष्टम भाग साधिक.	जघन्यपल्य ८ भागसाधिक.

सौधर्म अने ईशानदेवलोकें परिग्रहिता अपरिग्रहीता देवीना आयुनो यंत्र.

सौधर्मपरि० देवी आ०	जघन्य पल्योपम. १	उत्कृष्ट पल्यो० ७
ईशान परि० देवी आ०	जघन्य पल्यो० जाजेरुं.	उत्कृष्ट पल्यो० ९
सौधर्म परि० देवी आ०	जघन्य पल्योपम. १	उत्कृष्ट पल्यो० ५०
ईशान परि० देवी आ०	जघन्य पल्यो० जाजेरुं.	उत्कृष्ट पल्यो० ५५

चारे निकायना देवोनी अग्र महिषीनुं यंत्र.

सौधर्मेंद्र.	अग्रमहिषी ८
ईशानेंद्र.	अग्रमहिषी ८
ज्योतिषी २	अग्रमहिषी ४
व्यंतरेंद्र ३२	अग्रमहिषी ४
नागकु० १८	अग्रमहिषी ६
बलींद्र.	अग्रमहिषी ५
चामरेंद्र.	अग्रमहिषी ५

सौधर्मेंद्रने आयुष्यमांहे केटली देवी थाय? तेहनी संख्या कहे छे. बे करोड, पच्चासी लाख, एकोतेर हजार, चारशेंने अठावीश कोडी उपर सत्तावनलाख चौदहजार बशेंने पच्चासी एटली देवीउ सौधर्म इंद्रना एक जन्मनें विषे चवे.

हवे सौधर्मदेवलोक प्रमुखनें विषे प्रतरनी संख्या कहे छे.

१३ सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकें प्रतरतेर
१२ सनकुमार अने माहेंद्र ए बेना बार प्रतर.
६ ब्रह्मदेवलोकें ६ प्रतर.
५ लांतक देवलोकें पांच प्रतर.
४ शुक्रदेवलोकें चार प्रतर.
४ सहस्रार देवलोकें चार प्रतर.
४ आणत अने प्राणत बेना चार प्रतर.
४ आरण अने अच्युत ए बेना चार प्रतर.
९ नवग्रैवेयकें मली नव प्रतर.
१ अनुत्तरविमानें एक प्रतर.

एम सर्व मली ऊर्ध्वलोकने विषे ६२ प्रतर छे, ते कह्या.

सौधर्मादि देवलोकें प्रत्येक प्रतरें उत्कृष्टायु दर्शावनारो यंत्र.

त्यां प्रथम सौधर्म अने ईशान, ए बे देवलोकें प्रतर तेर छे तेहनुं आयु लखियें छैयें.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
सागर.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२
एक सागरना तेरीया भाग.	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	०
छेदांक.	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	०

सनत्कुमार अने माहेंद्र, ए बे देवलोकें प्रतर बार छे, तेहने विषे आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सागर.	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
बारैया भाग.	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेदांक.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	०

ब्रह्मदेवलोकें छ प्रतरें आयुःप्रमाणं. लांतकदेवलोकें पांच प्रतरें आयुःप्रमाणं ॥

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	प्रतर.	१	२	३	४	५
सागर.	७	८	८	९	९	१०	सागर.	१०	११	१२	१३	१४
छैया भाग.	३	०	३	०	३	०	पांचीयाभाग.	४	३	२	१	०
छेदांक.	६	०	६	०	६	०	छेदांक.	५	५	५	५	०

शुक्रदेवलोकें चार प्रतरें आयुःप्रमाणं. | सहस्रार देवलोकें चार प्रतरेंआयुःप्रमाणं.

प्रतर.	१	२	३	४	प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	१४	१५	१६	१७	सागर.	१७	१७	१७	१८
चोथीया भाग.	३	२	१	०	चोथीयाभाग.	१	२	३	०
छेदांक.	४	४	४	०	छेदांक.	४	४	४	०

आणत अने प्राणतना चार प्रतरें आयुमीन. आरण अने अच्युतें चार प्रतरें आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	प्रतर.	१	२	३	४
सागर.	१८	१९	१९	२०	सागर.	२०	२१	२१	२२
चोथीयाभाग.	२	०	२	०	चोथीयभाग.	२	०	२	०
छेदांक.	४	४	४	०	छेदांक.	४	०	४	०

नव ग्रैवेयकें नव प्रतरें आयुःप्रमाणं. पांच अनुत्तर विमानें आयु.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	प्रतर.	१
सागर.	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सागर.	३३
नाग.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नाग.	०
छेदांक.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	छेदांक.	०

वैमानिक देवोमां बाशठ प्रतर छे, ते एकेका प्रतरना मध्यनागने विषे एकेक इंद्रक विमान छे एम सर्व बाशठ प्रतरें बाशठ इंद्रक विमान छे.

हवे पहेला प्रतरना ऋजु नामें वाटला इंद्रकविमानथकी चारे दिशायें बाशठ बाशठ विमानोनी पंक्ति निकली छे अने बीजा प्रतरना इंद्रक विमानथकी पूर्वादि चारे दिशायें एकशठ एकशठ विमानोनी पंक्ति नीकली छे. एम प्रतरें प्रतरें चारे दिशानी पंक्तियें पंक्तियें प्रत्येकें एकेकुं विमान घटाडतां जइयें, तेवारें छेल्ले बाशठमे प्रतरें अनुत्तर विमानें इंद्रक विमानथकी चारे दिशायें चार पंक्ति एकेका विमाननी थइ छे.

हवे मध्यनुं विमान वाटलुं होय ते पछी चारे दिशायें पंक्तिनुं पहेलुं एकेकुं विमान त्रिखूणुं होय, पछी चोखूणुं होय, पछी वली वाटलुं होय, पछी वली त्रिखूणुं, वली चौखूणुं होय, पछी वाटलुं होय. ए रीतें त्रण प्रकारनां विमानो पंक्तिमां छे.

अने ए चार पंक्तियोना आंतराने वच्चें जे विमानो छे ते जेम रायणना फूल बूटां बूटां विखरेलां जेम तेम पड्यां होय, तेनी पेरें नंदावर्त्त, स्वस्तिक प्रमुख विविध संस्थानवालां पुष्पावकीर्ण विमानो छे. तेनी पंक्तियो नथी.

सघला वाटला गोल विमानने एक बारणुं होय अने त्रिखूणा विमाननें त्रण बारणां होय. तथा चोखूणा विमानने चार बारणां होय.

पहेला प्रतरना चारे दिशि संबंधि पंक्तिगत एकेकुं विमान देवद्वीपें छे, तेमज बे बे विमान नाग समुद्रनी चारे दिशायें छे, चार चार विमान यक्ष द्वीपनी चारे दिशायें छे, तथा आठ आठ विमान नूतसमुद्रनी चारे दिशायें छे, शोल शोल विमान, स्वयंनुरमण नामा द्वीपनी चारे दिशिनें विषे छे. तथा एकत्रीश एकत्रीश विमान स्वयंनुरमण समुद्रनी चारे दिशायें छे. एम मेलवतां एक दिशानां बाशठ थाय अने चारे दिशानां २४८ थाय. तेनी सार्थें वच्चमानुं इंद्रक विमान मेलवीयें तेवारें २४९ विमान थाय.

चोखूणा विमानने चारे दिशायें कांगरा विनानो सादो गढ होय तेने वेदिका कहियें. अनें वाटला विमानने कांगरा सहित कोट होय तथा त्रिखूणीया विमानने तो जे दि

शायें वाटलां विमान होय ते दिशायें वेदिका एटले कांगरां विनानो कोट होय अने बाकीनी सर्व दिशायें कांगरां सहित कोट होय.

आवलिकागत विमानोने मांहोमांहे अंतर असंख्याता योजननुं छे अने पुष्पावकीर्णने मांहोमांहे संख्याता तथा असंख्याता योजननुं पण अंतर छे.

सौधर्म तथा ईशान, ए बे देवलोकना तेर प्रतर छे. तेमां प्रथम प्रतरनी चार दिशिनी पंक्तिनां विमान २४९ थाय. तेने मुख्य विमान कहीयें. अने छेल्ला तेरमा प्रतरनी चार दिशिनां पंक्तिगत विमान २०१ थाय. तेने नूमि कहियें. ए बेहुने एकठां करतां ४५० थाय. तेने समास कहीयें. पछी एनुं अर्द्ध करीनें छेल्ला तेरमा प्रतर साथें गुणीयें तो २९२५ पंक्तिगत विमाननी संख्या थाय. एम सघला देवलोकने विषे गणित करतां वांछित देवलोकना पंक्तिगत विमानोनी संख्या थाय.

हवे जेम सौधर्म तथा ईशान मली बे देवलोकनां पंक्तिगत विमान २९२५ थयां. शेष ५९९७०७५ पुष्पावकीर्ण विमान जाणवां. सर्व मली ६०००००० विमान छे. ते समजवामां आववा माटें सर्व देवलोकोनां वाटलां, त्रिखूणां, तथा चोखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमान संबंधि गणतरीनो यंत्र आ पुस्तकमां दाखल कर्यो छे ते जोवो.

हवे वैमानिक देवोने विषे प्रत्येक देवलोकें विमाननी संख्या कहे छे.

देवलोकनां नाम.	विमान संख्या.	देवलोकनां नाम.	विमान संख्या.
सौधर्म देवलोकें.	बत्रीश लाख.	सहस्रार देवलोकें.	छ हजार.
ईशान देवलोकें.	अठ्ठावीश लाख.	आणत प्राणत देवलोकें.	चारसो विमान.
सनत्कुमार देवलोकें.	बार लाख.	आरण अच्युत देवलोकें.	त्रणसो विमान.
माहेंद्र देवलोकें.	आठ लाख.	ग्रैवेयकना हेठिमत्रिकें.	एकसो अगियार.
ब्रह्मदेवलोकें.	चार लाख.	ग्रैवेयकना मध्यमत्रिकें.	एकसो सात.
लांतक देवलोकें.	पच्चास हजार.	ग्रैवेयकना उवरिमत्रिकें.	एकसो विमान.
शुक्र देवलोकें.	चालीश हजार.	पांचेअनुत्तरविमाने मली	पांच विमान.

सर्व मली ऊर्ध्वलोकें ८४९७०२३ विमानो छे. ए विमान अत्यंत सुरभिगंध वाला माखणनी पेरें सुकुमार अने सुखकारी फरस वाला तथा उद्योतवंत मनोहर एवी देवोनी पोतानी कांतियें करीने बिराजमान छे.

लोकपालनां विमान बार लाख योजन लांबां पहोलां देवलोकना प्रस्तरमांहे जिहां इंद्रोनां निजकल्प अवतंसक विमान छे,तेनी चारदिशिने विषे चार लोकपालनां विमान छे.

नवनपतिना वीशे इंद्र जंबूद्वीपने छत्र अने मेरुपर्वतने दंडनी पेरें करवा समर्थ छे.

सौधर्म देवलोकें अपरिग्रहीता देवीयोनां छ लाख विमान छे, ते देववेश्या कहेवाय छे, तेमां पण जे त्रीजा देवलोकनी निश्रायें छे, ते त्रीजे देवलोकेंज जाय.

ईशान देवलोकें अपरिग्रहीता देवीयोनां चार लाख विमान छे, तेमां पण जे चोथा प्रमुख देवलोकना देवताउने भोगयोग्य छे, ते चोथे देवलोकेंज जाय.

बधा देवो केटला प्रकारना छे? ते कहे छे.

१ इंद्र पोतें सर्वचारनिकायनाइंद्रोजाणवा.
२ सामानिकदेव जे इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय तेने कहेवा.
३ इंद्रसरखी ऋद्धिना धणी होय इंद्रने गुरु स्थानीया सलाह पूछवा योग्य, सर्वने पूजनीय जेदेवो तेने तायत्रिंशक देवो कहीयें.
४ इंद्रोनी बाह्य अभ्यंतर अने मध्य एवी त्रण पर्षदाना देवो.
५ इंद्रोना शरीरनी रक्षा करनारा देवो ते अंगरक्षक आत्मरक्षक देवो जाणवा.
६ चारलोकपालना देवो ते सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार जाणवा.
७ सात प्रकारना कटकना देवो.
८ प्रजाना देवो.
९ आभियोगिक ते किंकर देवो.
१० कैल्बिषिक देवो.

ए दश जातिना देवो भवनपति, व्यंतर तथा वैमानिकमां छे.

भवनपतिनी दश निकायनां आभरण उपर चिन्ह तथा शरीरना वर्ण.

दश निकायनां नाम.	असुर कुमार	नाग कुमार.	सुवर्ण कुमार.	विद्युत्कुमार	अग्नि कुमार	द्वीप कुमार.	उदधि कुमार	दिशि कुमार	वायु कुमार	स्तनित कुमार.
आभरण उपर चिन्ह.	चूडा मणि.	सर्प.	गरुड पंखी.	वज्र.	पूर्ण कलश.	सिंह.	घोडो.	हाथी	मच्छ.	वर्द्धमानस०
वस्त्र वर्ण.	रातां	नीलां	उज्ज्वल	नीलां	नीलां	नीलां	नीलां	उज्ज्व	संध्या	उज्ज्वल.
शरीर वर्ण.	कालो	गौर.	कनक	रक्तवर्ण	रक्त.	रक्त.	गौर.	कनक	नीलो	कनक.

कटकना देवो सात प्रकारना छे, ते कहे छे.

पहेला गंधर्वानीक गांधर्वदेवो ते मृदंगधर जाणवा.	बीजा नटानीक ते नाटक करनार.	त्रीजुं घोडानुं कटक.	चोथुं हाथीनुं कटक.	पाचमुं रथनुं कटक.	छठुं पालानुं कटक.	सातमुं वृषभनुं कटक तथा पाडानुं कटक छे.

एमां प्रथमनां छ कटक सर्व इंद्रोने होय अने सातमुं वृषभनुं कटक वैमानिक देवोने होय तथा अधोनिवासी जे भवनपति अने व्यंतर देवो छे तेने सातमुं महिषनुं कटक होय. एम साते प्रकारनुं कटक सर्व इंद्रोने होय.

अढीद्वीप समुद्रने विषे चंद्रमा तथा सूर्य केटला छे? तेनी संख्या कहे छे.

१ जंबूद्वीपमां बे सूर्य अने बे चंद्र.
२ लवण समुद्रमां चार सूर्य ने चार चंद्र.
३ धातकी खंडमां बार चंद्र ने बार सूर्य.
४ कालोद समुद्रमां धातकी खंडना बारने त्रिगुणा करतां छत्रीश थाय तेमां जंबूद्वीपने लवण समुद्रना छनेलीयें, तेवारें बेहेंतालीश चंद्र अने बेहेंतालीश सूर्य थाय.
५ पुष्करवर द्वीपमां धातकी खंडना बेहेंतालीने त्रिगुणा करतां १२६ थाय तेनी साथें जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार अने धातकीखंडना बार मली अढार मेलवीयें, तेवारें १४४ थाय, तेमां अर्द्धद्वीपें ७२ चंद्र अने ७२ सूर्य आवे.

सर्व मेलवतां जंबूद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार, धातकीखंडना बार, कालोद समुद्रना बेहेंतालीश अने पुष्करार्द्धना बहोंतेर मली १३२ चंद्र अने १३२ सूर्य थाय. अढीद्वीपमां सूर्यनीपंक्ति बे तथा चंद्रमानी पंक्ति बे एकेक पंक्तिमांएकेकने आंतरें छाशठ छाशठ सूर्य तथा छाशठ छाशठ चंद्र छे.

१ ज्योतिषीनां माहारमणिक स्फाटिकरत्नमय विमान, अर्द्धी कोठफलने आकारें छे.
२ ते विमान व्यंतरना नगरोथकी असंख्यातगुणां छे.
३ लवण समुद्रमां ज्योतिषीनां विमान पाणीने फाडी नाखे एवा दिगस्फाटिक रत्नमय छे तेथी लवण शिखामांथी चाल्या जतां बाधा थती नथी.

हवे ज्योतिषीनी शीघ्रशीघ्रतरगति कहे छे.

१ सर्वथकी थोडो चंद्रमा चाले.
२ तेथकी सूर्य शीघ्र चाले.
३ तेथकी ग्रह शीघ्र चाले.
४ तेथकी नक्षत्र शीघ्र चाले.
५ तेथकी तारा शीघ्र चाले.

हवे ए ज्योतिषीनी ऋद्धि कहे छे.

१ सर्वथकी तारानी स्वल्प ऋद्धि छे.
२ तेथकी नक्षत्रनी ऋद्धि अधिक छे.
३ तेथकी ग्रहनी महोटी ऋद्धि छे.
४ तेथकी सूर्यनी महोटी ऋद्धि छे.
५ तेथकी चंद्रमानी महोटी ऋद्धि छे.

हवे चंद्रसूर्यादिक ज्योतिषीना विमानवाहक देवोनी संख्या कहे छे.

१ चंद्र विमान वाहक शोलहजार देवो छे.
२ सूर्य विमान वाहक शोलहजार देवो छे.
३ ग्रह विमान वाहक आठ हजार देवो छे.
४ नक्षत्र विमान वाहक चार हजार देवो छे.
५ ताराना विमान वाहक बे हजार देवो छे.
६ ए पांचे ज्योतिषीयोना जे विमान वाहक छे ते बराबर सरखे चोथे भागें एकेकी दिशियें जूदे जूदे रूपें वहे छे, तेमां चंद्रमाना पूर्वदिशायें सिंहने रूपें तथा दक्षिणदिशें हाथीने रूपें, पश्चिमदिशियें वृषभने रूपें अने उत्तरदिशियें अश्वने रूपें चार चार हजार किंकर देवो वहे छे.

१ एक चंद्रमानी परवाडे अठाशीग्रह, अठावीश नक्षत्र, ६६९७५ एटली कोडा कोडी तारा, एटलो परिवार चाले.

२ राहुनुं विमान कालुं छे सर्वदा चंद्रमानी हेठें चार अंगुल छेटे चाले छे. तिहां राहु बे प्रकारें छे एक नित्यराहु अने बीजो पर्वराहु छे, ते पर्वराहु जघन्यथी छ महीने चंद्र विमानने ग्रहण करे छे.

ज्योतिषी देवोना विमानोनी लंबाइ पहोलाइ तथा उंचपणानो यंत्र.

ज्योतिषी देवोना प्रकार.	मनुष्य क्षेत्र मांहेला विमानोनी लंबाइ पहोलाइ एक योजनना एकशठिया भाग.	विमानोनुं उच्चपणुं योजनना एकशठिया भाग.	मनुष्यक्षेत्रथी बाहिरला विमानोनी लंबाइ पहोलाइ योजनना एकशठिया भाग.	मनुष्यक्षेत्रथी बाहिरला विमानोनुं उच्चपणुं योजनना एकशठिया भाग.
१ चंद्रमा.	छप्पन भाग.	अठावीश भाग.	अठावीश भाग.	चौद भाग.
२ सूर्य.	अडतालीश भाग.	चोवीश भाग.	चोवीश भाग.	बार भाग.
३ ग्रह.	बे गाउ.	एक गाउ.	एक गाउ.	अर्द्ध गाउ.
४ नक्षत्र.	एक गाउ.	अर्द्ध गाउ.	अर्द्ध गाउ.	गाउनोचोथोभाग
५ तारा.	अर्द्ध गाउ.	गाउनोचोथोभाग.	गाउनो चोथो भाग.	गाउनोआठमोभा

ज्योतिषीनां विमानो समभूतलथकी केटलां उंचां छे ? तेना यंत्रनी स्थापना.

समभूतला०	तारा.	सूर्य.	चंद्र.	नक्षत्र.	बुध.	शुक्र.	बृहस्पति.	मंगल.	शनि.
पृथ्वी थकी.	७९०	८००	८८०	८८४	८८८	८९१	८९४	८९७	९००

सर्व नक्षत्रमां सर्वथकी हेठें भरणी नक्षत्र चाले छे अने स्वाति नक्षत्र उपर चाले छे तथा सर्वथी बाहिर मूल नक्षत्र चाले छे अने सर्वनी वचाले अभिजित् नक्षत्र चाले छे.

केटला एक समुद्र संबंधी पाणीना स्वाद तथा तेमां रहेला मत्स्योना अल्प बहुत्व अने तेमत्स्यना शरीर माननो यंत्र.

समुद्रनां नाम.	वारुणिवर समुद्र.	क्षीरवर समुद्र.	घृतवर समुद्र.	लवण समुद्र.	कालोदधिसमुद्र.	पुष्करवर समुद्र.	स्वयंभूरमण समुद्र.	बाकीअसंख्यातास०
पाणीनो स्वाद.	मदिरासमान.	क्षीरदुधनो स्वाद.	चोखाघृतनोस्वाद	लुणनो स्वाद.	मधनो स्वाद.	मेहनुं पाणी.	मेहनुं पाणी.	इक्षुरस जेवो स्वाद.
मत्स्यसं०	अल्प.	अल्प.	अल्प.	बहु.	बहु.	अल्प.	बहु.	अल्प.
मत्स्यदेहमान.	तुच्छदेहमान.	अल्पदेहमान.	तुच्छदेहमान.	५०० योजन.	७०० योजन.	छोटोदेहमान.	१००० योजन.	तुच्छदेहमान.

हवे वैमानिक देवोना शरीरनुं प्रमाण, तेमना आयु उपर कहे छे. जेम के सौधर्म तथा ईशान देवलोकें बे सागरोपम उत्कृष्टायु छे तेमनुं शरीर सात हाथ प्रमाण छे. तो सनत्कुमार तथा माहेंद्रें सात सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति छे. तेमांथी पूर्वोक्त बे सागरोपम काढीयें,तेवारें शेष पांच सागरोपम रहे, तेमांथी पण वली त्रण सागरोपमायु वालानुं शरीर मान कहेवुं छे माटे बीजो पण एक आंक उंछो करीयें,तेवारें शेष चार आंक रहे.

तिहां सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवोनुं शरीर सात हाथनुं छे,तेमांथी छ हाथ पूरा राखीयें बाकी एक हाथना अगीयार भाग करीयें, ते मांहेला चार भाग कांहाढी लइयें. बाकी सात भाग पडता मूकीयें तेवारें सनत्कुमार तथा माहेंद्र देवलोकना त्रण सागरोपमायुवाला देवोनुं छ हाथ पूरा अने तेनी उपर एक हाथना अगीयार भाग करीयें तेवारें चार भाग, एटलुं देहमान थाय. एम आयुष्यनुं एकेको सागरोपम वधारतां शरीरना मानमांथी एक हाथनो अगीयारियो एकेको भाग घटाडतां संपूर्ण सात सागरोपम आयुवाला देवोनुं पूरुं छ हाथ देहमान थाय.

तथा ब्रह्मदेवलोकें अने लांतकदेवलोकें चौद सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति छे. तेमांथी त्रीजा चोथा देवलोकना आठ सागरवाला देवोनुं आयु कहेवुं छे, माटें आठ काहाढी नाखीयें शेष छ आंक रहे. हवे एक हाथना अगीयार भाग करीयें, तेमांथी पांच भाग पडता मूकीयें बाकी छ भाग राखीयें,तेवारें पांचमा,छठा देवलोकना आठ सागरोपम आयुवाला देवोनुं पांच हाथनी उपर एक हाथना अगीआरीया छ भाग एटलुं देहमान जाणवुं.ए रीतें सर्व देवलोकोनेविषे वत्तारो करवो,एनो यंत्र नीचें लखेलो छे ते जोइ लेवो.

सामान्यपणे भवनपति, व्यंतर, जोतिषी, अने सौधर्म, ईशान, पर्यंत सात हाथ शरीर छे. उपरांत सनत्कुमारथी मांडी बारमो अच्युतदेवलोक तथा नवग्रैवेयक अने पंचानुत्तरें ज्यां जेटला सागरोपमायु छे, त्यां आ प्रमाणें शरीनुं मान कहेवुं.

सागर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
हस्त.	७	७	६	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	४	४
भाग.	०	०	४	३	२	१	०	६	५	४	३	२	१	०	३	२
छेदांक.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सागर.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
हस्त.	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१
भाग.	१	०	३	२	१	०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१	०
छेदांक.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सर्व इंद्रोना सामानिक देवो, गुरुस्थानीया तायत्रिंशक देवो, आत्मरक्षक देवो, लोकपाल तथा पर्षदानी संख्या, कटकना प्रकार कटकाधिपनी संख्यानो यंत्र.

इंद्रोनां नाम	सामानिकदेव.	ताय०	आत्मरक्ष.	लोकपा.	पर्षदा.	अनीक.	अनीकाधि
चमरेंद्र.	६४०००	३३	२५६०००	४	३	७	७
बलींद्र.	६००००	३३	२४००००	४	३	७	७
धरणेंद्रप्रमुख१८	६०००	३३	२४०००	४	३	७	७
व्यंतरेंद्र बत्रीश.	४०००	०	१६०००	०	३	७	७
चंद्रसूर्य २.	४०००	०	१६०००	०	३	७	७
सौधर्मेंद्र.	८४०००	३३	३३६०००	४	३	७	७
ईशानेंद्र.	८००००	३३	३२००००	४	३	७	७
सनत्कुमारेंद्र.	७२०००	३३	२८८०००	४	३	७	७
माहेंद्र.	७००००	३३	२८००००	४	३	७	७
ब्रह्मेंद्र.	६००००	३३	२४००००	४	३	७	७
लांतकेंद्र.	५००००	३३	२०००००	४	३	७	७
शुक्रेंद्र.	४००००	३३	१६००००	४	३	७	७
सहस्रारेंद्र.	३००००	३३	१२००००	४	३	७	७
आनतप्राणत.	२००००	३३	८००००	४	३	७	७
आरण अच्युत.	१००००	३३	४००००	४	३	७	७

व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोना दक्षिण उत्तर इंद्र तथा चिन्ह अने शरीरना वर्ण.

वाणव्यंतर	दक्षिणेंद्र.	उत्तरेंद्र.	व्यंतरनि०	दक्षिणेंद्र.	उत्तरेंद्र.	चिन्ह.	वर्ण.
अणपन्नी.	सन्निहित.	सन्मान.	पिशाच.	काल.	माहाकाल.	कदंबवृक्ष.	कालेवर्णे.
पणपन्नी.	धाता.	विधाता.	भूत.	सुरूप.	प्रतिरूप.	शूलसवृक्ष.	कालेवर्णे.
ऋषिवादी	ऋषि.	ऋषिपाल.	यक्ष.	पूर्णभद्र.	मणिभद्र.	वडवृक्ष.	कालेवर्णे.
भूतवादी.	ईश्वर.	महेश्वर.	राक्षस.	भीम.	माहाभीम.	खट्वंग.	धवलवर्णे.
कंदी.	सुवत्स.	विशाल.	किन्नर.	किन्नर.	किंपुरुष.	अशोकवृक्ष.	नीलवर्णे.
माहाकंदी	हास्य.	हास्यरति.	किंपुरुष.	सुपुरुष.	माहापुरुष.	चंपकवृक्ष.	धवलवर्णे.
कोहंडग.	श्वेत.	माहाश्वेत.	महोरग.	अतिकाय	माहाकाय.	नागवृक्ष.	कालेवर्णे.
प्लवक.	प्लवक.	प्लवकपति.	गंधर्व.	गीतरति.	गीतयश.	टींबरुवृक्ष.	कालेवर्णे.

प्रत्येक देवलोकें प्रतरें प्रतरें चतुरस्र प्रमुख जुदी जुदी जातना विमानोनी संख्यानो यंत्र.

सौधर्मईशानें प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	८४	८४	८०	८०	८०	७६	७६	७६	७२	७२	७२	६८	६८	९८८
चतुरस्र विमान.	८४	८०	८०	८०	७६	७६	७६	७२	७२	७२	६८	६८	६८	९७२
वृत्त विमान.	८१	८१	८१	७७	७७	७७	७३	७३	७३	६९	६९	६९	६५	९६५
सर्व संख्या.	२४९	२४५	२४१	२३७	२३३	२२९	२२५	२२१	२१७	२१३	२०९	२०५	२०१	२९२५

सनत्कुमार माहेंद्रें प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	६८	६४	६४	६४	६०	६०	६०	५६	५६	५६	५२	५२	७१२
चतुरस्र विमान.	६४	६४	६४	६०	६०	६०	५६	५६	५६	५२	५२	५२	६९६
वृत्त विमान.	६५	६५	६१	६१	६१	५७	५७	५७	५३	५३	५३	४९	६९२
सर्व विमान संख्या.	१९७	१९३	१८९	१८५	१८१	१७७	१७३	१६९	१६५	१६१	१५७	१५३	२१००

ब्रह्मदेवलोकेंप्रतर.	१	२	३	४	५	६	सर्वसं०
त्र्यंश विमान.	५२	४८	४८	४८	४४	४४	२८४
चतुरस्र विमान.	४८	४८	४८	४४	४४	४४	२७६
वृत्त विमान.	४९	४९	४५	४५	४५	४१	२७४
सर्व विमानसंख्या.	१४९	१४५	१४१	१३७	१३३	१२९	८३४

शुक्रदेव० प्र०	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	३६	३६	३२	३२	१३५
चतुरस्रविमान.	३६	३२	३२	३२	१३२
वृत्त विमान.	३३	३३	३३	२९	१२८
सर्वविमानसं०	१०५	१०१	९७	९३	३९६

लांतकदेवलोकें प्र०	१	२	३	४	५	सर्वसं०
त्र्यंश विमान.	४४	४०	४०	४०	३६	२००
चतुरस्र विमान.	४०	४०	४०	३६	३६	१९२
वृत्त विमान.	४१	४१	३७	३७	३७	१९३
सर्वविमानसंख्या.	१२५	१२१	११७	११३	१०९	५८५

सहस्रारदे०प्र०	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंशविमान.	३२	२८	२८	२८	११६
चतुरस्रविमान.	२८	२८	२८	२४	१०८
वृत्तविमान.	२९	२९	२५	२५	१०८
सर्वविमानसं०	८९	८५	८१	७७	३३२

आनत,प्राणतदे०प्र.	१	२	३	४	सर्वसंख्या.	अरणअनेअच्युतदे.	१	२	३	४	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	२४	२४	२४	२०	९२	त्र्यंशविमान.	२०	२०	१६	१६	७२
चतुरस्र विमान.	२४	२४	२०	२०	८८	चतुरस्र विमान.	२०	१६	१६	१६	६८
वृत्त विमान.	२५	२१	२१	२१	८८	वृत्त विमान.	१७	१७	१७	१३	६४
सर्वविमानसंख्या.	७३	६९	६५	६१	२६८	सर्वविमानसंख्या.	५७	५३	४९	४५	२०४

ग्रैवेयकपहेलात्रिकें प्र०	१	२	३	सर्वसंख्या.	ग्रैवेयकउपरिमत्रिकें प्र.	१	२	३	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	१६	१२	१२	४०	त्र्यंश विमान.	८	४	४	१६
चतुरस्र विमान.	१२	१२	१२	३६	चतुरस्र विमान.	४	४	४	१२
वृत्तविमान.	१३	१३	९	३५	वृत्त विमान.	५	५	१	११
सर्वविमानसंख्या.	४१	३७	३३	१११	सर्वविमानसंख्या.	१७	१३	९	३९

ग्रैवेयकमध्यत्रिकें प्रतर.	१	२	३	सर्वसंख्या.	पंचानुत्तरविमानें प्रतर.	१	सर्वसंख्या.
त्र्यंश विमान.	१२	८	८	२८	त्र्यंश विमान.	४	४
चतुरस्रविमान.	८	८	८	२४	चतुरस्रविमान.	०	०
वृत्त विमान.	९	९	५	२३	वृत्त विमान.	१	१
सर्वविमानसंख्या.	२९	२५	२१	७५	सर्वविमानसंख्या.	५	५

वैमानिकमां प्रत्येक देंवलोकें वाटलां, त्रिखूणां, चौखूणां अने पुष्पावकीर्ण विमानोनी संख्यानो यंत्र.

देवलो०	सौधर्म.	ईशान.	सनत्कु०	माहेंद्रें	ब्रह्मं.	लांतकें	शुक्रें.	सहस्रा.	आ.प्रा.	आ.	अधो	मध्य	उप०	पंचा०	सर्व संख्या.
वाटलां०	७२७	२३८	५२२	१७०	२७४	१९३	१२८	१०८	८८	६४	३५	२३	११	१	२५८२
खूणां.	४९४	४९४	३५५	३५६	२८४	२००	१३६	११६	९२	७२	४०	२८	१६	४	२६८८
चोखूणां	४८६	४८६	३४८	३४८	२७६	१९२	१३२	१०८	८८	६८	३६	२४	१२	०	२६०४

वैमानिक देवोनां चिन्ह तथा मुख्य विमाननुं नाम तथा विमानोना वर्ण अने विमानोनुं उंचपणुं तथा पृथ्विपिंम ते कया देवलोकें केटलो उंचपणे छे? तथा तेमनां विमान शेने आधारें रह्यां छे? तेनो यंत्र.

२४ देवलोकनुंनाम.	शेनेआधारेंरह्या.	चिन्ह.	इंद्रविमान.	पृथ्विपिंम.	उंचपणुं.	विमान वर्ण.				
						कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
सौधर्मदेवलोक.	घनोदधि आधारें.	मृगनुं.	सर्वतोनद्र.	२७००	५००	कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
ईशानदेवलोक.	घनोदधि आधारें.	महिष.	विमल.	२७००	५००	कालो.	नीलो.	रातो.	पीलो	धोलो.
सनत्कुमारदेव.	घनवात आधारें.	वाराह.	मनोरम.	२६००	६००	०	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
माहेंद्रदेवलोक.	घनवात आधारें.	सिंह.	प्रियंगम.	२६००	६००	०	नीलो.	रातो.	पीलो.	धोलो.
ब्रह्म देवलोक.	घनवात आधारें.	बकरो.	कामग.	२५००	७००	०	०	रातो.	पीलो.	धोलो.
लांतकदेवलोक.	घनोदधिघनवात.	देडको.	नंदावर्त्त.	२५००	७००	०	०	रातो.	पीलो.	धोलो.
शुक्र देवलोक.	घनोदधिघनवात.	अश्व.	श्रीवत्स.	२४००	८००	०	०	०	पीलो.	धोलो.
सहस्रारदेवलो०	घनोदधिघनवात.	हाथी.	सौमनस्य.	२४००	८००	०	०	०	पीलो.	धोलो.
आनतदेवलोक	आकाशने आधारें	सर्प्प.	पुष्पकवि०	२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
प्राणतदेवलोक.	आकाशने आधारें	गेंमो.		२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
आरणदेवलोक	आकाशने आधारें	वृषन.	पालक.	२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
अच्युतदेवलोक	आकाशने आधारें	मृगविशेष.		२३००	९००	०	०	०	०	धोलो.
नवग्रैवेयक.	आकाशने आधारें	०	०	२२००	१०००	०	०	०	०	धोलो.
पंचानुत्तरविमा.	आकाशने आधारें	०	०	२१००	११००	०	०	०	०	धोलो.

१ एक लवण समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा चोवीश खंम समाय.
२ धातकी खंममां जंबूद्वीप सरखा १४४ खंम समाय.
३ कालोद समुद्रमां जंबूद्वीप सरखा ६७२ खंम समाय.
४ पुष्करार्द्धमां जंबूद्वीप सरखा २४८४ खंम समाय.
५ आखा पुष्करार्द्धमां जंबूद्वीप सरखा ११९०४ खंम समाय.

१ जेवा विमानोना वर्ण तेवाज ते विमानोनी ध्वजाउना वर्ण पण जाणी लेवा.
२ नवनपति, व्यंतर अने ज्योतिषी देवोना विमानो कोइ कालां, कोइ नीलां, कोइ पीलां, कोइ रातां अने कोइ श्वेत एम विविध वर्ण वालां छे.

१ सौधर्म ईशान देवलोकें दक्षिणदिशिना विमानोनी पंक्ति ते दक्षिणेंद्रनी जाणवी.
२ उत्तरदिशिना विमानोनी पंक्ति उत्तरेंद्रनी.
३ पूर्व अने पश्चिमदिशायें जे आवलिकागत वाटलां विमान छे, ते सर्व दक्षिणेंद्रनांछे.
४ पूर्वपश्चिमें जे आवलिकागत त्रिंशचतुरस्र विमान, ते बेंडु इंद्रोनां अर्द्धोअर्द्ध छे.
५ पूर्वपश्चिमें जे वचला मध्यनां इंद्रकवृत्त विमान छे, ते सर्व दक्षिणेंद्रनां छे.
६ पुष्पावकीर्ण विमान अर्द्धोअर्द्ध छे.

वैमानिकदेवोमां प्रत्येकदेवलोकें विमानोनी संख्या आणवामाटें मुख भूमिसमासादिनोयंत्र

देवलोक नाम.	सौधर्मेशान.	सनत्कुमारेंद्र	ब्रह्मदेव लोक.	लांतकदेवलोक.	शुक्रदेवलोक.
मुख.	२४९	१९७	१४९	१२५	१०५
भूमि.	२०१	१५३	१२९	१०९	९३
समास.	४५०	३५०	२७८	२३४	१९८
तदर्द्ध.	२२५	१७५	१३९	११७	९९
प्रतरें गुणवानां.	१३	१२	६	५	४
आवली संख्या.	२९२५	२१००	८३४	५८५	३९६
पुष्पावकीर्ण.	५९९७०७५	१९९७९००	३९९१६६	४९४१५	३९६०४
सर्वसंख्या.	६००००००	२००००००	४०००००	५००००	४००००

देवलोक नाम.	सहस्रार देवलोक.	आनत प्राणत.	आरण अच्युत.	अधो ग्रैवेयकत्रिक.	मध्य ग्रैवेयकत्रिक.	ऊर्ध्व ग्रवेयकत्रिक.	पंचानुत्तर.	ऊर्ध्वलोकें सर्व संख्या.
मुख.	८९	७३	५७	४१	२९	१७	५	२४९
भूमि.	७७	६१	४५	३३	२१	९	०	५
समास.	१६६	१३४	१०२	७४	५०	२६	०	२५४
तदर्द्ध.	८३	६७	५१	३७	२५	१३	०	१२७
प्रतरें गुणवानां.	४	४	४	३	३	३	१	६२
आवली संख्या.	३३२	२६८	२०४	१११	७५	३९	५	७८७४
पुष्पावकीर्ण.	५६६८	१३२	९६	०	३२	६१	०	८४८९१४९
सर्वसंख्या.	६०००	४००	३००	१११	१०७	१००	५	८४९७०२३

हवे भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने पहेला बीजा देवलोकना देवो कायायें करी संभोग सेवे छे. मनुष्यनी पेठें भोगवे छे, परंतु मनुष्यने,स्त्रीनी सेवा करतां वीर्य खरे, एटले कामथी निवृत्ति पामे. अने देवताने वीर्य होय नही,माटें अतृप्तज होय. जेवारें क्यारेंक मन निवर्त्ते, तेवारेंज संभोग न होय, नहींकां अतृप्त थका सर्वदा भोग भोगवताज रहे छे.

त्रीजा चोथा देवलोकना देवो मुख,हाथ,नख,स्तन प्रमुखना फरसें करी संजोग सुख पामे.
पांचमा छठा देवलोकना देवो देवांगनानां रूप देखी संजोगसुख पामे.
सातमा आठमा देवलोकना देवो देवांगनानो गीत,हास्यना शब्द सांजलीनेसंजोगसुखपामे.
उपरांत आणतादि चार देवलोकना देवता तो पोताने स्थानकें रह्या थकाज जे देवांगनानी मनमां चिंतवणा करे,तेवारें ते देवी पण पोताने स्थानकें बेठी जलीबुरी कामचेष्टा मनमां धरतीजोग माटे सावधान थाय, तेवारें ते देवो तिहांज रह्या मनःसंकल्पें सुरत सुख पामे.

नवग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमानवासी देवोने विषयविकार अल्प छे, तेथी ते कोइ रीतें देवांगनाने सेवता नथी तथापि तेमने सुख बीजा देवोथी पण अनंतगुणुं छे.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देवीयो कया देवलोकवालाने केटला आयुवाली जोगमां आवे? तथा ते देवोने जोगनी इछा केवी रीतें पूर्ण थाय? तेनो यंत्र.

जवनपति,व्यंतर अने ज्योतिषी देवो सर्व काय सेवी छे.अने वैमानिक देवोनो यंत्र आप्योछे.

सौधर्म. १	पल्यो० १	काय जोग सेवी.	ईशान. २	पल्यो० १	काय जोग सेवी.
सनत्कु० ३	पल्यो० १०	फरसजोग सेवी.	माहेंद्र. ४	पल्योप० १५	फरसजोग सेवी.
ब्रह्मदेव. ५	पल्यो० २०	रूपदेखी जोगसेवी.	लांतक. ६	पल्योप० २५	रूपदेखीजोगसेवी.
शुक्रलोक.७	पल्यो० ३०	शब्दजोग सेवी.	सहस्रा. ८	पल्योप० ३५	शब्दसंजोग सेवी.
आनत. ए	पल्यो० ४०	मनेंकरी,मनसेवी.	प्राणत.१०	पल्योप० ४५	मनेंकरीजोग सेवी.
आरण.११	पल्यो० ५०	मनेंकरीजो०मनसे.	अच्युत.१२	पल्योप० ५५	मनेंकरीजोग सेवी.

सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी देवीयोनुं गमनागमन कया कया देवलोक सुधी छे. तेनो यंत्र तथा त्रण प्रकारना किल्बिषीया देवोनुं आयु अने उत्पत्ति स्थाननो यंत्र.

सौधर्मदेवलोकनी.	१–२–३–४	किल्बिषी देवोनुं.	आयुष्य.	उत्पत्तिस्थान.
देवीनुं गमनागमन.	५–६–७–८	किल्बिषी देवोनुं.	पल्य. ३	सौधर्म ईशानें नीचें.
ईशान देवलोकनी.	१–२–३–४	किल्बिषी देवोनुं.	सागर. ३	सनत्कु०माहेंद्रनीचें
देवीनुं गमनागमन.	५–६–७–८	किल्बिषी देवोनुं.	सागर.१३	ब्रह्मलांतकनी नीचें.

हवे किल्बषीया देवोनो अधिकार कहे छे.

ए देवो अशुनकर्मना उदयथी देवतामांहे चंमाल सरखा जाणवा, तेमनां स्थानक कहे छे.

१ जे देवो सौधर्म तथा ईशान देवलोकने तलें वसे छे, तेनुं त्रण पल्योपमायु छे.
२ जे देवो सनत्कुमार देवलोकने तलें वसे छे, तेनुं त्रण सागरोपम आयु छे.
३ जे देवो लांतक देवलोकने अधोजागें वसे छे, तेनुं तेर सागरोपमायु छे.

हवे वैमानिक देवोना शरीरना वर्ण कहे छे.

१. सौधर्मईशान ए बे देवलोकना देवोनां शरीर सुवर्ण सरखी कांतिवालां छे.
२ त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकना देवोनां शरीरनी कांतिकमलना केसरा जेवी छे.
३ छठा लांतक आदिक सर्व देवोनां शरीर एक बीजाथी उत्तरोत्तर उज्ज्वल उज्ज्वलतर अने उज्ज्वलतम शरीरवाली जाणवी.

हवे लोकांतिक देवोनुं स्वरूप कहे छे.

आ जंबुद्वीपथकी असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघीयें, तेवारें अरुणवर नामा द्वीपनी वेदिकाना छेहडाथी अरुणवर नामा समुद्रमां बेहेंतालीश हजार योजन जइयें, तिहां पाणीनी उपरना तलीयाथी उंचो अप्कायमय महांधकाररूप तमस्काय निकल्यो छे, ते अगीयारसो योजन सुधी भींत सरखो थइने पछी तीर्छो विस्तार पामतो पामतो सौधर्मादि चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्मदेवलोकना अरिष्टनामा त्रीजा प्रतरें जइ रह्यो छे.

हवे पांचमा देवलोकनो जे त्रीजो प्रतर छे तेना अरिष्टनामा विमाननी चारे दिशायें सचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजियो छे.

एम चारें दिशिनी आठ कृष्णराजि नाटकना अखाडाने आकारें छे, ते आठे कृष्णराजिना आठ आंतरामां आठ विमान छे. अने नवमुं कृष्णराजिनी वचमां मध्यभागें विमान छे. ए नव विमानवासी देवो ते ब्रह्मलोकना समीपें वसे, माटें लोकांतिक देवो कहेवाय अथवा वचला मध्यभागना विमानवासी देवता सर्व एकावतारी छे माटें लोकशब्दें संसार, तेने अंतें थया, माटें लोकांतिक देव कहेवाय छे.

बीजा आठ विमानमां वसनारा देवता एकांतें एकावतारी न होय पण नवमा विमानना देवो एकांतें एकावतारीज होय, ए नव प्रकारना लोकांतिक देवो पांचमा देवलोकने छेहडे वसे छे, तेमनुं आठ सागरोपमायु छे. तेमना विमानोनां नाम तथा पोतानां नाम अने जेमनें जेटला देवोनो परिवार छे, तेनी संख्या नीचें लखीयें छैयें.

विमाननांनाम	देवोनां नाम.	परिवार संख्या.			
१ अर्चिवि०	सारस्वत देव.	सातशें देवो.	६ चंद्राभवि०	गर्द्दतोय देव.	सात हजारदेव
२ अर्चिमाली	आदित्य देव.	सातशें देवो.	६ सूर्याभवि०	तुषित देव.	सातहजारदेवो
३ वैरोचन.	वन्हि देव.	चौदशें देवो.	७ शुक्राभवि०	अव्याबाधदेव	नवशें देवो.
४ प्रभंकर.	वरुण देव.	चौदशें देवो.	८ सुप्रतिष्ठाभ.	आग्नेय देव.	नवशें देवो.
			९ रिष्टाभवि०	रिष्टाभ देव.	नवशें देवोपरि.

हवे पीस्तालीश लाख योजनना त्रण पदार्थ छे, तेनां नाम कहे छे.

१ सीमंतनामें नरकावासो. २ मनुष्यक्षेत्र अढीद्वीप प्रमाण. ३ उडुविमान. ४ सिद्धशिला.

हवे त्रण पदार्थ एक लाख लाख योजनना छे, ते कहे छे.

१ अपइठाणो सातमा नरकनो नरकावासो, २ सर्वार्थसिद्ध विमान, अने ३ जंबूद्वीप.

हवे देवता कहेवा होय? तेनुं स्वरूप कहे छे.

१ सर्व देवता शुभकर्मना उदयथी केश, हाड, मांस, दाढी मूछना रोमनी वृद्धि, नख, रुधिर, वसा, चरबी, चामडी, मूत्र, विष्टा, एणे करी रहित निर्मल होय अने कर्पूर, कस्तूरीना सुगंध सरखो मुखनो निःश्वास होय; रजःप्रस्वेदादिक उपलेप रहित, कास श्वासादिक रोग रहित निरुज होय. तेजवंत शरीर होय.

२ उपजती वेलायें शालिभद्र प्रमुखना पितानी पेठें अंतरमुहूर्त्तमांहे पर्याप्ति पूरी करी पछी तरुण पुरुष सरखा निरंतर होय.

३ उपजतांज शरीरने विषे सर्व आभूषण पहेर्यां थकां उपजे.

४ सदा यौवनावस्था रहे, पण क्यारें वृद्धावस्था न आवे.

५ समचतुरस्र संस्थान होय. ६ आंख मटकावे नही निरंतर उघाडी रहे.

७ फूलनी माला पहेरेली कुमलाय नही. ८ चार आंगुल धरतीथी उंचा चाले.

हवे जे कारणें देवोने मनुष्यलोकमां आववुं पडे, ते कारणो कहे छे.

१ श्रीतीर्थंकरना पांच कल्याणिकें आवे. २ महाऋषीश्वरनी तपस्याना प्रभावें आवे.

३ जन्मांतरना स्नेहथी इहां आवे. ४ संगमानी पेठें क्रोधथी इहां आवे.

५ शीलना प्रभावें आवे, सुभद्रा शेठाणी माटें आव्या तेनी पेठें जाणवुं.

हवे देवता इहां कारण विना शामाटें न आवे? ते कहे छे.

१ देवांगनाना प्रेममां मग्न रह्या छे माटें. २ विषयसुखमां घणा आसक्त छे माटें.

३ मनुष्यने आधीन रहेवानुं काम नथी. ४ इहां जेवारें मनुष्य, तिर्यंचनां कलेवर घणा मुवेलां होय, तेवारें पांचशें योजन गंध उंचो जाय अशुभ गंध जाणे माटें न आवे,

हवे वैमानिक देवोना अवधिज्ञाननी स्थिति कहे छे.

१ सौधर्मदेवलोकना देवता तीर्छा असंख्याता द्वीप समुद्र देखे अने उपरला देवता तेथी घणा असंख्याता द्वीप समुद्र देखे. अने उंचुं पोताना विमाननी चूलिका ध्वजा सुधी देखे.

हवे नीचें क्यांसुधी देखे? ते कहे छे.

१ पहेला बे देवलोकवाला पहेली नरक लगें देखे. २ त्रीजा चोथावाला बीजी नरक लगें.

३ ब्रह्मलांतक वाला त्रीजी नरक लगें देखे. ४ शुक्रसहस्रार वाला चोथी नरक लगें देखे.

५ आणतादि चारवाला पांचमी नरक लगें देखे. ६ छ ग्रैवेयकना देवो छठी नरक लगें देखे.

७ उपरला त्रण ग्रैवेयक सातमी लगें देखे. ८ अनुत्तरना देवो कांइक उणुं लोकनाल देखे.

हवे सामान्यथी शेष देवोनो अवधि कहे छे.

१ जे सागरोपमथी किंचित् न्यून आउखावाला एवा नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी देवता छे ते अवधिज्ञानें करी संख्याता योजन पर्यंत देखे.

२ अर्द्ध सागरोपमथी वधता आउखावाला देवता असंख्याता योजन पर्यंत देखे.

३ जघन्यथी दश हजार वर्षायुवाला एवा नवनपति व्यंतर पच्चीश योजन लगें देखे.

४ नवनपति व्यंतर देवो उंचुं घणुं देखे, सौधर्म देवलोक सुधी देखे. ५ वैमानिक देवो नीचुं घणुं देखे. ६ नारकी अने ज्योतिषी तीर्छुं घणुं देखे. ७ मनुष्य तिर्यंचने अनेकरीतें अवधि ज्ञान होय. इहां सुधी देवोनुं आयु तथा शरीरमान प्रमुख केटलि एक वातो कही.

हवे नारकी जीवोना आयु प्रमुख कहेवा माटें प्रथम आयु कहे छे.

सामान्यथी जघन्योत्कृष्टायु साते नरकनुं प्रथम पांत्रीशद्वारना अधिकारें कहेवाणुं छे, अने इहां पाथडे पाथडे प्रथम उत्कृष्टायु कहे छे.

रत्नप्रनाना तेर पाथडा मांहेला पहेले पाथडे नेवुं हजार वर्ष, बीजाने विषे नेवुं लाख वर्ष, त्रीजाने विषे एक पूर्वकोटि वर्ष, चोथाने विषे एक सागरोपमना दश नाग करीयें तेवो एक नागायु अने पांचमानें विषे बेनाग एम पाथडे पाथडे एकेक नाग वधारतां यावत् तेरमे पाथडे संपूर्ण एक सागरोपम उत्कृष्टायु थाय छे.

अने जघन्यायु तो पहेले पाथडे दश हजार वर्ष, बीजे पाथडे दशलाख वर्ष, त्रीजे नेवुं लाख वर्ष, चोथे पाथडे एक पूर्वकोटि वर्ष, पांचमे एक सागरोपमना दश नाग करीयें तेवो एक नाग पछी पाथडे पाथडे एकेको नाग वधारतां यावत् तेरमे पाथडे एक सागरना दशीय्या नवनाग आयु थाय.

हवे बीजी नरकपृथ्वीआदिकमां उत्कृष्टी आयुःस्थिति आणवाने अर्थें उपाय कहे छे.

शर्करप्रनाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपम छे, तेमांथी रत्नप्रनाने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते काढीयें, तेवारें शेष बे सागरोपम रहे, ते बे सागरोपमने शर्करप्रनाना अगीयार प्रतरें नाग आपीयें, तेवारें एक नागमां एक सागरोपमना अगीयारीया बे नाग आवे, ते बेने वांछित प्रतर साथें गुणीयें, तेवारें प्रथम प्रतरें एकनी साथें गुण्यां थकां बे नागज आवे. तेनी साथें वली रत्नप्रना पृथ्वीने विषे उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते नेलीयें, तेवारें प्रथम प्रतरें एक सागरोपमनी उपर एक सागरोपमना अगीयार नाग करीयें, तेवा बे नाग आवे. एटली शर्करप्रनाना प्रथम प्रतरें उत्कृष्टी आयुःस्थिति जाणवी. पछी प्रतरें प्रतरें बे बे नाग वधारतां यावत्

अगीयारमे प्रतरें पूर्ण त्रण सागरोपम आयु थाय, अने पहेला प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति तेटलीज बीजे प्रतरें जघन्य स्थिति होय. एम सर्व प्रतरें कहेवुं.

एमज त्रीजी वालुकाप्रभाने विषे सात सागरोपम उत्कृष्टायु छे, तेमांथी शर्करप्रभाना त्रण सागरोपम काढीयें, शेष चार सागरोपम रहे. ते त्रीजीपृथ्वीना नव प्रतर छे, तेनी साथें वहेंचीयें, तेवारें एक भागमां एक सागरोपमना नवभाग करीयें, तेवा चार भाग आवे. तेनी साथें शर्करप्रभानी उत्कृष्ट स्थितिना त्रण सागरोपम मेलवीयें, एटलुं प्रथम प्रतरें उत्कृष्टायु होय, तेम बीजे प्रतरें त्रण सागरोपमनी उपर आठ भाग आयु होय यावत् नवमे प्रतरें सात सागरोपमायु पूर्ण थाय, अने जघन्यायु पूर्वली रीतें कहेवुं.

प्रत्येक नरकें प्रतरें प्रतरें जघन्योत्कृष्टायु जाणवानो यंत्र.

रत्नप्रभाप्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्यसागर.	दशस.	दशभा	नेवुंभा	पूर्वको	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दशैयाभाग.	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
उत्कृष्टसागर.	नेवुंस.	नेवुंभा	पूर्वको	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दशैयाभाग.	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
शर्करप्रभाप्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	तमस्त०	१
जघन्यसागर.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	जघन्य.	१२
अग्यारियाभा	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	उत्कृष्ट.	२२
उत्कृष्टसागर.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३		
अग्यारियाभा	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०		
वालुप्रभाप्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	तमःप्र	१	२	३
जघन्यसागर.	३	३	३	४	४	५	५	६	६	जघ०	१७	१८	२०
नवैयाभाग.	०	४	८	३	७	२	६	१	५	त्राइ.	०	२	१
उत्कृष्टसागर.	३	३	४	४	५	५	६	६	७	उत्कृ.	१८	२०	२२
नवैयाभाग.	४	८	३	७	२	६	१	५	०	त्राइ.	२-	१	०
पंकप्रभाप्रत०	१	२	३	४	५	६	७	धूमप्र.	१	२	३	४	५
जघन्यसागर.	७	७	७	८	८	९	९	जघन्य	१०	११	१२	१४	१५
सातैयाभाग.	०	३	६	२	५	१	४	पांचै०	०	२	४	१	३
उत्कृष्टसागर.	७	७	८	८	९	९	१०	उत्कृष्ट	११	१२	१४	१५	१७
सातैया भाग.	३	६	२	५	१	४	०	पांचै०	२	४	१	३	०

हवे साते नरकें मली चोराशी लाख नरकावासा छे ते सर्व मांहेली बाजुयें गोल छे, बाहेर चोखूणा छे, हेठें धरतीनुं तलीयुं पाषाणनी धार सरखुं छे, ते अत्यंत दुर्गंधमय छे.

हवे ए नरकावासानुं आयाम, विष्कंज अने उंचपणुं कहे छे. सर्व साते पृथिवी संबंधि नरकावासा त्रण त्रण हजार योजन उंचपणे छे. तेमां एक हजार योजन नीचें छें, अने एक हजार योजन वच्चमां पहोला छे. तथा एक हजार योजन उपर पृथ्वी पिंम छे, तेमज पहोला अने लांबा असंख्याता योजन छे. मात्र रत्नप्रजाने पहेले पाथडे सीमंतो नरकावासो छे, ते पीस्तालीश लाख योजन लांबो पहोलो छे अने सातमी नरकनो अपश्हाणो इंडक नरकावासो एक लाख योजन लांबो पहोलो छे.

हवे पाथडानुं मांहोमांहे अंतर कहे छे. रत्नप्रजा पृथिवीयें १८०००० योजन पृथ्वीपिंम छे, तेमांथी एकेक हजार योजन नीचें उपरथी काढीयें, बाकी १७८००० रहे, तेमांथी तेर पाथडानी उंचाइना ३ए००० योजन काढीयें बाकी १३ए००० योजन रहे, ते तेर पाथडाना आंतरा बार थाय, तेनी साथें वहेंचीयें तेवारें एक जागमां ११५८३ योजननी उपर एक योजनना बार जाग करीयें, तेवा चार जाग आवे, एटलुं पहेली नरकना प्रतरें प्रतरें अंतर छे, एमज बीजी नरक प्रमुखने विषे आंतरानुं गणित करवुं.

पहेली नरकना बार आंतरामां पहेलो तथा छेहलो ए बे आंतरा शून्य छे अने शेष दश आंतरामां जुवनपति देवोनी दश निकाय छे, पण बीजी आदिक नरक पृथिवीना आंतरा सर्व शून्य जाणवा. एना यंत्रोनी स्थापना नीचें करी छे ते जोइ लेवी.

हवे साते नरकना प्रत्येक प्रतर मांहेला मध्यना वचला इंडक नरकावासाथी चार दिशायें चार श्रेणि अने चार विदिशायें चार श्रेणि एम आठ श्रेणि नरकावासानी निकली छे, तिहां पहेले पाथडे प्रत्येक चार दिशानी एकेक श्रेणिमां उंगणपच्चास नरकावासा छे अने चार विदिशानी प्रत्येक श्रेणिमां अडतालीश नरकावासा छे. पछी पाथडे पाथडे एकेक नरकावासो घटाडतां यावत् सातमी नरकें उंगणपच्चासमे प्रतरें चारे दिशानी पंक्तिमां एकेक नरकावासो छे अने विदिशानी पंक्तिमां नरकावासो नथी तेनी साथें एक मध्यने इंडक नरकावासो मेलवीयें, तेवारें सातमी नरकें पांच नरकावासा छे.

रत्नप्रजा पृथ्वीने पहेले पाथडे चारे दिशिना १ए६ अने चार विदिशाना १ए२ तथा एक वचमांनो मेलवतां ३८ए पंक्तिगत नरकावासा थाय. पछी बीजे पाथडे चार दिशिना चार अनें चार विदिशिना चार मली आठ घटे, तेवारें ३८१ थाय. एम त्रीजा आदिकमां आठ आठ घटावतां यावत् उंगणपच्चासमे प्रतरें पांच नरकावासा पंक्तिगत रहे, शेष्य नरकावासा सर्व पुष्पावकीर्ण जाणवा. अथवा आवलिकागत नरकावासा

जाणवानो उपाय कहे छे. पहेली नरकना पहेला पाथडाना नरकावासाने मुख्य कहीयें अने पहेली नरकें तेर पाथडा छे, माटें तेरमा पाथडाना नरकावासाने भूमि कहीयें, ए बेनो शरवालो करी तेनुं अर्द्ध करी वांछित प्रतरें गुणीयें, तेवारें ते प्रतरना पंक्तिगत नरकावासानी संख्या आवे. एना यंत्रो दाखल करेला छे, ते जोइ लेवा.

रत्नप्रभानें पहेले कांमें रत्न घणां छे, माटें एनुं रत्नप्रभा गोत्र कहीयें,बीजी शर्करायें कांकरा घणा छे, त्रीजी वालुकायें वेलु एटले रेती घणी छे, चोथी पंकप्रभायें कादव घणो छे, पांचमी धूमायें धूम्र घणो छे, छठी तमःप्रभायें अंधकार घणो छे,अने सातमी तमस्तमप्रभायें अंधकारनुं बहुल पणुं छे, एम साते नरकना गुणनिष्पन्न गोत्र छे. ए सात नरक संबंधि गोत्रना हेतु जाणवा.

सात नरकनां नाम, गोत्र, नरकावासानी संख्या, प्रतरसंख्या, पृथ्वीपिंम, सामान्य थी जघन्य उत्कृष्टायु, तेमज देहमान, अवधिज्ञाननुं क्षेत्र, एक नारकी उपना पछी बीजो नारकी केटले कालें उपजे, तेनो विरहाकाल ए सर्वेनो यंत्र.

साते नारकीनां नाम.	सात नारकीनां गोत्र.	नरकावासानी संख्या.	प्रतरसं० पाथडा.	नरकनुं उंचपणुं पृथ्वीपिंम.	सामान्यें जघन्यायु.
घम्मा.	रत्नप्रभा.	३००००००	१३	१८००००	दश हजारवर्ष.
वंशा.	शर्करप्रभा.	२५०००००	११	१३२०००	एक सागर.
शैला.	वालुकप्रभा.	१५०००००	९	१२८०००	त्रण सागर.
अंजणा.	पंकप्रभा.	१००००००	७	१२००००	सात सागर.
रिठा.	धूमप्रभा.	३०००००	५	११८०००	दश सागर.
मघा.	तमःप्रभा.	९९९९५	३	११६०००	सत्तर सागर.
मघावती.	तमस्तमप्रभा.	५	१	१०८०००	बावीश सागर.

सामान्यें उत्कृष्टायु.	सामान्य देहमान धनुष्य.	उत्कृष्ट वैक्रिय देहमान.	उत्कृष्ट अवधि ज्ञानके० क्षे०	जघन्य विरहकाल.	उत्कृष्ट विरह काल.
एक सागर.	ध० ७॥ अं० ६	ध० १५॥ अं० १२	गाउ. ४	एक समय.	चोवीशमुहूर्त्त
त्रण सागर.	ध. १५॥ अ. १२	ध० ३१।	गाउ. ३॥	एक समय.	सात दिवस.
सात सागर.	ध० ३१।	ध० ६२॥	गाउ. ३	एक समय.	पन्नर दिवस.
दश सागर.	ध० ६२॥	ध० १२५	गाउ. २॥	एक समय.	एक मास.
सत्तर सागर.	ध० १२५	ध० २५०	गाउ. २	एक समय.	बे मास.
बावीश सागर.	ध० २५०	ध० ५००	गाउ. १॥	एक समय.	चार मास.
तेत्रीश सागर.	ध० ५००	ध० १०००	गाउ. १	एक समय.	छ मास.

साते नरकना उगणपच्चास प्रतरें दिशि अने विदिशि संबंधी नरकावासानी पंक्तिनी संख्यानो तथा एकंदर पंक्तिगत नरकावासानी संख्यानो यंत्र.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
दिशि.	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९
विदिशि.	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८
सर्वसं०	३८९	३८१	३७३	३६५	३५७	३४९	३४१	३३३	३२५	३१७	३०९

१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
३०१	२९३	२८५	२७७	२६९	२६१	२५३	२४५	२३७	२२९	२२१	२१३	२०५

प्र०	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
दि०	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४
वि०	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३
सर्व.	१९७	१८९	१८१	१७३	१६५	१५७	१४९	१४१	१३३	१२५	११७	१०९

३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०
१०१	९३	८५	७७	६९	६१	५३	४५	३७	२९	२१	१३	५

सात नरक पृथिवीमां आवलिकागत नरकावासानी संख्या आणवा मार्टे मुख, भूमि समासादिक करणनो यंत्र तथा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्या.

७ पृथिवी.	१ रत्नप्र०	२ शर्करा.	३ वालु०	४ पंकप्र०	५ धूमप्र०	६ तमःप्र०	७ तमस्त०	सर्वसं०
मुखानि.	३८९	२८५	१९७	१२५	६९	२९	४	३८९
भूमयः	२९३	२०५	१३३	७७	३७	१३	०	५
समास.	६८२	४९०	३३०	२०२	१०६	४२	०	३९४
समासा०	३४१	२४५	१६५	१०१	५३	२१	०	१९७
प्रतराः	१३	११	९	७	५	३	१	४९
पंक्तिगत.	४४३३	२६९५	१४८५	७०७	२६५	६३	५	९६५३
पुष्पाव०	२९९५५६७	२४९७३०५	१४९८५१५	९९९२९३	२९९७३५	९९९३२	०	८३९०३४७
शरवाले.	३००००००	२५०००००	१५०००००	१००००००	३०००००	९९९९५	५	८४०००००

छ नारकीना पृथ्वीपिंडमांथी नीचें तथा उपरना एकेक हजार योजन न्यून करवा अने सातमी नरक पृथ्वीयें साडी बावन हजार योजन नीचें अने साडी बावन हजार योजन उपर मूकीयें. तेवारें बाकी त्रण हजार योजन रहे. तेमां एकज पाथडो छे. शेष छ नरक पृथ्वी संबंधि पाथडाना आंतरानो यंत्र.

नरकनां नाम.	रत्नप्रभा.	शर्करप्रभा.	वालुकप्रभा.	पंकप्रभा.	धूमप्रभा.	तमःप्रभा.	तमस्तमःप्रभा
पृथ्वीपिंड.	१८००००	१३२०००	१२८०००	१२००००	११८०००	११६०००	१०८०००
द्विसहस्रोन करतां	१७८०००	१३००००	१२६०००	११८०००	११६०००	११४०००	३०००
प्रतरसंख्या.	१३	११	९	७	५	३	१
प्रतरनुं उंचपणुं.	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००	३०००
पाथडा०पृथि.पिंड	३९०००	३३०००	२७०००	२१०००	१५०००	९०००	३०००
शेष पा० विना पृ०	१३९०००	९७०००	९९०००	९७०००	१०१०००	१०५०००	१०५०००
पाथडानी संख्या.	१२	१०	८	६	४	२	०
प्रतरांतर मान.	११५८३ ४/१२	९७००	१२३७५	१६१६६ ८/१२	२५२५०	५२५००	०

प्रत्येक नरक पृथिवीयें आवलिकागत वाटला नरकावासानी तथा त्रिखूणा अने चौखूणा नरकावासानी तथा छूटा पुष्पावकीर्ण नरकावासानी संख्यानो यंत्र. अने वचलो इंद्रक नरकावासो गोल होय पछी पंक्तिमां पहेलो त्रिखूणो, बीजो चौखूणो पछी वाटलो एम आवलिकाना छेहेडा सुधी कहेवुं.

नरकनाम.	घम्मा. १	वंशा. २	शेला. ३	अंजणा. ४	रिट्ठा. ५	मघा. ६	माघ०७	आवलिकागत.
वाटला.	१४५३	८७५	४७७	२२३	७७	१५	१	३१२१
त्रिखूणा.	१५०८	९२४	५१६	२५२	१००	२८	४	३३३२
चोखूणा.	१४७२	८९६	४९२	२३२	८८	२०	०	३२००
सर्वसंख्या.	४४३३	२६९५	१४८५	७०७	२६५	६३	५	९६५३
पुष्पावकीर्ण.	२९९५५६७	२४९७३०५	१४९८५१५	९९९२९३	२९९७३५	९९९३२	०	८३९०३४७
सर्वसंख्या.	३००००००	२५०००००	१५०००००	१००००००	३०००००	९९९९५	५	८४०००००

पहेली रत्नप्रभा नारकी संबंधि १८०००० योजन पृथिवीपिंडमांहे नारकीना तेर पाथडा त्रण त्रण हजार योजनना उंचा एक बीजानी उपर ठे, तेनी वचमां केटलुं केटलुं एकेका प्रतरनी मांहोमांहे अंतर ठे? तथा भवनपति देवोनी दश निकाय कया कया प्रतरना अंतरमां ठे? अने कयुं अंतर शून्य ठे? तथा नीचेंना हजार योजन शून्य ठे अने उपरना हजार योजनमां व्यंतर तथा वाणव्यंतर देवोनी निकाय कया कया स्थानकें ठे? ते देखाडवानो यंत्र.

उत्तरश्रेणि.	पिंड योजन प्रमाण.	दक्षिणश्रेणि.
रत्नप्रभा बीजी उत्तरश्रेणि.	१० योजन भूतपिंड.	पहेली दक्षिणश्रेणि रत्नप्रभा.
सुवत्स आदिक आठ इंद्र.	८० अणपन्नीयादिकवाणव्यं.	सन्निहित आदि आठ इंद्र.
शून्यपिंड ठे.	१० योजन भूतपिंड.	शून्यपिंड ठे.
माहाकालादि आठ इंद्र.	८०० योजनपिशाचव्यंतर.	कालेंद्रप्रमुख आठ इंद्र.
शून्यपिंड ठे.	१०० योजननो पिंड.	शून्य पिंड ठे.
पहेलो पाथडो उंचो ठे.	३००० योजन प्रमाण उंचो.	एमां नरकावासा ठे.
पहेलुं प्रतरांतर मान.	११५८३ ४/१२ योजनमां.	एटलामां आकाश शून्य ठे.
बीजो पाथडो उंचो ठे.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
असुरकुमार निकाय बलींद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	असुरकुमार निकाय चमरेंद्र.
त्रीजो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
नागकुमार निकाय भूतानंदेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	नागकुमारनिकायधरणेंद्र.
चोथो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
सुवर्णकुमार वेणुदालींद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	सुवर्णकुमारनिकाय वेणुदेवेंद्र.
पांचमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
विद्युत्कुमारनिकायहरिशिषेंद्र	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	विद्युत्कुमारनिकायहरिकांतेंद्र
ठ्ठो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
अग्निकुमारनि. अग्निमाणवेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	अग्निकुमारनि० अग्निशिखेंद्र.
सातमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
द्वीपकुमार निकाय विशिष्टेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	द्वीपकुमारनिकाय पूर्णेंद्र.
आठमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.
उदधिकुमारनिकायजलप्रभेंद्र.	११५८३ ४/१२ आंतरामां.	उदधिकुमारनि० जलकांतेंद्र.
नवमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा ठे.

दिशिकु० नि० अमितवाहनेंद्र.	११५८३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां	दिशिकुमार निकाय अमितेंद्र.
दशमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
पवनकुमारनि० प्रभंजनेंद्र.	११५८३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	पवनकुमारनिकाय वेलंबकेंद्र.
अगियारमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
स्तनितकुमारनिकाय घोषेंद्र.	११५८३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	स्तनितकुमारनि० माहाघोषेंद्र.
बारमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
ए आंतरामां शून्य छे.	११५८३ $\frac{४}{१२}$ आंतरामां.	ए आंतरो शून्य छे.
तेरमो पाथडो.	३००० योजन प्रमाण.	एमां नरकावासा छे.
अधो भाग.	१००० योजन प्रमाण.	नरकावासा रहित छे.
सर्वसंख्या.	१८०००० योजन.	रत्नप्रभानो पिंम प्रमाण छे.

हवे नारकीमां प्रतरें प्रतरें जूडुं जूडुं उत्कृष्ट देहमान कहे छे.

रत्नप्रभाना प्रथम प्रतरें उत्कृष्ट देहमान त्रण हाथनुं छे,अने तेरमे प्रतरें सात धनुष्य त्रण हाथ ने छ अंगुल छे, तेमांथी पहेला प्रतरना त्रण हाथ काढीयें, तेवारें शेष सात धनुष्य ने छ आंगुल रहे. ते सात धनुष्यना अठावीश हाथ थाय. तेनें तेर प्रतरमांथी प्रथमनो प्रतर एक मूकी शेष बारने आंके वहेंचीयें, तेवारें एक भागमां बे हाथ आवतां बार डु चोवीश हाथ जाय, बाकी चार हाथ रहे. तेनां ७६ अंगुल थाय,तेनी साथें प्रथमनी छ अंगुल उपर छे, ते मेलवियें, तेवारें १०२ अंगुल थाय, तेने बारने आंकें वहेंचतां एक भागमां साडाआठ अंगुल आवे, तेवारें वे हाथ ने साडाआठ अंगुलनी वृद्धि करतां बीजे प्रतरें पांच हाथ ने साडाआठ अंगुल देहमान थाय. एम प्रतरें प्रतरें बे हाथने साडाआठ आंगुल वधारतां यावत् तेरमे प्रतरें सात धनुष्यनी उपर त्रण हाथ ने छ अंगुल देहमान थाय. फरी तेटलुंज देहमान बीजा नरकना प्रथम प्रतरें कहेवुं. वली शर्कराने अगीयारमे प्रतरें एथी बमणुं देहमान थवानुं छे,माटें उत्कृष्टामांथी जघन्य देहमान काढीयें,एटले पोणा आठ धनुष्य ने छ अंगुल वधे,तेना अंगुल करीयें, तो ७५० थाय, ते शर्कराना अगियार प्रतरमांथी पहेला प्रतरनुं आयु कहेवाणुं माटे तेने पडतुं मूकी बाकी दश प्रतरें वहेचीयें, तेवारें पंचोतेर अंगुल एक भागमां आवे, तेना त्रण हाथ ने त्रण अंगुल थाय, तेटलुं प्रत्येक प्रतरें देहमान वधारतां अगीयारमे प्रतरें साडा पन्नर धनुष्य ने बार अंगुल देहमान थाय, तेटलुं देहमान वली त्रीजी नरकने प्रथम प्रतरें आणीने पछी तेज करण करवुं एम सर्व नरकपृथ्वीयें करतां देह प्रमाण थाय. ते सर्व नीचेंना यंत्रथी जोइ लेजो.

रत्नप्रभादिक प्रत्येक पृथ्वीना जूदा जूदा प्रतरें शरीरना प्रमाणनो यंत्र.

१ रत्नप्रभा.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य.	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हस्त.	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल.	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

२ शर्करप्रभा.

प्रतर.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष्य.	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हस्त.	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल.	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ वालुकप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ध०	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
ह०	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अं०	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५	६	७
ध०	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
ह०	१	१	२	३	०	१	२
अं०	०	२०	१६	१२	८	४	०

५ धूमप्रभा.

प्र०	१	२	३	४	५
ध०	६२	७८	९३	१०९	१२५
ह०	२	०	३	१	०
अं०	०	१२	०	१२	०

६ तमःप्रभा.

प्र०	१	२	३
ध०	१२५	१८७	२५०
ह०	०	२	०
अं०	०	०	०

७ तमस्तमप्रभा.

प्र०	१
ध०	५००
ह०	०
अं०	०

हवे ए साते नरक पृथ्वी शेने आधारें रहेली छे ? ते कहे छे. नारकीना मध्यमां वचें घनोदधिनो पिंड वीश हजार योजन छे,अने घनवात,तनुवात तथा आकाश असंख्याता योजननो पिंड छे, तेमां घनवातथी असंख्यातगुणो तनुवात छे, अने तनुवातथी असंख्यातगुणो आकाशनो पिंड छे. घनोदधि, घनवात उपर प्रतिष्ठित छे, घनवात तनुवात उपर प्रतिष्ठित छे, तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित छे, आकाश कोइ उपर प्रतिष्ठित नथी. ए घनोदध्यादिक चार वलयें करी सर्व पृथ्वीयो वींटेली छे, ते अनुक्रमें मध्यभागथी चारे दिशायें चारे वलय प्रदेशें प्रदेशें घटतां घटतां यावत् आप आपणी

पृथ्वीने छेहडे छेक घणाज स्वल्प थया थका वलयाकारें वींटी रह्या छे. त्यां सर्व नरक पृथ्वी योने छेहडे केटला केटला योजननां वलय रह्यां छे, तेना यंत्र, तथा साते नरक पृथिवी भेली कस्या थकां छत्रातिछत्र आकार छे, एटले उपर न्हानुं छत्र तेनी नीचें महोटुं छत्र, तेनी नीचें महोटुं एम हेठली हेठली नरक महोटीमहोटी छे. वीश हजार योजन घनोदधिनो पिंम कह्यो, अने असंख्याता योजन घनवातादिकनो पिंम कह्यो. ते सर्व नरकनी वचालें होय, पछी अनुक्रमें प्रदेशें प्रदेशें घटतो घटतो छेहडे आ यंत्रमां लख्या प्रमाणें वलय होय.

नरक. घनोदधिवलयप्रमाण. घनवातवलय. तनुवातवलयप्रमाण. त्रणेनुसरवालो

नरक आंक.	योजन	गाउ.	गाउत्रै याभाग	योजन.	गाउ.	योजन.	गाउ.	गाउना त्र.भाग	योजन.	गाउ.	गाउत्रइ याभाग.
१	६	०	०	४	२	१	२	०	१२	०	०
२	६	१	१	४	३	१	२	१	१२	२	२
३	६	२	२	५	०	१	२	२	१३	१	१
४	७	०	०	५	१	१	३	०	१४	०	०
५	७	१	१	५	२	१	३	१	१४	२	२
६	७	२	२	५	३	१	३	२	१५	१	१
७	८	०	०	६	०	२	०	०	१६	०	०

रत्नप्रभा पृथ्वीना १८०००० पिंममां पहेलो खरकांम १६००० योजन छे, बीजो पंकबहुलकांम ८४००० योजन छे, त्रीजो जलबहुलकांम ८०००० योजन छे. अने बीजी सर्व पृथ्वी पृथ्विकायमय जाणवी. साते नरक पृथ्वी घनोदधि, घनवात, तनुवातने वलयें करी वींटली छे, माटें आयाम विष्कंभें करी चारें दिशायें अलोकनें फरसे नही. चारे दिशायें छेहलो तनुवात वलय अलोकने फरशे छे माटें. तथा नारकीने वेदनानुं स्वरूप जैनप्रबोध पुस्तक तथा सूयगडांग सूत्र तथा संघयणादि ग्रंथोमां छपायुं छे.

हवे आ पुस्तकमां देव नारकियादिकनां आयु तथा द्वीपसमुद्रनां प्रमाण सर्व पल्योपम अने सागरोपमें करी कह्यां छे, माटें पल्योपम अने सागरोपमनुं स्वरूप लखीयें छैयें.

ते पल्योपम तथा सागरोपम एकेका त्रण प्रकारना बादर तथा त्रण प्रकारना सूक्ष्म मली छ प्रकारें छे. तेमां बादर कोइ काममां नथी आवता परंतु सूक्ष्म काममां आवे छे. पल्य एटले जेमां धान्य भरीयें तेनी जेने उपमा छे तेने पल्योपम कहीयें. ते अथवा जेणें करी कालादिकनां प्रमाण मवीयें उपमीजें, तेने पल्योपम कहीयें. ते

एक उद्धार पल्योपम बीजो अद्ध पल्योपम अने त्रीजो क्षेत्रपल्योपम, एवा त्रण प्रकारें छे. ते उद्धारादिक एकेको वली एक सूक्ष्म अने बीजो बादर एवा बे बे भेदें छे.

हवे पल्यनुं प्रमाण कहे छे. उत्सेधांगुलें एक योजननो कूवो वाटलो गोलाकारें जा णवो, ते लांबपणे तथा पहोलपणे अने उंडपणे सर्वत्र एक योजन प्रमाण कहेवो ते नो परिधि त्रण योजन अने एक योजनना छ भाग करीयें, तेवो एक भाग ऊपर थाय.

ते कूवो देवकुरु उत्तरकुरु नामें जे युगलियानां क्षेत्र छे, तिहां जघन्य एक बे त्रण दिवसना उत्कृष्टथी सात दिवसना जन्मेला गाडराना रोम अंगुल प्रमाण लेवा, ते रो मना प्रथम आठ कटका करीयें वली ते एकेका कटकाना आठ आठ कटका करतां ६४ कटका थाय. त्रीजी वार आठ खंड करतां ५१२ थाय. चोथी वार आठ खंड क रतां ४०९६ थाय. पांचमी वार आठ खंड करतां ३२७६८ थाय. छठी वार आठ खं ड करतां २६२१४४ थाय. सातमी वार आठ खंड करतां २०९७१५२ थाय.

ए वीश लाख सत्ताणुं हजार एकशो नें बावन खंड थया, ते सर्व बादर खंड थया तेणें करी पूर्वोक्त पालो संपूर्ण ठांशीने एवो भरवो के ते अग्निथी बले नही, वायराथी रोमखंड उडे नही, गंगानदीनो प्रवाह उपरथी चाल्यो जाय तो पण तेने ताणी शके नही, चक्रवर्त्तीनुं कटक उपरथी चाल्युं जाय, तो पण धसके नही. एवो ते कूवो भरी ने पछी ते मांहेथी अकेक समयें अकेक केश खंड काहाडतां थकां जेटले कालें ते पा लो खाली थाय, तेटलो बादर उद्धार पल्योपमनो संख्याता समय प्रमाण काल होय, जे भणी ते खंड संख्याताज होय, माटें संख्यातो काल कह्यो, ए बादर उद्धार पल्यो पम जे कह्यो ते मात्रसूक्ष्म उद्धार पल्योपमनुं स्वरूप समजाववामांज उपयोगी होय. परंतु बीजा कशामां पण काम आवे नही.

हवे पूर्वें जे वालाग्रखंडें पल्य भर्यो छे, ते बादर एकेक खंडना असंख्याता सूक्ष्म खंड कल्पियें, ते एवा कल्पीयें, के जे एक खंडनो वली बीजो खंड केवली केवल ज्ञानें करी पण कल्पी न शके, सतेजवंत नेत्रनो धणी जे जालीमांहेथी सूक्ष्म पुद्गल सूर्यना तेजें करी देखे, तेनो असंख्यातमो भाग अथवा बादर पर्याप्त पृथिवी कायिया जीवनुं जेवुं सूक्ष्म शरीर होय, तेवडे खंडें करी पूर्वोक्त कूवो भरीयें, ते एकेको खंड स मय समय काहाडतां असंख्याता समय लागे, अर्थात् संख्याता वर्षनी कोटियें करी ते कूप खाली थाय तेने सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहीयें. तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमें एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय. तेवा अढी सागरोपमना जेटला समय थाय तेट ले प्रमाणें असंख्याता द्वीप समुद्र छे. ए सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कह्यां.

तथा तेहीज योजन प्रमाण पल्य बादर वालाग्रें नयो; ते मध्येंथी शो शो वर्षे एकेक केशखंम काहाडतां, ते पल्य संख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण कालें निर्लेप थाय, तेवारें बादर अद्धा पल्योपम संख्याता वर्ष प्रमाण थाय.

वली तेहीज खंमना पूर्वोक्त रीतें असंख्याता खंम कल्पी ते कल्पना खंम शो शो वर्षे एकेक कहाडतां जेवारें ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारें सूक्ष्म अद्धापल्योपम असंख्याता वर्षनी कोडी प्रमाण थाय. तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म अद्धापल्योपमें एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम थाय. तेवा वली दश कोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्प्पिणी काल थाय. वली तेवा दश कोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्पिणी काल थाय. ए अवसर्प्पिणी तथा उत्सर्पिणीना बेहु काल मली वीश कोडाकोडी सागरोपमें एक कालचक्र थाय, ए सूक्ष्म अद्धापल्योपम अने सागरोपमें करी देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यंचना आयुनुं मान तथा कर्मस्थितिमान तथा कायस्थितिमान तथा नवस्थितिनां कालमानादिक मवीयें, ए चोथुं सूक्ष्म अद्धापल्योपम कह्युं, एटले ए सूक्ष्म अद्धासागरोपमना अनंता पुजलपरावर्त्ते अतीत अद्धा तथा अनंता पुजलपरावर्त्ते अनागत अद्धा थाय. तिहां अनागत अद्धानी अनंतता ले अने अतीत अद्धानुं आदि नथी, तेथी बेहुनें समानपणुं ले. अन्य आचार्य वली एम कहे ले, के जो पण समयादिकें करी अनागत अद्धा हीयमान ले, तो पण अनागत अद्धानो क्षय नथी थतो, ते माटें अतीत अद्धाथकी अनागत अद्धा अनंतगुणी ले.

सांप्रत बे प्रकारना क्षेत्र पल्योपमनुं निरूपण करीयें लैयें. ते पूर्वोक्त बादर वालाग्र खंमें करी नयो जे पल्य ते मध्यें कल्पना करेला वालाग्रें स्पर्श्या जे आकाशप्रदेश ते मांहेथी एकेक आकाश प्रदेश समय समय काहाडतां जेवारें सर्व वालाग्रें स्पष्ट थयेला एवा सर्व आकाश प्रदेश निर्लेप थाय, तेवारें असंख्याती उत्सर्पिणी अने असंख्याती अवसर्प्पिणी कालप्रमाण एक बादर क्षेत्रपल्योपम थाय.

हवे ते पल्यना सूक्ष्म एकेका वालाग्रने स्पर्श्या आकाश प्रदेश तथा अणस्पर्श्या एवा समस्त आकाशप्रदेशने समय समय काहाडतां जेवारें ते पल्य निर्लेप थाय, तेवारें पूर्वोक्त बादरक्षेत्र पल्योपमना कालमानथकी असंख्यातगुणुं असंख्याती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी प्रमाण सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमनुं कालमान थाय. तेवा दश कोडाकोडी सूक्ष्म क्षेत्रपल्योपमें एक सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय, एणें करी त्रसादिक जीवनुं परिमाण करवुं, एटले दृष्टिवादने विषे द्रव्य प्रमाण चिंतवीयें तथा पृथिव्यादिक एकेंद्रिय त्रसांत जीवनुं परिमाण करीयें, तेने विषे एवुं प्रयोजन ले.

अहीं शिष्य पूछे छे के, जो स्पष्ट,अस्पष्ट, नजःप्रदेश अहीं सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमें करीने ग्रहण करीयें छैयें, तो वालाग्रोनुं शुं प्रयोजन छे ? यथोक्त पल्यांतरगत नजःप्रदेशापहारमात्रथीज सामान्यपणे कहेवुं उचित छे ? तत्र गुरु कहे छे, के ए सत्य छे. किंतु सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपमें करी दृष्टिवादने विषे इव्य मवीयें छैयें, ने केटलाएक यथोक्त वालाग्र स्पष्ट नजःप्रदेशें करी मवियें छैयें, माटें दृष्टिवादोक्त इव्यमानोपयोगी पणाथकी वालाग्र प्ररूपण प्रयोजनवालुं छे.

एम त्रण सूक्ष्म पल्योपम शास्त्रने विषे उपयोगी होय अने त्रण बादर पल्योपम कह्यां, ते सूक्ष्मनुं स्वरूप समजववा माटेंज जाणवां. अहींयां घणुं तो सूक्ष्म अद्धापल्योपमनुं प्रयोजन छे, ते अद्धापल्योपमें करी वीश कोडाकोडी सागरोपमनुं कालचक्र थाय, तेवा अनंतें कालचक्रें एक पुजलपरावर्त्त थाय, एवा अनंत पुजलपरावर्त्तं अतीत अद्धा अतिक्रम्या ते जणी एने विषे पुजलपरावर्त्त एवी संज्ञा करीयें ॥ इति ॥

हवे पृथ्वीनें विषे सो प्रकारनां जे रत्नो कहेवाय छे, तेना जेदो कहे छे.

१ तेमां प्रथम जुवनना त्रण जेद छे,ते कहे छे. १देवजुवन,२मनुष्यजुवन,३नागजुवन.

२ बीजा स्थानना त्रण जेद छे,ते कहे छे. १मनुष्यस्थान,२देवस्थान,३नारकीस्थान.

३ त्रीजा जूमिना त्रण जेद छे, ते कहे छे. १ उत्तम, २ नीच, ३ सम.

४ चोथा पुरुषना त्रण जेद छे, ते कहे छे. १ उत्तम, २ मध्यम, ३ अधम.

५ पांचमा पदार्थना त्रण जेद छें, ते कहे छे. १ धातु, २ मूल, ३ जीव.

६ छठा पुरुषार्थना चार जेद छे, ते कहे छे. १ धर्म, २ अर्थ, ३ काम, ४ मोक्ष.

७ सातमा राजवंशीना छत्रीश जेद छे, ते कहे छे. १ सूर्यवंश, २ सोमवंश, ३ यादव, ४ कदंब, ५ परमार, ६ इक्ष्वाकु, ७ चहुआण, ८ मोरी, ९ शिलार, १० सिंधव, ११ छिंदक, १२ चाउडा, १३ प्रतिहार. १४ लुंइक, १५ राठोड, १६ शक, १७ करटपाल, १८ करंट, १९ चंचिल्ल, २० गोहिल, २१ मकुआणक, २२ पौलक, २३ राजपाल, २४ धान्यपाल, २५ अनंग, २६ निकुल, २७ दधिकर, २८ कोल, २९ तुर, ३० दधिपक, ३१ हूल, ३२ हरिय, ३३ सेल्हार, ३४ मोमीया, ३५ जाडिया. ३६ कुलछरकुल.

८ आठमा राज्यनां सात अंग छे,तेनां नाम कहे छे. १स्वामी,२आमात्य,३जनपद, ४ जंमार, ५ दुर्ग एटले गढ, ६ बल, ७ मित्रांग.

९ नवमा राजगुणना छत्रु जेद छे,ते कहे छे. १ वंश, २ विनय, ३ विजय, ४ विवेक, ५ विद्या, ६ विचार, ७ सदाचार, ८ विस्तार, ९ परिछेद, १० अनुग्रह, ११ सदा

ग्रह, १२ यश, १३ सदोदित, १४ सर्वसह, १५ धर्मबल, १६ सत्य, १७ शौच, १८ सन्मान, १९ संस्थान, २० समाधान, २१ सौख्य, २२ सौजन्य, २३ सौभाग्य, २४ रूप, २५ स्वरूप, २६ सागत्य, २७ विभाग, २८ संयोग, २९ वियोग, ३० सत्त्व, ३१ संपूर्णत्व, ३२ सकलत्व, ३३ प्रसन्नत्व, ३४ सलज्जत्व, ३५ पालकत्व, ३६ पांमित्य, ३७ प्रणय, ३८ प्रसरण, ३९ प्रमाण, ४० प्रताप, ४१ प्रमोद, ४२ प्रारंभ, ४३ प्रभावभेद, ४४ संग्रह, ४५ विग्रह, ४६ पुष्टि, ४७ तुष्टि, ४८ प्रीति, ४९ प्राप्ति, ५० प्रशंसा, ५१ प्रतिष्ठा, ५२ प्रतिज्ञा, ५३ स्थैर्य, ५४ धैर्य, ५५ शौर्य, ५६ गांभीर्य, ५७ चातुर्य, ५८ बुद्धि, ५९ बल, ६० अध्यक्ष, ६१ विबोध, ६२ वृद्धि, ६३ सिद्धि, ६४ कांति, ६५ कीर्त्ति, ६६ स्फूर्त्ति, ६७ व्युत्पत्ति, ६८ वात्सल्य, ६९ मांगल्य, ७० महोत्सव, ७१ मंत्र, ७२ रसिकत्व, ७३ भावुकत्व, ७४ समृद्धित्व, ७५ गुरुत्व, ७६ शक्ति, ७७ भुक्ति, ७८ युक्ति, ७९ अयुक्ति, ८० अशक्ति, ८१ अनुक्रम, ८२ अभिमान, ८३ वदान्य, ८४ कारुण्य, ८५ दाक्षिण्य, ८६ वर्त्तन, ८७ स्पर्शन, ८८ रसन, ८९ घ्राण, ९० श्रवण, ९१ मर्यादा, ९२ मंमन, ९३ उदय, ९४ उदात्त, ९५ उत्साह, ९६ उत्तमत्व गुण.

१० दशमा राजपात्रना बत्रीश भेद छे, ते कहे छे. १ धर्मपात्र, २ काम, ३ विनोद, ४ विद्या, ५ विलास, ६ विन्यास, ७ ज्ञान, ८ क्रीडा, ९ हास्य, १० शृंगार, ११ वीर, १२ स्नेह, १३ जगन्मान्य, १४ मंत्री, १५ संधि, १६ महत्तम, १७ आमात्य, १८ प्रधान, १९ अध्यक्ष, २० सेनापात्र, २१ नागर, २२ पुष्प, २३ मान्य, २४ पदस्थ, २५ देशी, २६ राज्ञी, २७ कुलपुत्रिका, २८ पुनर्भू, २९ वेश्या, ३० दासी, ३१ दास, ३२ आभिचारिक.

११ अगीयारमा राजविनोदना छत्रीश भेद छे, ते कहे छे. १ गीत, २ विनोद, ३ लिखित, ४ शिक्षा, ५ वक्तृत्व, ६ कवित्व, ७ शास्त्र, ८ शस्त्र, ९ युद्ध, १० नियुद्ध, ११ गणित, १२ गज, १३ तुरग, १४ पक्षी, १५ आखेटक, १६ द्यूत, १७ जलयंत्र, १८ मंत्र, १९ महोत्सव, २० फल, २१ पुष्प, २२ कला, २३ गुण, २४ प्रहेलिका, २५ चित्र, २६ क्षेत्र, २७ खेलन, २८ वित्तसूत्र, २९ नृत्य, ३० श्रवण, ३१ क्रर, ३२ बुद्धि, ३३ विद्या, ३४ रथ, ३५ कथा, ३६ कलत्र.

१२ बारमा आस्थानना अढार भेदो छे, ते कहे छे. १ मल्ल, २ आपूहित, ३ स्निग्ध, ४ मंत्री, ५ महत्तम, ६ आमात्य, ७ प्रधान, ८ बुद्धिमुख, ९ भयमुख, १० आग्रायक, ११ सांग्रामिक, १२ देश्य, १३ पुरुषधर्म, १४ पुरुषविज्ञान, १५ पुरुषराज, १६ पुरुषकर्म, १७ पात्र, १८ विनोदपात्र. इति अष्टादशः भेदाः समाप्ताः ॥

१३ तेरमा राजविद्याना चार भेद छे, ते कहे छे. १ आन्विक्षिकी, २ चर्या, ३ वार्त्ता, ४ दंमनीति.

१४ चौदमा राजनीतिना चार नेद छे,तें कहे छें. १ साम, २ दाम,३ नेद, ४ दंम,

१५ पन्नरमा आयुधना बत्रीश नेद छे,तें कहे छे. १ चक्र, २ धनु, ३ धनुष्य, ४ वज्र, ५ अंकुश, ६ छुरिका, ७ तोमर, ८ कुंत, ए शूल, १० त्रिशूल, ११ शक्ति, १२ पाश, १३ मुजर, १४ गुलिका, १५ मुसटी, १६ लुंढी, १७ गदा, १८ शंकु, १ए पर्शु, २० पट्टीश, २१ रिष्ट, २२ करण, २३ यकपन, २४ हल, २५ मुशल, २६ मुद्गलिका, २७ कर्त्तरी, २८ करपत्र, २ए तरवार, ३० कोदाली, ३१ डुफोट, ३२ गोफण, ३३ माई, ३४ मब्रस, ३५ हडम्ब, अनें ३६ शस्त्र.

१६ शोलमा शास्त्रना सत्त्यावीश नेद छे, ते कहे छे. १ शब्दशास्त्र, २ अलंकारशास्त्र, ३ तर्कशास्त्र, ४ आगम, ५ गणित शास्त्र, ६ कल्प,७ कला, ८ शिक्षा,ए विनोद, १० विज्ञान, ११ मंत्र, १२ सामुड्रिक, १३ शकुन, १४ चिकित्सा, १५ सत्काव्य, १६ मोक्ष, १७ धर्म, १८ अर्थ, १ए वास्तुशास्त्र, २० प्रवरतर, २१ महानामकोश, २२ सुविद्या, २३ छंद, २४ स्वप्नशास्त्र, २५ नवरसयुक्तकाव्य, २६ नाद्य, २७ धीनादिशास्त्र.

१७ सत्तरमा तत्त्वना बावन नेद छे,ते कहे छे. १ पृथ्वी,२ अप्,३ तेज,४ वायु,५ आकाश, ६ शब्द, ७ रूप, ८ रस, ए स्पर्श, १० गंध, ११ घ्राण, १२ चक्षु, १३ श्रोत्र, १४ त्वक्, १५ पाणि, १६ पाद, १७ गुद, १८ उपस्थान, १ए बुद्धि, २० अलंकार, २१ प्रकृति, २२ पुरुषरक्त, २३ मांस, २४ मेद, २५ मज्जा, २६ शुक्र, २७ अस्थि, २८ वातरस, २ए गंध, ३० स्पर्श, ३१ घ्राण, ३२ चक्षु, ३३ पित्त, ३४ कफ, ३५ मल, ३६ काम, ३७ क्रोध, ३८ लोन, ३ए नय, ४० मोह, ४१ मात्सर्य, ४२ राग, ४३ नियति, ४४ काल, ४५ विद्या, ४६ शुद्धविद्या, ४७ माया, ४८ शक्ति, ४ए नाद, ५० बिंडु, ५१ कला, ५२ ईश्वर शिवतत्त्व.

१८ अढारमी कलाना बहोंतेर नेद छे,ते कहे छे. १ वाद्य,२ नृत्य, ३ गणित,५ पठित,६ लिखित, ७ लेख्य,८ वक्तृत्व,ए कथा, १० वंचन, ११ नाटक, १२ छंद,१३ अलंकार, १४ दर्शन, १५ अनिधान, १६ धातुकर्म, १७ अर्थमान, १८ वाद, १ए वृद्धि, २० शोच, २० मंत्र, २१ विनोद, २२ विचार, २४ नेपथ्य, २४ विलास, २५ शस्त्रकर्म, २६ नीति, २७ शकुन, २८ गीत, २ए चित्र, ३० संयोग, ३१ हस्तलाघव, ३२ सूत्र, ३३ कुसुम,३४ इंड्रजाल, ३५ स्नेह,३६ पान, ३७ आहार, ३८ विहार, ३ए सौनाग्य, ४० प्रयोग, ४१ गंधवाद, ४२ वस्तु, ४३ रत्न, ४४ पात्र,४५ वैद्य, ४६ देशनाषित, ४७ विजय, ४८ वाणिज्य, ४ए आयुध,५० युद्ध, ५१ नियुद्ध, ५२ वर्त्तन, ५३ हस्ती, ५४ तुरग, ५५ पक्षी, ५६ नारी, ५७ नूमिलेप, ५८ दंतकाष्ठ, ५ए इष्टिका, ६० पाषाण,

६१ हास्य,६२ उत्तर,६३ प्रत्युत्तर,६४ शरीर, ६५ शास्त्र, ६६ ताल,६७ ढोल,६८मृदंग, ६९विणा, ७० वांसली, ७१ नेरी, ७२ पलितविनाश,

१९ ओगणीशमा विज्ञान हेतुना चोराशी नेद बे,ते कहे बे. १ तत्त्वज्ञान, २ चर्मविज्ञान, ३कर्म विज्ञान, ४ लक्ष्मीयोग, ५ शंख,६ दंत,७ गुटिका,८ रसायन,९ वचन,१० कवित्व, ११ यंत्र, १२ मंत्र, १३ तंत्र, १४ मदन,१५नेपथ्य, १६ स्यंतक, १७ इष्टिका, १८ लेख्य, १९ सूत्र, २० चित्र, २१ कर्मरंग, २२ शुचिकर्म, २३ शकुन, २४ ब्रह्मकर, २५ नैर्मल्य, २६ गंधयुक्ति, २७ आराम, २८ शिल्प, २९ काव्य, ३० कांस्य, ३१ काष्ठ, ३२ कुंन, ३३ लोह, ३४ पत्र, ३५ वंश्य, ३६ नख, ३७ दशन, ३८ प्रासाद, ३९धातु, ४० विनूषण, ४१ स्वरोदय, ४२ द्यूत, ४३ अध्यात्म, ४४ अग्नि, ४५ विद्वेषण, ४६ उच्चाटन, ४७ स्तंनन, ४८ मोहन, ४९ वशीकरण, ५० वस्तु, ५१ स्वयंनु, ५२ हस्तिशिक्षा, ५३ अश्वशिक्षा, ५४ पक्षी, ५५ स्त्री,५६ काम, ५७ चक्र,५८ वज्रीकरण, ५९ पशुपालन, ६० कृषी, ६१ वाणिज्य, ६२ लक्षण, ६३ कालमानविधि, ६४ आसनविधि, ६५ शास्त्रबंध, ६६ नियुद्धकरण, ६७ आखेटक, ६८ कुतूहल, ६९ केश,७० पुष्प, ७१ इंद्रजाल, ७२ विनोद, ७३ सौनाग्य, ७४ प्रयोग, ७५ शौच,७६ ज्ञान, ७७ ज्ञेय, ७८ प्रीति, ७९ आयु, ८० चाटु, ८१ व्यापार, ८२ धारणा, ८३ हेय, ८४ उपादेय.

२०वीशमा देशसंख्या ते चारेदिशामां थइने चोराशीनेदें बे, ते कहे बे. तेमां पूर्वदिशामां १ गौड, २ कान्यकुब्ज, ३ कलिंग, ४ गोल, ५ अंग, ६ कुरंग, ७ बंगाल, ८ अराच्य, ९ वरेंड्र, १० वामन, ११ गंगापार, १२ अंतर्वेदी, १३ मागध, १४ मध्यकुरु, १५ माहल, १६ कामरूप, १७ उड्र, १८ पुंड्र, १९ वोडास, २० अग्नि, २१ मालव, २२ पांचाल, २३ जालंधर,२४ शूरसेन, २५ लोहितपात. पश्चिमदिशामां. २६ कावेल, २७ वालंन, २८ सौराष्ट्र, २९ कुंकुम, ३० लाडश्री, ३१ अर्बुद, ३२ मेवाड, ३३ अवंति, ३४ नागणित, ३५ किरात, ३६ शकट, ३७ सौवीर, ३८ कोंकण, उत्तरदिशिमां.३९ गुर्जर,४० सिंधु,४१ केकाण,४२ नेपाल,४३ लाट,४४ नोट, ४५ तुरक,४६ तायक, ४७ बर्बर, ४८ वर्जुर, ४९ कीर, ५० काश्मीर, ५१ हिमालय, ५२ लोहपुर. ५३ श्रीकाष्ठ. दक्षिणदिशिमां. ५४ मलय, ५५ सिंहल, ५६ कोशल, ५७ पामल, ५८ आंध्र, ५९ वंध्य, ६० कर्कट, ६१ द्रविड, ६२ श्रीपर्वत, ६३ वैदर्न, ६४ धाराउराला, ६५ तापीतट, ६६ माहाराष्ट्र, ६७ आन्नीरदेश, ६८ नर्मदातट, ६९ द्वीपदेश.

२१एकवीशमा स्थानना बत्रीश नेदो बे,ते कहे बे. १ स्वर्ग, २ मृत्यु,३ पाताल, ४ तनु, ५ विद्या, ६ वास्तु, ७ विनोद, ८ वाद, ९ गीत, १० वाद्य, ११ नृत्य, १२

रूप, १३ धर्म, १४ अर्थ, १५ काम, १६ मोक्ष, १७ देश, १८ काल, १९ यात्रा, २० समय, २१ पुरुष, २२ स्त्री, २३ गज, २४ तुरंगम, २५ पक्षी, २६ रत्न, २७ पान, २८ आहार, २९ शय्या ३० व्यापार, ३१ वस्तु ३२ विज्ञान लक्षण.

२२ बावीशमा गृहना चोवीश भेदो छे,ते कहे छे. १ प्रासाद,२ हर्म्य, ३ आयतन, ४ गृह, ५ कोश, ६ कोष्ठागार, ७ पानीयगृह, ८ शौचगृह, ९ शाला, १० माल्य, ११ मठ, १२ सत्रागार, १३ श्रृंगारस्थान, १४ धर्मस्थान, १५ विनोदस्थान, १६ मंदिर, १७ हस्तिशाला, १८ वीशमंडप, १९ माहानस, २० भोजनशाला, २१ गुप्तस्थान,२२ आदिस्थान, २३ अर्धस्थान, २४ राजांगण.

२३ त्रेवीशमी मंगल वस्तुना एक शो आठ भेदो छे,ते कहे छे. १ ब्रह्मा,२ विष्णु, ३ माहेश्वर, ४ वीतराग, ५ स्कंद, ६ आदित्य, ७ लोकपाल, ८ अग्नि, ९ अमर, १० सागर, ११ पर्वत, १२ गगन,१३ ग्रहण, १४ गांधर्व, १५ चंद्र, १६ विनायक, १७ ज्योतिक, १८ तीर्थ, १९ द्विज, २० धर्मशास्त्र, २१ वेदशास्त्र, २२ वेद, २३ पद्म, २४ पर्यंक, २५ कौस्तुभ, २६ कांचन, २७ रौप्य, २८ ताम्र, २९ घृत, ३० मधु, ३१ सिद्धांत, ३२ चंदन, ३३ श्वेत, ३४ वस्त्र,३५ वेश्या, ३६ गोरोचन, ३७ मृत्तिका,३८ गोमय, ३९ शस्त्र, ४० अंजन, ४१ रत्न, ४२ मनसिल, ४३ मोदक, ४४ शंख, ४५ प्रियंगु, ४५ वचा, ४७ श्वेतपुष्प, ४८ सर्षव, ४९ दधि, ५० दूर्वा, ५१ अक्षत, ५२ उदंबर, ५३ आम्र, ५४ छत्र, ५५ वाजित्र, ४६ दर्भ, ५७ हस्ती, ५८ बीज, ५९ मुक्ताफल, ६० खंजरीट, ६१ वृषभ, ६२ राजहंस,६३ कन्या,६४ दर्पण, ६५ दीप, ६६ अंकुश, ६७ तुरंगम, ६८ गीत, ६९ वेणु, ७० वीणाध्वनि, ७१ भूमि, ७२ सिंह, ७३ मय, ७४स्वस्तिक, ७५ तोरण, ७६ कुंभ, ७७ चामर, ७८ वत्स, ७९ गो, ८० आर्द्र, ८१ मांस, ८२ स्त्री, ८३ पुरुषयुग्म, ८४ वाहन, ८५ प्रधान, ८६ विद्या, ८७ विनय, ८८ तुष्टि, ८९ पुष्टि, ९० प्रसाद, ९१ उल्लोच, ९२ मदिरा, ९३ सत्य, ९४ पूर्णपात्र, ९५ आर्द्रशाक, ९६ पिप्फलपत्र, ९७ श्रीवृक्ष, ९८ तालवृक्ष, ९९ पूजा, १०० निधि, १०१ गौरी, १०२ गंगा, १०३ सरस्वती, १०४ नर्मदा, १०५ यमुना, १०६ सिद्धि, १०७ प्रीति, १०८ कीर्त्ति. ए सर्व मांगलिक वस्तु जाणवी.

२४ चोवीशमा दानना त्रण भेद छे. ते कहे छे. १ अभय, २ द्रव्य, ३ परोपकार.

२५ पच्चीशमा यशना पांच भेद छे, ते कहे छे. १ जन्मकृत प्रताप यश, २ कीर्त्तिः ३ पराक्रमयश, ४ रूपयश, ५ सदाचारमां प्रवर्त्तन करवुं ते यश.

२६ छव्वीशमा कीर्त्तिना सात प्रकार छे, ते कहे छे. १ दानकीर्त्ति, २ पुण्यकीर्त्ति,

३ विद्वज्जनकीर्त्ति,४ नवकृतकाव्यकीर्त्ति, ५ आवर्त्तनकीर्त्ति,६ शौर्यकीर्त्ति, ७ यशःकीर्त्ति.

२७ सत्यावीशमा रसना नवभेद छे,ते कहे छे. १ शृंगाररस, २ हास्यरस, ३ करुणारस, ४रौद्ररस, ५ वीररस, ६ भयानकरस, ७ बीभत्सरस, ८ अद्भुतरस,९ शांतरस.

२८ अठ्यावीशमा भावना उंगणपच्चास भेदो छे, ते कहे छे. १ रति, २ हास्य, ३ शोक, ४ क्रोध, ५ उत्साह, ६ भय, ७ जुगुप्सा, ८ विस्मय, ९ स्तंभन, १० स्वेद, ११ स्वर,१२ भेद, १३ रोमांच, १४ वेपथु, १५ वैवर्ण्य, १६ अश्रु, १७ प्रलाप, १८ निर्वेद, १९ ग्लानि, २०शंका, २१ आश्रम, २२ आलस्य, २३ देशचिंता, २४ मोह, २५ धृति, २६ स्मृति, २७ क्रीडा २८,चपलता, २९ जडता, ३० हर्ष, ३१ अवश, ३२ विषाद, ३३ असुख, ३४ वर्ग, ३५ अपस्मार, ३६ निद्रा, ३७ स्वप्न, ३८ विबोध, ३९ अमर्ष, ४० उग्रता, ४१ उन्माद, ४२ मति, ४३ व्याधि, ४४ विरक्त, ४५ वितर्क, ४६ त्रास, ४७ स्मरण, ४८ माया, ४९ लोभ.

२९उंगणत्रीशमा अभिनयना चार भेद कहे छे. १आंगिक,२वाचक,३सात्त्विक,४अहार्य.

३० त्रीशमा वृत्तिना चार भेद कहे छे. १ भारती,२ सात्वती,३ कौशिकी,४ आरभट्टी.

३१ एकत्रीशमा माहान्पुरुषना चार भेदो छे, ते कहे छे. १ धीरोद्धत, २ धीरोदात्त, ३ धीरललित, ४ धीरशांत.

३२ बत्रीशमा नायकना चार भेदो छे, ते कहे छे. १ दक्षिण, २ अनुकूल,३ शठ, ४ धृष्ट.

३३ तेत्रीशमा नायकना गुण बत्रीश प्रकारना छे, ते कहे छे. १ कुलीन, २ शीलवान्, ३ नयस्थ, ४ शौचवान्, ५ प्रियंवद, ६प्रीतिमान्, ७ सुभग, ८ विनयवान्,९ कीर्त्तिमान्, १० त्यागी, ११ विवेकी,१२ शृंगारवान्, १३ अभिमानी, १४ श्लाघ्यवान्, १५ समुज्ज्वलवेष, १६ सकलकला कुशल,१७ प्रिय,१८ सत्यवान्, १९ अवदान्य, २० स्वजन,२१ सुगंधप्रिय, २२ सुवृत्त, २३ मंत्रवान्, २४ क्लेशसह, २५ प्रस्तावप्रकाशक, २६ पंडित, २७उत्तम सत्त्व, २८ धार्मिक, २९ महोत्साही, ३० गुणग्राही,३१ क्षमी, ३२ प्राभाविक.

३४ चोत्रीशमा माहानायिकाना त्रण भेद कहे छे. १ स्वकीया, २ परकीया, ३ पणांगना. वाग्भट्टालंकारमां नायिकाना चार भेद कह्या छे.१अनूढा,२स्वकीया,३परकीया,४ पणांगना.

३५पांत्रीशमा नायिकाना आठ भेद कहे छे. १ वासकसज्जा, २ विरहोत्कंठिता,३ खंडिता,४ विप्रलब्धा,५ प्रोषितभर्तृका, ६ कलहांतरिता,७ अभिसारिका,८स्वाधीनभर्तृका.

३६छत्रीशमा वली पण नायिकाना गुणो एकत्रीश प्रकारना छे,ते कहे छे. १ कुलजा, २ सुभगा, ३ सुरूपा,४ सुसत्त्वा,५ सुवेषा,६ सुविनीता,७ सुरतप्रवीणा,८ सुखप्रिया, ९ विभोगिनी,१० विचक्षणा,११ प्रियभाषिणी,१२ प्रसन्नमुखी, १३ पीनस्तनी,१४ रसिका,

१५ लज्जान्विता, १६ लक्षणयुता, १७ पतितज्ञा, १८ गीतज्ञा, १९ विद्याज्ञा, २० नृत्यज्ञा, २१ सुकुमारशरीरा, २२ सुगंधप्रिया, २३ चारुनेत्रा, २४ नातिमानिनी, २५ मधुरवाच्या, २६ स्नेहवती, २७ विमर्षवती, २८ सत्यवती, २९ शीलवती, ३० प्रज्ञावती, ३१ गुणान्विता.

३७ साडत्रीशमा सौख्यकरणना चार भेद छे, ते कहे छे. १ अभ्यासकरण, २ अभिमान, ३ संप्रियकरण, ४ विषयकरण.

३८ आडत्रीशमा सौख्यना त्रण प्रकार छे, ते कहे छे. १ आंगिक, २ वाचक, ३ मानसिक.

३९ उगणचालीशमा शौचना दश भेदो छे, ते कहे छे. १ मुखशौच, २ स्नान, ३ मृत्तिका, ४ स्कंध, ५ कक्षा, ६ श्मश्रु, ७ जल, ८ नख, ९ अनल, १० सत्यशौच.

४० चालीशमा कामना बे भेद छे, ते कहे छे. १ स्वाभाविक, २ कृत्रिम.

४१ एकतालीशमा कामावस्थाना दश भेदो छे, ते कहे छे. १ अभिलाषता, २ स्मृति, ३ गुणोत्कीर्त्तन, ४ उद्वेग, ५ प्रलाप, ६ उन्माद, ७ व्याधि, ८ जडता, ९ मरण, १० चिंता.

वली कामना बाण, कोइ ठेकाणें पांच भेदें कहेला छे, ते कहे छे. १ संगम, २ विगम, ३ हर्ष, ४ मोह, ५ मरणाधिक.

वली पण कामना पांच बाण कहेला छे, ते कहे छे. १ संमोहन, २ उत्पादन, ३ तापन, ४ शोषण, ५ मरण.

४२ बहेंतालीशमा मूर्खना आठ प्रकार छे, ते कहे छे. १ निर्लज्ज, २ शठ, ३ क्लीब, ४ निर्घृण, ६ व्यसनी, ६ अतिभोगी, ७ गर्वित, ८ निष्ठुर.

४३ त्रेंतालीशमा नागरिक जननां चोवीश करण छे, ते कहे छे. १ विषयसुखनो ओरडो जुदो राखे. २ कायचिंतानुं स्थानक राखे, ३ पाणीनुं स्थानक, ४ रसोइनुं स्थानक, ५ नेपथ्यनुं गृह राखे, ६ नेपथ्यनां उपकरण घणां राखे, ७ घरनां उपकरण घणां राखे, ८ शस्त्र घणां राखे, ९ आसन घणा प्रकारनां राखे, १० रम्यपणुं, ११ माल्यादि भोगनुं राखवुं, १२ बेसवा उठवानुं गुप्तस्थान राखे, १३ प्रभातमां विराम लेवा माटें स्थान राखे, १४ मध्यान्हने विषे भोजन करवा स्थान राखे, १५ ठानुं भंडारनुं स्थानक राखे, १६ निरंतर विद्यानो अभ्यास करे, १७ कुलोचित मार्गवर्त्तन करे, १८ प्रदोषने विषे गीतविनोद करे, १९ सुरतोपचार करे, २० क्यारेंक उद्यानमां गमन करे, २१ कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षण करे, २२ निरंतर गृहकार्यमां रहे, २३ भोगमां व्याप्त रहे, २४ विभक्तस्थान.

४४ चुम्मालीशमा रूपना त्रण भेद छे, ते कहे छे. १ संपूर्ण लक्षणावयव, २ असंपूर्ण लक्षणावयव, ३ निर्लक्षणावयव.

४५ पीस्तालीशमा स्वभावना त्रण भेद १ मुग्धस्वभाव, २ मुग्धचतुरस्वभाव, ३ चतुरस्वभाव.

४६ बहेंतालीशमा पार्थिवना दश प्रकारें प्रमोद छे,ते एक श्लोकें करी कहे छे.ज्ञाने दाने बले राज्ये, विनोदे वैरिसंग्रहे ॥ शौर्ये धर्मे च सौख्ये च,प्रमोदा दशधा स्मृता ॥ १ ॥

४७ सुडतालीशमो चार प्रकारनो बोध कहे छेः– १ बालसंस्कारप्रबोध,२ प्रज्ञाप्रबोध, ३ शास्त्रप्रबोध, ४ तत्त्वनिश्चयप्रबोध.

४८ अडतालीशमी चार प्रकारनी बुद्धि कहे छेः– १ उत्पातिकी, २ विनयकी, ३ कार्मिकी, ४ पारिणामिकी.

४९ उंगणपच्चाशमी बुद्धिना आठ प्रकारें गुण छे, ते कहे छे. १ शुश्रूषा, २ श्रवण, ३ ग्रहण, ४ धारणा, ५ ऊह, ६ आपोह, ७ अर्थ, ८ विज्ञान.

५० पच्चाशमा गांधर्वना चार प्रकार कहे छेः–१ स्वरगत,२ तालगत,३ पदगत,४ अवधानगत.

५१ एकावन्नमा त्रण प्रकारना महागीत कहे छेः–१ माहागीति,२ उपगीत,३ अनुगीति.

५२ बावन्नमा गीतना बत्रीश गुण छे,ते कहे छेः– १ सुस्वर,२ सुताल, ३ सुपद, ४ शुद्ध,५ ललित, ६ सुसंबंध, ७ सुप्रमेय, ८ सुराग, ९ सुरस, १० सुसंगित, ११ सुहर्ष, १२ सुग्रह,१३ श्लिष्य १४ क्रमष्य,१५ सुवर्ण,१६ सुगम,१७ सुरक्त,१८ संपूर्ण,१९ सालंकार, २० सुभाषाद्य, २१ सुसंधिष्ट, २२ सव्युत्पन्न, २३ मधुर, २४ स्फुट, २५ अग्राम्य, २६ प्रसन्न,२७ कुंचितकंपित,२८ समयोचित २९ विद्या ३० संगत,३१ प्रथमस्थित,३२ स्वस्थ, ३३ एक ३४ अद्भुत, ३५ विलंबितमध्य, ३६ उक्त प्रमाण.

५३ हवे त्रेपन्नमा नृत्यना बे प्रकार छे,ते कहे छे. १ लास्य, २ तांमव,

५४ चोपन्नमा काव्यना शोल प्रकार कहे छे. १ समय, २ प्रतिभा, ३ अभ्यासविद्या, ४ जाति, ५ गीति, ६ रीति, ७ वृत्ति, ८ वाच्य, ९ वाचक १०, छंद, ११ अलंकार, १२ गुण, १३ दोष, १४ रस, १५ भाव, १६ अभिनय.

५५ पच्चावन्नमा वक्तृत्वना दश प्रकार कहे छे. १ परिभावित, २ सत्य,३ मधुर,४ सार्थक, ५ परिस्फुट, ६ परिमित, ७ मनोहर, ८ चित्र, ९ प्रसन्न, १० भावानुगत.

५६ छपन्नमा भाषाना छ प्रकरो छे,ते कहे छे. १ संस्कृत, २ प्राकृत, ३ अपभ्रंशी, ४ पैशाची, ५ मागधी, ६ शौरसेनी.

५७ सत्तावन्नमा पांमित्यना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ वक्तृत्व, २ वादित्व, ३ कवित्व, ४ आयामत्व, ५ गमत्व.

५८ अठावन्नमा वादना चोविश भेद कहे छे. १ उत्पत्ति, २ समा, ३ अयति, ४ सभा, ५ वाद, ६ पक्ष, ७ प्रतिपक्ष, ८ प्रमाण, ९ प्रभेद, १० प्रसन्न, ११ प्रत्युत्तर, १२

दूषण, १३ नूषण, १४ उपन्यास, १५ अनुमोद, १६ आदेश, १७ निर्णय, १८ ग्रंथनिश्चय, १९ निश्चय, २० स्थान, २१ अर्थांतर, २२ समता, २३ जय, २४ पराजय.

५९ उंगणशाठमा दर्शनना ७ नेदो ले,ते कहे ले. १ माहेश्वरदर्शन, २ ब्राह्मदर्शन, ३ सांख्यदर्शन, ४ बौधदर्शन, ५ जैनदर्शन, ६ चार्वाकदर्शन.

६० साठमा माहेश्वर दर्शनना पांच नेद ले, ते कहे ले. १ विशेष, २ शिवधर्म, ३ पाशुपत्त, ४ कालमुख, माहाव्रतिक पर्यंत,

हवे तेनाज बीजी रीतें पांच नेदें कहे ले. अयोविशेषशिवधर्मे, १ शैव, २ पाशुपत, ३ फलमुख, ४ माहाव्रत, ५ ब्रह्मचर्य.

६१ एकसठमा ब्राह्मणना लक्षण दश प्रकारें कहे ले. १ प्रमाण, २ संस्कार, ३ कर्म, ४ वर्त्तन, ५ ब्रह्मचारी, ६ गृहस्थ, ७ वान ८ प्रस्थ, ९ यति, १० ब्रह्मपर्यंत.

६२ बासठमा सांख्य शास्त्रना चार नेद कहे ले. १ तत्त्व, २ प्रमाण, ३ प्रकार, ४ सर्वात्मा.

६३ त्रेसठमा बौधमतना दश नेद ले,ते कहे ले. १ सौगत, २ सर्वद, ३ परिगत, ४ विहार, ५ प्रमाण, ६ प्रनेद, ७ प्रमोद, ८ शौर्य, ९ त्रिकयोगाचार, १० आध्यात्मिकमोक्षपर्यंत.

६४ चोसठमा जैनमतना सात प्रकार ले,ते कहे ले. १ सर्वज्ञ, २ धर्म, ३ तत्त्वार्थ, ४ प्रमाण, ५ प्रतिज्ञा, ६ नेद, ७ सिद्धपर्यंत.

६५ पांसठमा चार्वाकना चार नेद ले,ते कहे ले. १ तत्त्वार्थ, २ प्रमाण, ३ प्रनेद, ४ प्रमोद.

६६ लासठमा विचारना चोवीश नेद ले,ते कहे ले. १ विद्या, २ विज्ञान, ३ विनोद, ४ कला, ५ कवित्व, ६ वक्तृत्व, ७ गीत, ८ नृत्य, ९ वाद्य, १० देश, ११ काल, १२ पात्र, १३ प्रमेय, १४ पर्याय, १५ जय, १६ रस, १७ वाद, १८ अनिनय, १९ धर्म, २० अर्थ, २१ काम, २२ मोक्ष, २३ प्रमाण, २४ लोकवादपर्यंत.

६७ सदसठमा गुरुत्वना दश नेद ले, ते कहे ले १ वंश, २ ज्ञान, ३ पद, ४ शौर्य, ५ सत्त्व, ६ दान, ७ बल, ८ जय, ९ संतान, १० स्वगुण.

६८ अडसठमा चरितना चार नेद कहे ले. १ मानवचरित, २ दानवचरित, ३ वीरविलासचरित, ४ गुणप्रख्यापन चरित.

६९ उंगण्योतेरमा राज्यपालनना पांच नेदो ले, ते कहे ले. १ धर्मपालन, २ राज्यपालन, ३ नूमिपालन, ४ प्रजापालन, ५ नीतिपालन.

७० सित्तेरमा उत्तमपणाना सात नेदो ले, ते कहे ले. १ वय, २ कुल, ३ शील, ४ रूप, ५ पद, ६ ज्ञान, ७ प्रयोग.

७१ एकोतेरमा शक्तिना नव नेद ले, ते कहे ले. १ ज्ञानशक्ति, २ धर्मशक्ति, ३ दान

शक्ति,४मंत्रशक्ति, ५ कामशक्ति, ६ अर्थशक्ति, ७ युद्धशक्ति, ७ व्यायामशक्ति,९ देशशक्ति.

७२ बहोंतेरमा अहंकारना आठ प्रकार छे, ते कहे छे. १ ज्ञान अहंकार, २ दान अहंकार, ३ बल अहंकार,४ धर्म अहंकार, ५ काम अहंकार, ६ द्रव्य अहंकार,७ शत्रु मारण अहंकार, ८ समारंभ अहंकार.

७३ त्रहोंतेरमा वात्सल्यना चार भेद छे, ते कहे छे. १ देववात्सल्य, २ सद्गुरुवात्सल्य, ३ मित्रवात्सल्य, ४ वल्लभ पुरुष वा पदार्थनुं स्नेहनेलीधे वात्सल्य.

७४ चम्मोतेरमा प्राप्तिना आठ भेदो छे, ते कहे छे. १ ज्ञानप्राप्ति, २ धर्मप्राप्ति, ३ बलप्राप्ति, ४ कामप्राप्ति,५ विज्ञानप्राप्ति, ६ पात्रसंग्रहप्राप्ति, ७ सर्वार्थ,८ राज्यप्राप्ति.

७५ पंच्चोतेरमा शौर्यना चोवीश भेद छे, ते कहे छे. १ स्नानशौर्य, २ मनःशौर्य, ३ शब्दशौर्य, ४ प्रताप, ५ उदय, ६ प्रतिज्ञा, ७ तेज, ८ ज्ञान, ९ संग्राम, १० जय, ११ साहस, १२ प्रतिपन्न, १३ शरणागत, १४ प्रमोद, १५ प्रबोध, १६ आज्ञा,१७ उद्यम, १८ अर्थ, १९ आचार, २० बल, २१ कीर्त्ति, २२ लक्षण, २३ व्रत, २४ आपदाशौर्य.

७६ छोंतेरमा बलना दश प्रकार कहे छे. १ वाग्बल,२ कायबल,३ बुद्धिबल,४ स्थान बल, ५ सुहृद्बल, ६ शकुनबल, ७ देवताबल, ८ धनबल, ९ मंत्रबल, १० सैन्यबल.

७७ सत्त्योतेरमा आज्ञाना दश भेद छे,ते कहे छे. १ ज्ञान, २ आगम, ३ प्रताप, ४ ऐश्वर्य, ५ वाक, ६ परिश्रम, ७ निद्रा, ८ रति.

७८अठ्योतेरमा संग्रहना नव भेद छे,ते कहे छे. १ ज्ञानसंग्रह,२पात्रसंग्रह,३मित्रसंग्रह,४ पत्नियोगसंग्रह,५ बलसंग्रह,६ जयसंग्रह, ७ धर्मसंग्रह, ८ श्रुतसंग्रह, ९ गुणसंग्रह.

७९ उंगण्याएंशीमा परिछेदना पांचभेद छे, ते कहे छे. १ अलक्षित, २ लक्षित, ३ मानसिक, ४ वाचक, ५ कार्मण.

८० एंशीमा प्रभुत्वना पांच भेद छे, ते कहे छे. १ ज्ञानप्रभुत्व, २ अक्षयप्रभुत्व, ३ शौर्यप्रभुत्व, ४ स्थापनाप्रभुत्व, ५ प्रदानप्रभुत्व.

८१ एक्याशीमा लब्धिना आठ भेद छे. ते कहे छे. १ अणिमा, २ मणिमा, ३ गरिमा, ४ लघिमा, ५ ईशित्व, ६ वशित्व, ७ प्राप्ति, ८ प्राकाम्य.

८२ ब्यासीमा दिव्यना दश भेद छे,ते कहे छे. १ जल, २ अग्नि, ३ घट, ४ कोश, ५ विष, ६ माष, ७ तांडुल, ८ फल, ९ तुल, १० सुतस्पर्शी.

८३त्र्याशीमा अपराधना दश भेद छे,ते कहे छे. १ आज्ञाभंग,२नृपवध,३स्त्रीवध,४वर्णसंकर,५ परस्त्रीगमन,६ चौर्य, ७ पतिविनानो गर्भ, ८ दंमपारुष्य, ९ वाक्य, १० गर्भपातन.

८४ चोराशीमा उत्तमकारिगरना छ भेद छे,ते कहे छे. १ आरामिक, २ मणिकार, ३ स्वर्णकार, ४ कांस्यघाटक, ५ दारुकृत्, ६ कुंभकार.

८५ पंचाशीमा मध्यम कारिगर पुरुषोना छ भेद छे,ते कहे छे. १ लूहार, २ सलाट, ३ कडिया, ४ यंत्रवाहकशोडिक, ५ तंतुवायी, ६ हजाम.

८६ छाशी अधम कारिगर पुरुषोना छ भेद छे,ते कहे छे. १ धोबी, चमार, ३ नट, ४ चरट, ५ खारवा, ६ कैवर्त्तक ते भिल्ल.

८७ सत्त्याशीमा उत्तम प्रकृतिवाळा कारिगरना छ भेदो छे,ते कहे छे. १ हजाम, २ सोनी, ३ खत्री, ४ कांस्यघडनार, ५ सुतार, ६ कुंभार.

८८ अठ्याशीमा मध्यम प्रकृतिवाळा कारिगरना छ भेद छे,ते कहे छे. १ आरामिक एटले माळी, २ मणियार, ३ दरजी, ४ कुक, ५ चितारो, ६ पालखी उपाडनार भोई.

८९ नेवाशीमा अधमप्रकृतिवाळा कारिगरना छ भेद छे, ते कहे छे. १ चमार, २ मधपाडनार, ३ नट, ४ भिल्ल, ५ लुहार, ६ पाराधि.

९० नेवुंमा नारुना नव भेद छे, ते कहे छे. १ घांची, २ मोची, ३ घांछा, ४ धोबी, ५ लुहार, ६ दरजी, ७ माछी, ८ भिल्ल, ९ गोवाळ. ए नव नारुकना नाम जाणवा.

९१ एकाणुमा कारुना नव भेद छे, ते कहे छे. १ कांदविक, २ कौटुंबिक, ३ कुंभार, ४ सोनी, ५ माळी, ६ तंबोळी, ७ हजाम, ८ काछिक, ९ गांधर्व घायक.

९२ बाणुमा शब्दना पांच भेदो छे, ते कहे छे. १ वीणानो शब्द, २ सतारनो शब्द, ३ वंशशब्द, ४ मादलनोशब्द, ५ करतालनो शब्द.

९३ त्र्याणुमा धान्यना त्रण भेद छे, ते कहे छे. १ शीर्शक, २ शंबा, ३ घंटक.

९४चोराणुमा शाकना चार भेद छे,ते कहे छे. १ कंद शाखा, २ पत्र, ३ पुष्प,४ फळ.

९५ पंचाणुमा मांसना त्रण भेद छे,ते कहे छे. १जळचरमांस,२थळचरमांस,३खेचरमांस.

९६ छन्नुमा रसना छ भेद छे,ते कहे छे. १आम्ल,२ मधुर,३ तीक्ष्ण,४ कषाय,५कटु.

गाथा प्रास्ताविक छे. आहारनिमित्तेएणं,वेसाए घर मागउ ॥ धम्मलाभंतु जा जाणई, दव्वलाभं विमग्गियउ ॥ १ ॥ माणगएणं मुणिणा, पडिया तिणउ तहिं ॥ हिरणाणं तु कोडीउं, वेसाए अग्गउ तया ॥ इति माहानिशीथे ॥ साकादिवेसणासत्ती, नंदीसेणे मुणीसरे ॥ जीविए सागिहे आसी, दसणं पडिबोहिउं. इति शतरत्नसंग्रहः समाप्तः ॥

हवे वासुदेव, तीर्थंकर अने चक्रवर्त्ती तथा बळदेव, ए चार पदवीवाळा जीवो देवता तथा नारकीथी आव्या उपजे पण मनुष्यमांथी आवे नही.

१ चक्रवर्त्ती तथा बळदेव, ए बेहु चारे निकायना देवोमांथी आवी उपजे.

२ तीर्थंकर तथा वासुदेव, ए बेहु वैमानिक देवोमांथी आवी उपजे.

३ चक्रवर्तीना जे पांच मनुष्य रत्न छे,ते सातमी नरक,तेउकाय,वायुकाय,तिर्यंच अने मनुष्य तथा अनुत्तर विमान,एटला स्थानकथी आव्या न होय,शेषस्थानकथी आव्या होय.

४ तथा हाथी अने अश्व, ए बे तिर्यंचपंचेंद्रिय रत्न छे, अने सात एकेंद्रिय रत्न छे एमनी उत्पत्ति यथासंभवपणे जाणवी.

कया जीव नरकें जाय? संज्ञिपंचेंद्रिय पर्याप्ता संख्याता वर्षायुवाला एवा मनुष्य अने तिर्यंच मरी नरकें जाय तेना आचरण कहे छे.

१ मिथ्यात्वी जीव.
२ महा आरंभ करनार.
३ घणा परिग्रहमां आसक्त.
४ घणो लोभी होय.
५ शुभक्रिया रहित होय.
६ पापरुचि जीव होय.
७ रौद्रपरिणामी होय.
८ कृतघ्नदुष्ट परिणाम वालो.

कयो जीव कयी नरकें जाय?

१ असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच पहेली नरक सुधी जाय.
२ गर्भज भुजपरिसर्प,गोह,नोलीयादि बीजी सुधीजाय.
३ गर्भजपंखी त्रीजीनरकेंजाय.
४ सिंह प्रमुख चौपद जीव चोथी नरक सुधी जाय.
५ गर्भजउरःपरि सर्प पांचमी नरक सुधी जाय.
६ स्त्रीरत्न छठी नरकें जाय.
७ गर्भजमनुष्य,गर्भज मत्स्य उत्कृष्ट सातमी नरकें जाय.

बाहुल्य आश्रयी विशेष कहे छे.

१ व्याल सर्प प्रमुख.
२ दाढाला सिंह वाघ प्रमुख.
३ गृध्र पक्षी प्रमुख.
४ जलचर मत्स्य प्रमुख.

एटला जातिना जीव प्रायः घणुं करी नरकथी आवे अने पाछा पण मरीने नरकेंज जाय, परंतु तेनो नियम नही. केम के कोइ कोइ जीव नरकथी आव्या पछी जातिस्मरणादिसामग्रीयें समकित पामीने शुभगतिमां पण जाय छे.

संख्याता आयु वाला मनुष्य मरीने चारे गतिमां जाय, परंतु वज्रऋषभनाराच संघयणवाला कोइ कोइ मनुष्य पांचमी सिद्धगतिमां पण जाय छे,ते कहे छे.

१ मनुष्यजाति सामान्यथी जघन्य एक बे अने उत्कृष्टां १०८ एक समयमां सीजे. अने विशेषथी वेद आश्रयी आ प्रमाणें सीजे.
२ स्त्रीलिंगें वीश सीजे.
३ नपुंसकलिंगें दश सीजे.
४ पुरुषलिंगें १०८ सीजे.

हवे ग्रहस्थादिक लिंगआश्रयी एक समयमां केटला सीजे ते? कहे छे.

१ गृहस्थलिंगें एक समयें. ४
२ तापसादिलिंगें एक समयें. १०
३ साधुलिंगें एकसमयें. १०८

हवे जघन्य मध्यम अने उत्कृष्ट अवगाहना आश्रयी मोक्ष जवानुं कहे छे.

१ लघु बे हाथनी अवगाहनायें. ४
२ मध्यम अवगाहनायें. १०८
३ उत्कृष्ट पांचशें धनुष्यनी अवगाहनायें २
१ ऊर्ध्वलोक मेरुचूलिका नंदनवन प्रमु० ४
२ अधोलोक ते अधोग्रामादिकथी. १२

३ तिर्यक् लोकथी एक समयें.	१०७	१० अप्कायथी आव्या.	४
१ समुद्रजलमांथी एक समयें.	२	११ वनस्पतिथी आव्या.	६
२ शेष द्रह नदी प्रमुखमांथी.	३	१२ तिर्यंचपंचेंद्रिय पुरुषथी आव्या.	१०
हवे कइ गतिमांथी आवेला मनुष्य एक समयें केटला मोक्षें जाय ? ते कहे छे.		१३ तिर्यंच स्त्रीथी आव्या.	१०
		१४ मनुष्य पुरुषथी आव्या.	१०
१ नरकगतिथी आव्या.	१०	१५ मनुष्य स्त्रीथी आव्या.	१०
२ तिर्यंच गतिथी आव्या.	१०	१६ भुवनपतिनी प्रत्येक निकायथी.	१५
३ मनुष्यगतिथी आव्या.	२०	१७ भुवनपतिनी देवीथी आव्या.	०
४ देवगतिथी आव्या.	१०७	१७ व्यंतर देवोथी आव्या.	१०
५ रत्नप्रनाथी आव्या.	१०	१ए व्यंतर देवीथी आव्या.	५
६ शर्करप्रनाथी आव्या.	१०	२० ज्योतिषी देवोथी आव्या.	१०
७ वालुकाप्रनाथी आव्या.	१०	२१ ज्योतिषी देवीथी आव्या.	२०
७ पंकप्रनाथी आव्या.	४	२२ वैमानिक देवोथी आव्या.	१०७
ए पृथ्वीकायथी आव्या.	४	२३ वैमानिक देवीथी आव्या.	२०

चक्रवर्त्तीना चौद रत्ननां नाम तथा लंबाइ आदिक प्रमाण तथा तेनाथी थतां काम.

एकेंद्रिय.	प्रमाण.	जे कार्य करे ते कहे छे.	पंचेंद्रिय.	शुं कार्य करे.	वासुदेव.	देहमान.
चक्ररत्न.	वामप्रमाण.	वैरीनुंमस्तक छेदे.	पुरोहित.	शांतिकर्मकरे.	चक्ररत्न.	साते जे
छत्ररत्न.	वामप्रमाण.	म्लेछना मेघनो निरोध.	अश्वरत्न.	महापराक्रमी	धनुष्यर०	कालें उ
दंमरत्न.	वामप्रमाण.	वांकीनूमिने समी करे.	गजरत्न.	महापराक्रमी	खड्गरत्न.	त्पन्न थ
चर्मरत्न.	बे हाथप्रमा०	शाली प्रमुखने उत्पन्न.	सेनापति	चारखंमजिते	कौस्तुभ.	या होय,
खड्गरत्न.	बत्रीशअंगुल.	संग्राममांशक्तिवंतहोय	गृहपति०	घरयोग्यकाम	गदारत्न.	ते काल
कांगिणी.	चारअं.लांबुं.	वैताढ्यनीजींतेमांमला	वार्त्तिक.	नदीना पुल.	वनमाल	ना पुरुष
मणिरत्न.	चारअं.लांबुं.	बारयोजन उद्योत करे.	स्त्रीरत्न.	महारूपवंत.	शंखरत्न.	प्रमाण.

ए एकेकुं रत्न एक हजार यक्षदेवोयें अधिष्ठित होय,अने बे हजार देवो चक्रवर्त्तीनी बे बाहुयें अधिष्ठित होय सर्व मली शोल हजार देवो चक्रवर्त्तीनी सेवा करे. एमां चक्ररत्न, खड्गरत्न, छत्ररत्न अने दंमरत्न. ए चार आयुधशालामां उपजे. तथा मणिरत्न, सुवर्णकांगिणीरत्न अने चर्मरत्न, ए त्रण नंमारमां उपजे. अने हस्ती तथा अश्व, ए बे वैताढ्य पर्वतमां उपजे. जंबूद्वीपमां जघन्यथी चार चक्रवर्त्ती होय, तेवारें छपन्न रत्न

होय अने उत्कृष्टथी अठावीश विजयना तथा एक नरतनो अने एक ऐरवतनो मली त्रीश चक्रवर्त्ती होय, तेवारें ४२० रत्न होय.

हवे सिद्धशिलानुं स्वरूप कहे ले.

१ सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन ऊंची.
२ कोइक आचार्य कहे ले, के सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन लोकनो ठेहडो.
३ पीस्तालीश लाख योजन लांबी पहोलीले.
४ अढीद्दीपमां पिस्तालीश लाख योजन प्रमाण मनुष्यनी वस्ति ले अने जे मोक्ष जाय ले, ते पण मनुष्यज जाय ले, ते सर्वे समश्रेणीयें जाय ले, माटें जे स्थलथी जाय तेज स्थलें जइ तिहां सिद्धशिलामां रहे.
५ वच्चमां आठ योजन जाडी ले.
६ ठेहडे माखीनी पांख सरखी पातली ले.
७ वर्णे अर्जुन सोना सरखी ले.
८ स्फटिक रत्ननी पेरें निर्मल उज्ज्वल ले.
९ उत्तान उत्राकारें ले. अथवा घृतथी नरेली जेवी कचोली होय, तेवे आकारें ले.
१० सिद्धशिलानी ऊपर एक योजन ठेहडे लोकनो अंत ले. तिहां एक कोशनो उठो नाग ३३३ धनुष्यनी ऊपर बत्रीश अंगुलमां सर्वे सिद्धना अनंताजीव रह्या ले.

हवे पूर्वनुं प्रमाण कहे ले.

चोराशी लाख ने चोराशी लाखें गुणतां ७०५६०००००००००० एटलो आंक आवे तेटला वर्षनी एक पूर्वमां संख्या जाणवी.

निगोदनुं स्वरूप कहे ले.

१ जे गोलाकारें निगोदनो समुदाय, तेने गोलो कहीयें. तेवा असंख्याता गोला चौद राजलोकमां ले.
२ एकेक गोलामां असंख्याती निगोद ले.
३ एकेका निगोदमां अनंता जीव जाणवा.

हवे वनस्पतिने विषे अनंतकायनो संनव कहे ले.

१ सर्व जातिनी वनस्पतिनो प्रथम ऊगतो अंकूरो अनंतकाय होय.
२ पली ते अंकूरो वधतो वधतो प्रत्येक रूपें अथवा साधारण रूपें थाय.

हवे एकेंद्रियपणुं कोण जीव पामे? ते कहे ले.

१ जेनें मैथुननी इच्छा घणी होय.
२ जेमां अज्ञानपणुं घणुं होय.
३ जे घणो बीकण होय.
४ अशाता आवे थके घणो कायर होय.

अथ त्रेवीश पदवीनां नाम.

१ चक्ररत्न.	५ खड्गरत्न.	९ गाथापतिरत्न.	१३ गजरत्न.
२ उत्ररत्न.	६ मणिरत्न.	१० वार्द्धिकरत्न.	१४ स्त्रीरत्न.
३ दंमरत्न.	७ कांगणीरत्न.	११ पुरोहितरत्न.	१५ तीर्थंकरपदवी.
४ चर्मरत्न.	८ सेनापतिरत्न.	१२ अश्वरत्न.	१६ चक्रवर्त्ती पदवी.

१७ वासुदेव पदवी. १९ केवली पदवी. २१ श्रावक पदवी. २३ मंम्मलिक पदवी.
१८ बलदेव पदवी. २० साधु पदवी. २२ समकित पदवी.

हवे कयीगतिथी निकल्या जीवो, ए त्रेवीश मांहेली कयी पदवी पामे? ते कहे छे.

१ पहेली नरकना निकल्या जीव, एकेंद्री रत्ननी सात पदवी न पामे बाकी शोल पामे.
२ बीजा नरकना निकल्या जीव, एक चक्रवर्त्ति पदवी वर्जिने बाकी पन्नर पदवी पामे.
३ त्रीजा नरकना निकल्या जीव, वासुदेव बलदेव ए बे टाली बाकी तेर पदवी पामे.
४ चोथा नरकना निकल्या जीव, एक तीर्थंकर वर्जी बाकी बार पदवी पामे.
५ पांचमा नरकना निकल्या जीव, केवली वर्जी बाकी अगीयार पदवी पामे.
६ छठा नरकना निकल्या जीव एक साधु टाली बाकी दश पदवी पामे.
७ सातमा नरकना निकल्या जीव, हस्तिरत्न, अश्वरत्न. समकेत ए त्रण पदवी पामे.
८ नवनपति, वाणव्यंतर अने ज्योतिषी ए त्रण निकायमांथी निकलेला जीव, एक वासुदेव बीजो तीर्थंकर ए बे पदवी न पामे शेष एकवीश पदवी पामे.
९ पृथिवी, अप्प, वनस्पति, पंचेंद्रियतिर्यंच अने मनुष्य ए पांचमांथी निकल्या जीवो, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव अने तीर्थंकर ए चार वर्जी शेष उगणीश पदवी पामे.
१० बेंद्री, तेंद्री अने चौरिंद्री ए त्रण विकलेंद्री मांहेथी निकल्या जीवो चार उत्तम पुरुष अने पांचमी केवलीनी पदवी टाली शेष अढार पदवी पामे.
११ अग्नि अने वायुकायमांथी निकल्या जीवो सात एकेंद्रीरत्न आठमो हस्तिरत्न अने नवमो अश्वरत्न ए नव पदवी पामे.
१२ सौधर्म तथा ईशान देवलोकना निकल्या जीव सर्व त्रेवीश पदवी पामे.
१३ त्रीजाथी आठमा देवलोकना निकल्या जीव, सात एकेंद्री टाली शेष शोल पदवी पामे.
१४ नवमा देवलोकथी मांमी नवग्रैवेयक पर्यंतना निकल्या जीवो, सात एकेंद्रीरत्न आठमुं हस्तिरत्न अने नवमुं अश्वरत्न वर्जी शेष चौद पदवी पामे.
१५ पांच अनुंत्तरथी आवेला जीवो चौदरत्न तथा वासुदेव टाली शेष आठ पदवी पामे.

हवे विमान प्रमुख पदार्थ जे आंगुलें करी मवीयें, ते कहे छे.

१ घर, कूवा, तलाव प्रमुख जे वस्तु छे ते सर्व आत्मांगुलें करी मापीयें.
२ पृथ्वी, पर्वत, विमान प्रमुख जे छे ते सर्व पदार्थो प्रमाणांगुलें करी मापीयें.
३ शरीरने उत्सेधांगुलें करी मापीयें.

हवे ए आंगुलना प्रमाण कहे छे.

१ सर्वथी पहेलां सूक्ष्म परमाणुं कहीयें.
२ एवा अनंता सूक्ष्म परमाणुयें एक बादर परमाणु कहीयें.
३ आठ बादर परमाणुयें जे सूर्यना तापें

जाळी प्रमुखमां नजरें देखाय, एवा कणी याने ऊर्ध्वरेणु अथवा रथरेणु कहीयें.
४ आठ ऊर्ध्वरेणुयें एक त्रसरेणु थाय.
५ आठ त्रसरेणुयें देवकुरु क्षेत्रना युगली या मनुष्य संबंधी एक मोवाळानी अणी थाय, तेने वालाग्र कहीयें.
६ आठ वालाग्रें एक लीख थाय.
७ आठ लीखें एक यूका थाय.
८ आठ यूकायें एक यव थाय.
९ आठ यवें एक उत्सेधांगुल थाय.
१० छ उत्सेधांगुलें एक पग थाय.
११ बे पगें एक विलस एटले वेंत थाय.
१२ बे विलसें एक हाथ थाय.
१३ चार हाथें एक धनुष्य थाय.
१४ बे हजार धनुष्यें एक कोश थाय.
१५ चार कोशें एक योजन थाय.

हवे प्रमाणादि अंगुल कहे छे.

१ चारशें उत्सेधांगुलें एक प्रमाणांगुल थाय.
२ बे उत्सेधांगुलें श्रीमहावीर भगवाननुं एक आत्मांगुल कहेवाय.
३ श्रीऋषभदेवजी अने भरतचक्रवर्त्तीनुं शरीर. १२० प्रमाणांगुल प्रमाण जाणवुं.

हवे सर्व जीवोने उपजवानी योनि चोराशी लाख छे, ते सर्व प्रथम पांत्रीश द्वारमां कहेली छे, अहीं तेनुं स्वरूप लखीयें छैयें.

१ जे जीवोनी उपजती वखतें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श एक बीजाना परस्पर सरखा होय, तेवा सर्व जीवोनी एकज योनि छे.
२ उपजवानां स्थानकने पण योनि कहीयें.
३ गोबरना छाणामां जेटली जातिना जीव आवी उपजे, ते सर्व एक योनिना जाणवा

हवे पांत्रीश द्वारमां प्रत्येक दंडकें जीवोना कुलनी संख्या कही छे, तेनो शरवाळो करीयें, तेवारें १९७५०००००० थाय. यद्यपि उपजवानी योनि एकज छे पण तेमां कृमी कीडा प्रमुख घणां कुल आवी उपजे छे.

हवे जूदी जूदी योनिनां स्वरूप कहे छे.

१ देवता एकेंद्रिय, नारकीने संवृत योनि छे.
२ विकलेंद्रिय, संमूर्छिमपंचेंद्रिय, तिर्यंच अने मनुष्यने विवृत योनि होय.
३ गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने मिश्र ते संवृत, विवृत, बेहु योनि होय.
४ देवता, नारकीने अचित्त योनि होय.
५ गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यने मिश्रयोनि छे.
६ बाकी सर्व जीवने सचित्तादि त्रण योनि छे.
७ नारकीने शीत उष्ण ए बे योनि छे.
८ देवता अने गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीय तथा मनुष्यने मिश्र योनि होय.
९ पृथ्वी, अप्, वायु, वनस्पति तथा संमूर्छिम तिर्यंच अने मनुष्यने त्रण योनि छे.
१० तेउकायने एकज उष्ण योनि होय.

हवे मनुष्यने योनि विशेष कहे छे.

१ शंखावर्त्त योनिमां पुत्र मरण पामे.
२ शंखावर्त्त योनि स्त्रीरत्ननेज होय.
३ कूर्मोन्नत योनि ते काचबाना पुंठनी पेठें उंची होय पेट वधे नही, ए योनिमां अरिहंत, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, बलदेव उपजे.
४ वंशना पान बे भेळां करीयें एवे आकारें

जे योनि होय ते त्रीजी वंसीपत्ता योनि कहीयें. एमां शेष सामान्य मनुष्य उपजे.

हवे आयुसंबंधि विशेष कहे छे.

१ बांधवानी वेलायें बंधकाल आयु कहीयें.

२ आयु बांध्या पछी जेटलो काल वचमां उदय न आवे, तेने आबाधाकाल कहीयें.

३ आयु पूर्ण थाय ते अंतसमयायु कहीयें.

४ घणो काल नोगववा योग्य आयुने सर्व प्रदेशें उदेरी स्वल्पकाल नोगववा योग्य करे समकालें नोगवे तेनेअपवर्त्तनकहीयें.

५ जेटला कालनो बांध्युं तेटलोज नोगवे तेने अनपवर्त्तन आयु कहीयें

६ जे कारणें करी आयु घटे, तेउपक्रम आयु छे.

७ कोइ कारणें आयु न घटे ते निरुपक्रमायु.

हवे बंधकाल जे जीवने जेटलो होय, ते कहेछे.

१ देवता, नारकी, असंख्याता वर्षायुवाला युगलीया मनुष्य तिर्यंच ए सर्व छ मास आयु रहे, तेवारें परनवनुं आउखुं बांधे.

२ संख्याता वर्षायु वाला एवा तिर्यंच मनुष्य निरुपक्रमायु वाला ते त्रीजो नाग आयु बाकीरहे तेवारें परनवनुं आयु बांधे.

३ सोपक्रम आयु वाला मनुष्य तिर्यंच त्रीजा नागथी जेवुं शेषायु रहे थके अथवा नवमो नाग, अथवा सत्तावीशमो नाग अथवा अंतर्मुहूर्त्त आयु शेष रहे, तेवारें परनवनुं आयु बांधे.

४ आउखानो जेटलो नाग बाकी रहे थके नवा आउखानो बंध पडे, पछी जेटले कालें उदय आवे, तेनी वचमांनो काल ते अबाधाकाल कहेवाय.

५ अंतसमयें आयु पूर्ण थये जाव एक समय प्रमाण रुजुगति करे अथवा चार पांच समय प्रमाणनी वक्रगति करे.

हवे ए बेहु गतिमां निश्चय व्यवहारनयें करी परनवनुं आउखुं उदय आवे अने परनवनो आहार होय ते कहे छे.

१ रुजुगतिमां पहेले समयें परनवनुं आउखुं अने परनवनो आहार उदय आवे.

२ वक्रगतिमां बीजे समयें परनवनुं आउखुं उदय आवे, अने एक समयनी वक्रगतिमां बीजे समयें आहार करे.

३ बे समयनी वक्रगतिमां त्रीजे समयें आहार करे. एक समय अणाहारी होय.

४ त्रण समयनी वक्रगतिमां चोथे समयें आहार करे. बे समय अनाहारी होय.

५ चार समयनी वक्रगतिमां पांचमे समयें आहार करे. त्रण समय अनाहारीहोय.

६ एक समयनी वक्रगतिमां बेहु समय आहार लीये.

हवे आयुआश्रयी कहे छे.

७ जे आयु बांधवा समयें यथायोग्य ढीलुं बांध्युं, ते देशकाल अध्यवसाय आश्रयी घटे, तेने अपवर्त्तनायु कहीयें.

८ जे आउखुं पहेलुं घणुं निकाचितबंधें करी बांध्युं, ते अवश्य नोगववुंज जोइयें तेने अनपवर्त्तन आयु कहीयें.

९ जे उत्तम पुरुष जेवा के चक्रवर्त्तीच,

मेंशरीरी तेज नवें मोक्ष जावा वाला एवा मनुष्य, तेमज देवता तथा नारकी अने युगलीया मनुष्य तथा तिर्यंच ए सर्वेनुं निरुपक्रम आउखुं होय.

१० जे अध्यवसायें अथवा विष प्रमुखें करी आउखुं घटे, ते अध्यवसाय प्रमुख उपक्रम कहीयें, अने ए उपक्रमथी विपरीत ते अनुपक्रम कहीयें.

हवे सात प्रकारें आयु घटे, ते कारण कहे छे.

१ राग द्वेषथी तथा स्त्रीना स्नेहथी मरे, ते अध्यवसाय मरण कहीयें.

२ ताजणा प्रमुख शस्त्रथी मरे, अथवा फांसी खाई मरे ते निमित्त मरण कहीयें.

३ भुख तृषाथी मरे, अथवा घणो आहार करवाथी मरे ते आहार मरण कहीयें.

४ शूलीथी, विषमवेदनाथी, पेट दुःखवाथी मरे ते वेदना मरण कहीयें.

५ पेटमां कटारी मारी मरे, पाणीमांहे पडी मरे, ते पराघात मरण कहीयें.

६ विषकन्या फरसथी मरे, सर्प्प विंछी प्रमुखना डसवाथी मरे, ते फरस मरण कहीयें.

७ घणा श्वासोश्वास आव्याथी मरे थोडा श्वासोश्वास आव्याथी मरे, ते आणपाण मरण कहीयें.

हवे कुबेरदत्ता साधवीयें बालकनी आगल अढार नात्रां पोतानां गायां, तेनां नाम कहे छे.

प्रथम बालकनी साथें छ सगपण कहे छे.

१ पोतानी माताना उदरमांथी ए बालकनो जन्म थयो छे माटें भाइ थयो.

२ भाइनो दीकरो थाय माटें भत्रीजो थयो.

३ धणीनो न्हानो भाइ थाय माटें देवर थयो.

४ शोकनो जण्यो छे माटे दीकरो थयो.

५ बापनो भाइ थाय, माटें काको थयो.

६ शोकना दीकरानो दीकरो माटें पौत्रो थयो.

हवे कुबेरदत्त भाईनी साथें छ नात्रां थयां ते कहे

१ बेहु जण एकज माताना उदरथी उपना छैयें ते माटे महारो भाइ कहेवाय.

२ फरी महारी मातानो ए धणी थायो छे ते माटें महारो बाप कहेवाय.

३ एनी साथें हुं परणी माटें भर्त्तार थाय.

४ ए पालणामां पोढेलो छोकरो महारा धणीनो भाइ थाय छे तेथी ते छोकरो महारो काको थयो ते महारा काकानो वली ए बाप थाय माटें महारो दादो थयो.

५ वली पहेला महारी शोक्यनो ए दीकरो हतो माटें महारो पण दीकरो थयो

६ महारी सासुनो धणी थाय छे ते माटे महारो ससरो पण थाय.

हवे कुबेरदत्ता गणिकानी साथें छ नातरां केवी रीतें थाय? ते लखीयें छैयें.

१ एनी कुखें जन्मी छुं माटे माता थाय.

२ महारा धणीनी माता थाय माटे सासू छे.

३ महारा भाइनी स्त्री थाय माटें भोजाइ छे.

४ महारा भर्त्तारनी स्त्री थाय ते शोक्य कहीयें.

५ महारा काकानी माता थाय ते दादी कहीयें.

६ महारी शोक्यनो दीकरो ते महारो पण दीकरो थयो, तेनी ए स्त्री छे. ए सगपण गणतां महारी वहू पण थाय.

ए अढार नात्रां कुबेरदत्ता साधवीयें एकला पोता आश्री पालणामां पोढोढेला छो कराने आगल गाइ संजलाव्यां एवा कुबेरसेना वेश्या तथा ते साधवीनो नाइ जेने पोतें परणी हती, ते तथा तेना वीर्यथी जे बालक उत्पन्न थयो छे जेनी पासें साधवी पोतें उन्नी रहीने हालरडा गाय छे, ते मली चारे जणना प्रत्येकें एकेकना अढार अढार नात्रां परस्पर एक बीजानी सार्थे संबंधें थाय, तेवारें सर्व मली बहोंतेर नात्रां थाय.

॥ अथ अशुनध्यानना त्रेशठ स्थानक, दृष्टांत सहित कहे छे. ॥

१ अज्ञान ध्यानननी ऊपर, मासतुषनो दृष्टांत जाणवो.
२ अनाचार ध्यानननी ऊपर, पुत्रने अर्थें चिंताना करनार कोंकण साधुनो दृष्टांत.
३ कुदर्शन ध्यानननी ऊपर, नंदमणियार श्रेष्ठीनो तथा सोमिलब्राह्मणनो दृष्टांत.
४ क्रोधध्यानननी ऊपर, कुलवालक, मंखलीपुत्र, पालक तथा नमुचिनो दृष्टांत.
५ मान ध्यानें बाहुबलीनो दृष्टांत. ६ मायाध्याने मल्लिनाथनो दृष्टांत.
७ लोजध्यानननी ऊपर केसरीया लाडु वहोरनार साधुनो दृष्टांत.
८ राग ध्यानननी ऊपर त्रण दृष्टांत कहे छे. तेमां कामरागनी ऊपर मणिरथराजाजे. मयणरेहा सतीनी ऊपर मोहित थयो तेनो दृष्टांत, तथा स्नेहरागनी ऊपर ना नुमंत्री अने सरस्वतीनो दृष्टांत अने दृष्टिरागनी उपर गोष्टामाहिलनो दृष्टांत.
९ द्वेषध्यानननी ऊपर धर्मरुचि नंदना वडनो दृष्टांत.
१० मोहध्यानननी ऊपर बलदेव, विष्णु, तथा सर्ज्जनवसूरिनो दृष्टांत.
११ इच्छाध्यानें कपिलकेवलीनो दृष्टांत. १२ मिथ्यात्वध्यानें जमालीनो दृष्टांत.
१३ मूर्छाध्यानें कनककेतुनो दृष्टांत. १४ शंकाध्यानें आषाढाचार्यनो दृष्टांत.
१५ कांक्षा ध्यानननी ऊपर मरीचि तथा कपिलादिकनो दृष्टांत.
१६ गृद्धिध्यानननी ऊपर मङ्गूरामंगू अने कंमरिकनो दृष्टांत.
१७ आशाध्यानननी ऊपर मूलदेव अने निर्घूणशर्म ब्राह्मणना संबलनो दृष्टांत.
१८ तृष्णाध्यानननी ऊपर अंगारदाहकनो दृष्टांत.
१९ क्षुधाध्यानननी उपर संप्रतिराजानो जीव कुमकनो दृष्टांत.
२० पंथध्यानननी ऊपर पोतनपुर मार्गगवेषक वल्कलचीरीनो दृष्टांत.
२१ पंथें चालवाना ध्यानननी ऊपर वरधणु तथा ब्रह्मदत्तनो दृष्टांत.
२२ निद्रा ध्यानें चौदपूर्वधर दृष्टांत. २३ नियाणाध्यानें संभूतिऋषि द्रौपदी दृष्टांत.
२४ स्नेह ध्यानननी ऊपर मरुदेवीमाता तथा अर्हन्नकजीनी मातानो दृष्टांत.
२५ कामध्यानननी ऊपर हासा, प्रहासा, लोभितकुमारनंदीनो दृष्टांत.

२६ कलुषध्याननी ऊपर उदायिनराजा प्रति अनिची कुमारनो दृष्टांत.
२७ कलहध्याननी ऊपर महाशतक श्रावक तथा रेवती श्राविकानो दृष्टांत.
२८ युद्धध्यान उपर कूणिक अने चेटकना दृष्टांत. २९ नियुद्धध्यानें नरत बाहुबलीनो दृष्टांत.
३० संगध्यानें नावदेव नागिलानो दृष्टांत. ३१ संग्रहध्यान उपर मम्मण दृष्टांत.
३२ व्यवहारध्याननी ऊपर राज कुलिपुत्रनें अर्थें बेहु शोक्योनो दृष्टांत.
३३ क्रयविक्रयध्याननी ऊपर लोजनंदनो दृष्टांत.
३४ अनर्थ दंम ध्याननी ऊपर द्वैपायनऋषि प्रति साम्ब प्रद्युम्नादिकनो दृष्टांत.
३५ आजोग ध्याननी ऊपर प्रसन्नचंदनो दृष्टांत जेने जाणतां व्रत वीसर्यां.
३६ आणाईल ध्याने सणाविल साधुनी बहेने वधतुं तेल लीधुं ते शण थया नो दृष्टांत.
३७ वैरध्यानी ऊपर फरशुराम तथा सुनूमादिकनो दृष्टांत.
३८ वियक्कध्याननी ऊपर नंदराजानुं राज्यलेवा वांढनार चाणाक्यनो दृष्टांत जाणवो.
३९ हिंसाध्याननी ऊपर कूपनिक्षिप्त कालसूरियानो दृष्टांत जाणवो.
४० हास्यध्याननी ऊपर चंडरौडाचार्यें शिष्यने दीक्षा दीधी, तेनो दृष्टांत जाणवो.
४१ प्रहास्याध्यानें चंडप्रद्योतनें वारतऋषीश्वरने निमित्त कहीने वांद्यो, ते दृष्टांत.
४२ पउसध्यानी ऊपर मरुनूति प्रत्यें कमठनी पेठें दृष्टांत जाणवो.
४३ फरुसध्याननी ऊपर ब्रह्मदत्त प्रतें चुलणीनो अथवा युगबाहु प्रत्यें मणिरथनो दृष्टांत.
४४ नयध्यानें गजसुकुमालनो विनाश करनार सोमिलनें नय उपनो ए दृष्टांतजाणवो.
४५ अप्रशंसाध्यानें सकमालना मुखथकी वररुचियें पोतानी अप्रशंसानुं ध्यान कीधुं ते दृष्टांत अथवा रथिकें पोतानुं विज्ञान, कोश्याने देखाड्युं ते दृष्टांत.
४६ परनिंदाना ध्यान ऊपर कुरंगडु मुनि निंदाना करनारा चार क्षपकनो दृष्टांत.
४७ परग्रह ध्यान ऊपर सनासमक्ष गोष्ठामाहिल डुर्बलिकापुष्पग्रें रह्यो, ए दृष्टांत.
४८ परिग्रह ध्याननी ऊपर मुनिपति प्रत्यें कुंचिक श्रावकनो दृष्टांत.
४९ परपरिवादध्याननी ऊपर सुनद्रा सती प्रत्यें तेनी सासु नणंदनो दृष्टांत.
५० परदूषणध्याननी ऊपर दमयंतीने माकिणीना कलंक चढाव्यानो दृष्टांत.
५१ आरंनध्याननी ऊपर ढंढणा कुमार पूर्वेनव राजाधिकारीनो दृष्टांत.
५२ समारंनध्याने मनमांहे कोईक शोक्यना दीकरानुं मरण चिंतवनारा सुसढनो दृष्टांत.
५३ पापानुमोदनध्याननी ऊपर तंडुलमत्स्य अंतरमुहूर्त्त अनुमोदन करे ते दृष्टांत.
५४ अरिजाणध्यान ऊपर वापीनो उद्यान नंदमणियारें चिंतव्यो तेनो दृष्टांत.
५५ असमाधिमरणध्याननी ऊपर स्कंदसूरिनो दृष्टांत.

५६ कर्मोदय पच्चयं ध्याननी ऊपर मरणवेलायें विष्णु श्रेणिकादिकनी पेरें दृष्टांत.
५७ ऋद्धिगारवध्याननी ऊपर दशार्णनद्र राजानो दृष्टांत.
५८ रसगारवध्याननी ऊपर सुबुधि प्राधान प्रत्यें जितशत्रु राजानी पेरें दृष्टांत.
५९ शातागारव ध्याननी ऊपर शशीराजानी पेरें दृष्टांत.
६० अविरमणध्याननी ऊपर नृगुपुरोहितना वेद्कुमर आश्रयी दृष्टांत जाणवो.
६१ अमुक्तिमरण ध्याननी ऊपर ब्रह्मदत्तनो पूर्वनव संनूत यतिनो दृष्टांत.
६२ रूपध्याननी ऊपर चंदप्रद्योतें पटलित अंगारवतीना रूपनो दृष्टांत.

॥ उपदेश रत्नकोश प्रारंनः ॥

१ सर्वदा जीवदया पालवी.
२ इंद्रियोने कुमार्गें प्रवर्त्तावबी नही.
३ इंद्रियोने धर्ममार्गें प्रवर्त्तावबी.
४ निरंतर धर्मपूर्वक सत्यवचन बोलवुं.
५ शील खंमन करवुं नही.
६ कुशीलीयानो संसर्ग करवो नही केमके जेवी संगति होय तेवी बुद्धि पण थाय.
७ गुरुनुं वचन लोपवुं नही.
८ जेम गुरु कहे, तेमज प्रवर्त्तवुं.
९ मार्गमां चपलपणे चालवुं नही.
१० नीची दृष्टिराखी जीवय त्नकरतां चालवुं.
११ पोतानेकुलयोग्य ड्व्यानुसारेंवेशपहेरवो.
१२ वांकीदृष्टियें कोइनी साहामुं जोवुंनही.
१३ पोतानी जिव्हा संवरी राखवी.
१४ आलपंपाल एटले यद्दत् यद्दत्नबोलवुं.
१५ अविचारित कार्य न करवुंविचारीकरवुं.
१६ पोतानाकुलनोरुडोआचारलोपवो नही.
१७ पारका मर्म बोलवा नही केमके ते रोष्यो थको पोतें मरे अथवा आपणने मारे.
१८ कोइने कूडुं आल देवुं नही.
१९ कोइने आक्रोश वचन कही शाप न देवो.
२० गुणवंत पुरुषनो उपकार करवो.
२१ उपकारकरीबीजाआगलप्रकाशवोनही.
२२ ङःखमांरूडा माणसनेआलंबनआपवुं.
२३ महोटुं संकट आवी पडे तो पण कोइनी आगल हाथ मांमवो नही.
२४ कोइ आपणने प्रार्थना करे तो ठतिशक्तियें प्रार्थनानो नंग न करवो.
२५ पोतामां घणा गुण होय तो पण पोतानी प्रशंसा स्वमुखें करवी नही.
२६ ङुर्जन माणसनी निंदा करवी नही.
२७ जेनो जेवो स्वनाव होय ते मूके नही.
२८ पोताना धर्ममार्गें चालीयें.
२९ घणी हास्य मस्करी न करवी.
३० हास्य न करवाथी गुरुता पामीयें.
३१ वैरीनो विश्वास करवो नही.
३२ जे आपणा उपर विश्वास राखे, तेनी साथें कोइ रीतें विश्वासघात न करवो.
३३ कोइनो करेलो उपकार वीसारवो नही.
३४ गुणवंत उपर राचीयें प्रशंसा करीयें.
३५ निःस्नेही ऊपर स्नेह न करवो. परंतु मध्यस्थ पणे रहेवुं.
३६ पात्रनी परीक्षा करी सुपात्रने दान देवुं.

सन्मान करवुं, केम के सत्पुरुषनो आ कलिकालमां त्रोटो छे.

३७ लोक निंदा करे तेवुं काम न करवुं केम के जुठुं बोलवुं,चोरी करवी,परदारा सेववी,एथी लोकमां कलंक चढे अने परनवें नरकें जवुं पडे. माटे ते न करवुं.

३८ पोतानुं साहस सत्त्व छोडवुं नही. जो पोतामां सत्त्व होय तो सर्व कारज थाय.

३९ व्यसननी उपर मोहित न थावुं.

४० लक्ष्मीक्षय थाय तो पण थोडामांथी यथायोग्य दान आपवुं ए धीरपुरुषनुं खड्गधारा समान व्रत जाणवुं.

४१ कोइनीसाथें घणो स्नेह न करवो जेटलो स्नेह करीयें तेटलो दुःखदायी थाय.

४२ अनीष्ट उपर प्रति दिवस रोष न करवो.

४३ कोइ साथें क्लेश न करवो.

४४ अन्यायथी लक्ष्मी उपार्जवी नही.

४५ कुवास कुठाकुर वास न करवो.

४६ बालकने प्रियवचनें बोलाववुं.

४७ वैरीने मधुरवचनें बोलाववो जेथी ते सुख पामे तो आपणी साथें कलह न करे.

४८ घणी लक्ष्मी होय तो पण ते बपोरनी छाया सरखी जाणी अहंकार न करवो.

४९ लक्ष्मी न होय तो विषवाद न करवो. सर्वदासमनावें रहेवाथीसंताप न थाय.

५० सेवकना वखाण तेना मुख आगल करवां.

५१ पुत्रनां वखाण तेनी पाछल करवां पण तेना मुख आगल न करवां.

५२ सर्वकोइ प्रत्यें सरस सकोमल अने थोडुं धर्मसंयुक्त वचन बोलवुं.

५३ पोताना शत्रु अनेमित्रनोविनय करवो.

५४ पोतानी संपत्ति माफक दान देवुं.

५५ पारका गुण शील होय ते बोलवा. पण अवगुण न बोलवा. ए मंत्रविना पण महोटुं वशीकरण छे एम जाणवुं.

५६ प्रस्तावें बोलवुं पण अप्रस्तावें न बोलवुं केम के प्रस्तावें बोलवुं सर्वने गमे.

५७ घणा माणसमांहे जे दुर्जन होय तेनुं बहुमान करवुं.

५८ पोताना प्रियनुं विशेष उपकार करवो.

५९ गुणवंतनी पूजा करवी.

६० बीजानी पासें मंत्र आलोच न करवो.

६१ पारकें घेर एकला न जवुं.

६२ स्त्रीयें पतिव्रता धर्म पालवो.

६३ जेनी साथें अत्यंत प्रीति करवा वांछीयें तो तेने घेर जमवुं.

६४ ते मित्रने आपणे घेर जमाडवो.

६५ मित्रने वस्त्रादिकनुं दान आपवुं.

६६ मित्र जे वस्तु आपे, ते लेवी.

६७ पोतानी वात मित्र आगल कहेवी.

६८ मित्रनी वात पोतें पण पूछवी, एम करवाथी तेनी साथें प्रीति दृढ थाय.

६९ कोइनुं अपमान करवुं नही.

७० पोताना गुणनो गर्व न करवो.

७१ गर्व करवाथी गुणहीन थइयें.

७२ बहुरत्ना वसुंधरा छे माटें पृथ्वीमां विचित्र आश्चर्य देखी विस्मय पामवुं नही.

७३ महोटुं कार्य आरंभीने पछी न्हानुं करीयें तो लोकमां हांसी थाय.
७४ न्हानुं कार्य आरंभीने पछी तेने महोटुं करीयें तो लोकमांहे प्रशंसा थाय.
७५ सर्वजीवने पोता सरखा जाणी कोइने दुहवीयें नही राग रोष आणीयें नही.
७६ ए प्रमाणें वर्त्तनारो पुरुष क्यारें दुःखी न थाय सेवटें कर्म छेदी मोक्ष जाय इति ॥

॥ अथ अष्टभंगी प्रारंभः ॥

१ सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्वनुं स्वरूप न जाणे अने साधुधर्म तथा श्रावक धर्म ए बे मांहेलो कोइ धर्म न आदरे अने पच्चरकाण जिनमत अनुष्ठान न पाले ए प्रथम भांगो जाणवो एनो स्वामी सकल लोकवासी मिथ्यात्वी जाणवो.
२ जिनतत्त्व न जाणे अने साधु धर्म तथा श्रावक धर्म आदरे अने अज्ञानकष्ट मास क्षमणादिक पच्चरकाण पाले ए बीजो भांगो बाल तपस्वी तापसादिकनो जाणवो.
३ ज्ञानतत्त्व न जाणे अने बेहु धर्ममांहेलो एक धर्म आदरे पण यथास्थित साधुधर्म मार्ग न पाले प्रतीत न आणे ए न जाणे, न आदरे अने न पाले, एवो त्रीजो भांगो सर्व पासछा, कुशीलीया, संशक्त इत्यादिक भव्य तथा अभव्यादिकनो जाणवो.
४ जिनमत स्वरूप न जाणे तथा वली साधु धर्म आदरे वली यथाछंद पणे साधु मार्गने पाले ए न जाणे, आदरे अने पाले एवो चोथो भांगो उत्सूत्र प्ररूपक अगीतार्थनो छे.
५ धर्मना स्वरूपने जाणे, पण नियमना भयने लीधें बेहु धर्म मांहेलो एके धर्म न आदरे अने व्रत पच्चरकाण पण पाले नही ए जाणे, न आदरे, अने न पाले एवो पांचमो भांगो श्रेणिक, सात्यकी अने श्रीकृष्ण प्रमुख सम्यक्दृष्टियोनो जाणवो.
६ धर्मना स्वरूपने जाणे पण बेहुमांहेलो एके धर्म आदरे नही परंतु नववाड सहित शील प्रमुख पाले ए छठो भांगो अनुत्तर विमानवासी देवादिकनो जाणवो.
७ जिनधर्मना स्वरूपने विशद रीतें जाणे अने बेहु धर्ममांहेला एक धर्मने आदरे परंतु निद्रावरणीय कर्मोदयें करी पाली शके नही सातमो भांगो संविज्ञपक्षीनो जाणवो.
८ जिनधर्ममां अत्यंत कुशल थको धर्मस्वरूपने जाणे अने आदरे तेमज जिनोक्तधर्म यथास्थित पणे पाले ए जाणे, आदरे अने पाले एवो आठमो भांगो साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध श्रीसंघनो जाणवो.

ए आठभांगामां प्रथमना चार भांगा मिथ्यादृष्टीना जाणवा अने पाछला चार भांगा सम्यक्दृष्टिनां छे तेमांपाचमो छठो भंगो अविरति सम्यक्दृष्टीनो अने सातमो भंगो देश विरतिनो जाणवो तथा आठमो भांगो देशविरति अने सर्वविरति बेहुनो जाणवो ॥इति॥